

THE UNIVERSITY OF JODHPUR LIBRARY

| | |
|-----------|----------|
| Class No. | Book No. |
| Acc. No. | Date |

DATE DUE

This book should be returned on or before the date last stamped below. If the book is kept beyond that date an overdue charge will be payable simultaneously with the return of the book according to the Library rules in force.

| DUE DATE OF RETURN | MEMBERSHIP No. | TOKEN No. | INITIALS OF C.A. |
|-----------------------|-------------------|--------------|---------------------|
| | | | |

A Descriptive Catalogue
of
The Sanskrit Manuscripts,

acquired for and deposited in the
Sanskrit University Library (Sarasvati Bhavana), Varanasi,
during the years 1791-1950

Volume VIII

NYĀYA-VAIŚEṢIKA MSS.

Compiled by the
Staff of the Manuscripts Section of the
Sanskrit University Library, Varanasi.

1962

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्थ-
सरस्वतीभवनपुस्तकालये

ख्रिस्तीय १७९१ तमवर्षात् १९५० तमवर्षपर्यन्तं सङ्गृहीतानां
हस्तलिखितसंस्कृतग्रन्थानां

विवरणापञ्चिका

तस्या अयं

न्यायवैशेषिकग्रन्थनामसङ्ग्रहात्मकः

अष्टमो भागः

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्थ-
सरस्वतीभवनाख्यपुस्तकालयहस्तलिखितविभागसंबद्धविद्वद्भिः
सम्पादितः
१८८३तमे शकाब्दे।

PUBLISHED BY THE DEPARTMENT OF PUBLICATIONS,
SANSKRIT UNIVERSITY, VARANASI, INDIA.

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, VARANASI.

Price—Rs 8 50

A WORD

The present volume, being the catalogue of Nyāya-Vaiśeṣika manuscripts preserved in the Sarasvati Bhavan Library, was originally undertaken up by one of my illustrious predecessors, Mahamahopadhyaya Dr. Gopinath Kaviraja, sometime during the period he was the Principal of the Government Sanskrit College, Varanasi. It is not known as to the extent to which the work was done by him. But in 1940 a catalogue of 1943 Nyāya-Vaiśeṣika manuscripts, to be Vol. II of the Manuscripts Catalogue of the said Library, was sent to the U. P. Government Press at Allahabad for printing. Proofs of the said work were received from the printers, but for some reason the work of printing was discontinued even at this stage.

In 1951 the work of cataloguing was restarted on a changed plan and by now all the manuscripts acquired upto 1950 have been catalogued and seven volumes of the catalogue prepared on the changed lines have been published. So the present volume, that is number VIII, describes not only the manuscripts included in the catalogue of Pandit Kavirajaji, but also all other Nyāya-Vaiśeṣika manuscripts that were acquired after he left and till the end of 1950.

It has not been possible for us to enlist the manuscripts according to some standard scheme, since in case we would have attempted to do this, the danger was of the loose folios getting mixed up together. Hence we had to be satisfied by adding an alphabetical index of all the titles at the end for convenience of the readers.

In the said index there will be found many entries for titles that are not on the Nyāya-Vaiśeṣika, although this volume is understood to be a catalogue of works relating to this subject only. This has been so because some of the codices contain manuscripts of more than one work, and they have been catalogued taking only the first manuscript into consideration for the purpose, the manuscripts, other than the first ones, having been mentioned under the last column. The Alphabetic Index enlists all the manuscripts, whether mentioned in the second column or in the last one. It is proposed to mention such additional titles noted in the last column in appropriate supplementary volumes that are also ready for the press.

Though it will be further noticed that in this volume, more information has been supplied in the last column about the extent of the manuscripts than it was done in the preceding volumes, it is regretted that in spite of all cares on our part the number of errors in the beginning portion of this volume was considerably large and I crave indulgence of the readers.

I take this opportunity to acknowledge the contributions made earlier towards preparation of this volume by eminent scholars like Mahamahopadhyaya Dr. Gopinatha Kaviraja and Dr. Mangaladeva Shastri, and it is hoped they will approve of my incorporating here the results of their labour even in the present form.

Vārāṇasī,
Date 20. 9. 1962
Bhādrapada 29, 1884 Śaka.

SUBHADRA JHĀ,
Granthadhyaksha,
Varanaseya Sanskrit Vishvavidyalaya,
Varanasi.

हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

अष्टमो भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|--------------|-------------------|
| ३०१३८ | लघुपदार्थविवेचनम् | लक्ष्मीपतिः | २१६ । (गणनया) |
| ३०१३९ | दिक्कालनिरूपणम् | | १-४ । |
| ३०१४० | गादाधरीपत्रिका | | ४ । (गणनया) |
| ३०१४१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३०१४२ | " | | १-२ । |
| ३०१४३ | न्यायग्रन्थविशेषः | | १० । (गणनया) |
| ३०१४४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३०१४५ | " | | ९ । (गणनया) |
| ३०१४६ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २ । " |
| ३०१४७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २-५ । |
| ३०१४८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१०, १२ । |
| ३०१४९ | " | | १ । |
| ३०१५० | " | | १ । |
| ३०१५१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३०१५२ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | ९ । " |
| ३०१५३ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | ८ । " |
| ३०१५४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ४ । " |
| ३०१५५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३०१५६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | | ३८-४९ । |
| ३०१५७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | ३ । (गणनया) |
| ३०१५८ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | ६-५१ । |
| ३०१५९ | पदार्थतत्त्वनिर्णयः | गङ्गापुरी | १-४९ । |
| ३०१६० | तत्त्वमणिदीधितिः | रघुनाथः | २ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|--------------------------------|
| ९०९ × ४२ | ९ | २८ | दे.ना. | का. | १६४२ श० | अपू० | |
| ६०७ × ४१ | १४ | ३७ | " | " | | पू० | |
| ७०६ × ४० | १४ | ३४ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०६ × ४१ | १३ | ५६ | " | " | | " | " |
| १२०१ × ४० | १४ | ६५ | " | " | | " | " |
| १७०५ × ३२ | १० | ९४ | " | " | | " | व्याप्तिवादस्य । |
| १२०७ × ४ | १२ | ६७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १५ × ४३ | १४ | ७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२०२ × ४६ | १७ | ६१ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०५ × ५२ | १५ | ५३ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३ × ४० | ११ | ४६ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १३०९ × ५३ | १७ | ६१ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०६ × ४६ | १२ | ६१ | " | " | | " | " |
| १५०४ × ३ | १८ | ७० | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १५ × ४३ | १४ | ६८ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १३०७ × ५३ | ११ | ३८ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३०८ × ५२ | १५ | ६८ | " | " | | " | पञ्चताप्रकरणस्य । |
| १३०६ × ५२ | १३ | ६६ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १३०५ × ५१ | १४ | ५६ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०३ × ५१ | १४ | ४५ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १४०७ × ४० | ११ | ५१ | " | " | | " | |
| १० × ४३ | ६ | ५१ | " | " | | " | |
| १२०५ × ३९ | ९ | ४० | ग्रन्थः | " | | " | हेत्वाभाससामान्यलक्षणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|-----------------------------------|-------------------|
| ३०१६१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-५८ । |
| ३०१६२ | तत्त्व०मणिदीधितिः | रघुनाथः | ६ । (गणनया) |
| ३०१६३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-१८ । |
| ३०१६४ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १-६, ९-१० । |
| ३०१६५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | २९-३० । |
| ३०१६६ | " | जगदीशः | १-१३ । |
| ३०१६७ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-३ । |
| ३०१६८ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | कालीशङ्करः | १-२८ । |
| ३०१६९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-६ । |
| ३०१७० | " | जगदीशः | १-२२ । |
| ३०१७१ | तत्त्व०मणिदीधितिः | रघुनाथः | २ । (गणनया) |
| ३०१७२ | " | " | २-१३ । |
| ३०१७३ | तत्त्व०मणिटीका | मथुरानाथः | १-३ । |
| ३०१७४ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १ । |
| ३०१७५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३२, ३४-५१ । |
| ३०१७६ | तत्त्व०मणिटीका | मथुरानाथः | १-८ । |
| ३०१७७ | तर्कभाषा सटीका | टी.का.गौरीकान्तः | १-२९ । |
| ३०१७८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-५ । |
| ३०१७९ | प्रामाण्यवादः | | १८ । (गणनया) |
| ३०१८० | दशाविशेषग्रन्थः | | ८ । " |
| ३०१८१ | तत्त्व०मणिटीका | मथुरानाथः | २-१४ । |
| ३०१८२ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १-३ । |
| ३०१८३ | तत्त्व०मणिदीधितिव्याख्या | म. म. भवानन्द- सिद्धान्तवागीशः | २९७ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|----------------------------------|
| १२*५*४*४ | १२ | ४७ | ग्रन्थः | का. | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| ६*२*४*५ | १९ | २५ | " | " | | "* | " |
| १३*३*४*१ | ९ | ४५ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२*६*३*८ | ९ | ४१ | तेलुगू | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १५*५*३*९ | ७ | ४४ | " | " | | " | पञ्चलक्षणीप्रकरणस्य । |
| ११*९*४*९ | १६ | ५० | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| ७*९*४*३ | १३ | ५५ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणम् । |
| ११*६*४*९ | १६ | ४९ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९*६*३*५ | १४ | ४२ | " | " | | पू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| ९*३*४*८ | ११ | २६ | " | " | | अपू० | पञ्चलक्षणीप्रकरणस्य । |
| १२*६*३*९ | ९ | ४१ | " | " | | " | हेत्वाभाससामान्यलक्षणप्रकरणस्य । |
| १३*७*४*२ | ११ | ५८ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३*९*३*९ | ८ | ७३ | " | " | | पू० | साधारणप्रकरणस्य । |
| ११*३*३*५ | ८ | ६४ | " | " | | अपू० | प्रामाण्यवादः । |
| १२*५*३*८ | ९ | ३८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०*५*४*९ | १५ | ४० | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १२*९*३*९ | ११ | ५५ | " | " | | पू० | |
| १४*२*४*६ | १२ | ५९ | " | " | | अपू० | पञ्चलक्षणीप्रकरणस्य । |
| १२*८*४*५ | १५ | ३५ | ग्रन्थः | " | | पू० | |
| १२*९*४*३ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| १३*८*३*७ | १० | ६८ | तेलुगू | " | | अपू० | प्रामाण्यवादस्य । |
| ९*८*४*३ | ११ | ३७ | " | " | | " | |
| १५*२*४ | ७ | १२१ | वङ्ग. | का. | | " | अनुमानखण्डस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|-------------------|-------------------|
| ३०१८४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-टीका | | २-१० । |
| ३०१८५ | आत्मतत्त्वविवेकः | उदयनाचार्यः | १-६२ । |
| ३०१८६ | न्यायसूत्रप्रकाशः | केशवमिश्रः | १-१५ |
| ३०१८७ | योग्यानुपलब्धिवादः | रुद्रभट्टाचार्यः | १-११ । |
| ३०१८८ | नैयायिकशास्त्रसङ्ग्रह-व्याक्रिया | जोषराजः | २-३५ । |
| ३०१८९ | तार्किकरक्षा सटीका | | ९-२९ । |
| ३०१९० | तर्कामृतचपकः सटीकः | गङ्गारामजडी | १-५५९ । |
| ३०१९१ | अनुमितिनिरूपणम् | रामनारायणाचार्यः | १-७ । |
| ३०१९२ | चित्ररूपविचारः | विद्यानिवासपुत्रः | १-२१ । |
| ३०१९३ | उपाधिवादः | | १, १०-१९ । |
| ३०१९४ | न्यायामृतम् | | ९३ । (गणनया) |
| ३०१९५ | तर्कभाषा | | २२-३० । |
| ३०१९६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका-टीका | | ३३२ । (गणनया) |
| ३०१९७ | अनुकरणविचारः | | १-३ । |
| ३०१९८ | स्मृतिसंस्काररहस्यम् | | ८-१२, १९-२० । |
| ३०१९९ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | ३-८ । |
| ३०२०० | न्यायग्रन्थविशेषः | | ३-५ । |
| ३०२०१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३०२०२ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-९ । |
| ३०२०३ | आत्ममनस्संयोगवादः | | १-८ । |
| ३०२०४ | न्यायग्रन्थविशेषः | | २७-३८ । |
| ३०२०५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|--------------|------------------------|--|
| १२*८×९*२ | १२ | ९० | दे.ना. | का. | | अपू० | मङ्गलवादस्य । |
| १०*३×४*३ | १० | ९६ | " | " | | पू० | बौद्धधिकारो वा । |
| १०*६×४*४ | ११ | ९१ | मैथि. | " | | अपू० | न्यायपञ्चाध्यायीटीका वा । |
| १०*२×४*४ | १२ | ३८ | दे.ना. | " | | पू० | अन्ते चित्ररूपनिरूपणञ्च । |
| ८*९×३*६ | ९ | ३९ | " | " | | अपू० | जोषराजीयकल्पलतिकायाम्, भाट्ट- मतसङ्ग्रहश्च । |
| ११*६×३*८ | १० | ३७ | " | " | | " | प्रमाणप्रकरणस्य । |
| १३*४×८*१ | ११ | ९७ | " | " | १८३१ १९६४ | पू० | टीका-तात्पर्याख्या । |
| १०*८×४*६ | ७ | ३२ | " | " | १९१३ | " | |
| १०*१×३*६ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| ६×३*९ | ५ | २१ | " | " | १३४८ | अपू० | |
| ८*४×४*२ | १२ | ३२ | " | " | | " | वेदान्तमतखण्डनम् । |
| ७*७×३ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| १०*२×४*४ | १० | ४९ | " | " | | " | गादाधर्या उपरि, निरङ्कपत्रेषु बहूनां ग्रन्थानां टीकाऽस्ति । |
| १६*६×३*६ | ६ | ४९ | " | " | १७३६ श. | पू० | |
| ९*९×३*६ | ८ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १२*३×९*१ | १६ | ९३ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९*६×४*६ | ९ | ३३ | " | " | | " | शब्दखण्डः । |
| १०*२×४*२ | ११ | ४९ | " | " | | " | व्याप्तिवादस्य । |
| ९*४×४*४ | १२ | ३७ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| ९*६×४ | १६ | ४९ | " | " | | अपू० | आत्मविशेषगुणकारणत्वविचारः । |
| ९*१×४*३ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| ९*९×४*६ | १४ | ४२ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|---------------|-------------------------|
| ३०२०६ | तत्त्व० मणिदीधितिटीका | चन्द्रनारायणः | १-२४ । |
| ३०२०७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३०२०८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३०२०९ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २ । |
| ३०२१० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-८, २१-४९ । |
| ३०२११ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १७-२६ । |
| ३०२१२ | " | | १ । |
| ३०२१३ | " | | १-२ । |
| ३०२१४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३०२१५ | न्यायग्रन्थविशेषः | | १ १६ । |
| ३०२१६ | " | | २-८०, ८३-१३४, १३६-१९४ । |
| ३०२१७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-९ । |
| ३०२१८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३०२१९ | " | | २ । (गणनया) |
| ३०२२० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३०२२१ | " | | २ । (गणनया) |
| ३०२२२ | न्यायग्रन्थविशेषः | | ८३-९७, १००-१०८ । |
| ३०२२३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३०२२४ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २-२५ । |
| ३०२२५ | तत्त्व० मणिदीधितिटीका | | ८ । (गणनया) |
| ३०२२६ | क्रोडपत्रविशेषः | | २ । " |
| ३०२२७ | न्यायग्रन्थविशेषः | | २६-५० । |
| ३०२२८ | माधुरीक्रोडपत्रम् | | ६ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १०*३*४*६ | १० | ३६ | दे. ना. | का. | | अपू० | तर्कप्रकरणस्य । |
| ८*६*४*२ | १४ | ३९ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| ११*७*४*३ | ११ | ४८ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२*६*५ | १६ | ४९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ११*३*६ | १० | ६१ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १२*७*४*७ | १६ | ६७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२*४*५ | १४ | ५६ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२*६*२*७ | १७ | ६१ | " | " | | " | " |
| ११*६*४*३ | १२ | ३९ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १०*२*३*८ | ७ | ४० | " | " | | " | कृष्णकथया द्रव्यादिसप्तपदार्थ- निरूपणम् । |
| १०*८*३*७ | ६ | ३८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२*४*५ | १३ | ६० | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणप्रकरणस्य । |
| १२*३*४*५ | १४ | ४६ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ८*७*४*३ | १० | ३८ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १०*४*५ | १४ | ४० | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ६*८*५*१ | ३४ | ४१ | " | " | | " | |
| ११*४*४*८ | ११ | ४१ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १२*६*५ | ११ | ४१ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२*६*५ | १३ | ४७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य, चित्ररूपादि- विचारश्च । |
| ११*६*६*२ | १४ | ६१ | " | " | | " | |
| ११*८*४ | ११ | ६१ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १२*३*३*२ | ९ | ६४ | " | " | | " | |
| १२*२*४*४ | १२ | ६४ | " | " | | " | व्याप्तिवादस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|--------------|--------------------------|
| ३०२२९ | गादाधरीकोडपत्रम् | | १-९ । |
| ३०२३० | जागदीशीकोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३०२३१ | न्यायग्रन्थविशेषः | | ७ । (गणनया) |
| ३०२३२ | ज्ञानलक्षणासन्निकर्षविचारः | | १३ । ” |
| ३०२३३ | जागदीशीकोडपत्रम् | | १७ । |
| ३०२३४ | विषयतावादः | | ४ । (गणनया) |
| ३०२३५ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | रुद्रः | १५-४४+३, ४९+१ (३५ गणनया) |
| ३०२३६ | न्यायग्रन्थविशेषः | | १२ (गणनया) |
| ३०२३७ | ” | | ८८-१०४ । |
| ३०२३८ | न्यायसिद्धान्तदीपटीका | | १-२ । |
| ३०२३९ | गादाधरीकोडपत्रम् | | १ । |
| ३०२४० | जागदीशीकोडपत्रम् | महाराजः | १-१९ । |
| ३०२४१ | गादाधरीकोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३०२४२ | जागदीशीकोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३०२४३ | न्यायग्रन्थविशेषः | | १ । |
| ३०२४४ | जागदीशीकोडपत्रम् | | ६ । (गणनया) |
| ३०२४५ | गादाधरीकोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३०२४६ | जागदीशीकोडपत्रम् | | ११-१२ । |
| ३०२४७ | ” | | १८-२१ । |
| ३०२४८ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | २ । (गणनया) |
| ३०२४९ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-७ । |
| ३०२५० | गादाधरीकोडपत्रम् | | ५ । (गणनया) |
| ३०२५१ | जागदीशीकोडपत्रम् | | ८-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|----------|------------------------|--|
| १२*५×५ | ११ | ४४ | दे.ना. | का. | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२*५×५ | ९ | ४३ | " | " | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १२*३×५ | १४ | ७० | मै. | " | " | " |
| ११*२×५*२ | १४ | ४३ | दे.ना. | " | " | " |
| १२*५×४*७ | १६ | ५४ | " | " | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ११*८×४*४ | १२ | ४९ | " | " | " | " |
| ९*३×७ | १३ | ४६ | " | " | " | आकाङ्क्षादिप्रकरणस्य । |
| ८*७×३*३ | १२ | ३९ | " | " | " | " |
| ९*२×३ | ५ | ३० | " | " | " | पृष्ठैकदेशे "मणि" इति लिखितमस्ति । |
| ९*१×३*९ | १४ | ४२ | " | " | " | " |
| १०×४*३ | १४ | ४७ | " | " | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३×४*१ | ९ | ६४ | " | " | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२*४×५*१ | १५ | ५० | " | " | " | वज्रभेदीतिनाम, सामान्यनिरुक्ति प्रकरणस्य । |
| १२*४×४*४ | ७ | ३७ | " | " | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२*४×९ | १३ | ४७ | " | " | " | पृष्ठैकदेशे 'न्यायरत्नः' इति लिखि- तमस्ति । |
| १२×४*९ | १८ | ४३ | " | " | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२*२×४*२ | १० | ४९ | " | " | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ११*७×४*५ | ९ | ४९ | " | " | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२*३×४*६ | १५ | ४७ | " | " | " | " |
| १५×४*३ | १६ | ७४ | " | " | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १५*९×३*८ | ८ | ६८ | " | " | " | विधिवादस्य । |
| १३×४*१ | ९ | ७८ | " | " | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३*६×५*३ | १९ | ६१ | " | " | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|------------------|------------------------------------|
| ३०२५२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३०२५३ | " | | १-४ । |
| ३०२५४ | " | | १ । |
| ३०२५५ | " | | १-४ । |
| ३०२५६ | " | | १-५ । |
| ३०२५७ | " | | १-९ । |
| ३०२५८ | " | | १-६ । |
| ३०२५९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १ । |
| ३०२६० | तर्कभाषाभावार्थदीपिका | गौरीकान्तः | १-२५, १६५-१७१, (=१७२, १७३) १७५-१९७ |
| ३०२६१ | " | " | ८२-८३, १४६-१६४ । |
| ३०२६२ | प्रामाण्यविचारः | | १-३, ३-७ । |
| ३०२६३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-२३ । |
| ३०२६४ | परामर्शवादः | | १-२० । |
| ३०२६५ | पदवाक्यरत्नाकरः | गोकुलनाथः | १-७५ । |
| ३०२६६ | पक्षताविचारः | महादेवः | १-१६, १-११, १-२० । |
| ३०२६७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३, ४०-६८ । |
| ३०२६८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठः | १-७२ । |
| ३०२६९ | " | " | १-५१ । |
| ३०२७० | " | " | १-३९, १-७, १-१५३, १५३-१७२ । |
| ३०२७१ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिमिश्रः | १-३९, १-३७, ४-३०, ३०-३९, १-३५ । |
| ३०२७२ | " | " | १-१० । |
| ३०२७३ | " | " | १-६६ । |
| ३०२७४ | तत्त्व०मणिदीधितिपुरस्कारः | | १-४, ६, ६-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १३*९×९३ | १९ | ९१ | दे.ना. | का. | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३*३×९१ | ९ | ९२ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३*९×९३ | १९ | ६० | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३*७×४*६ | १४ | ६० | " | " | | " | " |
| १३*९×९२ | १० | ९३ | " | " | | " | " |
| १३*३×९१ | ९ | ६१ | " | " | | " | " |
| १२*९×९ | १३ | ४९ | " | " | | " | रौद्रीतिनाम । |
| १०*६×४*४ | १६ | ९८ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १०*९×४*९ | १० | ३६ | " | " | | " | " |
| १०*२×४*९ | ९ | ४२ | " | " | | " | " |
| १०*३×४*७ | २९ | ६७ | " | " | | पू०* | अन्ते व्याप्तिवादस्यैकम् पत्रञ्च । |
| ११*२×४*३ | १० | ४९ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १०*८×३*६ | ९ | ४९ | " | " | | पू० | अनुमितिपरामर्शयोः कार्य्यकारण- भावविचारात्मकः । |
| १०*९×४*९ | ११ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ९*६×४*३ | ९ | ४९ | " | " | | पू०* | अनुमितिपक्षतयोः कार्य्यकारणभाव- विचारात्मकः । |
| १०*८×४*९ | १० | ४८ | " | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १२*४×४*३ | १० | ३८ | " | " | १७६२ | पू० | तर्कप्रकाशाभिधा । |
| १०×४*८ | १३ | ४६ | " | " | | " | " |
| १०*१×४*२ | १० | ३६ | " | " | १८४९ | " | " अनुमानखण्डतः शब्दखण्डान्ता । |
| ११×४*७ | ११ | ४७ | " | " | | अपू० | अ० १, ३-९ । |
| ११×४*९ | ९ | ३८ | " | " | | " | त्रिसूत्रीतात्पर्यटीकाया अन्तिमोःशः । |
| ११×४*७ | ११ | ४७ | " | " | | पू० | प्रमाणप्रकरणपर्यन्ता । |
| १०*९×४*२ | १२ | ४० | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-------------------------|----------------------|
| ३०२७५ | नवर्थविवृतितत्त्वम् | जयरामन्याय- पञ्चाननः | २ । (गणनया) |
| ३०२७६ | वज्रटङ्कीयदूषणोद्धारः | | १-९ । |
| ३०२७७ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिमिश्रः | ३१-४५ । |
| ३०२७८ | कारकचक्रम् | भवानन्दः | १-१७ । |
| ३०२७९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | रामकृष्णः | १-३ । |
| ३०२८० | नवीननिर्माणम् | रघुदेवशर्मा | १-६० । |
| ३०२८१ | न्यायलीलावती | वल्लभाचार्यः | १-३९, ४१-४७, ४९-९६ । |
| ३०२८२ | न्यायलीलावतीटीका | रघुनाथशिरोमणिः | १२-४० । |
| ३०२८३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | " | १-१३२ । |
| ३०२८४ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशः | १-२७ । |
| ३०२८५ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | " | १३-२३ । |
| ३०२८६ | तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १५५ । (गणनया) |
| ३०२८७ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | २-२३ । |
| ३०२८८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-१५९ । |
| ३०२८९ | कारकपरिच्छेदः | रुद्रभट्टाचार्यः | १-३, ५-९ । |
| ३०२९० | एवकारविवादः | | १-२ । |
| ३०२९१ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१७, २०-७९ । |
| ३०२९२ | व्युत्पत्तिवादटीका | | १-३४ । |
| ३०२९३ | तत्त्वचिन्तामणिविवृतिः | प्रगल्भः | ६-११८, १२०-२२५ । |
| ३०२९४ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | श्रीकण्ठः | १-२३ । |
| ३०२९५ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीसारः | यादवः | २७-८९ । |
| ३०२९६ | पक्षताविचारः | महादेवः | १-३९ । |
| ३०२९७ | " | | १-२४, २६-३२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|------------------------|--|
| १२×४*७ | १९ | ४९ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९*९×४*२ | ९ | ४० | " | " | | " | भवानन्दीयखण्डनखण्डनम् । |
| १०*९×४*६ | ११ | ४० | " | " | | " | चतुर्थ्याध्यायांशमात्रा । |
| ९*७×४*२ | १० | ४६ | " | " | | पू० | कारकाद्यर्थनिर्णयो वा । |
| १०*२×३*६ | ९ | ४९ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०×३*७ | ११ | ५५ | " | " | | " | |
| ११*९×४*७ | ९ | २६ | " | " | | " | |
| ९*९×४*२ | १२ | ३६ | " | " | | " | दीधितिनाम्नी । |
| १९*१×२*७ | ६ | ७४ | " | " | | पू० | |
| ९*७×४ | १० | ४० | " | " | | अपू० | |
| १०*३×४*५ | १५ | ६० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११*६×३*२ | १० | ५२ | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणतः केवलान्व- यिप्रकरणान्तः । |
| ९*६×४*५ | १२ | ४२ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १०*५×४ | ८ | ४१ | " | " | | पू० | |
| ९*७×४*४ | १५ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ११*११*९ | १० | ५३ | " | " | | पू० | |
| ९*८×४*५ | ११ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १२*८×४*८ | ११ | ५३ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १०*११×३*५ | ९ | ५२ | " | " | | " | |
| १०-११×४*४ | १५ | ३३ | " | " | | " | |
| १०*४×४*५ | १५ | ४७ | " | " | | " | |
| १०*२×४*४ | १२ | ३९ | " | " | १८३० | पू० | |
| ९*६×३*७ | ९ | ३३ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|-----------------------------------|--|
| ३०२९८ | पदार्थतत्त्वखण्डनटीका | रघुदेवः | १-४३ । |
| ३०२९९ | क्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३०३०० | अभावज्ञानप्रतियोगिज्ञान- कार्यकारणभावरहस्यम् | | १-९ । |
| ३०३०१ | वायुप्रत्यक्षवादः | रामचन्द्रः | १-७ । |
| ३०३०२ | प्रागभावखण्डनम् | | १-८ । |
| ३०३०३ | मुक्तिवादः | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३०३०४ | योग्यानुपलब्धिविचारः | | १-१६ । |
| ३०३०५ | विधिवादः | गदाधरः | १-३२ । |
| ३०३०६ | न्यायग्रन्थविशेषः | | १ । |
| ३०३०७ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशः | १-९ । |
| ३०३०८ | लौकिकविषयताविचारः | | १-६ । |
| ३०३०९ | " | | १-६ । |
| ३०३१० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-१८६ । |
| ३०३११ | ज्ञानद्वयवादः | | १-११ । |
| ३०३१२ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | | ११ । |
| ३०३१३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठः | ५-२४ । |
| ३०३१४ | अभिनवताण्डवः | सत्यनाथयतिः | १-५४ । |
| ३०३१५ | तत्त्व०मण्यालोकरहस्यम् | मथुरानाथः | १९-७३, ७३-९७, ९७-१००, १०२-१२८, १-१२ । |
| ३०३१६ | अपूर्ववादः | | १-४२ । |
| ३०३१७ | अनुमितिविचारः | हरिरामभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३०३१८ | कारकवादः | जयरामन्यायपञ्चा- ननभट्टाचार्यः | २-४, ३४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| १०°१×४°२ | ९ | ४४ | दे. ना. | का. | १८४२ | पू० | |
| १०×४°३ | ११ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| ९°२×४°२ | ९ | ४० | " | " | | पू० | |
| १०°१×४°३ | १० | ४६ | " | " | १८२९ | " | |
| ९°६×४°६ | ८ | ३६ | " | " | | " | |
| १०°१×४°४ | १३ | ४९ | " | " | | " | |
| १०°१×४°३ | १० | ६० | " | " | १८३० | " | व्याप्तिवादहेत्वाभासयोः क्रोडपत्राणि च । |
| ९°६×४°१ | ७ | ३४ | " | " | | " | |
| ८°७×४°१ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | गुणादीनां साधर्म्यवैधर्म्यविचारात्मकः। |
| ९°३×४°२ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| ९°९×४°६ | ११ | ४० | " | " | | पू० | |
| १०°४×४°४ | १२ | ४४ | " | " | | " | |
| १०°२×४°३ | ९ | ४२ | " | " | | अपू० | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ९°६×४ | १० | ३१ | " | " | | पू० | अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण- भावविचारात्मकः । |
| ८°१×४ | ९ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ९°६×४°१ | ८ | २७ | " | " | | " | तर्कप्रकाशाभिधा । |
| ८°२×२°२ | १३ | २८ | " | " | | पू० | शब्दखण्डः । |
| १०°३×४ | ११ | ४८ | " | " | | अपू० | अपूर्ववादस्य । |
| ८°६×४ | ९ | २६ | " | " | | पू० | प्रथमवाक्यन्याख्यामात्रम् । |
| १०°६×४°६ | १२ | ४९ | " | " | | " | |
| ६°१×४°३ | ११ | ९ | " | " | | अपू० | अनुमितिसिद्धिनिश्चयः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् : |
|------------|--|-------------------------------------|-------------------------|
| ३०३१९ | अनुमितिचिचारः | हरिरामभट्टाचार्यः | १-२० । |
| ३०३२० | ईश्वरवादः | महादेवः | १-२८ । |
| ३०३२१ | " | " | १-१९ । |
| ३०३२२ | दीधितिटीका | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-२१ । |
| ३०३२३ | आख्यातवादः | रघुनाथशिरोमणिः | १-४ । |
| ३०३२४ | दीधितिटीका | विद्यानिवासपुत्रः न्यायवाचस्पतिः | १-१८ । |
| ३४३२५ | " | जयरामन्याय- पञ्चाननः | १-३१, ३३-३४ । |
| ३०३२६ | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-८३, ८३-१३० । |
| ३०३२७ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | हरिदासः | १-२७ । |
| ३०३२८ | किरणावलिप्रकाशः | वर्धमानोपाध्यायः | १-३८, ४०, ४२-४६ । |
| ३०३२९ | सुवर्थतत्त्वालोकः | विश्वनाथपञ्चाननः | १-१४ । |
| ३०३३० | दीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १-१७ । |
| ३०३३१ | आत्मतत्त्वविवेकः | उदयनाचार्यः | १-४६, ४६-५४, ५४-८१ । |
| ३०३३२ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | चूडामणिभट्टाचार्यः | २, ४-४१, ४३-७९, ७९-९१ । |
| ३०३३३ | विशिष्टवैशिष्ट्यबोधः | रघुदेवः | १-१७ । |
| ३०३३४ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | १, ३-८ । |
| ३०३३५ | तत्त्वमण्यालोकहस्यम् | मथुरानाथः | १-१४४ । |
| ३०३३६ | सामग्रीप्रतिबन्धकताविचारः | | १, ३-१४ । |
| ३०३३७ | सन्निकर्षविचारः | | १-१९ । |
| ३०३३८ | प्रत्यक्षसन्निकर्षयोःकार्य- कारणभावविचारः | | १-३० । |
| ३०३३९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-६० । |
| ३०३४० | कार्यकारणभावविचारः | | १-१६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|-------------|-------|----------|---------------------|-----------------------------------|
| ९०६×४२ | ९ | ३८ | दे. ना. का. | | | पू० | |
| ९०७×४ | ८ | ४२ | " " | | | " | |
| १०२×३३ | १२ | ४४ | " " | | | " | |
| १०७×४३ | १६ | ६४ | " " | | | " | आख्यातवादस्य । |
| ११९×४७ | १८ | ४३ | " " | | १८३९ | " | |
| १०६×३७ | ७ | ५० | " " | | | " | आख्यातवादस्य । |
| १०९×३६ | ९ | ५६ | " " | | | अपू० | " |
| १०७×४६ | १० | ४० | " " | | | पू० | |
| १२६×३८ | ९ | ५१ | " " | | | " | |
| ९०६×४३ | १२ | ४८ | " " | | | अपू० | प्रशस्तपादभाग्यटीकाटीका । |
| ११९×४६ | २० | ५१ | " " | | १८३६ | पू० | कारकचक्रं वा । |
| १३×५ | १३ | ६१ | " " | | १८७३ | " | एवकारवादस्य, एवकारटिप्पणं वा । |
| १०६×५२ | ११ | ३३ | " " | | | अपू० | |
| ७०८×३३ | ७ | १९ | " " | | | " | |
| ११×४ | १० | ५८ | " " | | | पू० | |
| ९०९×४४ | १४ | ३९ | " " | | | अपू० | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १०×३९ | ९ | ४५ | " " | | | " | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| ९०५×४५ | १२ | ४० | " " | | | " | |
| १०२×४४ | १२ | ३९ | " " | | | पू० | सन्निकर्षवादो वा । |
| १०२×४४ | १० | ४५ | " " | | १८२६ | " | |
| १०५×४४ | ११ | ४४ | " " | | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९०९×४६ | ११ | ३५ | " " | | १८१७ | पू० | सामान्यप्रत्यासत्तिप्रत्यक्षयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------|----------------------|
| ३०३४१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३०३४२ | " | | १-२ । |
| ३०३४३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-४, १-३ |
| ३०३४४ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१३ । |
| ३०३४५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-२७ । |
| ३०३४६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १० । (गणनया) |
| ३०३४७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ३०३४८ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-११ । |
| ३०३४९ | तत्त्व०मणिदीधितिरहस्यम् | | १-२४, २६-२८ । |
| ३०३५० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ८ । |
| ३०३५१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | ३-४७ । |
| ३०३५२ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१८, १८-२०, २०-२९ । |
| ३०३५३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनार्थशिरोमणिः | ३-४ । |
| ३०३५४ | " | " | १-४ । |
| ३०३५५ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १ । |
| ३०३५६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १२ (गणनया) |
| ३०३५७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१९ । |
| ३०३५८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३० । |
| ३०३५९ | स्वर्गलक्षणम् | " | १-२ । |
| ३०३६० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | " | ४ । गणनया) |
| ३०३६१ | सूक्तिः | जगदीशः | १-१८ । |
| ३०३६२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३०३६३ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकाकः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १००१×४३ | ७ | ४३ | दे. ना. | का. | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०×४३ | ७ | ४६ | " | " | | " | " |
| १०×४३ | ११ | ४७ | " | " | | " | " |
| १००१×४३ | ८ | ४७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२×५४ | ८ | ३२ | " | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । |
| १६६×३०७ | ७ | ७६ | वङ्ग | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १३०९×४०८ | १० | ६० | " | " | | अपू० | " |
| १७०८×४ | ८ | ८० | " | " | | पू० | " |
| १७०२×३०७ | ७ | ७४ | " | " | | अपू० | " |
| १५×३३०१ | ५ | ६० | " | " | | " | " |
| १७०७×३०५ | ८ | ८२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिसव्यभिचार- प्रकरणयोः । |
| १७०५×३०९ | ७ | ८५ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९०८×३०२ | ६ | ४४ | " | " | | " | " |
| १४०५×३०३ | ५ | ५६ | " | " | | " | " |
| १४०५×३०३ | ५ | ५७ | " | " | | " | " |
| १५०४×३०४ | ८ | ८१ | " | " | | " | " |
| १४०१×४०८ | ८ | ५३ | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य |
| १९०२×३०५ | ८ | ९२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १६०२×३०४ | ६ | ६१ | " | " | | " | मुक्तिवादश्च । |
| १९०४×३०६ | ७ | ९२ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १६०३×३०५ | १० | ७८ | " | " | | पू० | प्रशस्तपादभाष्यटीका । |
| १६०२×३०९ | ७ | ७३ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणांशस्य । |
| १२×३ | ५ | ५० | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणविशेषन्यासप्रकरणयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------------|-----------------|-------------------|
| ३०३६४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १। |
| ३०३६५ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १-६९। |
| ३०३६६ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १-४१६। |
| ३०३६७ | सर्वोपकारिणी | महादेवः | १-१३६, १-१०७। |
| ३०३६८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३३। |
| ३०३६९ | स्वप्रकाशरहस्यम् | | १-१६। |
| ३०३७० | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठः | १-९१। |
| ३०३७१ | सप्तपदार्थी | शिवादित्यः | १-११। |
| ३०३७२ | शिष्टलक्षणम् | | १-२। |
| ३०३७३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधिति- प्रकाशटीका | दिनकरः | १-१२३। |
| ३०३७४ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | २। (गणनया) |
| ३०३७५ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशः | १-१४। |
| ३०३७६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-८३। |
| ३०३७७ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशः | १-५६। |
| ३०३७८ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-१२०। |
| ३०३७९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-९४। |
| ३०३८० | सामग्रीवादायः | रघुदेवः | १-२१। |
| ३०३८१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१४। |
| ३०३८२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३३। |
| ३०३८३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | कृष्णभट्टः | १-४८। |
| ३०३८४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मधुरानाथः | १०। (गणनया) |
| ३०३८५ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशः | १-२। |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १७७५३६ | ७ | ८१ | वङ्ग. | का. | | अपूर्० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिसिद्धान्तलक्षण- प्रकरणयोः । |
| १३५३९ | ८ | ४९ | दे. ना. | " | श. १७३६ | पूर्० | |
| १००८५३६ | २९ | ५५ | " | " | १७४५ | " | |
| १००७५४४ | १४ | ५० | " | " | | अपूर्० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिप्रकाशटीका । |
| १२०८५४ | ११ | ५७ | " | " | | पूर्० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १००७५३६ | ८ | ५० | " | " | | " | |
| ११०५४३ | १४ | ५८ | " | " | | " | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| ९२५३३ | ७ | ४१ | " | " | | " | |
| ८०५३९ | १७ | ३९ | " | " | | " | वेदप्रामाण्यविचारे । |
| १००६५४३ | १४ | ५७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्यव्यधिकरण- प्रकरणपर्यन्ता । |
| १२३५३९ | ११ | ६६ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणांशस्य । |
| ११०५३६ | ८ | ४७ | " | " | | " | उपमानपरिच्छेदः । |
| १३५५ | १० | ४९ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १२०८५४८ | १३ | ७० | " | " | १८५७ | " | तद्धितप्रकरणान्ता । |
| १५३५२६ | ६ | ४४ | " | " | | " | अनुमानपरिच्छेदः । |
| १४०६५४५ | ७ | ५२ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १००२५४२ | ८ | ३४ | " | " | १८४७ | " | |
| ११०६५९८ | ११ | ३६ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १४३५४५९ | ९ | ४७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १२०५४७ | ९ | ४५ | " | " | | अपूर्० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । जगदीश- कृतटी० टी० । |
| १६०९३९ | ७ | ७५ | वङ्ग. | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| १८५३९ | ९ | ७८ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|-----------------------------|---------------------------|
| ३०३८६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः तर्क- वागीशः | १-१० । |
| ३०३८७ | " | " | २३-२७ |
| ३०३८८ | तत्त्व०मण्यालोकरहस्यम् | " | २-३६, ४०-६७, ६९-७६ । |
| ३०३८९ | न्यायलीलावतीप्रकाशः | वर्धमानः गङ्गेश्वरात्मजः | ७१-१६० । |
| ३०३९० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | " | ४ । (गणनया) |
| ३०३९१ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | गदाधरः | १-१२ । |
| ३०३९२ | भाषारत्नम् | कणादः | १, ३-१६ । |
| ३०३९३ | " | " | १-११ । |
| ३०३९४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-७ । |
| ३०३९५ | " | " | १९० । (गणनया) |
| ३०३९६ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-१७, १७-३० । |
| ३०३९७ | कारिकावली | विश्वनाथः | १-२२ । |
| ३०३९८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-७७ । |
| ३०३९९ | " | जगदीशः | १-३९ । |
| ३०४०० | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | ६ । (गणनया) |
| ३०४०१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ७ । " |
| ३०४०२ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३० । |
| ३०४०३ | " | जगदीशः | १-२० । |
| ३०४०४ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवमिश्रः | ८-१०३, १०३-१०४, १०६-१३२ । |
| ३०४०५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | रामकृष्णः | १-६, ९-१० । |
| ३०४०६ | " | " | १-१३, १६-८६ । |
| ३०४०७ | तार्किकरक्षाटीका | हरिहरः | ४१-५८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकाकः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-----------------------------|
| १९०१×३०५ | ८ | ८६ | वङ्ग. | का. | | पू० | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य |
| १९०४×३०४ | ८ | १०४ | " | " | | अपू० | मङ्गलवादस्य । |
| १६०१×३ | ७ | ८६ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १००९×३०८ | ८ | ५३ | मैथि. | " | | " | |
| १८०४×३०९ | ८ | ८१ | " | " | | " | बाधप्रकरणस्य । |
| १४०५×३०२ | ५ | ५४ | " | " | श. १७८२ | " | विधिवादस्य । |
| १६०७×३०५ | ७ | ८५ | " | " | | " | |
| १९०५×३०४ | ६ | ७७ | " | " | | पू० | |
| १९०१×३०५ | ८ | ९८ | " | " | | " | मुक्तिवादस्य । |
| १९०१×३०७ | ७ | १०२ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १६०१×३०८ | ७ | ७५ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १७०१×३०८ | ९ | ९० | " | " | | " | भाषापरिच्छेदइतिनामान्तरम् । |
| १७०९×३०७ | ६ | ७३ | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १७०३×३०५ | ८ | ७६ | " | " | | " | " |
| १९×३०४ | ७ | ८५ | " | " | | " | " |
| १९०५×३०५ | ९ | ८७ | " | " | | " | " |
| १८०४×३०९ | ८ | ७२ | " | " | | " | " |
| १८०३×३०९ | ८ | ९८ | " | " | | " | " |
| १००५×३ | ८ | ४६ | दे. ना. | " | | " | प्रत्यक्षखण्डीयः । |
| ९०७×३०६ | १० | ४० | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १००२×३०६ | ९ | ३९ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ९०४×३०८ | १० | ४६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|------------------------------------|---------------------------|
| ३०४२८ | त्रिलोचनचन्द्रिका | मणिकण्ठः | १-९ । |
| ३०४२९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-९ । |
| ३०४३० | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-१७ । |
| ३०४३१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१४ । |
| ३०४३२ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-४१ । |
| ३०४३३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३०४३४ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३३४३५ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-९ । |
| ३०४३६ | न्यायकुसुमाञ्जलिटीका | शङ्करमिश्र-राम- भद्रभट्टाचार्यौ | १-४८ । |
| ३०४३७ | क्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३०४३८ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | १ । |
| ३०४३९ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३०४४० | तर्कामृततरङ्गिणी | | ११ । ” |
| ३०४४१ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-८ । |
| ३०४४२ | ” | ” | १-७ । |
| ३०४४३ | पदार्थलक्षणम् | शङ्करः | १-९ । |
| ३०४४४ | न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकाशः | वर्द्धमानः | १-१२९, १-७३, १-१९, २-८१ । |
| ३०४४५ | प्रमाणप्रमोदः | चित्रधरशर्मा | १-३२ । |
| ३०४४६ | कारिकावली | विश्वनाथन्याय- पञ्चाननः | १-८, १९-१६ । |
| ३०४४७ | लाववगौरवरहस्यम् | गोकुलनाथः | १-२६ । |
| ३०४४८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पक्षधरः | १-९९, १०३-१०५, ११० । |
| ३०४४९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठशर्मा | १-५७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधातुः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|--|
| ११°६×४°७ | १६ | ५३ | दे. ना. | का. | १८३३ | पू० | कारकवण्डनमण्डनमात्रम् । |
| १४°७×४°६ | १४ | ५७ | " | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १८°२×३°७ | ५ | ६५ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १४°७×४°७ | १२ | ५५ | " | " | | " | कालीशङ्करीयम् । |
| १३°४×१ | ७ | ५२ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १३°४×४°३ | १४ | ६५ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३°३×४°४ | १२ | ६८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य, अन्ते विशेषव्याप्तेः पत्रद्वयमप्यस्ति । |
| १४°४×४°७ | १५ | ६० | " | " | | " | साधारणप्रकरणस्य । |
| १०×४°३ | १२ | ४५ | " | " | १८४१ | पू० | |
| १५°२×३°३ | ११ | ८५ | " | " | | अपू० | |
| १५°३×३°३ | १५ | ९६ | " | " | | " | व्याप्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १६°३×३°४ | ९ | ८६ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य, काली- शङ्करकोटपत्रञ्च । |
| ९°९५×४°२ | १२ | | तेलुगु | " | | " | |
| ९°२×३°६ | १० | ३४ | दे. ना. | " | | पू० | |
| १२°५×४°२ | ९ | ५० | " | " | १९०१(?) | " | |
| ८°२×३°९ | १७ | ५६ | " | " | | अपू० | |
| ११°२×३°२ | ६ | ३५ | " | " | | " | |
| ११°८×५°६ | १३ | ४८ | " | " | | पू० | |
| ७.९×२°७ | ५ | ४० | " | " | | अपू० | भाषापरिच्छेदइत्यपि नामान्तरम् । |
| १२×५°६ | १२ | ४५ | " | " | | पू० | |
| १२°२×३°१ | ६ | ६६ | " | " | | अपू० | शब्दाप्रामाण्यमारभ्यशक्तिवादांशः । |
| ९°९×४°१ | १० | ४२ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षवण्डस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--------------------|--|
| ३०४५० | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | २-३ । |
| ३०४५१ | न्यायकुसुमाञ्जलिः | उदयनाचार्यः | १-१६, १६-२३ = २४, २५-२६, २६-१५२ |
| ३०४५२ | तत्त्व०मण्यालोकदर्शनम् | महेशाठक्कुरः | १-१८ । |
| ३०४५३ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-१० । |
| ३०४५४ | पदार्थयदिव्यचक्षुः | उमापतिः | १० । (गणनया) |
| ३०४५५ | शब्दार्थतर्कामृतम् | श्रीकृष्णः | १-२३ । |
| ३०४५६ | न्यायकौस्तुभः | | ३-५६ । |
| ३०४५७ | " | महादेवपण्डितः | १-९ । |
| ३०४५८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | ४१-४८ । |
| ३०४५९ | " | " | १-७५, ७४, ७५-१२६ । |
| ३०४६० | तत्त्वचिन्तामणिटिप्पणी | | १ । |
| ३०४६१ | नव्वादः | रघुनाथशिरोमणिः | १-४+१ । |
| ३०४६२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-६८, १-४७, १-१४ । |
| ३०४६३ | निरुक्तिप्रकाशः | | १-३६ । |
| ३०४६४ | निश्चयत्वनिरुक्तिः | रघुदेवतर्कालङ्कारः | १-६ । |
| ३०४६५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-४२ । |
| ३०४६६ | " | " | १-३५ । |
| ३०४६७ | किरणावलीप्रकाशटीका | भगीरथः | ११-१२, १५-६५ = ६६, ६७-१२२, = १२३, १२४-१३१, १३३-१४७ । |
| ३०४६८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-२०३ । |
| ३०४६९ | " | जगदीशः | ५ (गणनया) |
| ३०४७० | तत्त्व०मणिरहस्यटीका | | २-१७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| ९२×३३ | ९ | २९ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १११×३२ | ६ | ४२ | " | " | १४३१ | पू०* | |
| ९०×४३ | १३ | ४२ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्यसिद्धान्तल- क्षणप्रकरणपर्यन्तम् । |
| ९७×४९ | ७ | २७ | " | " | | पू० | |
| ११९×४ | २९ | ८९ | " | " | | अपू० | |
| ९०×४९ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १०९×४८ | १२ | ५० | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डः । |
| १०२×५२ | १४ | ५५ | " | " | १८३० | पू० | उपमानखण्डः । |
| १०१×४३ | ११ | ३७ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणांशस्य । |
| १०८×४६ | १३ | ५१ | " | " | | पू०* | व्यधिकरणप्रकरणपूर्वपक्षव्याप्तयोः । |
| ९५×३९ | १३ | ५५ | मै. | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| ९२×२६ | ७ | ४३ | दे. ना. | " | | पू० | |
| ९०×४३ | १० | ४४ | " | " | | " | परामर्शकेवलान्वयिकेवलव्यतिरेकि प्रकरणानाम् । |
| ९०×४५ | १५ | ३९ | " | " | | अपू० | सिंहव्याघ्रलक्षणप्रकरणमारभ्य सिद्धान्तलक्षणप्रकरणांशस्य । |
| ८४×३८ | १० | ३४ | " | " | | पू० | अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण- भावमालम्ब्य । |
| ९९×४६ | ९ | ४३ | " | " | | अपू० | उपाधिप्रकरणस्य । |
| १०७×४८ | ११ | ४७ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०२×३८ | ८ | ३९ | " | " | | " | जलदाख्या । |
| ९९×४५ | १० | ४३ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ११२×३९ | ८ | ५१ | " | " | | " | उपाधिप्रकरणस्य । |
| ९७×४९ | १० | ३९ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकव्यधिकरणप्रकरणयोः, तत्त्वचिन्तामणि टी. टी. । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|---------------|-------------------|
| ३०४७१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३०४७२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-१४ । |
| ३०४७३ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १४ । (गणनया) |
| ३०४७४ | क्रोडपत्रम् | | २ । ” |
| ३०४७५ | ” | | १ । |
| ३०४७६ | ” | | १ । |
| ३०४७७ | ” | | १५-१६ । |
| ३०४७८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | ६१ । (गणनया) |
| ३०४७९ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २-१२ । |
| ३०४८० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | रघुदेवः | १-९१, ९१-१०१ । |
| ३०४८१ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाशः | नीलकण्ठभट्टः | १-६३ । |
| ३०४८२ | तर्कामृततरङ्गिणी | विश्वेश्वरः | १-२४ । |
| ३०४८३ | कार्यकारणभावविचारः | | १-२ । |
| ३०४८४ | न्यायकौस्तुभः | महादेवपण्डितः | १-१५५ । |
| ३०४८५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १, १३-२५ । |
| ३०४८६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-३८ । |
| ३०४८७ | ” | गदाधरः | १-५३, १-६६ । |
| ३०४८८ | तत्त्वचिन्तामणिटिप्पणी | | ४ । (गणनया) |
| ३०४८९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-१४, १४-१२० । |
| ३०४९० | तत्त्व०मण्यलोकटीका | ” | १-१९९ । |
| ३०४९१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | ” | १-४६, ८७-१२५ । |
| ३०४९२ | ” | ” | १-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०°४×९°२ | १६ | ३९ | दे. ना. | का. | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०°७×४°७ | ८ | ४४ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणांशस्य । |
| १०°९×३°७ | ८ | ५० | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिसव्यभिचारप्रकरण- योः, इयं दीधितिभिन्नास्ति । |
| ९°८×३°९ | १५ | ५५ | " | " | | " | प्रामाण्यवादस्य । |
| १०°१×४°२ | १३ | ४० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशस्य । |
| १०°५×४°५ | १७ | ५७ | " | " | | " | ज्ञानस्य सविषयकत्वस्य । |
| १०°८×३°७ | ८ | ५१ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणांशस्य । |
| ९°४×३°७ | ११ | ३५ | " | " | | " | उपाधिप्रकरणस्य । |
| ९°९×४°२ | ११ | ४२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०°२×४°६ | १० | ३६ | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्य सामान्य- लक्षणान्ता, गूढार्थतत्त्वदीपिकाख्या । |
| १०°१×३°३ | ९ | ५२ | " | " | | " | |
| ९°७×४°८ | ११ | ४६ | " | " | १८२३ | " | जगदीशकृततर्कामृतटीका । |
| ९°६×२°१ | ८ | ४६ | " | " | १८०९ | " | जन्यज्ञानत्वञ्जनोयोगयोः । |
| १०°१×५°२ | १४ | ३३ | " | " | | " | |
| ९°९×४°२ | ११ | ४३ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९°७×४°२ | १२ | ३९ | " | " | | " | " |
| १०°३×४°३ | ९ | ३९ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १४°५×३°९ | ७ | ५८ | मै. | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| ९°७×४°७ | १० | ४० | दे. ना. | " | | " | प्रमालक्षणान्यथाख्यातिवाद- प्रकरणयोः । |
| ९°८×४°६ | ११ | ४१ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| ९°९×४°६ | ११ | ४९ | " | " | | " | उपाधिविरुद्धसत्प्रतिपक्षप्रकरणानाम् । |
| १९°९×४°६ | ११ | ६४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|-----------------|--------------------------|
| ३०४९३ | लघुपरिभाषाविशेषः | | १-४ । |
| ३०४९४ | लकारविचारः | भवानन्दः | १-६ । |
| ३०४९५ | माथुरीकोडपत्रम् | | १-१३ । |
| ३०४९६ | बौद्धाधिकारविवृतिव्याख्या | गदाधरः | १-३१ । |
| ३०४९७ | प्रमाणपारायणम् | | १-१२ । |
| ३०४९८ | पदार्थीयदिव्यचक्षुः | उमापतिः | १-५१ । |
| ३०४९९ | पदार्थखण्डनटीका | रामभद्रः | १-३१, ३८ । |
| ३०५०० | न्यायलीलावती | वल्लभाचार्यः | ४-१७० । |
| ३०५०१ | न्यायवार्तिकम् | उद्योतकरः | १-२० । |
| ३०५०२ | न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिमिश्रः | १-४६ । |
| ३०५०३ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-६१ । |
| ३०५०४ | तत्त्वमण्यालोकरहस्यम् | रघुपतिः | ३९-९२, ९४-१२४, १३४-१८५ । |
| ३०५०५ | लक्षणावली | उदयनाचार्यः | १-७ । |
| ३०५०६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-६ । |
| ३०५०७ | वादार्थः | गदाधरः | ४ । (गणनया) |
| ३०५०८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १-१५, १९, २२-३७ । |
| ३०५०९ | पदार्थखण्डनव्याख्या | रघुदेवः | १-५४ । |
| ३०५१० | पदार्थतत्त्वनिर्णयटीका | आनन्दज्ञानमुनिः | ३०-१४० । |
| ३०५११ | प्रशस्तपादभाष्यम् | | १-४ । |
| ३०५१२ | लघुपरिभाषाविशेषः | | १-५७ । |
| ३०५१३ | लक्षणावलीप्रकाशः | महादेवः | १-१६, १६-२० । |
| ३०५१४ | लिङ्गोपहितलैङ्गिकभान- विचारः | | १-३७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ९०३४७ | १३ | ६९ | दे. ना. | का. | | अपू० | द्रव्यादिसप्तपदार्थविचारात्मकः । |
| ९०५४७ | १४ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १४०५२०८ | ५ | ४६ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १०४४३ | १२ | ४७ | " | " | | " | आत्मतत्त्वविवेकदीधितिटीका । |
| १०४४४५ | १२ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| १०४४३ | १३ | ४१ | " | " | | पू० | |
| १०३४३६ | ९ | ४५ | " | " | १६६५ | अपू० | |
| ९०४३९ | ७ | ३१ | " | " | | " | |
| ९०६४४५ | ९ | २१ | " | " | | पू० | पञ्चमाध्यायस्य । |
| ९०५४४५ | ९ | २७ | " | " | | " | " |
| १३४४ | ७ | ४१ | " | " | | अपू० | सिंहव्याघ्रलक्षणमारभ्य सामान्या- भावप्रकरणपर्यन्ता । |
| १०४३०८ | १० | ५० | " | " | | " | शब्दखण्डस्य, आलोकसङ्ग्रहो वा । |
| १००४४५ | ८ | ३४ | " | " | | पू० | |
| १२०४३०८ | ११ | ४३ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १६४३४ | ११ | ६७ | " | " | | " | अत्रोत्पत्तिवादः, लङ्घनवादः, एकाक्षि- वादः, युग्मतावादश्च । |
| १३४४३४ | ७ | ६७ | " | " | | " | |
| ९०५४३०८ | ८ | ३१ | " | " | १८०९ | पू० | |
| ९०४४३ | ११ | ४० | " | " | १५०१ | अपू० | |
| ११४४३७ | ८ | ४९ | " | " | | " | |
| १३०५५१ | १० | ५३ | " | " | १८९४ | पू० | |
| १२०५५ | १० | ५० | " | " | | " | लक्षणावलीटीका । |
| ८०६४३७ | १० | ३९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-------------------|--|
| ३०५१५ | अनुमितिपरामर्शवादः | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-१३ । |
| ३०५१६ | तत्त्वचिन्तामणिपत्रिका | | १ । |
| ३०५१७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ४ । (गणनया) |
| ३०५१८ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३०५१९ | साङ्ख्यविचारः | | १-२ । |
| ३०५२० | माथुरीपत्रिका | | २ । (गणनया) |
| ३०५२१ | तत्त्वमणिदीधितिटिप्पणी | | २ । ” |
| ३०५२२ | तर्कभाषाटीका | | १ । |
| ३०५२३ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३४, ४३-५६, ६३-१६७, २१२-२५२-३८७, १-७३, १-९२, १-५३, १-४३ । |
| ३०५२४ | शब्दसारमञ्जरी | | २-२१ । |
| ३०५२५ | कणादरहस्यम् | शङ्करमिश्रः | १-१४४ । |
| ३०५२६ | कारिकावलीटीका | देवीसहायः | १-२८ । |
| ३०५२७ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवमिश्रः | ८-२३, २५-२८, ३० । |
| ३०५२८ | ” | ” | ३२, १४१, २३३-२४५ । |
| ३०५२९ | लिङ्गोपहितलैङ्गिकभानविचारः | | १-३४ । |
| ३०५३० | न्यायलीलावतीटीका | रघुनाथशिरोमणिः | ५-१३, १५-१६, १८, ३५-५१, ५२, ५ |
| ३०५३१ | विषयतावादार्थः | हरिरामभट्टाचार्यः | १-१४ । |
| ३०५३२ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-२९ । |
| ३०५३३ | लक्षणावादः | रघुदेवः | १-३, १५-२१ । |
| ३०५३४ | वादार्थरत्नावली | | २-६ । |
| ३०५३५ | ” | रामभट्टः | १-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | अक्षरः | लिपिकालः | पूर्णा पूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|--------|-----------------|-------------------------|---|
| १२२×४ | १० | ९४ | दे. ना. | का. | | पू० | अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण- भावविचारात्मकः । |
| १६५×३३ | १२ | ९२ | " | " | | " | व्यधिकरणपक्षताप्रकरणांशयोः । |
| १६५×३३ | ९ | ७० | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १६४×३३ | ९ | ६६ | " | " | १९३० | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणांशस्य । |
| १२९×४१ | १० | ७० | मैथि. | " | | " | |
| १४८×४२ | १३ | ८१ | " | " | | अपू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १२×३४ | ८ | ९६ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| ९२×३९ | १९ | ४९ | दे. ना. | " | | " | |
| १३×४१ | ८ | ९१ | " | " | १९३६ श. १८०१ | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणमारभ्योपाधिपक्ष- तावयवसव्यभिचारसाधारणविरुद्ध- वाधप्रकरणानाम् । |
| १२६×३४ | ७ | ४१ | वङ्ग. | " | | " | षट्कारकविवेचनम् । |
| १२×४१ | ६ | ३८ | दे. ना. | " | | " | |
| १४७×७९ | ९ | ९३ | " | " | | " | कण्ठाभरणख्या । |
| ९९×३९ | ६ | ३४ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य, अन्तेमङ्गलवादस्यैकं पत्रमप्यस्ति । |
| ९२×२८ | ८ | ३९ | " | " | | " | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| ९७×४३ | १० | ३९ | " | " | १८१२ | पू० | |
| ११४×३९ | ७ | ४९ | " | " | १७१३ | अपू० | |
| ९७×४३ | ९ | ३७ | " | " | | पू० | |
| ९८×४३ | १० | ४८ | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| ७१×४४ | ११ | २९ | " | " | | " | |
| ८९×३९ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | ईश्वरे नित्यसुखव्यवस्थापनप्रकरणम् । |
| ८९×३९ | १० | ३९ | " | " | | पू० | ईश्वरवादो वा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|------------------|---|
| ३०५३६ | विधिवादः | | १-१३ । |
| ३०५३७ | विषयतावादः | | १-१० । |
| ३०५३८ | शक्तिवादः | | १-४ । |
| ३०५३९ | तत्त्वचिन्तामणिपरीक्षा | रघुपतिः | २३-५३, ५३-६२, ६४-७७, ७९-१०४, १०८-१०९, १११-१२३, १३२-१३४, १३८-१४३ । |
| ३०५४० | तत्त्व०मण्यालोकरहस्यम् | गोपीनाथः | ५६-८५ । |
| ३०५४१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | नारायणः | १-५ । |
| ३०५४२ | सामान्यलक्षणाविचारः | | १-७ । |
| ३०५४३ | सन्न्यायमणिमञ्जरी | | १-२ । |
| ३०५४४ | मितभाषिणी | माधवसरस्वती | १-५१ । |
| ३०५४५ | पदार्थमाला | जयरामभट्टाचार्यः | १-५४, ५४-५६, ६७, ७०-७१ । |
| ३०५४६ | पदार्थप्रकाशः | लौगाक्षिभास्करः | १-१२ । |
| ३०५४७ | पदार्थतत्त्वनिरूपणम् | | १-१०, १२ । |
| ३०५४८ | न्यायसूत्रम् | गौतमः | १-२२ । |
| ३०५४९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | ५ । (गणनया) |
| ३०५५० | अनुमितिपरामर्शयोः कार्य- कारणभावविचारः | | १-८ । |
| ३०५५१ | समासार्थनिर्णयः | रमानाथदासः | १-१३ । |
| ३०५५२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-१९, १९-२८ । |
| ३०५५३ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-८१, १-३५ । |
| ३०५५४ | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरः | १-१२ । |
| ३०५५५ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | ३३ । (गणनया) |
| ३०५५६ | सिद्धान्तमुक्तावलीटीका | महादेवः | १-७०, ८३-९९, १-२२, १-२७ । |
| ३०५५७ | सिद्धान्तमुक्तावलीमरीचिका | उमाकान्तः | १-१५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधा- नः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|------------|----------|------------------------|---|
| ९०६ X ४०४ | १९ | ४९ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ७०२ X ४०६ | १२ | ३० | " | " | | " | |
| ९०७ X ४०१ | ९ | ४३ | " | " | | पू० | गादाधरभिन्नः । |
| १००७ X ३०४ | १० | ५१ | वङ्ग. | " | श० १५०३ | अपू० | शब्दखण्डस्य । |
| १००८ X ३०२ | ११ | ५२ | दे.ना. | " | | " | " |
| १००१ X ४०१ | १४ | ५३ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकस्य । |
| ९०१ X ३०८ | १३ | ४४ | " | " | १७१० | " | |
| १३०१ X ६०८ | २१ | ५० | " | " | | अपू० | |
| ९०४ X ४०१ | ९ | ३६ | " | " | १५०९ | पू० | सप्तपदार्थाटीका । |
| ९०७ X ४०२ | १० | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ८०९ X ३०७ | ११ | ३३ | " | " | | पू० | |
| ८०८ X ३०९ | ७ | २१ | " | " | | अपू० | पदार्थखण्डनं वा । |
| १००७ X ४०४ | ९ | २९ | " | " | १५५८ | पू० | |
| १००२ X ३०८ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | अनुमानखण्डस्य । |
| १००८ X ३०५ | १० | ७१ | " | " | | पू० | |
| १२०८ X ३०४ | ७ | ४८ | " | " | | " | वादाथरत्नावल्यन्तर्गतः प्रतिभाति । |
| ९०९ X ४०३ | १० | ४५ | " | " | | अपू० | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| ९०४ X ४ | ९ | ४७ | " | " | १७७९ | पू० | |
| १००२ X ४०५ | ११ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| ११०६ X ३०५ | ९ | ४५ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य, पुस्तकस्या- स्य वाक्यपदीयदीधितिप्रकाश इत्यपि- नाम लिखितमस्ति । |
| ९०९ X ४०३ | ९ | ४५ | " | " | | " | शब्दखण्डान्ता । |
| ७०५ X ३०५ | १० | २९ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य, कारिकावलीटी.टी. । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|-----------------------------|---------------------------|
| ३०५५८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठदीक्षितः | १-४८ । |
| ३०५५९ | निमित्तकारणतावादः | | १-२ । |
| ३०५६० | न्यायवार्तिकम् | उद्योतकरः | ७७ । (गणनया) |
| ३०५६१ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | २०१ । ” |
| ३०५६२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १ । |
| ३०५६३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २ । (गणनया) |
| ३०५६४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ९०-९९, १०३-१३३, १३५-१५० । |
| ३०५६५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-२६, १३३-१३९ । |
| ३०५६६ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३०५६७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २८-३१ । |
| ३०५६८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ७ । (गणनया) |
| ३०५६९ | प्रतिवध्यप्रतिबन्धकभाव- विचारः | | २ । ” |
| ३०५७० | तत्त्वचिन्तामणिग्रहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १ । |
| ३०५७१ | सामग्रीव्याप्तिविचारः | | १-७ । |
| ३०५७२ | कार्यकारणभावविचारः | | १-७ । |
| ३०५७३ | कारिकावली | विश्वनाथन्याय- पञ्चाननः | ८ । (गणनया) |
| ३०५७४ | कारकाद्यर्थनिर्णयः | भवानन्दसिद्धान्त- वागीशः | १-३३ । |
| ३०५७५ | कारकवादः | जयरामपञ्चाननः | १-१६ । |
| ३०५७६ | कारकटिप्पणी | सिद्धान्तवागीशः | २३ । (गणनया) |
| ३०५७७ | कारकचक्रटीका | माधवः | १-४६ । |
| ३०५७८ | किरणवली | उदयनाचार्यः | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|------------|------------------------|--|
| ११*२×४*५ | ८ | ५४ | दे. ना. | का. | १७६७ | पू० | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ७*९×३*७ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| १३*४×४*२ | १० | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १४*३×१*९ | ६ | ११४ | वङ्ग. | " | | " | |
| १०*८×२*६ | ७ | ४९ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १५*८×२*८ | ६ | ८१ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १८*७×३*५ | ८ | ८२ | " | " | | " | व्याप्तिवादांशस्य । |
| १३×२*८ | ५ | ६८ | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्य बाधान्ता । |
| १४*१×३*१ | ५ | ४५ | " | " | | " | कारिकावली वा । |
| १४*८×२*८ | ५ | ६७ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणावच्छेदकत्वनिरुक्ति- सामान्याभावप्रकरणानाम् । |
| १३*३×४*२ | ८ | ५७ | मैथि. | " | | " | विशेषव्याप्तिसामान्याभावप्रकरणां- शयोः । |
| १६×३*४ | ११ | ६० | वङ्ग. | " | | " | जगदीशगदाधरमतयोः । |
| १५*९×३*२ | ८ | ८४ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ७*४×२*९ | १२ | ४१ | दे. ना. | " | १७१२ | पू० | सामग्रीकार्ग्ययोर्हेतुहेतुमद्भावस्वरूपः । |
| १०*८×३*५ | ८ | ४४ | " | " | | " | अनुमितिलाघवज्ञानादीनाम् । |
| १२*६×३*७ | ८ | ५० | वङ्ग. | " | | " | |
| १२*७×२*४ | ५ | ५७ | " | " | श. १८१५(?) | " | |
| १२*६×३*७ | १० | ६० | " | " | श. १७३६ | " | कारकव्याख्या वा । |
| १६*२×३*४ | ८ | ९७ | " | " | श. १७५९ | " | |
| १२*६×१*४ | १२ | ४५ | " | " | | " | |
| १४*५×३*५ | ६ | ६१ | " | " | | अपू० | गुणप्रकरणस्य, प्रशस्तपादभाष्यटीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|----------------|-------------------|
| ३०५७९ | माथुरीकोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३०५८० | तत्त्व०मणिदीधितिक्रोड- पत्रम् | | १ । |
| ३०५८१ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |
| ३०५८२ | कारकविचारः | | १ । |
| ३०५८३ | गादाधरीकोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३०५८४ | प्रतिबध्यप्रतिबन्धकभाव- विचारः | | १ । |
| ३०५८५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | २ । (गणनया) |
| ३०५८६ | निश्चयत्वानुगमः | | १ । |
| ३०५८७ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १ । |
| ३०५८८ | जागदीशीकोडपत्रम् | | १ । |
| ३०६८९ | व्याप्तिलक्षणानुगमः | | १ । |
| ३०५९० | माथुरीकोडपत्रम् | | १ । |
| ३०५९१ | जागदीशीकोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३०५९२ | " | | ४ । " |
| ३०५९३ | " | | ३ । " |
| ३०५९४ | " | | १ । |
| ३०५९५ | " | | १ । |
| ३०५९६ | " | | ९ । (गणनया) |
| ३०५९७ | " | | २ । " |
| ३०५९८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ३४-४२ । |
| ३०५९९ | तत्त्व०मणिदीधितिव्याख्या | | ३ । (गणनया) |
| ३०६०० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १०*६×४*३ | १० | ४६ | वङ्ग | का. | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १४*३×४*१ | ६ | ७१ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणस्य । |
| १६×२*६ | ६ | १०१ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १४*३×२*७ | ७ | ७७ | " | " | | " | कारिका, तद् व्याख्या च । |
| १७*७×३*८ | ८ | ९० | दे. ना. | " | | " | सत्प्रतिपक्षे मिश्रमतस्य । |
| १६×३*४ | १२ | ९१ | वङ्ग | " | | " | |
| १६*९×३*२ | ८ | ७९ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षे विभाजकलक्षणस्य । |
| ९*१×३*४ | ६ | ४२ | " | " | | पू० | |
| १३*७×३*९ | ७ | ७३ | मै. | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १६*३×३*३ | १० | ४८ | वङ्ग | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १६×३*४ | ११ | ८८ | " | " | | " | |
| १६*६×३*४ | ८ | ९२ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १६*८×३*४ | ८ | ७२ | " | " | | " | " |
| १४*४×३*६ | १२ | ८६ | " | " | | " | " |
| १६*३×३*३ | ११ | ९८ | " | " | | " | " |
| १६×३*४ | ८ | ८३ | " | " | | अपू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १६*८×३*४ | ११ | ८३ | " | " | | " | " |
| १६*१×३*४ | १० | ८२ | " | " | | " | " |
| १६*१×३*१ | १० | ९७ | " | " | | " | " |
| १४*८×२*४ | ६ | ६६ | " | " | | " | सामान्याभावविशेषव्याप्ति- प्रकरणयोः । |
| १७*४×३*१ | १० | १२० | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १६*४×२*१ | ६ | ८१ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याघ्रप्रकरणयोः । |

| क्र.संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|-------------------|---|
| ३०६०१ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | प्रगल्भः | ५७-९१, ९८-१०८, ११०-१९७, १९९-२०५, २०७-२५०, २५२-२५६ । |
| ३०६०२ | सिद्धान्तमुक्तावलीटीका | महादेवः | १-७९ । |
| ३०६०३ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १ । |
| ३०६०४ | भाषापरिच्छेदवृत्तिः | नारायणभिक्षुः | १-६४ । |
| ३०६०५ | सिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १-४२ । |
| ३०६०६ | न्यायसिद्धान्तदीपप्रभा | शेषानन्तः | १-४, ६-८, १०-१४, १४-३३, ३५-३८, ४०-४७, ४९-५७ । |
| ३०६०७ | न्यायसारः | | १-८६ । |
| ३०६०८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-५२ । |
| ३०६०९ | सिद्धान्तमुक्तावलीप्रकाशः | दिनकरः | १-८० । |
| ३०६१० | प्रशस्तपादभाष्यम् | प्रशस्तदेवः | १-८ । |
| ३०६११ | बाधनुद्धिप्रतिबन्धकता- रहस्यम् | | १-३३ । |
| ३०६१२ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | | १-११ । |
| ३०६१३ | न्यायसारः | माधवदेवः | १-१६३ । |
| ३०६१४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | २५, २८-२९ । |
| ३०६१५ | „ | „ | ५-२०, ३८-५९ । |
| ३०६१६ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १-२० । |
| ३०६१७ | पदार्थदीपिका | कोण्डभट्टः | १-१६ (=१७-१८), १९-३५ । |
| ३०६१८ | न्यायचूडामणिः | माधवसरस्वती | १-१९, २१-३८ । |
| ३०६१९ | „ | „ | १-३१ । |
| ३०६२० | न्यायकलिका | जयन्तभट्टः | १-१४ । |
| ३०६२१ | नव्यादव्याख्या | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-१८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| १०*२×३ | ७ | ५४ | दे.ना. | का. | | अपू० | प्रत्यक्षेप्रामाण्यवादमारभ्य समवाय- वादान्ता । |
| १२*९×३*९ | ९ | ५५ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षानुमानखण्डयोः |
| १३*१×२*९ | ३ | ३६ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रप्रकरणयोः । |
| ९*६×३*४ | ९ | ४३ | " | " | १७६८ | " | कारिकावलीटीका । |
| १२*२×४*२ | ११ | ६४ | " | " | श. १८०५ | " | " |
| १०*१×३*१ | ७ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| ८*८×३*८ | १० | ४२ | " | " | | " | अत्रद्रव्यादिपदार्थनिरूपणम् |
| १०*३×४*५ | ११ | ६२ | " | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १२*४×३*८ | ७ | ५७ | " | " | | " | कारिकावलीटीकाटीका उपमानमा- रभ्यगुणनिरूपणान्तः । |
| १०*१×३*७ | ८ | ३९ | " | " | | " | द्रव्यनिरूपणान्तम् । |
| १०*३×३*५ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| १०*२×३*५ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १०*९×४*५ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ९*१×४*२ | ११ | ४९ | " | " | श. १६१० | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १०×४*३ | ९ | ५० | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणमारभ्य सिद्धान्त- लक्षणान्तम् । |
| ११*७×४*९ | १८ | ४१ | " | " | | पू० | |
| ११*७×४*७ | ११ | ३४ | " | " | १७४२ | "* | |
| ११*४×४ | ८ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ११*४×४*१ | ९ | ४३ | " | " | | पू० | |
| १२*३×५ | १५ | ४५ | " | " | १८५३ | " | |
| १०×४*५ | ११ | ३८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------|--|--|
| ३०६२२ | नञ्वादः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |
| ३०६२३ | तर्कामृततरङ्गिणी | मुकुन्दभट्टः | १-२२ । |
| ३०६२४ | तर्कसङ्ग्रहवाक्यार्थनिरुक्तिः | | १-२७ । |
| ३०६२५ | तर्कसङ्ग्रहभावार्थदीपिका | वराहाचार्यः | ६-४७ । |
| ३०६२६ | तर्कभाषाभावार्थदीपिका | गौरीकान्त- भट्टाचार्यः | १-१३६ । |
| ३०६२७ | तर्कप्रतिबन्धकत्वविचारः | | १-८ । |
| ३०६२८ | न्यायलीलावतीदीधितिटीका | रामकृष्णः | १-३३ । |
| ३०६२९ | न्यायरत्नम् | मणिकण्ठः | १, ३-७५ । |
| ३०६३० | नञ्वादन्याख्या | विश्वनाथपञ्चाननः | १-१८ । |
| ३०६३१ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठदीक्षितः | १-५० । |
| ३०६३२ | " | " | १-६२ । |
| ३०६३३ | " | " | २६-५२ । |
| ३०६३४ | वर्धमानेन्दुः | पद्मनाभः | १-५, ११-१३१ । |
| ३०६३५ | न्यायलीलावत्यनुनयः | " | २-१७५ । |
| ३०६३६ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठदीक्षितः | १-२१ = (२२) २३-२९ = (३०) ३१-१०४, १०४-१५२, १५४-१६८ । |
| ३०६३७ | न्यायसारविचारः | राघवभट्टः | ४-८, १०-२७, १९-२३, २६-५५, ५७-६०, ६२-७२, ७५-१०२ । |
| ३०६३८ | न्यायोपसंहारसूत्रवृत्तिः | राजारामटोपरः | २-९ । |
| ३०६३९ | नञ्वादः सटीकः | रघुनाथशिरोमणिः, टी.का.—रघुदेव- भट्टाचार्यः | १-४, १-१६ । |
| ३०६४० | नञ्वादटिप्पणी समूहा | टि.का.रामचन्द्रवा- गीशः, मू. का.भट्टा- चार्यशिरोमणिः | १-९ । |
| ३०६४१ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१८, ४४-५३, ६५-७७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | विभिः | आशयः | विभिकारः | पूर्ण- विकेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|------|----------|------------------|---------------------------------------|
| ११*१×४*३ | १९ | ६४ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १२×४*६ | १२ | ४६ | " | " | | " | तर्कामृतटीका । |
| १०*९×४*७ | १० | ४० | " | " | | " | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| १२*९×४*७ | १२ | ४९ | " | " | | अपू० | " |
| १२*७×४*८ | ११ | ५२ | " | " | १८७१ | पू० | तर्कभाषाटीका । |
| १०×४*३ | १२ | ४७ | " | " | | " | |
| १०×४*४ | ८ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| ८*९×३*१ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| १०*८×४*६ | ११ | ५१ | " | " | १७९७ | पू० | |
| ९*८×४*१ | ८ | ५० | " | " | | " | |
| ९*८×४*२ | ८ | ५२ | " | " | १८४२ | " | |
| ११*६×४*४ | १३ | ६५ | " | " | | " | |
| ११*९×३*३ | ८ | ५६ | " | " | श. १९०८ | अपू० | किरणावलीप्रकाशटीका । |
| ११*५×३*२ | ८ | ४८ | " | " | | " | |
| ११*१×४ | ८ | ५५ | " | " | १८४६ | " | तर्कप्रकाशश्रव्या |
| ८*५×२*७ | ९ | ३६ | " | " | श. १४४८ | " | न्यायसारटीका । |
| ८*६×४*५ | १२ | ६९ | " | " | | " | |
| ८*१×४ | ११ | २८ | " | " | | " | |
| १०*२×५*१ | २० | ५६ | " | " | | पू० | |
| ९*२×४*२ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकाद्व्यधिकरणप्रकरणान्ता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|---------------------------------------|--------------------------|
| ३०६४२ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | २-२८, ३१-३७ । |
| ३०६४३ | तर्कभाषाप्रकाशिका | कौण्डिन्यदीक्षितः | १-५४ । |
| ३०६४४ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | टीकाकारावन्न- म्भट्ट-चन्द्रसिंहौ | १-३० । |
| ३०६४५ | तर्कसङ्ग्रहवाक्यवृत्ति- शिवकल्पलता | मेरुशास्त्री, तत्सुतश्च | १-३७, ३७-५४ । |
| ३०६४६ | दशलकारार्थमञ्जरी | सिद्धान्तवागीशः | १-४ । |
| ३०६४७ | तार्किकरक्षासारसङ्ग्रहः | वरदराजः | १-९७ । |
| ३०६४८ | तर्कामृतं सटीकम् | जगदीशभट्टाचार्यः, टी.का. गङ्गारामः | १-९७, ९७-१०२, १०१-१०७ । |
| ३०६४९ | तर्कसङ्ग्रहोपन्यासः | | १-२२, २४-४३ । |
| ३०६५० | तर्कामृतम् | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१८ । |
| ३०६५१ | तर्कामृतं सटीकम् | | १-२८ । |
| ३०६५२ | " | | १-५६ । |
| ३०६५३ | " | जगदीशभट्टाचार्यः, टी.का. गङ्गारामः | १-७१ । |
| ३०६५४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३०६५५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३०६५६ | " | | १-४६ । |
| ३०६५७ | जागदीशीपत्रिका | | १-३२ । |
| ३०६५८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-४४ । |
| ३०६५९ | जागदीशीमञ्जूषा | कृष्णम्भट्टः | २३ । (गणनया) |
| ३०६६० | न्यायरत्नम् | मणिकण्ठः | १-२५, २७-४७ । |
| ३०६६१ | जागदीशीमञ्जूषा | | १-९, (= ९ + १०) ११-१०६ । |
| ३०६६२ | नवीनमतवादार्थः | | १-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|--|
| ९०९३०५ | ११ | ४८ | दे. ना. | का. | १७६१ | अपू० | कार्यलक्षणान्तादीपिका, तदग्रे- पदकृत्यम् । तर्कसङ्ग्रहटीकाटीका । |
| १००१५५४ | १० | ४३ | " | " | | पू० | |
| १००८५४६ | ८ | ३९ | " | " | १८२८ | अपू० | |
| १२०५५५४ | ९ | ५१ | " | " | | " | |
| ११०८५५२ | १९ | ४० | " | " | | पू० | टीका-चषकाख्या । |
| १००५३०८ | ८ | ४२ | " | " | १६७२ | " | |
| १००९५५ | १४ | ४१ | " | " | १८१८ | " | |
| ८०८५५२ | ९ | २८ | " | " | १८९५ | अपू० | |
| १००४५५२ | ९ | २८ | " | " | | पू० | शब्दखण्डमात्रम्, टीका चषकाख्या । अनुमानोपमानखण्डौ, " । प्रत्यक्षखण्डमात्रम्, " । |
| १००२५३०८ | १० | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १००२५३०८ | ८ | ४७ | " | " | १८२६ | पू० | |
| १२०२५३०८ | ८ | ४१ | " | " | | " | |
| १३०३५४४ | १० | ५९ | " | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १४५५५५ | १३ | ४५ | " | " | १९२० | पू० | व्याप्तिपञ्चकात्सिंहव्याघ्रलक्षणान्ता |
| १४०४५५४ | १० | ३४ | " | " | १९२१ | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १४०६५४८ | ८ | ४६ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३०९५५३ | १२ | ४५ | " | " | | पू० | " |
| १२०९५४८ | ९ | ४३ | " | " | | " * | व्यधिकरणप्रकरणस्य, तत्त्वमणि- दीधिति टी. टी. |
| १२०६५४ | ९ | ६५ | " | " | १६२२ | अपू० | व्याप्तिपञ्चकाद्व्यधिकरणान्ता । अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण भावोऽत्र । |
| १२०९५४८ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १००२५४४ | १६ | ६२ | " | " | १७७४ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्यादिवरणम् |
|------------|---------------------------------------|-------------------|-------------------|
| ३०६६३ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | महादेवः | १-३, ३-३७ । |
| ३०६६४ | न्यायभाष्यम् | वात्स्यायनः | १-१९ । |
| ३०६६५ | तात्पर्यपरिशुद्धिः | उदयनाचार्यः | १-२९ । |
| ३०६६६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-४७ । |
| ३०६६७ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | ११-८७ । |
| ३०६६८ | तत्त्वचिन्तामणिव्याख्या | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-२५ । |
| ३०६६९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-४, ४-१५ । |
| ३०६७० | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१९ । |
| ३०६७१ | अपूर्ववादः | | २-१८, १८-२२ । |
| ३०६७२ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३२, ३२-९९ । |
| ३०६७३ | गदाधरीटीका | | ६६-८० । |
| ३०६७४ | त्वङ्मनोयोगवादः | | १-६ । |
| ३०६७५ | तार्किकरक्षासारसङ्ग्रहः | वसुदेवराजः | १-५४ । |
| ३०६७६ | तार्किकरक्षाव्याख्या | महाशर्मा | १-४७ । |
| ३०६७७ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १८६-१३४ । |
| ३०६७८ | नववादः | रघुनाथशिरोमणिः | १-४ । |
| ३०६७९ | द्रव्यसारसङ्ग्रहः | रघुवीरः | १-६ । |
| ३०६८० | दशलकारमञ्जरी | सिद्धान्तवागीशः | १-६ । |
| ३०६८१ | शब्दार्थतर्कानृतम् | श्रीकृष्णः | १-३० । |
| ३०६८२ | दण्डकारणताविचारः | | १-३ । |
| ३०६८३ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१०६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आद्याः | लिपिकालः | पूर्णार्पूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|---------------------------|--|
| १२३×४६ | १० | ५६ | दे. ना. | का. | १७८८ | अपू० | |
| ९६×४१ | ९ | २६ | " | " | | " | पञ्चमोऽध्यायः । |
| ९७×४५ | १० | ३० | " | " | | " | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीकाटीका, पञ्चमोऽध्यायः । |
| १४८×४७ | ९ | ५७ | " | " | १९२६ | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १३×४ | १० | ५३ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १२५×४१ | ९ | ५० | " | " | | पू० | " |
| १३३×५२ | १६ | ६२ | " | " | | अपू० | अवयवप्रतिज्ञालक्षणयोः । |
| १०२×४३ | १२ | ३६ | " | " | | पू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०×३७ | १० | ४० | " | " | | अपू० | |
| १२८×३९ | ९ | ४८ | " | " | १८५४ | पू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १२६×४९ | १२ | ५४ | " | " | | " | तच्च.मणि. दी. टी.टी., केवलान्वयि- प्रकरणस्य । |
| ६५×३३ | ८ | २४ | " | " | | " | ज्ञानत्वङ्मनोयोगयोः कार्यकारण- भावविचाररूपः । |
| १०२×३९ | ८ | ३३ | " | " | श. १५३६ | " | प्रथमपरिच्छेदमात्रम् । |
| ९६×३३ | ८ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १२९×३९ | १० | ६३ | " | " | | " | बाधप्रकरणस्य । |
| ९५×४ | ८ | ४० | " | " | | पू० | |
| ९७×३७ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ८३×४ | १२ | ३३ | " | " | | पू० | |
| ९५×४१ | ८ | ३५ | " | " | १८८५ | " | |
| ९×४ | ८ | ४० | " | " | | " | प्रथमपृष्ठे रत्नाकरस्य केचन श्लोकाः । |
| १४५×५७ | ९ | ६२ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------|-------------------------------|
| ३०६८४ | जागदीशीमञ्जूषा | | १-६८ । |
| ३०६८५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-६६ । |
| ३०६८६ | " | " | १६-३० । |
| ३०६८७ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१४ । |
| ३०६८८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-४, ६-२८, ३०-१४४, १५७-२०१ । |
| ३०६८९ | तर्कामृतचपकः | गङ्गारामः | १-६६, १-२६ । |
| ३०६९० | " | " | १-९८, १०८-१०९ । |
| ३०६९१ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-३ । |
| ३०६९२ | तर्कभाषाव्याख्या | | १-१५ । |
| ३०६९३ | " | | ८ । (गणनया) |
| ३०६९४ | तर्कपरिभाषा | केशवाचार्यः | १-३९ । |
| ३०६९५ | गादाधरीशाङ्करी | | १-१८ । |
| ३०६९६ | सप्तपदार्थी | शिवादित्यमिश्रः | १-८ । |
| ३०६९७ | " | " | १-१३ । |
| ३०६९८ | " | " | १-७ । |
| ३०६९९ | सप्तपदार्थटीका | माधवः | २-४, ६-५८ (५९) ६०-८०, ८२-९४ । |
| ३०७०० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १ । |
| ३०७०१ | " | " | १-१३ । |
| ३०७०२ | " | " | ९ । (गणनया) |
| ३०७०३ | " | " | १-४७, ४७-१०५ । |
| ३०७०४ | न्यायग्रन्थविशेषः | | १८ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १२०७×४०७ | १० | ४६ | दे. ना. | का. | | अपू० | तत्त्व०मणिदीधितिटी. टी., सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १२०६×३०७ | ९ | ५६ | " | " | | पू० | " |
| १३०६×४०४ | ७ | ६२ | " | " | | अपू० | " |
| १२०८×४०६ | ११ | ५७ | " | " | | पू० | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १२०६×३०८ | ९ | ६२ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकात्सामान्यलक्षणा- प्रकरणान्ता । |
| १३०३×५ | ८ | ६० | " | " | | पू० | |
| ९०७×४०२ | ११ | ५३ | " | " | | अपू० | |
| १००१×४०७ | १८ | ५६ | " | " | | " | |
| ८०६×३०७ | १२ | ३४ | " | " | | " | |
| ८०६×३०७ | १४ | ३८ | " | " | | " | |
| १००६×४०२ | ९ | २८ | " | " | १६७४ | पू० | |
| ११०७×४०९ | १२ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| ११०३×४०५ | ९ | ४१ | " | " | १७१३ | पू० | तत्त्व०मणि. दी. टी. टी., सामन्य- निरुक्तिप्रकरणस्यकोटपत्रम् । |
| ९०२×४०२ | ८ | ३३ | " | " | १८१६ | " | |
| ९×३०५ | १२ | ३३ | " | " | १९०३ | " | |
| ७×२०६ | ९ | ३१ | " | " | श. १६०३ | अपू० | मितभाषिणीनान्नीटीका । |
| १२०३×४०३ | ७ | ४४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३०६×२०८ | ६ | ५३ | " | " | | " | " |
| १२०९×४०१ | ९ | ७२ | " | " | | पू० | साधारणप्रकरणस्य । |
| १२०८×३०९ | ९ | ६० | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिमारभ्य सत्प्रति- पक्षान्ता । |
| ११०६×१०४ | ५ | ६६ | मै० | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|-------------------------|----------------------------------|
| ३०७०५ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | १-२६ । |
| ३०७०६ | गदाधरीशाङ्करी | | १-५ । |
| ३०७०७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३४, ३४-४४ । |
| ३०७०८ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१३ । |
| ३०७०९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-१५ । |
| ३०७१० | " | " | २०-८५ । |
| ३०७११ | अनुमितिपरामर्शकार्यकार- णभावघटकसम्बन्धविचारः | महादेवः | १, १-२ । |
| ३०७१२ | पदार्थतत्त्वनिरूपणम् | रघुनाथशिरोमणिः | १-७ । |
| ३०७१३ | " | | ८ । |
| ३०७१४ | " | " | २-४ । |
| ३०७१५ | पदार्थतत्त्वविवृतिः | माधवः | १-७ । |
| ३०७१६ | प्रशस्तपादभाष्यम् | प्रशस्तपादाचार्यः | १-९ । |
| ३०७१७ | " | " | ६ । (गणनया) |
| ३०७१८ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१५ । |
| ३०७१९ | रात्रिविचारः | | १-२ । |
| ३०७२० | तत्त्वचिन्तामणिटिप्पणी | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-१७३(=१)१७४-१८८, (१-३)१८९-२७८ । |
| ३०७२१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-६, ८-१९४ (=१) १९५-२३ । |
| ३०७२२ | " | " | २८ । (गणनया) |
| ३०७२३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-४ । |
| ३०७२४ | " | " | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९*६×४*६ | ७ | २९ | दे. ना. | का. | श. १७६३ | पू० | तत्त्व०मणि. दी. टी. टी., सामान्य निरुक्तिप्रकरणस्य, कृष्णम्भट्टवादार्थ इत्यपि नामान्तरम् । |
| ११×५*८ | १४ | ४३ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्यक्रोडपत्रम् तत्त्व. मणि. दी. टी. टी. |
| १३×४*२ | ७ | ५८ | दे. ना. | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३×४*३ | ७ | ५८ | " | " | | " | " |
| १२*५×४*७ | ११ | ४१ | " | " | | " | अनुमितिग्रन्थे सङ्गतिप्रकरणस्य । |
| १२*५×४*७ | १० | ५३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०*१×४*४ | ९ | ४७ | " | " | | " | |
| १५×३*२ | ६ | ५४ | वङ्ग | " | | पू० | पदार्थखण्डनमित्यपिनामान्तरम् । |
| १७*२×३ | ७ | ८७ | " | " | | अपू० | " |
| १७*९×३ | ७ | ७९ | " | " | | " | " |
| १८*२×४ | ८ | ६४ | " | " | | " | पदार्थतत्त्वनिरूपणटीका । |
| १५*१×३*२ | ५ | ६२ | " | " | | पू० | द्रव्यप्रकरणान्तम् । |
| १६*८×३ | ७ | ९१ | " | " | | अपू० | |
| १७*१×३*८ | ८ | ८३ | " | " | | " | योग्यताप्रकरणस्य । |
| १६*८×३ | ८ | ८० | " | " | | पू० | अपूर्ववादश्च । |
| १६*९×३*३ | ७ | ८१ | " | " | | " | तत्त्व०मणिरहस्यामित्यपि नामान्त- रम् , अनुमित्यादिवाधान्ता । |
| १६*८×३*५ | ८ | ८२ | " | " | श. १६८१ | अपू० | अवयवप्रकरणमारभ्य वाधान्ता । |
| १७×३ | ५ | ६४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य, सव्य- भिचारसत्प्रतिपक्षावयवव्याप्त्यनु- गमप्रकरणानां दीधितिरप्यस्ति । |
| १७*९×३*८ | ७ | ७० | " | " | | " | विशेषव्याप्त्यतएवचतुष्टयप्रकरणयोः। |
| १७.५×३ | ७ | ९० | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|----------------------------|-------------------|
| ३०७२९ | अधिकरणत्वविचारः | | १-६ । |
| ३०७२६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३०७२७ | " | | १-२ । |
| ३०७२८ | " | | १ । |
| ३०७२९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-२ । |
| ३०७३० | माथुरीक्रोडपत्रम् | | ८ । (गणनया) |
| ३०७३१ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशः | १-७०, ७६-८९ । |
| ३०७३२ | तत्त्व०मणिदीधितिसार- मञ्जरी | भवानन्दः | १-१९० । |
| ३०७३३ | तात्पर्यविचारः | | १-४ । |
| ३०७३४ | शक्तिवादविवरणम् | कृष्णम्भट्टः | १-४८ । |
| ३०७३५ | सप्तपदार्थटीका | माधवसरस्वती | १-९० । |
| ३०७३६ | ज्ञानद्वयविचारवादः | रामचन्द्रः | १-६ । |
| ३०७३७ | तर्कचन्द्रिका | हरिरामः | १-१७ । |
| ३०७३८ | " | " | १-१८ । |
| ३०७३९ | " | " | १-१४ । |
| ३०७४० | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-३० । |
| ३०७४१ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-१० । |
| ३०७४२ | तर्कसङ्ग्रहटीका | | १-६ । |
| ३०७४३ | तर्कसङ्ग्रहचन्द्रिका | सुकुन्दः | १-२७, १-३५ । |
| ३०७४४ | तर्कसङ्ग्रहवाक्यवृत्ति- व्याख्या | | १-३७, ३७-४४ । |
| ३०७४५ | तर्कामृतसंचपकम् | जगदीशः च. का. गङ्गारामः | ९९-१०७, ११०-१३६ । |
| ३०७४६ | तर्कामृतचपकतात्पर्यम् | गङ्गारामः | ४०-२२५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|----------|-------|----------|-------------------------|---|
| १०८×३ | ५ | ४१ | वङ्ग. | का. | | अपू० | |
| १७२×३३ | ११ | ७६ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य |
| १६०×३३ | ६ | ६४ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १८०×३३ | ११ | ९५ | " | " | | " | पाक्षतासिंहव्याघ्रप्रकरणयोः । |
| १५०×३३ | ७ | ६१ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १५१×३ | ८ | ६० | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १२२×५ | ५ | ६९ | " | " | श. १७२८ | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य बाधान्तः । |
| १७०×२० | ७ | ७४ | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणात्सामान्यलक्षणा- न्ता, दीधितिप्रकाशइत्यपि नामान्तरम् |
| १×२० | १० | ५५ | दे.न्ता. | " | | " | |
| १४×५२ | ९ | ४७ | " | " | | " | |
| १०५×४ | ९ | ३५ | " | " | | " | मितभाषिणीत्यपि नाम । |
| १०×४२ | १६ | ४० | " | " | १७८० | " | |
| १००×४५ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १००×४५ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| ९०×४३ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| १०४×३३ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| ८०×४३ | १० | २९ | " | " | १८६४ | " | |
| १००×४५ | १४ | ४४ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डान्ता । |
| ८०×३९ | ९ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १२०×४३ | ११ | ४३ | " | " | | पू० | तर्कसङ्ग्रहटीकाटीका, शिवकल्प- लताख्या । |
| ९०×४४ | १५ | ५८ | " | " | | अपू० | |
| ९०×५१ | १८ | ४२ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|---------------------------------------|--|
| ३०७४७ | अनुमितिपरामर्शवादः | रघुदेवः | १-१९ । |
| ३०७४८ | अनुमानप्रमाणसिद्धिः | | १-१५ । |
| ३०७४९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-२९ । |
| ३०७५० | " | | १-११ । |
| ३०७५१ | तत्त्वचिन्तामणिविवेचनम् | विद्यानिवासः | १-६८ । |
| ३०७५२ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-८४, ८७-१२५ । |
| ३०७५३ | कारणतावादः | शूलपाणिः | १-२१ । |
| ३०७५४ | उपसर्गनिपातद्योतकत्व- वाचकत्वविचारः | हरिकृष्णपन्तः | १-१२ । |
| ३०७५५ | ईश्वरवादः | | १-४ । |
| ३०७५६ | आख्यातविवेकः | शिरोमणिभट्टा- चार्यः | १-१५ । |
| ३०७५७ | आख्यातवाददीपिका | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-२८ । |
| ३०७५८ | शब्दशक्तिप्रकाशिका- प्रवाधिनी | रामभट्टसिद्धान्त- वागीशभट्टाचार्यः | १-५३ । |
| ३०७५९ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशभट्टाचार्यः | २६-९४ । |
| ३०७६० | शब्दपरिच्छेदः | रुद्रन्यायवाचस्पतिः | १-११५ । |
| ३०७६१ | शक्तिवादव्याख्या | महादेवः | ८-१४ । |
| ३०७६२ | गादाधरीव्याख्या | | १-३५ । |
| ३०७६३ | शक्तिवादः | गदाधरः | १-३१ । |
| ३०७६४ | गादाधरीटीका | कृष्णभट्टः | १-३३, ३६, ३८-१०१+१०२-११२, ११२-२०४ । |
| ३०७६५ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-४३, ४५ । |
| ३०७६६ | " | " | १-३३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९०५३०७ | ९ | ३६ | दे. ना. | का. | १८०५ | पू० | अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण- भावविचारात्मकः । |
| ८०९३०५ | १३ | ४० | " | " | १७४६ | " | |
| ११०३४४०५ | १२ | ४२ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकाद्व्यधिकरणान्ता, परामर्शप्रकरणस्यैकं पत्रञ्च । |
| १२०६४४०८ | १२ | ६० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११०१४३०१ | १० | ६२ | वज्र. | " | श. १५२५ | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| ११०४४३०९ | ९ | ५० | दे. ना. | " | | " | अवयवसव्यभिचारप्रकरणयोः । |
| ७०९४४ | ८ | २७ | " | " | १९९१ | पू० | |
| ७०३४४०५ | ११ | २३ | " | " | | " | |
| ८०७४३०७ | १० | ३० | " | " | | " | |
| ९०८४४०१ | ८ | २४ | " | " | श. १६९२ | " | |
| ८०९४३०९ | १२ | ३६ | " | " | | " | |
| ९०८४४०२ | ९ | ४९ | " | " | | " | |
| १२०५४४०७ | १० | ५५ | " | " | १८५५ | अपू० | |
| ९०४४४०१ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| १०४५ | १८ | ४५ | " | " | | " | |
| १२०१४४०७ | ११ | ५७ | " | " | | पू० | तत्त्व०मणिदी.टी.टी., काशिकानाम्नी, व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| ११०३४४०७ | १० | ४४ | " | " | | " | सामान्यकाण्डान्तः । |
| १२०७४४०८ | ९ | ५४ | " | " | | अपू | तत्त्व०मणिदी.टी.टी., पूर्वपक्षव्यधि- करणप्रकरणयोः । |
| १२०५४३०९ | ९ | ६० | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १२४५०६ | १६ | ४५ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|------------------|---|
| ३०७६७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१७ । |
| ३०७६८ | चपकतात्पर्यम् | | ८१-१५७ । |
| ३०७६९ | " | गङ्गारामः | १-४१ । |
| ३०७७० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३०७७१ | चपकतात्पर्यम् | गङ्गारामः | १-१३, १५-१६, १८, ९२-१३२, १३४-१८२ । |
| ३०७७२ | " | " | १-१६ । |
| ३०७७३ | चित्ररूपकार्यकारणभाव- रहस्यम् | | १-१८ । |
| ३०७७४ | किरणवालीप्रकाशः | वर्द्धमानः | १९-२०, २२-२४, २६-३९, ४९-५९, ६२, ६६-६८, ७०, ७२-७९, ८१-८९, ९२-१०२, १०८, ११०, ११८-११९, १२१, १२३-१२८, १२७-१३०, १३४-१४२ । |
| ३०७७५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-७१ । |
| ३०७७६ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-४२ । |
| ३०७७७ | " | " | ३-८ । |
| ३०७७८ | " | " | १-१३, १३-३० । |
| ३०७७९ | " | " | १-१०९ । |
| ३०७८० | " | " | १०-५५ । |
| ३०७८१ | " | " | ५०-५२, ५२-१२८, १२८-१३५, १३७-१४२, १४२-१५० । |
| ३०७८२ | तत्त्व०मण्यालोकटीका | | १-५५ । |
| ३०७८३ | जागदीशीटीका | | १-३१ । |
| ३०७८४ | तर्कप्रतिबन्धकतारहस्यम् | | ३ । (गणनया) |
| ३०७८५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-१६२ । |
| ३०७८६ | तत्त्व०मण्यालोकटीका | रघुपतिः | १-१५७, १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| १२×९६ | १६ | ६१ | दे.ना. | का. | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०×६×४९ | १० | ६२ | " | " | | " | तर्कामृत-चपक टी०, अनुमानो- पमानखण्डयोः । |
| १२×७×४७ | ११ | ५० | " | " | | " | शुणोत्पत्तिप्रक्रियांशस्य । |
| १२×१×४९ | १६ | ५७ | तेलुगू | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । |
| ११×६×४८ | ११ | ५७ | दे.ना. | " | | " | तर्कामृतचपकटीका । |
| ११×६×५१ | ११ | ४९ | " | " | | " | " |
| ८×७×३८ | १२ | ३५ | " | " | | पू० | |
| १०×९×३३ | ७ | ५५ | " | " | | अपू० | प्रशस्तपादभाष्यटी. टी. । |
| ९×७×४३ | १० | ४३ | " | " | १८५१ | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १०×१×४३ | १२ | ३७ | " | " | | " | " |
| ९×४×४३ | १० | ३५ | " | " | | अपू० | विरुद्धप्रकरणस्य । |
| १०×२×४४ | १२ | ३९ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १०×४३ | १० | ४० | " | " | | " | परामर्शादवयवान्ता । |
| १०×१×४४ | ११ | २६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०×२×४३ | ११ | ३३ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिमारभ्य सामान्य- लक्षणान्ता । |
| ११×१×३३ | ८ | ५४ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १२×६×४७ | १२ | ५१ | " | " | | " | मञ्जूषाख्या, (तत्त्व०मणिदी. टी. टी.), व्याप्तिपञ्चकस्य । |
| १०×२×४९ | १३ | ४५ | " | " | १६८९ | पू०० | |
| ९×७×३१ | ९ | ४० | " | " | १८५३ | " | अनुमितिमारभ्य बाधान्ता । |
| १०×६×३६ | ९ | ३९ | " | " | १६४२ | " | अनुमितिमारभ्यावयवान्ता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|-----------------|---|
| ३०७८७ | तर्ककौमुदी | भास्करः | १-२० । |
| ३०७८८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३८ । |
| ३०७८९ | विषयतावादः | रघुदेवः | १-८ । |
| ३०७९० | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३०७९१ | दिनकरीव्याख्या | रामरुद्रः | ६-३९ । |
| ३०७९२ | योग्यताज्ञानविचारः | | १-६ । |
| ३०७९३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-२०, २२-२३, ३५-४६ । |
| ३०७९४ | लक्षणाविचारः | | १-३ । |
| ३०७९५ | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरः | १-१२ । |
| ३०७९६ | व्युत्पत्तिवादटीका | | १-८९, ९१-११९ । |
| ३०७९७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-१७ । |
| ३०७९८ | तत्त्वचिन्तामणिप्रभा | यज्ञपतिः | १-१२, १५-२९ । |
| ३०७९९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-२३ । |
| ३०८०० | " | " | १-१७ । |
| ३०८०१ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-१३ । |
| ३०८०२ | " | " | १-३० । |
| ३०८०३ | " | " | १-२५, २८-९५ । |
| ३०८०४ | " | " | १-१५ । |
| ३०८०५ | " | " | १-३ । |
| ३०८०६ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | १२, १५-१८, २१-२८, ३१-३८, ८६-१६९, १८९-२३५, २३७-२७३ । |
| ३०८०७ | किरणावलीप्रकाशविषया- शयप्रकाशः | भगीरथः | १-५१, ५३-१३२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|--|
| ९०°X३°४ | ८ | ३७ | दे. ना. | का. | श. १६७४ | पू० | |
| १२°६X३°९ | १० | ६३ | " | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । |
| ८°६X३°८ | १२ | ३५ | " | " | १८४५ | " | |
| १२°४X३°७ | १० | ५९ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणविशेषव्याप्ति- प्रकरणयोः । |
| १२°२X४°१ | १० | ४३ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तमुक्तावलीटी० टी० । |
| ९X३°५ | १८ | ४२ | " | " | १६३८ | पू० | शाब्दबोधे । |
| १०°८X५°५ | १६ | ३६ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकाद् व्यधिकरणान्ता । |
| ९°५X३°२ | ११ | ८९ | " | " | | " | |
| १२X४°६ | १० | ५३ | " | " | | अपू० | |
| १२°४X४°७ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| ९°६X४°४ | १३ | ४७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्यावच्छेदक- त्वनिरुक्तिप्रकरणांश । |
| ८°७X३°१ | ९ | ४३ | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादयोः । |
| १४°६X५°८ | १० | ४३ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रव्यधिकरणविशेषव्याप्ति- प्रकरणानाम् । |
| ९°९X३°७ | १७ | ५५ | " | " | | " | तर्कसामान्यलक्षणाप्रकरणयोः । |
| ९°८X३°१ | १ | ३४ | " | " | | " | ईश्वरवादस्य । |
| ९°९X३°१ | ८ | ३५ | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादयोः । |
| ९°८X३°१ | ७ | ५५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य बाधान्तः । |
| ९°५X३°१ | ९ | ४३ | " | " | १९४४ | पू० | उपमानखण्डस्य । |
| ९°६X३°२ | ८ | ३५ | " | " | | अपू० | शाब्दखण्डस्य । |
| १०°८X४°३ | ९ | ३४ | " | " | | " | योग्यताप्रकरणादुपसर्गवादान्तः । |
| १०°३X३°७ | ७ | ४० | " | " | | " | प्रशस्तपादभाष्यटी. टी. टी., गुणमात्रस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|-----------------|-------------------|
| ३०८०८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-४० । |
| ३०८०९ | " | " | २०-२४ । |
| ३०८१० | जातिमाला | मथुरानाथः | १, १-४, ११-२५ । |
| ३०८११ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १५-१७, १९, ३५ । |
| ३०८१२ | " | " | १-३ । |
| ३०८१३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ३ । (गणनया) |
| ३०८१४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १४२-१७३ । |
| ३०८१५ | विषयतावादार्थः | | १-१७ । |
| ३०८१६ | विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविचारः | | १-११ । |
| ३०८१७ | चिद्वन्मोदतरङ्गिणी | चिरञ्जीवः | १-१४ । |
| ३०८१८ | न्यायसिद्धान्तदीपः | शशधरः | ७-४३ । |
| ३०८१९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-१६६ । |
| ३०८२० | माथुरीकोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३०८२१ | वाधरहस्यम् | | १-१३, १५, १७-१९ । |
| ३०८२२ | बुद्धिवादः | | १-३० । |
| ३०८२३ | मङ्गलवादः | हरिरामः | १-७ । |
| ३०८२४ | तत्त्वचिन्तामणिसारः | गोपीनाथः | १-९ । |
| ३०८२५ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-५ । |
| ३०८२६ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | ५२-१०३ । |
| ३०८२७ | " | " | १-१४ । |
| ३०८२८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवमिश्रः | २-३९, ४१-१२८ । |
| ३०८२९ | जागदीशीकोडपत्रम् | | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १३३×४१ | ७ | ५० | दे. ना. | का. | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३१×५ | १० | ५९ | " | " | | " | " |
| ९३×३३ | १० | ४१ | " | " | | " | " |
| ९५×३१ | ६ | ३० | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायसामान्यलक्षणाप्रक- रणयोः । |
| ११×४ | ९ | ५० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य विशेषव्या- प्तिप्रकरणपर्यन्तः । |
| ८२×४१ | ११ | ४३ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९९×३६ | ८ | ४७ | " | " | | " | उपाधिप्रकरणस्य । |
| १०×३६ | १२ | ४५ | " | " | | पू० | |
| ९५×३१ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| १०५×३८ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| १०२×३७ | ११ | ४७ | " | " | | अपू० | पदार्थशक्तिवादमारभ्य व्याप्तिवादान्तः । |
| १३५×४२ | ८ | ४३ | " | " | १९३६ | पू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३३×३६ | ९ | ५३ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०७×३४ | १२ | ६६ | " | " | | " | बाधबुद्धिप्रतिबन्धकताविचारोऽत्रास्ति । |
| १०४×२७ | ६ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९×३४ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| ९२×३७ | १२ | ४५ | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादयोः । |
| १३५×४१ | १० | ६१ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १०५×३८ | ८ | ४८ | " | " | | " | विधिवादस्य । |
| १०५×२८ | ८ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १३३×४४ | १२ | ४५ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १८×३९ | ११ | ७६ | मैथि. | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणान्तर्गतसार्वभौम- लक्षणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-----------------------------|-------------------|
| ३०८३० | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ६ । (गणनया) |
| ३०८३१ | " | | १-१९ । |
| ३०८३२ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दसिद्धान्त- वागीशः | १-२९ । |
| ३०८३३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३०८३४ | " | | १-११ । |
| ३०८३५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३०८३६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३०८३७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-४ । |
| ३०८३८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३१ । |
| ३०८३९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-५ । |
| ३०८४० | लाघवगौरवरहस्यम् | गोकुलनाथो- पाध्यायः | १-२, ४-१६ । |
| ३०८४१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३०८४२ | मुक्तिवादः | " | १-१० । |
| ३०८४३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३०८४४ | " | | १-४७ । |
| ३०८४५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४५, ४७-६६ । |
| ३०८४६ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-८, १०-३० । |
| ३०८४७ | " | " | १-२ । |
| ३०८४८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-६१ । |
| ३०८४९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-५ । |
| ३०८५० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १८×३.९ | ११ | ७४ | मै. | का. | | अपू० | सिंहव्याघ्रलक्षणयोः । |
| १८.२×४.२ | ९ | ७४ | " | " | | पू० | पक्षतायाः सार्वभौमलक्षणस्य । |
| १०.४×४.३ | १२ | ३६ | दे.ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १८.१×४ | १० | ७२ | मै. | " | | " | व्याप्त्यनुगमस्य । |
| १७.८×३.७ | ८ | ७० | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकान्तर्गतप्रथमद्वितीय- चतुर्थलक्षणानाम् । |
| १८.१×४.१ | १२ | ८२ | " | " | | अपू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १८.४×३.३ | ९ | ९८ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १८.२×३.१ | ७ | ६५ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणव्याप्तिपञ्चकयोः । |
| १७.७×३.८ | ११ | ९१ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १७.९×३.९ | ११ | ७२ | " | " | | " | विशेषव्याप्तेः । |
| १२.६×४ | ११ | ९२ | " | " | | अपू० | |
| १७.८×३.८ | ८ | ६७ | " | " | | पू० | मुक्तिवादस्य । |
| १०.५×३.१ | ११ | ४८ | " | " | | " | |
| १८.१×४ | १० | ७१ | " | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १८×४.१ | १० | ६५ | " | " | | पू० | " |
| १८.३×४.३ | ७ | ७० | वङ्ग. | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०.९×३.४ | ८ | ५६ | मै. | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्यानीपाधिकत्व- प्रकरणान्ता । |
| १२×३.१ | ६ | ६९ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १७.४×४ | ६ | ७८ | दे.ना. | " | | " | व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याघ्रलक्षण- व्यधिकरणानाम् । |
| १०.३×३.४ | ११ | ५८ | मै. | " | | पू० | केवलव्यतिरेकिप्रकरणस्य । |
| ११.४×३.४ | १० | ६७ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|---|-------------------|
| ३०८५१ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | २-१२ । |
| ३०८५२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-२२ । |
| ३०८५३ | वादार्थः | | ५ । (गणनया) |
| ३०८५४ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | रामभद्रसार्वभौमः | ४३ । " |
| ३०८५५ | न्यायकुसुमाञ्जलिटिप्पणी | रामभद्रः | ५ । " |
| ३०८५६ | सामग्रीविवेचनम् | रघुदेवभट्टाचार्यः | १ । " |
| ३०८५७ | न्यायकुसुमाञ्जलिटिप्पणी | रामभद्रः | १-५ । |
| ३०८५८ | " | " | १३ । (गणनया) |
| ३०८५९ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | " | १-३ । |
| ३०८६० | " | शङ्करमिश्ररुद्र- न्यायवाचस्पति- भट्टाचार्यौ | ४९ । (गणनया) |
| ३०८६१ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्याटीका | गोस्वामी | ४ । " |
| ३०८६२ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | हरिदासः | १-१८ । |
| ३०८६३ | " | | १-४ । |
| ३०८६४ | न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकरणम् | उदयनाचार्यः | १-२७ । |
| ३०८६५ | " | " | १-४३ । |
| ३०८६६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-११ । |
| ३०८६७ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३०८६८ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | ३-२० । |
| ३०८६९ | " | | ५-८ । |
| ३०८७० | " | | ६-९२ । |
| ३०८७१ | " | | ३२-७३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|------------------------------------|
| १०°८×३°३ | ११ | ६० | मै. | का. | | अपू० | व्यधिकरणमारभ्य पक्षतापर्यन्तः । |
| १६°२×३°२ | ८ | ८४ | वङ्ग. | " | | " | आकाङ्क्षाप्रकरणस्य । |
| १८°५×३°५ | ८ | ८४ | " | " | | " | |
| १६°५×३°५ | ८ | ८३ | मै. | " | | " | |
| १८°८×३°२ | ८ | १०२ | वङ्ग. | " | | " | शङ्करमिश्रकृततामोदोपरि प्रतिभाति । |
| ६°३×३°२ | ८ | २१ | दे.ना. | " | | " | |
| १८°१×३°२ | ६ | ८१ | वङ्ग. | " | | " | न्यायकुण्टी०टि० । |
| १६°५×३°९ | ८ | ६७ | " | " | | " | |
| १८°५×३°२ | ८ | ८४ | " | " | | " | पञ्चमस्तवकस्य । |
| १३°४×२°८ | ८ | ५७ | " | " | श. १६१९ | " | |
| १८°४×३°१ | ७ | ९७ | " | " | | " | हरीदासीन्याख्यायाष्टीका । |
| १३°१×२°४ | ५ | ६९ | " | " | | पू० | |
| १८°८×४°३ | १० | ९७ | " | " | | अपू० | |
| १८°३×३°२ | ६ | ९० | मै. | " | | " | |
| १८°६×३°३ | ७ | ८२ | " | " | | पू० | |
| १७°९×४ | १० | १०३ | वङ्ग. | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १४°६×४°४ | ८ | ७३ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रथमलक्षणस्य । |
| ९°२×३°२ | ८ | ३६ | दे.ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १°२×२°९ | ६ | ३९ | " | " | | " | " |
| ९°७×२°९ | ७ | ४७ | " | " | | " | अन्यथाख्यातिवादसन्निकर्षवादयोः । |
| १०°३×३ | ६ | ४५ | " | " | | " | आकाङ्क्षादिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् : |
|------------|---------------------------------------|-----------------------------------|----------------------|
| ३०८७२ | तत्त्वचिन्तामण्यालोककण्ट- कोद्धारः | म.म.मधुसूदनः | २-११, १४-२७ । |
| ३०८७३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथः | १-४४ । |
| ३०८७४ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | ७३ । (गणनया) |
| ३०८७५ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १८ । ” |
| ३०८७६ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- टीका | जयरामः | १-६७ । |
| ३०८७७ | न्यायकुसुमाञ्जलिटीका | राङ्गमिश्ररामभट्ट- भट्टाचार्यौ | १-१२ । |
| ३०८७८ | ” | ” | १-११ । |
| ३०८७९ | ” | ” | १-११, ११-२०, २०-३० । |
| ३०८८० | जागदीशीकोटपत्रम् | | १-१० । |
| ३०८८१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशतर्कालङ्कारः | ३-२० । |
| ३०८८२ | ” | ” | ५-२० । |
| ३०८८३ | ” | ” | ३ । (गणनया) |
| ३०८८४ | ” | ” | १-२४ । |
| ३०८८५ | ” | ” | १-२१५ । |
| ३०८८६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | १-२ । |
| ३०८८७ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-६ । |
| ३०८८८ | ” | ” | १ । |
| ३०८८९ | ” | ” | १-३ । |
| ३०८९० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १०६-११४ । |
| ३०८९१ | ” | ” | १-२५१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | आद्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|--|
| १००१×३२ | ८ | ३८ | मैथि. | का. | | अपू० | विवादरत्नावली वा । |
| १४०८×३०६ | १० | ५३ | वङ्ग. | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य सामान्य- लक्षणान्ता । |
| १००७×३०४ | ८ | ५३ | दे. ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणादवयवान्तः । |
| ९०८×२०९ | ६ | ४१ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ९०४×४ | १० | ३९ | " | " | | पू० | |
| १८×३ | ६ | ६१ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १७०३×३०३ | ७ | ७१ | " | " | | " | |
| १७×३०७ | १० | ७९ | " | " | श. १५८३ | पू०* | |
| १८०६×३०१ | ८ | ८६ | " | " | श. १७६९ | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १७०५×३०४ | ९ | ९२ | " | " | | अपू० | " |
| १८०२×४०२ | ८ | ७८ | " | " | | " | " |
| १५०६×३०३ | ६ | ५० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १३०३×४०१ | ८ | ८० | मैथि. | " | | पू० | टिप्पणीसहिता, सिद्धान्तलक्षण- प्रकरणस्य । |
| १७०७×४०१ | ८ | ८१ | वङ्ग. | " | | " | पक्षताप्रकरणमारभ्य बाधान्ता । |
| १७०१×३०६ | ७ | ७३ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १३०१×२०५ | ६ | ६४ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य व्याप्तिग्रहो- पायान्तः । |
| १४०६×३ | ४ | ५५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११०५×२०५ | ६ | ५२ | " | " | | पू० | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १००१×४०९ | १२ | ४१ | दे. ना. | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १६०४×३०४ | ८ | ९२ | वङ्ग. | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य व्याप्तिग्रहो- पायान्ता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|---------------------|--------------------|
| ३०८९२ | गादाधारीटीका | कृष्णम्भट्टः | ३-२६ । |
| ३०८९३ | गादाधारीक्रोडपत्रम् | | १२ । (गणनया) |
| ३०८९४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १२१-१४६, १४६-१५६ । |
| ३०८९५ | " | " | १, १-१२, १२-३४ । |
| ३०८९६ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | १-१४ । |
| ३०८९७ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवः | १-४० । |
| ३०८९८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १-१२७ । |
| ३०८९९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१४ । |
| ३०९०० | " | " | ४३ । (गणनया) |
| ३०९०१ | " | " | १-३८ । |
| ३०९०२ | " | " | १२-७५ । |
| ३०९०३ | " | " | १-६१ । |
| ३०९०४ | " | " | १-१५ । |
| ३०९०५ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१६ । |
| ३०९०६ | " | " | १-३६ । |
| ३०९०७ | " | " | १-४०, (४१) ४४-७० । |
| ३०९०८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-४१ । |
| ३०९०९ | " | " | १-३१ । |
| ३०९१० | कारिकावली | विश्वनाथः | १-४ । |
| ३०९११ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | कृष्णशर्मा | १-४१ । |
| ३०९१२ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथशर्मा | १-३३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आशयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|------|----------|------------------------|--|
| १२०४४४ | १० | ४६ | दे.ना. | का. | | अपू० | तत्त्व०मणिदी०टी०टी०, सामान्य- निरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९४४४६ | ९ | ३३ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३४४९ | १० | ४६ | " | " | | पू० | व्याप्तिपूर्वपक्षस्य । |
| १२६४३८ | ९ | ४८ | " | " | | " | " |
| १२४४४३ | ९ | ३६ | " | " | | " | " |
| १२४४२ | १८ | ६९ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डमारभ्यानुमानखण्डांशस्य । |
| १०९४४९ | १३ | ४२ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| १२०४३०७ | ६ | ३६ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १२०४४९ | ९ | ६९ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणावच्छेदकत्वनिरुक्ति- प्रकरणयोः । |
| १२०४३९ | ६ | ३० | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणप्रकरणस्य । |
| १२२४४४ | ९ | ६९ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायात्सामान्यलक्षणान्ता । |
| १०४४४७ | १२ | ४९ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकाद् व्यधिकरणान्ता । |
| १०४४४७ | ११ | ३४ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ९९४४३ | ११ | ३४ | " | " | | " | " |
| ११४४९ | १४ | ६० | " | " | | " | मङ्गलवादस्य शब्दाप्रामाण्या- काङ्क्षावादयोः । |
| १००४४८ | १२ | ४२ | " | " | | " | " |
| १२०४३३ | ११ | ३६ | " | " | | " | अनुमानखण्डाद्गुणनिरूपणान्ता । |
| ८९४४४ | ११ | ३६ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डाच्छब्दखण्डांशा । |
| ११९४३९ | १३ | ६९ | " | " | | पू० | " |
| १०६४४३ | १२ | ४९ | " | " | | " | अनुमानपरिच्छेदान्ता । |
| १०६४२८ | ९ | ६० | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डाच्छब्दखण्डांशा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|------------------|----------------------|
| ३०९१३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथशर्मा | १-९ । |
| ३०९१४ | तर्कसङ्ग्रहटीपिका | अन्नम्भट्टः | १-२४ । |
| ३०९१५ | " | " | १-१४ । |
| ३०९१६ | तर्कसङ्ग्रहः | " | १-४ । |
| ३०९१७ | " | " | १-११ । |
| ३०९१८ | " | " | १-४ । |
| ३०९१९ | तर्कसङ्ग्रहटीका | गोवर्द्धनः | १-१६ । |
| ३०९२० | तर्कसङ्ग्रहटीपिका | अन्नम्भट्टः | १-१९ । |
| ३०९२१ | " | " | १-५९ । |
| ३०९२२ | " | " | १-३०, ३३ । |
| ३०९२३ | तर्कामृतम् | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१८ । |
| ३०९२४ | " | " | १-१६ । |
| ३०९२५ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-५१ । |
| ३०९२६ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १ । |
| ३०९२७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-५० । |
| ३०९२८ | " | " | ५-९ । |
| ३०९२९ | " | " | ८-१९ । |
| ३०९३० | गदाधरीटीका | कृष्णम्भट्टः | १-३१, ३३-६५, ६५-८६ । |
| ३०९३१ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | ८ । (गणनया) |
| ३०९३२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १८ । " |
| ३०९३३ | " | " | ७-१३ । |
| ३०९३४ | " | " | १ । |

| आकाशः | पक्षि- मिता | आमर- मिता | मितिः | आमरः | मितिमात्रः | पक्षि- मिता | विशेषमितिमात्रम् |
|---------|----------------|--------------|-------------|------|------------|----------------|---|
| १०६३० | ८ | २० | दि. ना. का. | | | अपू० | प्रत्यक्षमण्डलस्य । |
| ८०३४ | ८ | २१ | " " | | | पू० | |
| १०६४१ | १० | २२ | " " | १००१ | | " | |
| १०६४२ | ८ | २८ | " " | | | अपू० | |
| १०६४३ | ६ | २६ | " " | | | पू० | |
| ११०६४ | ८ | ४४ | " " | | | अपू० | |
| १०६४०१ | ११ | २३ | " " | | | पू० | टीका न्यायबोधिनी । |
| ११०६४०२ | ११ | ४५ | " " | | | " | |
| ७०६४०१ | ९ | २० | " " | | | " | |
| ८०४३०१ | ७ | २३ | " " | | | अपू० | |
| १००६४०२ | ७ | २७ | " " | | | पू० | |
| १०३४०१ | ९ | २३ | " " | | | " | |
| १००३४०४ | ७ | ३० | " " | | | " | |
| १०३४०४ | ९ | ३५ | " " | | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १२०७४०९ | ११ | ६२ | " " | | | अपू० | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १४०६४०७ | १६ | ६१ | " " | | | " | अवयवप्रकरणे न्यायावयवलक्षणा- प्रकरणानाम् । |
| १२०४४०७ | १० | ५२ | " " | | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १२०४४०६ | १२ | ५३ | " " | | | " | तत्त्वमणिदीप्ती=टी=, परामर्श- तर्कव्याप्त्यनुगमसामान्यलक्षणा- प्रकरणानाम् । |
| १२०७४०३ | १३ | ५५ | " " | | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०६४०१ | ७ | ५२ | " " | | | " | सव्यभिचारमत्प्रतिपक्षवाधप्रमथानां प्रकीर्णपत्राणि । |
| १२०२४०१ | १३ | ६४ | " " | | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०३४०६ | ९ | ७० | यज्ञः | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|--------------------------|---------------------------------|
| ३०९३५ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशतर्कालङ्कारः | १-२ । |
| ३०९३६ | " | " | १-७ । |
| ३०९३७ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-४ । |
| ३०९३८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |
| ३०९३९ | किरणावली | उदयनाचार्यः | १-७ । |
| ३०९४० | किरणावलीभास्करः | पद्मानाभः | १-११ । |
| ३०९४१ | न्यायसिद्धान्तमाला | जयरामन्याय- पञ्चाननः | १-१३, १५ । |
| ३०९४२ | नवार्थविवृतिः | " | १, ३-१७ । |
| ३०९४३ | आख्यातवादः | रघुनाथशिरोमणिः | ३ । (गणनया) |
| ३०९४४ | विषयताविचारः | गदाधरः | १-१२ । |
| ३०९४५ | किरणावली | उदयनाचार्यः | १-७२ । |
| ३०९४६ | अनुमितिविचारः | हरिरामः | १-४४ । |
| ३०९४७ | पदार्थतत्त्वनिरूपणम् | शिरोमणि- भट्टाचार्यः | १२ । (गणनया) |
| ३०९४८ | किरणावलीप्रकाशमकरन्दः | रुचिदत्तः | १-४, ६-१०, १३-३३, ३५-१४८, १५० । |
| ३०९४९ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथ- भट्टाचार्यः | १-११ । |
| ३०९५० | मितभाषिणी | माधवसरस्वती | ५८ । (गणनया) |
| ३०९५१ | " | " | ६२-७० । |
| ३०९५२ | शक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२६ । |
| ३०९५३ | तत्त्वचिन्तामणितत्त्वदीपिका | रघुदेवः | १-३८ । |
| ३०९५४ | न्यायरहस्यम् | गोविन्दभट्टाचार्यः | १-१० । |
| ३०९५५ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिमिश्रः | १-२९, ५८-७६, ७९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १३०४×४०१ | ७ | ६७ | मै० | का. | | अपू० | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १३०४×४०१ | ७ | ६७ | " | " | | पू० | " |
| १८०६×२०७ | ७ | ७२ | वङ्ग. | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणांशस्य । |
| १४०१×२०९ | ७ | ७२ | " | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १००३×३ | ८ | ४१ | दे. ना. | " | | " | प्रशस्तपादभाष्यटीका । |
| १००२×४ | १० | ४९ | " | " | | " | प्रशस्तपादभाष्यटीकाटीका । |
| १००७×४०६ | १२ | ६० | " | " | | " | |
| १००८×३०६ | १२ | ६७ | " | " | | " | |
| १००२×३०९ | १४ | ४६ | " | " | | " | नञ्वादांशोऽपि । |
| १००१×४०१ | १४ | ३६ | " | " | | पू० | |
| ९०६×३०९ | ७ | ४३ | " | " | | अपू० | प्रशस्तपादभाष्यटीका गुणग्रन्थस्य । |
| ११०१×३०६ | ८ | ६१ | " | " | | पू० | |
| ८०३×४०१ | ८ | २८ | " | " | | "* | पदार्थखण्डनमपि नामान्तरम् । |
| ११×३०१ | ७ | ४६ | " | " | | अपू० | किरणावलीप्रकाशविवृतिरिति- नामान्तरम् । द्रव्यग्रन्थे । |
| १००१×४०३ | ९ | ३६ | " | " | १८८३ | पू० | |
| ९०९×२०८ | ८ | ४४ | " | " | | अपू० | सप्तपदार्थटीका । |
| ९०९×२०७ | ७ | ४२ | " | " | श. १६६४ | " | " |
| १००३×४०६ | १२ | ६३ | " | " | | पू० | |
| १००९×४०७ | १२ | ४६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणादुपाधिवादान्ता । |
| १००६×३०९ | ९ | ४९ | " | " | | " | गौतमसिद्धान्तमवलम्ब्य । कारिकामयम् । |
| ११०७×६०२ | १० | ३२ | " | " | | अपू० | |

| क्र.संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------|-------------------|
| ३०९५६ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | ६ । (गणनया) |
| ३०९५७ | न्युत्पत्तिवादटीका | | १-८ । |
| ३०९५८ | न्यायसूत्रम् | गौतमः | १-९ । |
| ३०९५९ | नव्वादटिप्पणी | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३०९६० | लाघवगौरवरहस्यम् | म.म.गोकुलनाथः | १-४ । |
| ३०९६१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३०९६२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | २८-५६ । |
| ३०९६३ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | " | १-२५ । |
| ३०९६४ | " | " | १-३२ । |
| ३०९६५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ३२-४३ । |
| ३०९६६ | " | " | ४ । (गणनया) |
| ३०९६७ | एवकारवादार्थः | | १-७ । |
| ३०९६८ | तत्त्व०मणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २२-३९ । |
| ३०९६९ | " | " | १-२३ । |
| ३०९७० | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-२२ । |
| ३०९७१ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-३२ । |
| ३०९७२ | " | " | १-५८ । |
| ३०९७३ | तर्कामृतम् | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१५ । |
| ३०९७४ | " | " | १-२२ । |
| ३०९७५ | तर्कामृततरङ्गिणी | अनन्तभट्टः | १-७ । |
| ३०९७६ | तर्कामृतम् | जगदीशः | १-१० । |
| ३०९७७ | " | " | १-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आद्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|---|
| १२८४४०९ | १६ | ६२ | दे. ना. | का. | | अपू० | व्युत्पत्तिवादशक्तिवादयोः । |
| ६६४१०४ | २३ | २७ | " | " | | " | |
| ८३४४४ | ८ | २८ | " | " | | पू० | अ० ४-५ । |
| १०७४४०१ | ९ | ५७ | " | " | | " | |
| ११९४३०८ | ८ | ६७ | मै. | " | | अपू० | |
| १४४२०९ | १२ | ११७ | दे. ना. | " | | " | |
| १८५४२०७ | ७ | ११२ | वङ्ग | " | | " | तत्त्व०मणिप्रकाशिकेतिनामान्तरम्, विरुद्धप्रकरणमारभ्य बाधान्तम् । |
| ११२४३०२ | ९ | ४६ | मै. | " | | " | अनुमितिव्याप्तिपञ्चकप्रकरणयोः । |
| १०२४३०५ | ११ | ६१ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणाद्बाधप्रक- रणांशा । |
| १११४४०१ | ९ | ४९ | दे. ना. | " | | " | उपाधिवादात्सामान्यलक्षणांशा । |
| ९९४३०७ | ९ | ३६ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९३४२०७ | ५ | २५ | " | " | | पू० | |
| ९२४३०६ | ८ | ३३ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणादवच्छेदकत्व- निरुक्तिप्रकरणान्ता । |
| १०५४३०८ | १० | ४१ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १३३४५०४ | ९ | ४४ | " | " | | पू० | |
| १२७४४०९ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| ९८४४०४ | ७ | ३१ | " | " | १९०४ | " | |
| १३३४५०४ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| ९६४४०२ | ७ | ३४ | " | " | | " | |
| ९३४४०४ | १० | ४० | " | " | | अपू० | |
| ९६४६०४ | १८ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ९८४४०३ | ११ | ३८ | " | " | १८२५ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|----------------------|---|
| ३०९७८ | भाषापरिच्छेदः | | २-१० । |
| ३०९७९ | " | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-१८ । |
| ३०९८० | " | " | १-१० । |
| ३०९८१ | " | " | १-१० । |
| ३०९८२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | २९६-३८९ । |
| ३०९८३ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | पद्मधरः | १-२१ । |
| ३०९८४ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकदर्पणः | महेशः | २-५६, ६२-६९, ७४, ७८-९१, ९४, ९६-१०२, १०४-१२५, १२८-१३९, १४२-१४७ । |
| ३०९८५ | कारिकावली | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-१० । |
| ३०९८६ | " | " | १-१४ । |
| ३०९८७ | " | " | १-६ । |
| ३०९८८ | जागदीशीकोडपत्रम् | | १-७ । |
| ३०९८९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-२७ । |
| ३०९९० | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीभाव- दीपिका | श्रीकृष्णभट्टाचार्यः | १-११६ । |
| ३०९९१ | न्यायबोधिनी | गोवर्द्धनः | १-१८ । |
| ३०९९२ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवः | १-१२+१ । |
| ३०९९३ | " | | २८-४२ । |
| ३०९९४ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | | १-१० । |
| ३०९९५ | न्यायबोधिनी | गोवर्द्धनः | १-१७ । |
| ३०९९६ | तत्त्वचिन्तामणिप्रभा | यज्ञपतिः | १-१८ । |
| ३०९९७ | तार्किकरत्ना | वरदराजः | १-८ । |
| ३०९९८ | सप्तपदार्थी | शिवादित्यः | १-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-----------------------|---|
| १०*५×४*६ | ७ | ४० | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९*८×३*४ | ५ | ३६ | " | " | | पू० | |
| ८*४×४ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| १०*४×४*९ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| ११*६×५*२ | १२ | ४२ | " | " | १७०१ | अपू० | अपूर्ववादशक्तिवादजातिशक्तिवाद- प्रकरणानाम् । |
| ९*२×३*६ | १० | ४१ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणात्सिद्धान्तलक्षण- प्रकरणांश । |
| ११*२×३*९ | ८ | ३९ | " | " | | " | मङ्गलवादस्य । |
| ८*७×४*४ | ८ | ३३ | " | " | | पू० | |
| ९*८×४*१ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| १२*२×४*९ | ९ | ६१ | " | " | | " | |
| १०*४×४*३ | १० | ५१ | " | " | | " | |
| ११*५×४*६ | ८ | ४५ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| ९*५×४*२ | ११ | ४१ | " | " | १७७९ | पू० | |
| ११*५×४*५ | ८ | ४४ | " | " | | " | तर्कसङ्ग्रहटीका, प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य |
| १३×४*१ | ८ | ५४ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ९*९×३*७ | ८ | ५० | " | " | | " | " |
| ८*८×३*१ | १५ | ३७ | " | " | | " | नव्यमते । |
| ९*७×४*१ | १० | ४६ | " | " | १८९४ | पू० | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| १०*५×३*१ | १० | ६२ | " | " | | अपू० | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| १०*५×३*२ | ८ | ५६ | " | " | | पू० | |
| ८*५×३*५ | ९ | २७ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------------|------------------|------------------------------------|
| ३०९९९ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवः | १-१८ । |
| ३१००० | सामग्रीप्रतिबन्धकताविचारः | | १-११ । |
| ३१००१ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १-१७, १७-५९ । |
| ३१००२ | कणादरहस्यटीका | पद्मनाभः | १-४० । |
| ३१००३ | किरणावली | उदयनाचार्यः | १-४० । |
| ३१००४ | न्यायसूत्रम् | गौतमः | १-१७ । |
| ३१००५ | काणादसूत्रम् | कणादमुनिः | १-५ । |
| ३१००६ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथपञ्चाननः | १-१३ । |
| ३१००७ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | " | १-७+१ । |
| ३१००८ | धर्मितावच्छेकप्रत्यासत्ति- विचारः | | १-३२ । |
| ३१००९ | किरणावली | | २-२८ । |
| ३१०१० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १५४-१५५, १५७-१५९, १६८-१७५, १६२-१६८ |
| ३१०११ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १-६६ । |
| ३१०१२ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठदीक्षितः | ३५-५१ । |
| ३१०१३ | तत्त्व०मण्यालोकटीका | मथुरानाथः | १-२१ । |
| ३१०१४ | तत्त्व०मण्यालोकसङ्ग्रहः | रघुपतिः | ५४ । (गणनया) |
| ३१०१५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-९, ११ । |
| ३१०१६ | " | जगदीशः | ६८-९१, ९३-१०५ । |
| ३१०१७ | लौकिकविषयतावादः | | १ । (गणनया) |
| ३१०१८ | " | | २-६, ८ । |
| ३१०१९ | व्युत्पत्तिवादः | | १-५, ७-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १३*३×४*७ | १० | ५० | दे. ना. | का. | | पू० | शब्दपरिच्छेदः । |
| १३*९×३*६ | ९ | ७६ | " | " | | " | |
| ११×४*९ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्य व्यधिकरण- प्रकरणांशं यावत् । |
| ११×४ | ९ | ३२ | " | " | | पू० | प्रशस्तपादभाष्यटीका, द्रव्यप्रकर- णान्ता । |
| ११*१×४*५ | ९ | ४० | " | " | १७४ (?) | " | |
| ८*३×५ | ११ | २२ | " | " | | " | |
| ८*४×५*१ | १२ | ३५ | " | " | | " | |
| ९*८×३*५ | ७ | ३२ | " | " | | " | |
| ८*४×४ | १३ | ३५ | " | " | | अपू० | भाषापरिच्छेदटीका । |
| ७×३*२ | ८ | २२ | " | " | | " | |
| ९*८×४*२ | १० | ३३ | " | " | | " | प्रशस्तपादभाष्यटीका, द्रव्यग्रन्थस्य । |
| ९*२×४ | १० | ३२ | " | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| १०*८×४*६ | ११ | ४७ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणमारभ्य केवलान्वयि- प्रकरणांशं यावत् । |
| १०*२×४*६ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| ९*६×४*६ | १२ | ४५ | " | " | | " | शब्दप्रामाण्याकाङ्क्षावादप्रकरणयोः । |
| १०×३*६ | ९ | ४० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्योपाधिवाद- पर्यन्तः । |
| १२×५*१ | १० | ५९ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२×४*८ | ९ | ५७ | " | " | | " | " |
| ९*३×३*९ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| ९*५×३*५ | ८ | ३२ | " | " | | " | |
| ९*९×४*५ | ११ | ४२ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------|--------------------|
| ३१०० | तत्त्वमणिदीधितिटीका | | ४१ । (गणनया) |
| ३१०१ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | ५०-५६, ७१-७६ । |
| ३१०२ | अनुमितिचिन्तारः | | १-९ । |
| ३१०३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ (=४) । |
| ३१०४ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | ७३-७५, ७८-१३७ । |
| ३१०५ | " | जगदीशः | १-३, ६-९ । |
| ३१०६ | " | " | १-१३ । |
| ३१०७ | " | गदाधरः | २३-५३, ५३-१२१ । |
| ३१०८ | " | " | १-१२६ । |
| ३१०९ | गदाधरीटीका | कृष्णम्भट्टः | १-२६ । |
| ३११० | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-५ । |
| ३१११ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-४, २-१८, १८-४२ । |
| ३११२ | " | गदाधरः | १-८ । |
| ३११३ | " | " | १-७२ । |
| ३११४ | " | जगदीशः | १-२९ । |
| ३११५ | पदार्थमाला | जयरामः | १-२५, २५-४३ । |
| ३११६ | पदार्थदीपिका | | १-४० । |
| ३११७ | पदार्थचन्द्रिका | शेषानन्तः | १-२९ । |
| ३११८ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-२० । |
| ३११९ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-९, ९-६५, ७३-९० । |
| ३१२० | " | " | १-९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आद्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|------------------------|--|
| १०°६×३°८ | ८ | ३९ | दे.ना. | का. | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिस्तुतिप्रकरणस्य । |
| ११°४×४°८ | १६ | ७० | " | " | | " | उपाधिवादमारभ्य केवलान्वयिप्रकरणं यावत् । |
| ११°१४×३°५ | १२ | ३४ | " | " | | " | |
| १२°८×५ | १५ | ६४ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकपक्षताप्रकरणयोः । |
| १२°७×४ | ९ | ४७ | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १०°१४×५ | १० | ३६ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १४°५×५°८ | १० | ४७ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याघ्रलक्षण- प्रकरणयोः । |
| १३×५ | १२ | ६२ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२°६×३°९ | ९ | ५७ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणमारभ्य व्यधि- करणपर्यन्ता । |
| १२°७×४°८ | ११ | ५२ | " | " | | " | तत्त्व०मणिदी०टी०टी०, व्याप्ति- पञ्चकप्रकरणस्य । |
| १२°३×३°८ | १० | ५६ | " | " | | " | " |
| १२°७×४ | ९ | ६६ | " | " | | अपू० | पक्षताऽनुमितिप्रकरणयोः । |
| १४°७×४°६ | ९ | ५२ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १२°७×३°९ | १० | ६१ | " | " | | " | " |
| १२°८×४ | १० | ५० | " | " | | " | " |
| ९°४×४ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| १०°८×३°६ | ७ | ४६ | " | " | | " | |
| १०°७×३°८ | १२ | ४७ | " | " | श. १४९३ | पू० | सप्तपदार्थटीका । |
| १०°४×२ | ११ | ४३ | " | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| १२°६×४°१ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | उपाधिवादप्रकरणस्य । |
| १२°४×४°७ | ११ | ६० | " | " | | पू० | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|-------------------|--|
| ३१०४१ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-४ । |
| ३१०४२ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-२१ । |
| ३१०४३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथशर्मा | १-४०, ४०-४२ । |
| ३१०४४ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | | १-६ । |
| ३१०४५ | " | | २-३ । |
| ३१०४६ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-२, ४-३४ । |
| ३१०४७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३५ । |
| ३१०४८ | " | " | १-६ । |
| ३१०४९ | " | " | १-२० । |
| ३१०५० | " | " | १-११४ । |
| ३१०५१ | तत्त्वचिन्तामण्यलोकटीका | रघुदेवः | १-१५, १७-२८, ३०, ३२-५७, ५९-६२, ६४-९० । |
| ३१०५२ | आख्यातशक्तिवादटीका | कृष्णदासः | १-११ । |
| ३१०५३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | ४७ । (गणनया) |
| ३१०५४ | " | " | २७ । " |
| ३१०५५ | आख्यातशक्तिवादटिप्पणी | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-४७ । |
| ३१०५६ | कारकवादः | जयरामभट्टाचार्यः | १-२५ । |
| ३१०५७ | क्त्वाप्रत्ययविचारः | | २-५ । |
| ३१०५८ | आख्यातशक्तिवादटीका | जयरामभट्टाचार्यः | १-१५ । |
| ३१०५९ | " | | १-२९ । |
| ३१०६० | आख्यातार्थविनिर्णयः | रघुनाथः | १-२३ । |
| ३१०६१ | आख्यातवादव्याख्या | विश्वनाथः | १-३२ । |
| ३१०६२ | न्यायकुसुमाञ्जलिः | उदयनाचार्यः | १-२२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९०६×३०७ | १० | ४९ | दे. ना. | का. | | अपू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्य सामान्या- भावप्रकरणान्तः । |
| ९०६×३०९ | ८ | ३८ | " | " | | पू० | |
| ७०१×३०९ | १० | २९ | " | " | | " | अनुमानपरिच्छेदान्ता । |
| ११०१×३०६ | ९ | ६२ | " | " | | अपू० | |
| ९०१×३०२ | ७ | ३९ | " | " | | " | |
| ८०३×३०१ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| १२०९×४०९ | १० | ९६ | " | " | | " | केवलव्यतिरेकिप्रकरणस्य । |
| १२०४×४०७ | १६ | ९४ | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १३०१×४०९ | १७ | ९३ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १२०९×४०९ | ११ | ९७ | " | " | | अपू० | पक्षतापरामर्शप्रकरणयोः । |
| १००९×३०७ | ८ | ४४ | " | " | | " | केवलान्वयिकेवलव्यतिरेकिप्रकरणयोः । |
| ९०४×३०७ | ११ | ४८ | " | " | | पू० | दीधितिप्रसारिणीतिनाम्नी । |
| १३×३०९ | ९ | ६९ | " | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १२०८×४०८ | ९ | ४९ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १००२×३०८ | ९ | ९० | " | " | | पू० | |
| १००२×४०१ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| ९०१×४ | ८ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ९०४×४०१ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| १००१×४०४ | १० | ३९ | " | " | | पू० | |
| ९०८×३०८ | १० | ३१ | " | " | | " | आख्यातशक्तिवादटीका । |
| ११×४०७ | ११ | ९० | " | " | | " | " |
| ११०२×३०३ | ८ | ४८ | " | " | | " | प्रथमस्तवकः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------------|--------------------|---|
| ३१०६३ | न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकाशः | वर्द्धमानः | १-७०, ७२-७३, ७७, ८२-१२१, १-३६, ३६-७७, १-१८, २-४३, ४६-७४ । |
| ३१०६४ | गादाधरीकोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | २ । (गणनया) |
| ३१०६५ | विधिवादः | हरिरामतर्कालङ्कारः | १-१४ । |
| ३१०६६ | कार्यान्वितशक्तिवादविषयकग्रन्थविशेषः | | १-६२ । |
| ३१०६७ | न्यायकुसुमाञ्जलिः | उदयनाचार्यः | १-१० । |
| ३१०६८ | पक्षताविचारः | ” | ३२ । (गणनया) |
| ३१०६९ | कारकव्यूहः | रुद्रभट्टाचार्यः | १-१७ । |
| ३१०७० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १, ५-७८, ७८-१७३, १९०-२९३ । |
| ३१०७१ | अनुमितिपरामर्शकार्य-कारणभावविचारः | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-१८ । |
| ३१०७२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १६३ । (गणनया) |
| ३१०७३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | ३२ । ” |
| ३१०७४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | ५२-९३ । |
| ३१०७५ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-८ । |
| ३१०७६ | ” | ” | १-१० । |
| ३१०७७ | ” | ” | १-१० । |
| ३१०७८ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशः | १२ । (गणनया) |
| ३१०७९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १-३२ । |
| ३१०८० | व्युत्पत्तिवादः | | १-२८ । |
| ३१०८१ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | | १०-१५ । |
| ३१०८२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-६६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|-------------------------|---|
| १०*१×३*२ | ७ | ४३ | दे. ना. | का. | सं १९४८ | अपू० | १-५ स्तवकाः । |
| १४×४*५ | १३ | ५९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०*८×४*६ | १४ | ४४ | " | " | | पू० | |
| १०*५×४*१ | १४ | ६५ | वज्र | " | | अपू० | |
| ११×३.२ | ७ | ४४ | दे. ना. | " | | " | २-४ स्तवकाः । |
| १३*५×५*२ | ६ | ३९ | " | " | | " | |
| १२×३*१ | ८ | ५९ | " | " | सं. १७३० | " | |
| १२*८×४ | ९ | ६८ | " | " | | " | |
| ९×३ | ८ | ४५ | " | " | | पू० | |
| १०*९×४*७ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणमारभ्य वाधान्ता । |
| ९*५×३*५ | १२ | ४८ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणमारभ्य व्यधि- करणान्तम् । |
| ९*५×४*५ | ९ | ३५ | " | " | | " | शब्दखण्डाद्गुणनिरूपणान्ता । |
| ९*३×४*१ | १० | २९ | " | " | | पू० | |
| ७*९×३ | ६ | ३९ | " | " | | " | |
| ६*६×३*७ | ११ | २७ | " | " | सं. १६७८ | " | |
| ८*८×३*३ | ५ | ५३ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्यात् एवचतुष्ट- यप्रकरणांशं यावत् । |
| ९*९×३*९ | ७ | ३७ | " | " | | पू० | शब्दपरिच्छेदः । |
| ९*२×३*९ | १२ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| ९*५×४ | ११ | ४२ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| १२*५×३*९ | ९ | ६० | " | " | | " | परामर्शप्रकरणमारभ्य केवलव्यति- रेकिप्रकरणांशा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|------------------|--|
| ३१०८३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिटीका | गदाधरः | ३६-४४, ४४-७९, ७९-९१ । |
| ३१०८४ | तत्त्व.मणि०दीधितिटीका | कुण्डम्भट्टः | १-४३ । |
| ३१०८५ | " | " | १-१७, ८१-८२ । |
| ३१०८६ | " | " | ६४-१२० । |
| ३१०८७ | कारिकावली | विश्वनाथः | १-४ । |
| ३१०८८ | भाषापरिच्छेदः | " | ३-९, ९-१५ । |
| ३१०८९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधिति | रघुनाथशिरोमणिः | १-१२ । |
| ३१०९० | कारिकावली | विश्वनाथः | ४-५ । |
| ३१०९१ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | | ४६ । (गणनया) |
| ३१०९२ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | ५-२९, ३२-३८, ५७-६४, ६८-७०, ७२, ७५, ७७-९६, ९८ । |
| ३१०९३ | " | | १-१३ । |
| ३१०९४ | कारिकावली | | २-७ । |
| ३१०९५ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशः | ३५ । (गणनया) |
| ३१०९६ | शक्तिवादटीका | महादेवः | ८ । (गणनया) |
| ३१०९७ | अनुमितिमरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | | १-११ । |
| ३१०९८ | आख्यातवादः | रघुनाथशिरोमणिः | २-२१ । |
| ३१०९९ | तर्कभाषा | | १-९ । |
| ३११०० | शक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १, ३-३७ । |
| ३११०१ | मुक्तिवादः | | १-१५ । |
| ३११०२ | विषयतावादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२६ । |
| ३११०३ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १२*६X३*८ | ८ | ६३ | दे. ना. | का. | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणाद्- विशेषव्याप्तिप्रकरणांशा । |
| १२*७X४*७ | १२ | ५० | " | " | | " | गदाधरकृतसिद्धांतलक्षणव्याख्या- व्याख्या । |
| १२*६X४*९ | १२ | ५३ | " | " | | " | गदाधरकृतव्याप्तिग्रहोपायव्याख्या- व्याख्या । |
| १२*४X४*७ | ९ | ५३ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणमारभ्य विशेषव्याप्तिप्रकरणांशा । |
| ६*९X४*९ | १० | २६ | " | " | | " | |
| ९*७X२*९ | ५ | ३२ | " | " | | " | |
| १०*३X३*३ | ९ | ४३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| ९*५X४*७ | १० | २९ | " | " | | " | |
| ९*६X४*९ | ९ | ३५ | " | " | | " | कारिकावलीटीकाटीका, अनुमानोप- मानशब्दखण्डानाम् । |
| ८*८X४*४ | ११ | ३१ | " | " | | " | कारिकावलीटीका । |
| ८*७X३*८ | १३ | ३८ | " | " | | " | " |
| ९*८X३*७ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| १०*४X३*६ | १२ | ५९ | " | " | | " | व्याप्तिवादादीश्वरवादान्तः |
| १०*४X२*७ | १० | ५१ | " | " | | " | सामान्यकाण्डांशा । |
| ८*६X३*३ | १४ | ६९ | " | " | | " | |
| ८*८X२*८ | ५ | ४१ | " | " | | " | |
| ९X४ | १२ | ३३ | " | " | | " | अनुमानखण्डांशा । |
| ८*९X३*२ | १२ | ५९ | " | " | | " | विशेषकाण्डान्तः । |
| ८*७X३*९ | १० | ३२ | " | " | | पू० | |
| ८*४X३*४ | ७ | ४८ | " | " | १९२५ | " | |
| ७*३X३*४ | ९ | २४ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|--------------------------|-------------------|
| ३११०४ | न्यायबोधिनी | गोवर्द्धनः | १-३२ । |
| ३११०५ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-७ । |
| ३११०६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथ- भट्टाचार्यः | १-५८ । |
| ३११०७ | तर्कामृतम् | जगदीशभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३११०८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीतर्क- प्रकाशः | | २३-४२ । |
| ३११०९ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-१२ । |
| ३१११० | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जयरामः | ५७६ । (गणनया) |
| ३११११ | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरः | १-१०१ । |
| ३१११२ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-२१ । |
| ३१११३ | " | " | १-२१ । |
| ३१११४ | तर्कसङ्ग्रहः | " | १-१३, १-२ । |
| ३१११५ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | | १-२५ । |
| ३१११६ | कारिकावली | विश्वनाथपञ्चाननः | ८ । (गणनया) |
| ३१११७ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | | १२-१३ । |
| ३१११८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | ३२-६५ । |
| ३१११९ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-१० । |
| ३११२० | न्यायबोधिनी | गोवर्द्धनः | १-१६ । |
| ३११२१ | कारिकावली | | ३-१३ । |
| ३११२२ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवः | १-१५, १५-४२ । |
| ३११२३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | | ३८-४१, ४३-१६२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ८०५५३०९ | १० | २२ | दे. ना. | का. | | पू० | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| ७०५५४०४ | ११ | ३० | " | " | | " | |
| १२०२५४०१ | १० | ४७ | " | " | | अपू० | परामर्शादवयवांशं यावत् । |
| १२०७५५०६ | १६ | ३३ | " | " | | पू० | |
| ८०९५३०७ | १० | ३३ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| १३०८५५०४ | ११ | ५० | " | " | | " | |
| ११०४५४०१ | ८ | ३७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणात्सामान्यनिरुक्ति- प्रकरणांशा । |
| ९०१५३०८ | ११ | ४६ | " | " | | " | प्रथमाकारकांशमारभ्य सप्तमी- कारकपर्यन्तः । |
| १२०८५६०७ | १२ | ४६ | " | " | १९५० | पू० | |
| ९०४५४०२ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| ८०३५५०२ | ११ | २४ | " | " | | " | अन्ते कारिकावल्याः त्रिंशत्श्लोकाः अपि सन्ति । |
| १००२५३०५ | ९ | ६१ | " | " | | अपू० | तर्कप्रकाशाख्या । |
| ९०१५४०१ | ७ | ३५ | " | " | १९०४ | " | |
| ८०७५३०३ | १६ | ८३ | " | " | | " | |
| ९०८५३०६ | ६ | ३० | " | " | | " | प्रत्यक्षानुमानखण्डयोः । |
| १००३५३०२ | ६ | ४० | " | " | | पू० | |
| ९५४०८ | ११ | ३४ | " | " | | " | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| ८०३५५०८ | १२ | २५ | " | " | | अपू० | |
| १२०५५४०७ | १३ | ६३ | " | " | | " | प्रत्यक्षादनुमानखण्डांशं यावत् । |
| ११५३०३ | ९ | ५४ | " | " | | " | तर्कप्रकाशाख्या शब्दपरिच्छेदस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|--------------|--------------------------------|
| ३११२४ | तत्त्व-मणि०दीधितिगूढार्थ-विद्योत्तनम् | जयरामः | ६६९ । (गणनया) |
| ३११२५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३११२६ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका-टीका | हरिदासः | १-२२ । |
| ३११२७ | तत्त्व-मणि०दीधितिटीका | जगदीशः | १-८, १० । |
| ३११२८ | " | गदाधरः | २६ । (गणनया), |
| ३११२९ | तत्त्व०मणि०दीधितिटीका | " | १-८ । |
| ३११३० | आख्यातशक्तिवादः | | १० । (गणनया) |
| ३११३१ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-९ । |
| ३११३२ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | २-५, ७-१७ । |
| ३११३३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | ३-४ । |
| ३११३४ | कारिकावली | | १-४ । |
| ३११३५ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | ४३-४४, ५०-७२ (= ७२-७३) ७४-७७ । |
| ३११३६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | ९ । (गणनया) |
| ३११३७ | तत्त्वचिन्तामणिः | | २ । " |
| ३११३८ | तत्त्व-मणि०दीधितिटीका | भवानन्दः | १६७ । " |
| ३११३९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१५ । |
| ३११४० | तत्त्वचिन्तामणिः | | ६-८ । |
| ३११४१ | " | | ११-१५, १७-२०, २०-२२ । |
| ३११४२ | तत्त्व-मणि०दीधितिटीका | मथुरानाथः | ९२-१२१, १२३-१७५, १८९-२२६ । |
| ३११४३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | " | ६५-९० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णार्णव-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|----------------|--------------|--------|-------|----------|-------------------|--|
| १५३०८ | १० | ३२ | दे.ना. | का. | | अपू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्य सव्यभिचारप्रकरणांशं यावत् । |
| १३०७५१३ | १४ | ५६ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९०९५४३ | १२ | ५१ | " | " | | पू० | |
| १००८५४६ | ९ | ३७ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १३०४५४४ | ८ | ४८ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य, अन्ते गादाधरीसामान्यनिरुक्तिव्यधिकरणानुमितिप्रकरणानां क्रोडपत्राणि च । |
| १२०८५५ | ११ | ६२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १००६५४० | १० | ४२ | " | " | | " | समासशक्तिनिरूपणञ्च । |
| १००३५३०२ | ६ | ४७ | " | " | | पू० | |
| ९०१५३०७ | ९ | ३१ | " | " | | अपू० | शब्दखण्डस्य । |
| १००१५४०१ | ९ | ४१ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११५५ | १४ | ५५ | " | " | | पू० | |
| ९०१५३०९ | ७ | ३५ | " | " | | अपू० | अनुमानशब्दखण्डयोः । |
| ११०२५३ | ६ | ४५ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ११०९५२०८ | ६ | ६२ | " | " | | " | " |
| ९०७५४०२ | १३ | ३६ | " | " | | " | प्रत्यक्षे सन्निकर्षवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| १०५४०५ | १३ | ४२ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ९०६५३०८ | ९ | ४२ | " | " | | " | अतएवचतुष्टयव्याप्तिग्रहोपायप्रकरणयोः । |
| ८०९५४०२ | १४ | ३४ | " | " | | " | अनुमानखण्डः विरोधसत्प्रतिपक्षवाधप्रकरणानाम् । |
| ११०७५३०५ | ८ | ३७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ८०९५३०४ | ७ | ३२ | " | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षसिद्धान्तलक्षणप्रकरणयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|-----------------------|--------------------------------|
| ३११४४ | तत्त्व०मण्यालोकटीका | रघुपतिः | ३६ । (गणनया) |
| ३११४५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | २-४५ । |
| ३११४६ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवः | १-६ । |
| ३११४७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २-१५ । |
| ३११४८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | श्रीकण्ठः | १-१८ । |
| ३११४९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथ- चूडामणिः | १-२७ । |
| ३११५० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-३२ । |
| ३११५१ | " | " | ६८ । (गणनया) |
| ३११५२ | न्यायसारमञ्जरी | | १-१०१ । |
| ३११५३ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशः | ३४-३६, ५१-५९ = (५९+६०)६१-२३१ । |
| ३११५४ | संशयपक्षतारहस्यम् | | १-४ । |
| ३११५५ | तर्काभूतम् | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१३ । |
| ३११५६ | कारिकावली | | १-१३ । |
| ३११५७ | तर्कभाषा | | १-३० । |
| ३११५८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवः | १-६, ६-७३, ८०, १०१ । |
| ३११५९ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | १, ७-८, ११-२१, २१-४० । |
| ३११६० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | ६६-७२ । |
| ३११६१ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | ३९-४१ । |
| ३११६२ | तत्त्वचिन्तामणिः | | ८ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आध्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|--------|-----------------|------------------------|--|
| ११.३×३.९ | ८ | ५१ | दे.ना. | का. | | अपू० | उपाधितर्कावयवसामान्यनिरुक्ति- प्रकरणानाम् । |
| १२.९×५.२ | १० | ५८ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२.७×४.९ | ११ | ५८ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १२.९×५. | १० | ५७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य, पुस्तकेऽस्मिन्- व्याप्तिपञ्चकगादाध्यायाः पत्रद्वय- मप्यस्ति । |
| १०.१×४.५ | ११ | ३३ | " | " | | " | तर्कप्रकाशाख्या । |
| १०.१×४.५ | १२ | ४४ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १३.४×९. | १० | ५३ | " | " | | अपू० | सव्यभिचारप्रकरणांशादनुपसंहारि- प्रकरणान्ता । |
| १३.४×९. | ६ | ३७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ११.४×७. | १० | ३५ | " | " | | " | गुणप्रकरणस्य । |
| १०.५×३.७ | ६ | ३८ | " | " | १६८७ | " | अनुमानपरिच्छेदः उपाधिवादमारभ्य मुक्तिवादान्तः । |
| ९.३×३.७ | १३ | ५२ | " | " | | पू० | स्वतन्त्रोऽयं निबन्धः । |
| ९.२×४.१ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| ९.३×४.४ | ८ | ३१ | " | " | १८७८ श. १७७३ | " | |
| १०.२×४ | ८ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ११.९×३.६ | ११ | ५० | " | " | | " | मङ्गलवादाद्योग्यानुपलब्धिवादान्तः । |
| ११.२×४ | ८ | ४६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद् व्याप्तिग्रहोपाय- प्रकरणान्तः । |
| १२.६×४.९ | ११ | ७० | " | " | | " | उपाधिवादस्य । |
| ७×३.७ | ८ | २२ | " | " | | " | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| ९.७×४.३ | १२ | ४० | " | " | | " | बाधप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------|-------------------|
| ३११६३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १४-३८ । |
| ३११६४ | " | " | ७-८ । |
| ३११६५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १२ । (गणनया) |
| ३११६६ | " | | ५ । " |
| ३११६७ | " | | १० । " |
| ३११६८ | " | गदाधरः | ७-९ । |
| ३११६९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथः | २३-२५, ३२-३३ । |
| ३११७० | कारिकावली | | २-१० । |
| ३११७१ | " | | १-२ । |
| ३११७२ | कारणताविचारः | न्यायवाचस्पतिः | १-१० । |
| ३११७३ | कारकाद्यर्थनिर्णयः | भवानन्दः | १-२२ । |
| ३११७४ | एवकारार्थविचारः | | १ । |
| ३११७५ | एवकारार्थविवृतिः | माधवदेवः | १-२६ । |
| ३११७६ | आख्यातविवेकः | रघुनाथशिरोमणिः | १-८ । |
| ३११७७ | आख्यातवादव्याख्यानम् | जयरामः | १-५३ । |
| ३११७८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-१५ । |
| ३११७९ | अवच्छेदकानुमितिविचारः | | १-१४ । |
| ३११८० | न्यायमाला | जयरामः | १-३६ । |
| ३११८१ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | १-२० । |
| ३११८२ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | प्रगल्भः | १-१४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ८०६×३०९ | ११ | ३३ | दे. ना. | का. | | अपू० | व्यधिकरणसिद्धान्तलक्षणावच्छेदक- त्वनिरुक्तिप्रकरणानाम् । |
| १००२×४०२ | १२ | ४३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १००९×४०८ | १० | ४९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ११×४०७ | ११ | ४९ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १००९×४०७ | १२ | ४९ | " | " | | " | " |
| ११×४०१ | ७ | ६७ | " | " | | " | " |
| १००६×४ | ७ | ४० | " | " | | " | विशेषव्याप्तिसिद्धान्तलक्षण- प्रकरणयोः । |
| ९०७×३०२ | ७ | ४० | " | " | | " | |
| ९०६×४०२ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| १००१×३०६ | ११ | ६२ | " | " | | " | पुस्तकेऽस्मिन्चित्ररूपस्य ग्राह्याभाव- ज्ञानप्रतिबन्धकत्वस्य द्रव्यनाशस्य प्रतियोगिज्ञानहेतुत्वस्य च विचा- रोऽस्ति । |
| ९०६×४०३ | ९ | ३२ | " | " | | पू० | शब्दार्थसारमञ्जर्याम् । |
| १००३×४०१ | १९ | ६० | " | " | १९०६ | " | |
| १००१×३०१ | ८ | ६७ | " | " | | " | पुस्तके एवकारदीधितिसारमञ्जरीति- लिखितमस्ति । |
| १००४×४०१ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| १००४×४०१ | ८ | ३६ | " | " | | " | |
| १००२×४०४ | १३ | ६२ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| ११०४×३०९ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १००१×४०३ | १४ | ६२ | " | " | | अपू० | अनुमितिव्याप्तिलक्षणयोर्विचारः । |
| ९०७×३०८ | ८ | ३८ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य सामान्या- भावप्रकरणांशं यावत् । |
| ८०२×३०८ | ९ | ३१ | " | " | | " | उपमानपरिच्छेदस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|------------------|----------------------|
| ३११८३ | आत्मतत्त्वविवेकदीपिका | रघुनाथशिरोमणिः | १-७०, ७०-१३९ । |
| ३११८४ | किरणावली | | २८-६८ । |
| ३११८५ | आत्मतत्त्वविवेकः | उदयनाचार्यः | १-८० । |
| ३११८६ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-९ । |
| ३११८७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १२४-१३३ । |
| ३११८८ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-१३, १५-२०, २४-२८ । |
| ३११८९ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवमिश्रः | १-२५ । |
| ३११९० | अज्ञानवादः | | १-४ । |
| ३११९१ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | ४४-५३ । |
| ३११९२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | " | २-२५ । |
| ३११९३ | किरणावलीप्रकाशदीधिति- गूढार्थप्रकाशिका | " | १-२० । |
| ३११९४ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १२ । (गणनया) |
| ३११९५ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | | १-११, १३-२७ । |
| ३११९६ | न्यायवार्त्तिकम् | उद्योतकरः | १-१६ । |
| ३११९७ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठः | १-५ । |
| ३११९८ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-३३, ३५-३८ । |
| ३११९९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठः | १-१७, १९-४१ । |
| ३१२०० | वैशेषिकसूत्रोपस्कारः | शङ्करमिश्रः | १-४६ । |
| ३१२०१ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | | १-६७ । |
| ३१२०२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| ८०९३० | १० | ३४ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ९०५३०४ | ७ | ४२ | " | " | | अपू० | प्रशस्तपादभाष्यटीका द्रव्यप्रकरणस्य । |
| ८०६३०६ | १० | २९ | " | " | | पू० | |
| ९०७४०३ | १० | ३३ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणाद् व्याप्त्यनुगम- प्रकरणांशः । |
| ११५३०३ | ६ | ४८ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १००५४०६ | १३ | ६६ | " | " | | " | अवयवप्रकरणात्सव्यभिचारप्रकरणांशं यावत् । |
| १००६४०६ | १६ | ६७ | " | " | | " | शब्दप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०५४०३ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | अज्ञानपदार्थविचारः । |
| १००२४०६ | १६ | ४४ | " | " | | अपू० | उपाधिप्रकरणस्य । |
| १००५४०६ | ११ | ४७ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १००३४०६ | १२ | ६८ | " | " | | " | प्रशस्तपादभाष्यटी०टी०टी०टी० गुणप्रकरणस्य । |
| १००२४०६ | १४ | ४३ | " | " | | " | शब्दखण्डः शब्दप्रामाण्यवादप्रक- रणस्य । |
| १००६४०६ | ९ | ३२ | " | " | | " | प्रथमाध्यायस्य । |
| १००५४०६ | १० | ४३ | " | " | | पू० | पञ्चमोऽध्यायः । |
| १००९४०९ | १२ | ४८ | " | " | १७७९ | " | उपमानपरिच्छेदः, तर्कप्रकाश इति नामान्तरम् । |
| १००५४०९ | १४ | ४८ | " | " | | अपू० | अनुमानखण्डः । अनुमितिप्रकर- णात्सत्प्रतिपक्षप्रकरणांशं यावत् । |
| ११५४ | १२ | ४७ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डः । |
| ११०२३०९ | ८ | ४३ | " | " | | " | १-२ अध्यायौ । तर्कप्रकाशाख्याटीका । |
| ११५४०९ | ७ | ४० | " | " | | " | शब्दखण्डः । |
| १३५४०९ | ११ | ६२ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम्. |
|------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------|
| ३१२०३ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२६ । |
| ३१२०४ | " | " | १-३८ । |
| ३१२०५ | " | " | १-२० । |
| ३१२०६ | " | " | १-१७, १७-२३ । |
| ३१२०७ | " | " | १-५६ । |
| ३१२०८ | " | " | १-२४ । |
| ३१२०९ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२७ । |
| ३१२१० | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-४२ । |
| ३१२११ | " | " | ३ । (गणनया) |
| ३१२१२ | " | " | १-११० । |
| ३१२१३ | " | " | ३-१९, ४१-७५ । |
| ३१२१४ | " | " | २२-६५ । |
| ३१२१५ | " | " | १-३८, ३८-६० । |
| ३१२१६ | " | जयदेवमिश्रः | १-९३ । |
| ३१२१७ | " | " | ३-९, ११-४६ । |
| ३१२१८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २-२४, २६-२९, ३४-३५, ३९-४२ । |
| ३१२१९ | पदार्थतत्त्वनिरूपणम् | " | १ । |
| ३१२२० | तत्त्वमण्यालोकरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ५+४६-२२९ । |
| ३१२२१ | माथुरीक्रोडपत्रम् | " | १-३ । |
| ३१२२२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिटीका | श्रीरामकृष्ण- भट्टाचार्यः | १, १४-२२०, २२२-२६७, २८४-३१८ । |
| ३१२२३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | महादेवभट्टः | १-३५, ३८-४७, ४७-६९, ८७-१४४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | क्रमां- कः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|---------------|----------|------------------------|---|
| १२*९×४*८ | १२ | ६३ | दे.ना. | का. | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणावच्छेदकत्वनिश्चि- प्रकरणयोः । |
| १३*३×९*१ | १६ | ४५ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १३*२×९*१ | १८ | ४६ | " | " | | पू० | " |
| १३×४*८ | १० | ५९ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १३×४*९ | ९ | ४७ | " | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| १२*५×४*५ | १२ | ५७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १२*४×४*६ | १० | ६१ | " | " | | " | " |
| १३*१×९*१ | १२ | ७२ | " | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १२*९×४*८ | ११ | ६२ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १३×४*९ | १२ | ६३ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद् व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| १२*९×४*९ | ११ | ६८ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १३*२×४*९ | १५ | ६० | " | " | | पू०* | सव्यभिचारप्रकरणाद्विरुद्धान्ता । |
| १२*८×४*८ | ११ | ६० | " | " | | अपू० | व्याप्त्यनुगमसामान्यलक्षणाप्रकरणयोः । |
| ११*३×४ | ९ | ३८ | " | " | १७३८ | पू० | प्रत्यक्षखण्डः, सन्निकर्षवादान्निर्वि- कल्पकवादान्तः । |
| ११*१×४*७ | १० | ३९ | " | " | | अपू० | उपाधिप्रकरणस्य । |
| ११*२×३*३ | ११ | ६८ | मै. | " | | " | अनुमितिमारभ्य पक्षताप्रकरण- पर्यन्तस्य । |
| १०*१×३*८ | ११ | ३८ | वङ्ग. | " | | " | " |
| ११*५×३*४ | ८ | ४७ | " | " | | " | मङ्गलवादादन्यथाख्यातिवादान्तम् । |
| १३*५×४*५ | ८ | ५२ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| ११*६×३*९ | १० | ५८ | " | " | | " | अनुमितिमारभ्य सामान्यलक्षणान्ता । |
| ९*३×४*२ | १० | ३६ | दे.ना. | " | | " | दिनकरीतिप्रसिद्धा । प्रत्यक्षखण्डा- च्छब्दखण्डांशा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|-----------------------------|----------------------------|
| ३१२२४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवदिनकरः | १३३-२३८ । |
| ३१२२५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-७ । |
| ३१२२६ | " | दामोदरदेवः | १-२ । |
| ३१२२७ | मितभाषिणी | माधवसरस्वती | १-२६ । |
| ३१२२८ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-५ । |
| ३१२२९ | " | " | १-७ । |
| ३१२३० | " | " | १-७ । |
| ३१२३१ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकरहस्यम् | | ५० । (गणनया) |
| ३१२३२ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथः | १-१० । |
| ३१२३३ | पदार्थप्रकाशः | | ३-९ । |
| ३१२३४ | अनुमितिपरामर्शयोः कार्य- कारणभावविचारः | | १-७ । |
| ३१२३५ | पदार्थखण्डनव्याख्या | रघुदेवः | १-३१ । |
| ३१२३६ | तर्कसङ्ग्रहटीका | चन्द्रजसिंहः | १-२६ । |
| ३१२३७ | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिविवेकः | विद्यावागीश- भट्टाचार्यः | १-५७ । |
| ३१२३८ | न्यायलीलावतीप्रकाशदीधि- तिटीका | | १-९, १२-३२, ३२-४०, ४०-८४ । |
| ३१२३९ | " | मथुरानाथः | १-१२ । |
| ३१२४० | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिविवेकः | विद्यावागीश भट्टाचार्यः | १-४८ । |
| ३१२४१ | आत्मतत्त्वविवेकदीधिति- विवृतिः | गदाधरभट्टाचार्यः | १०४-११३ । |
| ३१२४२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ४९-७० । |
| ३१२४३ | मुक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-४ । |
| ३१२४४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जयरामभट्टाचार्यः | १-७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विधेयः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---------------------------------|
| ९०४×३६ | ७ | ४६ | दे. ना. | का. | | अपू० | उपमानखण्डाद् गुणनिरूपणान्तः । |
| १२०९×५१ | ११ | ४६ | " | " | | पू० | व्यधिकरणप्रकरणे मिश्रलक्षणस्य । |
| १३०४×५१ | १४ | ५४ | " | " | | " | साधारणप्रकरणे मिश्रमतस्य । |
| ९०१×३० | ९ | ४४ | " | " | | अपू० | सप्तपदार्थाटीका । |
| १३०६×५३ | ११ | ५६ | " | " | १९१६ ? | पू० | |
| ९०४×३० | ८ | ६४ | " | " | | " | |
| १००३×४० | १२ | ५२ | " | " | | " | |
| ११०१×४६ | १४ | ५५ | " | " | | अपू० | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ९०१×३८ | ९ | २८ | " | " | | पू० | |
| ९०९×४३ | १२ | ३९ | " | " | | अपू० | अनुमानोपमानशब्दखण्डेषु । |
| १००९×३४ | १२ | ५३ | " | " | | " | |
| ९०९×४१ | ११ | ५१ | " | " | | पू० | |
| ९०३×४१ | ७ | ३० | " | " | | " | टीका-पदकृत्यम् । |
| ९०९×४३ | ११ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| ९०७×४२ | ९ | ३९ | " | " | | " | प्रारम्भतर्कलक्षणमन्यकर्तृकम् । |
| ९०६×४१ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| ९०९×४३ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| १६०५×३२ | ९ | ७८ | वङ्ग. | " | | " | |
| १३०५×३९ | ८ | ५३ | मैथि. | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ३०५×४१ | ९ | ६७ | " | " | | " | |
| १७०१×४१ | ९ | ७२ | वङ्ग. | " | | " | अतएवचतुष्टयप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|------------------------|-----------------------------|
| ३१२४५ | मुक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३१२४६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-७ । |
| ३१२४७ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-५६ । |
| ३१२४८ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-३७ । |
| ३१२४९ | " | गदाधरः | १-१६० । |
| ३१२५० | " | " | १-४५ । |
| ३१२०१ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-३, ५-१३ । |
| ३१२५२ | " | | १-१० । |
| ३१२५३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-२०, २२-२४, २४-४३, ४५-५८ । |
| ३१२५४ | आख्यातवादः | रघुनाथशिरोमणिः | १-७ । |
| ३१२५५ | पदवाक्यरत्नाकरः | गोकुलनाथो- पाध्यायः | १-१२, १५-५० । |
| ३१२५६ | तत्त्व०मण्यालोकहस्यम् | मथुरानाथः | १-२२ । |
| ३१२५७ | तत्त्व०मणिदीधितिरहस्यम् | " | १-७७ । |
| ३१२५८ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-१६ । |
| ३१२५९ | द्रव्यसारसङ्ग्रहः | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-८७ । |
| ३१२६० | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशः | १-६२ । |
| ३१२६१ | अन्यथाख्यातिवादार्थः | | १-५ । |
| ३१२६२ | समासवादः | जयरामभट्टाचार्यः | १-१३ । |
| ३१२६३ | किरणवलीभास्करः | पद्मनाभः | १-५९+१ । |
| ३१२६४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | दिनकरः | १-४७ । |
| ३१२६५ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १-३७ । |
| ३१२६६ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | १-६५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आद्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|--|
| १६०५२०९ | ७ | ७८ | वङ्ग. | का. | | पू० | |
| १८०५४ | ८ | ८६ | " | " | | अपू० | अतएवचतुष्टयप्रकरणस्य । |
| १६०५३०२ | ८ | १०२ | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १७०७३०५ | ९ | ९३ | " | " | | " | " |
| १२०५३०९ | ९ | ५० | दे. ना. | " | | अपू० | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १२०७४०७ | १० | ६६ | " | " | | " | " |
| १२०४४०८ | ८ | ५१ | " | " | | " | " |
| १२०५३०९ | १० | ५५ | " | " | | " | " |
| ११०४०५ | ९ | ४५ | " | " | | " | प्रामाण्यवाद उत्पत्तिवादप्रकरणस्य । |
| ९०१३०८ | ८ | ३५ | " | " | १८०७ | पू० | |
| १००२३०५ | १३ | ६७ | " | " | | अपू० | |
| १००४३०४ | ११ | ६७ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य |
| १०७०३०४ | ९ | ४८ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १२०९४०८ | ११ | ५१ | " | " | १८७८ | पू० | |
| १२०५४०९ | १० | ४३ | " | " | १८५४ | " | अत्र भावाभावपदार्थविचारः । |
| १२०५४०७ | १४ | ६७ | " | " | १८५३ | " | |
| १२३३०६ | १० | ५९ | " | " | १८५५ | " | |
| ९०७४०५ | ८ | ४१ | " | " | | " | |
| १००२३ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| ९०८४०२ | १३ | ४८ | " | " | ११७७ | अपू० | शब्दखण्डाद्गुणनिरूपणान्तः । |
| १००४३०४ | ११ | ४८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणमारभ्यासाध- कतासाधकत्वप्रकरणांशः । |
| १००५४ | ९ | ३५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य केवलान्वयि- प्रकरणांशः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|------------------|-------------------------------|
| ३१२६७ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकप्रकाशः | भवानन्दः | ७३ । (गणनया) |
| ३१२६८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १३-२२, १७-२८, ६९-८६ । |
| ३१२६९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | ३-५२ । |
| ३१२७० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | २-२५ । |
| ३१२७१ | किरणावलीप्रकाशः | वर्द्धमानः | ६१-६२, ६८-८९, ९१-९७, ९९-१०३ । |
| ३१२७२ | प्रमाणमञ्जरीख्या | मुनिः | १-२७, २९-४० । |
| ३१२७३ | कारकवादः | जयरामभट्टाचार्यः | ७-१७ । |
| ३१२७४ | " | " | १ । |
| ३१२७५ | तर्कभाषा | | १९-४१ । |
| ३१२७६ | माथुरीपत्रिका | | १-२५ । |
| ३१२७७ | जागदीशीपत्रिका | | १-१८, ४२-५० । |
| ३१२७८ | गादाधरीपत्रिका | | १-८ । |
| ३१२७९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | ५ । (गणनया) |
| ३१२८० | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाश- सर्वोपकारिणी | महादेवः | ६४ । " |
| ३१२८१ | गादाधरीपत्रिका | शङ्करभट्टाचार्यः | १-५ । |
| ३१२८२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-५५ । |
| ३१२८३ | निरुक्तिप्रकाशः | | ४८ । (गणनया) |
| ३१२८४ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१२, ३ । |
| ३१२८५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १०-६२ । |
| ३१२८६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-४७ । |
| ३१२८७ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-२४ । |
| ३१२८८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | ३ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|--|
| १०५५३९ | ९ | ४१ | दे.ना. | का. | | अपू० | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| १३६५५३ | १५ | ७६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य व्यधिकरण-प्रकरणपर्यन्ता । |
| १०४५४४ | ७ | ३६ | " | " | | " | शब्दखण्डेऽपूर्ववादप्रकरणस्य । |
| ८७५३९ | ११ | ४३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११४५३४ | ८ | ५७ | " | " | १५९३ | " | द्रव्यप्रकरणस्य । |
| ८५५३९ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| १०३५४ | १० | ५४ | " | " | | " | |
| १०२५४ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| १०७५४ | ८ | ३६ | " | " | | " | |
| १३७५४३ | ८ | ४२ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १४५४३ | ७ | ३६ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १३१५९२ | १२ | ४५ | " | " | | पू० | प्रामाण्यवादप्रकरणांशस्य । |
| १०९५४६ | १२ | ४४ | " | " | | अपू० | व्याप्तिग्रहोपायतर्कप्रकरणयोः । अन्ते जागदीश्याःपत्राण्यपि सन्ति । |
| १०१५४३ | १२ | ५४ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणप्रकरणादवच्छेदक-त्वनिरुक्तिप्रकरणान्ता । |
| १३३५९१ | ११ | ५१ | " | " | | पू० | साधारणप्रकरणस्य । |
| १३३५९१ | ९ | ४३ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणाद्वाधांशम् । |
| १०८५४४ | १० | ३६ | " | " | | " | अवयवसव्यभिचारप्रकरणयोः । |
| १२८५४८ | १० | ४५ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १५५५३७ | ६ | ५४ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणप्रकरणात्सामान्य-लक्षणाप्रकरणांशा । |
| १३६५४१ | ८ | ५४ | " | " | | पू० | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १५३५४१ | ७ | ५३ | " | " | | " | " |
| १३५४१ | ८ | ७७ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षे विभाजकलक्षणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------------|---------------------------|
| ३१२८९ | सप्तपदार्थी | शिवादित्यः | १-७ । |
| ३१२९० | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | ३ । (गणनया) |
| ३१२९१ | गादाधरीपत्रिका | | १-२५ । |
| ३१२९२ | गादाधरीटीका | | १-११०, ११५-१२० । |
| ३१२९३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १ । |
| ३१२९४ | स्मृतिसंस्कारविचारः | | १-३, ५-१२ । |
| ३१२९५ | आख्यातशक्तिवादः | रघुनाथशिरोमणिः | १-७ । |
| ३१२९६ | आख्यातवादः | | १-६ । |
| ३१२९७ | शाब्दबोधविचारः | | १-४ । |
| ३१२९८ | आख्यातशक्तिवादः | शिरोमणिभट्टाचार्यः | १-६ । |
| ३१२९९ | " | " | १-४ । |
| ३१३०० | " | " | ६ । (गणनया) |
| ३१३०१ | " | " | १-६ । |
| ३१३०२ | आख्यातविचारः | | १-२० । |
| ३१३०३ | आख्यातवादटिप्पणी | मथुरानाथः | २२-५१ । |
| ३१३०४ | आख्यातवादविवरणम् | रघुदेवः | २-३५ । |
| ३१३०५ | आख्यातवादटीका | कमलाकरभट्टः | १-१०, १०-३२ (=३३) ३४-४३ । |
| ३१३०६ | नञ्वादः | रघुनाथशिरोमणिः | १-२ । |
| ३१३०७ | " | " | १-२ । |
| ३१३०८ | " | " | १-४ । |
| ३१३०९ | नञ्वादटीका | गदाधरः | १ - २२+१, २६-३१ । |
| ३१३१० | " | " | १-२९ । |
| ३१३११ | नञ्वादविवेकः | रामकृष्णः | ३-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | सं- ज्ञा | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------------|----------|------------------------|---|
| ९×४ | १० | ४२ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १०×८×४ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | सामान्याभावप्रकरणस्य । |
| १३×३×९×१ | ११ | ४६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १२×४×४×२ | ९ | ४३ | " | " | | " | तत्त्व=मणि.दी.टी.टी.सामान्यनिरु- क्तिप्रकरणस्य । |
| ११×४×६ | १३ | ४७ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| ९×२×२×९ | १० | ५५ | " | " | १७०९ | " | कार्यकारणभावरूपः । |
| ११×४×४ | ८ | ५६ | " | " | | पू० | |
| ११×५×५ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ९×७×४×३ | १४ | ३४ | " | " | | " | प्रकृत्यर्थप्रत्ययार्थादीनाम् । |
| १०×४×२ | १२ | ३९ | " | " | | " | आख्यातविवेकइति नामान्तरम् । |
| १०×३×६ | १२ | ४७ | " | " | | " | शब्दमणिदीधितिरिति नामान्तरम् । |
| १०×४×४×८ | १२ | ४० | " | " | | अपू० | आख्यातविवेकइत्यपि नाम दृश्यते । |
| १०×५ | १३ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १०×३×४×३ | १० | ४६ | " | " | | अपू० | अत्र दशलकारार्थविचारोऽस्ति । |
| १०×१×४×४ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ८×७×३×४ | १० | ३५ | " | " | १७६६ | " | |
| ११×४×६ | ९ | ४० | " | " | १७७६ | पू० | |
| १०×५×४×५ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| ८×३×३×६ | १४ | ४० | " | " | | " | |
| १०×४×२×२ | ७ | ५८ | " | " | | पू० | |
| १०×५×४×६ | ९ | ४० | " | " | | अपू० | |
| १३×४×५×१ | १० | ४९ | " | " | | पू० | |
| ८×१×३×७ | १२ | ४९ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|-----------------|-------------------|
| ३१३१२ | पदवाक्यरत्नाकरः | गोकुलनाथशर्मा | १-११३ । |
| ३१३१३ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-१४ । |
| ३१३१४ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवः | २-१९८ । |
| ३१३१५ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | १-१११ । |
| ३१३१६ | किरणावलीप्रकाशदीधितिः | | १-५० । |
| ३१३१७ | तर्कभाषा | | १ । |
| ३१३१८ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-९ । |
| ३१३१९ | " | " | २-१३ । |
| ३१३२० | " | " | १-३ । |
| ३१३२१ | तर्कमृततरङ्गिणी | | १-२६ । |
| ३१३२२ | पदार्थप्रकाशः | लौगाक्षिभास्करः | १-२० । |
| ३१३२३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | ४१-७० । |
| ३१३२४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १-२०, २२-४३ । |
| ३१३२५ | " | " | ७०-१२६ । |
| ३१३२६ | " | " | १-८७ । |
| ३१३२७ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | | १-१० । |
| ३१३२८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | १४ । (गणनया) |
| ३१३२९ | कारिकावली | | १-१४ । |
| ३१३३० | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | २२-५४ । |
| ३१३३१ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | दिनकरः | १-५२ । |
| ३१३३२ | " | महादेवः | १-४१ । |
| ३१३३३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटी. | | १-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-----------------------|--|
| ११३×४९ | १२ | ४३ | दे. ना. | का. | १८३० | पू० | |
| ११५×३७ | ९ | ४३ | " | " | | " | अनुमाने मुक्तिवादप्रकरणस्य । |
| १०७×३७ | १० | ५१ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणान्मुक्तिवादांशः । |
| ९६×३२ | १० | ४७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणान्मुक्तिवादांशः । |
| ९७×४२ | १० | ४७ | " | " | १८४५ | पू० | प्रशस्तपादभाष्यटी. टी. टी. गुण- प्रकरणस्य । |
| ८३×४ | ११ | २९ | " | " | | " | |
| ८३×४ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| २८×३९ | ८ | २७ | " | " | | " | |
| ११९×४५ | १३ | ६२ | " | " | | " | |
| ८८×३४ | १० | ४१ | " | " | १७८६ | " | |
| १०×४४ | ८ | ३१ | " | " | | " | |
| १३०×४९ | १३ | ६६ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणधर्माविच्छिन्नाभाव- प्रकरणस्य । |
| ९५×३० | ९ | ३८ | " | " | | " | प्रत्यक्षानुमानखण्डयोः । |
| १०४×३९ | ६ | ४० | " | " | | " | शब्दगुणखण्डयोः । |
| ९६×४२ | ११ | ३२ | " | " | | पू० | |
| ८×४२ | १३ | ३४ | " | " | | अपू० | शब्दखण्डस्य । |
| ९२×४२ | १० | ४८ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ९×५९ | ९ | १७ | " | " | | " | |
| ९५×४९ | १२ | ४२ | " | " | १८४३ | " | अनुमानखण्डाद् गुणखण्डान्ता । |
| ९५×४३ | १० | ३० | " | " | | पू० | गुणखण्डस्य । |
| ९×४९ | ११ | ३८ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ९८×४४ | ११ | ३७ | " | " | | पू० | अनुमानोपमानखण्डयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|----------------------------|-------------------|
| ३१३३४ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-८ । |
| ३१३३५ | व्युत्पत्तिवादक्रोडपत्रम् | | १-७ । |
| ३१३३६ | " | | १-१५ । |
| ३१३३७ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-६ । |
| ३१३३८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-१० । |
| ३१३३९ | न्यायलीलावतीप्रकाशटीका | रघुनाथशिरोमणिः | १-४९ । |
| ३१३४० | न्यायलीलावतीप्रकाशः | वर्द्धमानोपाध्यायः | १८ । (गणनया) |
| ३१३४१ | किरणावलीप्रकाशः | " | १-११६ । |
| ३१३४२ | किरणावलीप्रकाशटीका | भगीरथः (मेघः) | १-२१८ । |
| ३१३४३ | तत्त्व०मणितत्त्वदीपिका | विष्णुपतिः | १-१९२ । |
| ३१३४४ | न्यायलीलावतीप्रकाशः | वर्द्धमानः | १७७ । (गणनया) |
| ३१३४५ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवः पक्षधरोवा | १-१५३ । |
| ३१३४६ | " | पक्षधरमिश्रः | १२७ । (गणनया) |
| ३१३४७ | तत्त्व०मणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-३९ । |
| ३१३४८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | | १-७० । |
| ३१३४९ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पक्षधरमिश्रः जयदेवोवा | १-३१, ३३-१२७ । |
| ३१३५० | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | म.म.सन्मिश्र- वाचस्पतिः | ७९ । (गणनया) |
| ३१३५१ | आत्मतत्त्वविवेकः | उदयनाचार्यः | १-९४ । |
| ३१३५२ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- चित्रकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| ११०७×९२ | ९ | ४० | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १०२×४३ | ९ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| १०८×४९ | १२ | ४४ | " | " | | " | |
| १३×४१ | ११ | ६६ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| ११×४९ | ११ | ३७ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३६×२३ | ६ | ९९ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १४×१९ | ६ | ८२ | मै. | ता. | | अपू० | |
| १३२×१८ | ६ | ७६ | " | " | | पू० | प्रशस्तपादभाष्य टी० टी० गुण- प्रकरणस्य । |
| १४×२ | ६ | ७८ | " | " | | " | द्रव्यगुणप्रकरणयोः |
| १३७×२ | ६ | ६७ | " | " | | अपू० | शब्दाप्रामाण्यवादमारभ्य शब्दानि- त्यतावादांशः । |
| १४×२१ | ६ | ७८ | वङ्ग. | " | | " | |
| १३×१९ | ६ | ७४ | मै० | " | | पू० | प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादमारभ्य निर्विकल्पकवादान्तः । |
| ११×१६ | ६ | ६४ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादमारभ्य प्रत्यक्षकारणतावादांशः । |
| १३२×१९ | ९ | ९२ | वङ्ग. | का. | | पू० | प्रामाण्यवादप्रकरणमारभ्यान्य- थाख्यातिवादान्ता । |
| १९९×२ | ९ | ६४ | मै. | ता. | | अपू० | प्रत्यक्षे सन्निकर्षसमवायानुपलब्धि- वादानाम् । |
| १३७×१९ | ६ | १११ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादान्निर्विकल्पक- वादांशः । |
| १०३×१३ | ६ | ९४ | " | " | | " | मङ्गलवादान्निर्विकल्पकवादान्तः । |
| १४७×१८ | ९ | ८१ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १७३×३७ | ८ | १०८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणे नचचतुष्टय- कल्पस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|--------------------------|-------------------|
| ३१३५३ | न्यायलीलावती | वल्लभः | १-१११ । |
| ३१३५४ | " | | १-९८ । |
| ३१३५५ | तत्त्वचिन्तामण्यालोक- कण्टकोद्धारः | मधुसूदनः | १-१५७ । |
| ३१३५६ | न्यायलीलावतीप्रकाशः | वर्द्धमानः | १-१९१ । |
| ३१३५७ | किरणावली | उदयनाचार्यः | १-८५, १०२-१०४ । |
| ३१३५८ | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिचिन्तकः | भवानन्दविद्या- वागीशः | १-१६६ । |
| ३१३५९ | किरणावली | उदयनाचार्यः | १ । |
| ३१३६० | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-७१ । |
| ३१३६१ | किरणावली | उदयनाचार्यः | १-६६ । |
| ३१३६२ | किरणावलीप्रकाशविवृतिः | भगीरथः | १-११७ । |
| ३१३६३ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २-८० । |
| ३१३६४ | आख्यातशक्तिवादः | रघुनाथशिरोमणिः | ७ । (गणनया) |
| ३१३६५ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १० । " |
| ३१३६६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १३ । " |
| ३१३६७ | माथुरी पत्रिका | | ११ । " |
| ३१३६८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१३६९ | " | | १ । |
| ३१३७० | आख्यातशक्तिवादविवृतिः | मथुरानाथः | १-४५ । |
| ३१३७१ | आख्यातशक्तिवादः | रघुनाथशिरोमणिः | १, ८-१७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आशः | लिपिकालः | पूर्णावृत्ति- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|-----|----------|-------------------------|---|
| १३*७*१*८ | ५ | ७७ | वङ्ग. | ता. | | पू० | |
| १४*१*२ | ५ | ७८ | " | " | | अपू० | विभागनिरूपणांशा |
| १४*२*१*७ | ५ | ८८ | मै. | " | | पू० | अर्थापत्तिप्रकरणान्मुक्तिवादान्तः । |
| १४*४ | ६ | ८२ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १३*३*२*१ | ५ | ७० | मै. | " | | " | प्रशस्तपादभाष्यटी० गुणप्रकरणस्य । |
| १३*४*२ | ६ | ६८ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १३*१*९ | ६ | ५३ | " | " | | अपू० | प्रशस्तपादभाष्यटी० गुणप्रकरणस्य । |
| १४*४*१*४ | ५ | ७० | " | " | | " | |
| १२*३*१*५ | ५ | ८० | मै. | " | | पू० | |
| १४*१*८ | ६ | ९७ | वङ्ग. | " | | " | गुणग्रन्थस्य । किरणावलीप्रकाश- विषयाशयप्रकाशइत्यपि प्रारम्भे नाम दृश्यते । |
| १२*३*१*५ | ५ | ९७ | मै. | " | | अपू० | परामर्शप्रकरणात्सामान्यनिरुक्ति- प्रकरणांशा । |
| १४*९*१*६ | ४ | ७० | वङ्ग. | " | | " | |
| १६*३*३*७ | १ | ८३ | का. | " | | " | पक्षतासामान्यनिरुक्तिप्रकरणयोः । |
| १७*५*३*६ | ८ | ८३ | " | " | | " | तर्कावयवानुमितिप्रकरणानाम् । अत्र तत्त्वचिन्तामणेः कानिचित्पत्राण्यपि सन्ति । |
| १८*८*३*४ | ८ | ७७ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १३*४*३*४ | १७ | ३५ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १४*३*३*५ | १२ | ३२ | " | " | | " | " |
| १३*७*२*९ | ६ | ८३ | " | " | | पू० | |
| ११*८*४ | ९ | ५६ | मै. | का. | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-----------------------------|-------------------------|
| ३१३७२ | सन्निकर्षवादः | | ३०-४२ । |
| ३१३७३ | अपूर्ववादः | | १-२७ । |
| ३१३७४ | जातिवाधकरहस्यम् | | १ । |
| ३१३७५ | वादार्थः | | १-२०, २०-१०२, १०२-१२५ । |
| ३१३७६ | सादृश्यवादः | | १-५ । |
| ३१३७७ | कारणताविचारः | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-५ । |
| ३१३७८ | विशेषणज्ञानविचाररहस्यम् | | १-३ । |
| ३१३७९ | दशलकारवादः | रघुदेवः | ८ । (गणनया) |
| ३१३८० | जातिवाधकरहस्यम् | | १ । |
| ३१३८१ | तत्त्वचिन्तामणिपत्रिका | | १-४ । |
| ३१३८२ | माथुरीपत्रिका | | १-३ । |
| ३१३८३ | " | | १-९ । |
| ३१३८४ | जागदीशी पत्रिका | | १-१९ । |
| ३१३८५ | सामग्रीप्रतिबन्धकतावादः | | १-७ । |
| ३१३८६ | गादाधरी पत्रिका | | १-११ । |
| ३१३८७ | स्वप्रकाशरहस्यम् | | १-८ । |
| ३१३८८ | कारकाद्यर्थनिर्णयः | भवानन्दसिद्धान्त- वागीशः | १ । |
| ३१३८९ | देवतावादरहस्यम् | | १-२ । |
| ३१३९० | भावप्रत्ययवादः | | १-५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|--------|----------|-------------------------|--|
| १३*३×३*१ | ८ | ८५ | वङ्ग. | का. | | अपू० | एवकारवादश्च । |
| १३*३×३*१ | ८ | ८४ | " | " | | पू० | जातिशक्तिवादस्तर्कवादः सामान्य- लक्षणाः च । |
| १७*७×३ | ८ | ८६ | " | " | | " | विवाहविचारश्च । |
| १२*८×३ | ६ | ६६ | " | " | | " | अत्र सामग्रीवादमारभ्य धर्मि- तावच्छेदकवादान्ताविविधा वादाः सन्ति । |
| १३*५×३*३ | ३ | ३१ | " | " | | " | |
| १८*५×३*५ | ८ | १०५ | " | " | | " | अभावज्ञानप्रतियोगिज्ञानयोः । |
| १८*५×३*५ | ९ | ९७ | " | " | | अपू० | |
| १७*५×३*३ | ८ | ९३ | " | " | | " | उपसर्गविचार ईश्वरवादो मीमांसविचारश्च । |
| १७*१×२*९ | ५ | ७७ | " | " | | पू० | |
| १३*५×२*९ | १० | ६३ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणे प्रथमलक्षणस्य । |
| २०×३*३ | ६ | ११७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १६*६×३*३ | ६ | ११६ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| २०*५×३*५ | ६ | ९८ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १८*४×३*५ | ९ | १०८ | " | " | | " | |
| १९*९×३*४ | ६ | ११७ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणे प्रथमवि- प्रतिपत्तेः । |
| १९*१×४*५ | १० | ९५ | " | " | | " | ज्ञाने स्वप्रकाशत्ववादिनां मीमांस- कादीनाम् मतेषु । |
| १५*९×३*६ | १० | ७९ | " | " | | अपू० | |
| १७*८×३*३ | ८ | ९९ | " | " | | पू० | इन्द्रादिपदानां शक्तिविचारः नमोऽन्तवाक्यस्य मन्त्रत्वविचा- रश्च । |
| १७*७×३*३ | ९ | ८४ | " | " | | अपू० | त्वन्तलादीनाम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|------------------|-------------------|
| ३१३९१ | ज्ञानरूपविचारः | | ५। (गणनया) |
| ३१३९२ | स्वर्गवादः | | १। |
| ३१३९३ | ब्राह्मणत्ववादः | | १। |
| ३१३९४ | विधिवादः | | १-८, ८। |
| ३१३९५ | " | | १-११। |
| ३१३९६ | नव्यमतवादाद्यर्थः | | १२। (गणनया) |
| ३१३९७ | माथुरी पत्रिका | | १-४। |
| ३१३९८ | आत्मतत्त्वविवेकदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-१२१, १२३-१२५। |
| ३१३९९ | आत्मतत्त्वविवेकः | उदयनाचार्यः | ८५। (गणनया) |
| ३१४०० | नव्यमतविचारः | | ८८-१००। |
| ३१४०१ | सन्निकर्षवादाद्यर्थः | | ११। |
| ३१४०२ | " | | १-१२। |
| ३१४०३ | सन्निकर्षवादः | | १-२। |
| ३१४०४ | विवाहवादाद्यर्थः | गदाधरभट्टाचार्यः | १। |
| ३१४०५ | " | " | १-३। |
| ३१४०६ | " | | १-२। |
| ३१४०७ | प्रागभाववादाद्यर्थः | | १-३। |
| ३१४०८ | शब्दरहस्यम् | रामकान्तः | १-२९। |
| ३१४०९ | प्रीतिवादः | | १-१३। |
| ३१४१० | न्यायादर्शः | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१४। |
| ३१४११ | प्रायश्चित्तलक्षणनिष्कर्षः | | १। |
| ३१४१२ | रत्नकोशकारमतविचारः | | १-२। |
| ३१४१३ | साङ्ख्यवादाद्यर्थः | | १-२। |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|-------|----------|-------------------------|---|
| १७०५×३०३ | ८ | ११० | वङ्ग. | का. | | अपू० | अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारणभावे मीमांसकमते । |
| १७०२×३०५ | १० | ७१ | " | " | | पू० | |
| १७०५×३०३ | ८ | ११५ | " | " | | अपू० | |
| १६०१×२०६ | ६ | ८० | " | " | | " | |
| १७०६×३०४ | ९ | १० | " | " | | पू० | |
| ११०८×४ | १२ | ५९ | मै. | " | | अपू० | अनुमितिपरामर्शविचारप्रसङ्गे । |
| १९०९×३०९ | ६ | १०८ | वङ्ग. | " | | पू० | तर्कप्रकरणस्य । |
| १२०८×१०४ | ५ | ८५ | मै | ता. | श. १५१६ | अपू० | |
| ११०४×१०४ | ५ | ७२ | " | " | | पू०* | |
| १७०२×३०२ | ८ | १११ | वङ्ग. | का | | अपू० | अनुमितिपरामर्शविचारे । |
| १४०७×२०९ | १२ | ९८ | " | " | | " | |
| १८०५×३०४ | ९ | ८९ | " | " | | पू० | |
| १२×३०६ | ८ | ६३ | मै. | " | | अपू० | |
| १८×३०३ | ७ | ६९ | वङ्ग. | " | | " | वन्धुप्रयोगश्च । |
| १२०३×३ | ६ | ६८ | " | " | | पू० | |
| ७०४×३०५ | ९ | ७५ | " | " | | " | |
| १२०५×४०१ | १२ | ६३ | मै. | " | | अपू० | |
| १६०२×८ | ६ | ९० | वङ्ग. | " | | पू० | कारकादीनां विचारः । |
| १३०३×३०१ | ८ | ८१ | " | " | | " | |
| १३०३×३०१ | ८ | ८० | " | " | | " | अत्र कारणतापदार्थविचारोऽस्ति । |
| १६०६×२०५ | १० | ८७ | " | " | | " | |
| १६०८×२०९ | ७ | १२४ | " | " | | अपू० | सत्प्रतिपक्षविचारे । |
| १९×३०३ | ८ | १०१ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---------------|-------------------|
| ३१४१४ | अनुमानप्रामाण्यवादः | | १-४२ । |
| ३१४१५ | बाधवादार्थः | | १-१० । |
| ३१४१६ | " | | १ । |
| ३१४१७ | " | | १-४ । |
| ३१४१८ | " | | १-२ । |
| ३१४१९ | " | | १, ३-१० । |
| ३१४२० | अनुमितिप्रतिबन्धकतावादः | | १-१३ । |
| ३१४२१ | सामान्यलक्षणारहस्यम् | | १-८ । |
| ३१४२२ | स्मृतिसंस्कारहस्यम् | | १-११ । |
| ३१४२३ | आकाङ्क्षावादः | | १-९ । |
| ३१४२४ | योग्यतावादार्थः | | १-५ । |
| ३१४२५ | विषयतावादार्थः | | १-४ । |
| ३१४२६ | " | | १-११ । |
| ३१४२७ | बाधवादार्थः | | १-८ । |
| ३१४२८ | जातिशक्तिवादः | | १-४ । |
| ३१४२९ | आसत्तिवादः | | १-१० । |
| ३१४३० | अभिधावादः | | १-२ । |
| ३१४३१ | शब्दप्रामाण्यविचारः | | १-६ । |
| ३१४३२ | एवकारवादार्थः | | २ । (गणनया) |
| ३१४३३ | कारणतावादार्थः | | १-३ । |
| ३१४३४ | गादाधरी पत्रिका | चन्द्रनारायणः | १-१६ । |
| ३१४३५ | " | | १-१३ । |
| ३१४३६ | " | कालीशङ्करः | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|-------|----------|------------------------|----------------------------------|
| १९×४०५ | ११ | ८९ | वङ्ग. | का. | | पू० | वायुवादः परोक्षवादः संशयवादश्च । |
| १८०×३३३ | ८ | ९४ | " | " | | " | |
| १८०×३३५ | ९ | ८३ | " | " | | अपू० | |
| १९×४०५ | १० | ९१ | " | " | | " | |
| १९०×४०५ | १० | ८६ | " | " | | " | |
| १८०×३३३ | १० | १०४ | " | " | | " | |
| १९×४०५ | १२ | ८८ | " | " | | " | अनुमितिपरामर्शकार्यकारणभावश्च । |
| १९×४०५ | १० | ८८ | " | " | | पू० | |
| १९×४०५ | १० | ८५ | " | " | | " | |
| १९०२×४०५ | १० | ९७ | " | " | | " | |
| १९×४०५ | १० | ९० | " | " | | " | |
| १३३×३३३ | ७ | ६२ | " | " | | " | |
| १९×४०५ | ९ | ८७ | " | " | | " | |
| १८०४×४०५ | ९ | ८८ | " | " | | अपू० | |
| १९×४०५ | ९ | ६२ | " | " | | " | |
| १९×४०५ | १० | ९४ | " | " | | पू० | |
| १९०१×४०५ | १० | ९६ | " | " | | " | |
| १९×४०५ | १० | ९७ | " | " | | " | |
| १५०८×४०५ | ९ | ८४ | " | " | | अपू० | कारणतावादरहस्यश्च । |
| १५०८×४०५ | १० | ७३ | " | " | | " | |
| २०×३३५ | ६ | १२० | " | " | | पू० | साधारणप्रकरणस्य । |
| २०×३३५ | ६ | १०६ | " | " | | " | " |
| २०×३३५ | ६ | ११४ | " | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|--------------------------|-------------------|
| ३१४३७ | माथुरी पत्रिका | | २० । |
| ३१४३८ | गादाधरी पत्रिका | | १-१४ । |
| ३१४३९ | " | कालीशङ्करः | १-२३ । |
| ३१४४० | " | | १७ । |
| ३१४४१ | " | चन्द्रनारायणः | १-२४ । |
| ३१४४२ | " | | १-२६ । |
| ३१४४३ | " | | १-४४ । |
| ३१४४४ | " | कालीशङ्करः | १-३ । |
| ३१४४५ | " | " | १-६ । |
| ३१४४६ | " | " | १-८ । |
| ३१४४७ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३१४४८ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | | १ । |
| ३१४४९ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-४२ । |
| ३१४५० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| ३१४५१ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१० । |
| ३१४५२ | " | " | १-११ । |
| ३१४५३ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | " | २१-४६, ४७-६४ । |
| ३१५५४ | तत्त्वमणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १९-२० । |
| ३१४५५ | विध्यर्थविचारः | | १-७ । |
| ३१४५६ | अभिधावादः | | १-४ । |
| ३१४५७ | व्युत्पत्तिवादटीका | | ७ । (गणनया) |
| ३१४५८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | गोलोकनाथ- भट्टाचार्यः | ९ । " |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--------------------------------|
| २०×३० | ६ | ११ | वङ्ग. | का. | | पू० | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| २०×३० | ६ | १२० | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| २०×३० | ६ | ११४ | " | " | | " | " |
| २०×३० | ५ | ११३ | " | " | | " | " |
| २०×३० | ६ | ११४ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| २०×३० | ६ | ११८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| २०×३० | ६ | १०७ | " | " | | " | " |
| २०×३० | ६ | ११८ | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १२×१३ | ६ | ११८ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| २०×३० | ६ | १०९ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| २१×३० | ६ | ८२ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १३×७ | १९ | ६३ | दे. ना. | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १७×३० | ७ | ७६ | वङ्ग. | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १७×१३ | ५ | १०२ | " | " | | पू० | " |
| १६×८ | ८ | १०४ | " | " | | अपू० | असाधारणानुपसंहारिप्रकरणयोः । |
| १८×१३ | ८ | ९२ | " | " | | " | अनुपसंहारिप्रकरणस्य । |
| १६×६ | ८ | ८८ | " | " | | " | अपूर्ववादस्य । |
| १७×२ | ९ | १०० | " | " | | " | मङ्गलवादस्य । |
| १६×९ | १० | ७९ | " | " | | " | अपूर्ववादः । |
| १७×३ | ९ | ११४ | " | " | | पू० | अत्र प्रवर्तकज्ञानविचारः । |
| १०×२ | ११ | ५७ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १९×८ | ८ | ७१ | वङ्ग. | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|-------------------------------|-----------------------------------|
| ३१४०९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१९ । |
| ३१४६० | " | " | १० । (गणनया) |
| ३१४६१ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-७ । |
| ३१४६२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ४१-४८ । |
| ३१४६३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३९ । |
| ३१४६४ | न्यायलीलावतीप्रकाशः | वर्द्धमानोपाध्यायः | १-३९ । |
| ३१४६५ | " | " | १-६, ९-१४, २८-२९, २९, ३६-३७, ७७ । |
| ३१४६६ | " | " | ९ । (गणनया) |
| ३१४६७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ६० । " |
| ३१४६८ | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिटीका | | ३३ । " |
| ३१४६९ | न्यायलीलावती | वल्लभाचार्यः | २-३१+१ । |
| ३१४७० | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथ- भट्टाचार्यः | १०-२९ । |
| ३१४७१ | गादाधरीटीका | कृष्णम्भट्टः | १-२४ । |
| ३१४७२ | प्रमाणप्रमोदः | हरिः | १-७ । |
| ३१४७३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | श्यामचन्द्रविद्या- लङ्कारः | १-६ । |
| ३१४७४ | " | | १-२ । |
| ३१४७५ | | गोलोकनाथः | १-४९ । |
| ३१४७६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१९ । |
| ३१४७७ | " | " | १-१२ । |
| ३१४७८ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १८*२×३*७. | ८ | ८४ | वङ्ग. | का. | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १६*८×३*६ | ६ | ६१ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिविशेषन्यासि - प्रकरणयोः । |
| १६*१×३ | ९ | १०० | " | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३*४×३*९ | ८ | ६६ | मै. | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य चक्रवर्ति- प्रगल्भलक्षणयोः । |
| १२*८×४*९ | १६ | ६८ | दे. ना. | " | | " | सामान्यनिरुक्तिसत्प्रतिपक्षवाधाव- यवानुमितिप्रकरणानाम्, गादाध- रीक्रोडपत्राण्यपि । |
| ९*९×४*६ | १० | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ९*८×४*६ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ९*७×४*२ | १७ | ४४ | " | " | | " | |
| १०*१×३*६ | ७ | ६३ | " | " | | " | विशेषन्यासिप्रकरणादवयवांशा । |
| ९*६×४*१ | ११ | ३० | " | " | | " | दीधिति विवेकरहस्याभ्यां भिन्ना । |
| ९*६×४*३ | ११ | ४७ | " | " | | " | न्या. ली. प्रकाशदीधितेश्चैकं पत्रम् । |
| ९*६×४*४ | १७ | ३८ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद्विशेषन्यासि- प्रकरणांशम् । |
| १२*२×३*८ | १३ | ४६ | " | " | | " | न्यासिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १६*२×३*९ | ११ | ७१ | मै. | " | | पू० | परामर्शानुमिति विपयकः । |
| १६*२×३*२ | ११ | ९७ | वङ्ग. | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १६*२×३*४ | १२ | १०२ | " | " | | " | " |
| १६*६×४*१ | १० | ६१ | " | " | | अपू० | " |
| १८*४×४*८ | ८ | ८३ | " | " | | पू० | " |
| १६*८×३*७ | ९ | ७३ | " | " | | " | " |
| १८×३*७ | ७ | ८० | " | " | | अपू० | " अवयवप्रकरणस्य च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------|-------------------|
| ३१४७९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशतर्कालङ्कारः | १-३२ । |
| ३१४८० | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३१४८१ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१९ । |
| ३१४८२ | पदार्थदीपिका | | १-४४ । |
| ३१४८३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-३६ । |
| ३१४८४ | " | " | १-३७ । |
| ३१४८५ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-४५ । |
| ३१४८६ | " | " | १-२, ४-६५ । |
| ३१४८७ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१५ । |
| ३१४८८ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | ११-१७ । |
| ३१४८९ | न्यायसारः | माधवदेवः | ३-७१ । |
| ३१४९० | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३२ । |
| ३१४९१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३१४९२ | " | " | १-४ । |
| ३१४९३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १४ । (गणनया) |
| ३१४९४ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-२ । |
| ३१४९५ | " | " | १ । |
| ३१४९६ | " | " | ५-१७ । |
| ३१४९७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२७, २७-४२ । |
| ३१४९८ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-७ । |
| ३१४९९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२४ । |
| ३१५०० | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-६३ । |

| आकारः | पक्षि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| १७०३×३०४ | ८ | ८० | वङ्ग. | का. | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३०२×४ | ११ | ५६ | दे. ना. | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| ९०५×३०५ | १४ | ३३ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याघ्रप्रकरणयोः । |
| ८०९×३०६ | ९ | २४ | " | " | | " | |
| १७०२×३०६ | ८ | १०१ | वङ्ग. | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १८०४×३०६ | ८ | ८४ | " | " | | " | पक्षतापरामर्शप्रकरणयोः । |
| १६०९×३०४ | ८ | १२० | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| ११०४×४०३ | ११ | ४४ | " | " | | " | " |
| १८०४×४०१ | ८ | ९९ | वङ्ग. | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षव्यधिकरणसिद्धान्त- लक्षणप्रकरणानाम् । |
| १८०३×५०८ | ८ | ८७ | " | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| ९०४×४०१ | १४ | ३८ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदः । |
| १५०३×४ | ९ | ७७ | " | " | | " | द्वितीयापर्यन्तः । |
| ११०७×४०२ | १२ | ७९ | मै. | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| १२०२×३०७ | १५ | ६३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११०६×३०४ | १४ | ४३ | वङ्ग. | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| ९०८×२०८ | ७ | ६० | मै. | " | | " | अनुमितिमारभ्य व्यधिकरण- पर्यन्तस्य । |
| १००८×३०४ | ८ | ४८ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९०९×२०९ | ९ | ६८ | मै. | " | | " | उपाधिव्याप्तिग्रहोपायसामान्य- लक्षणाप्रकरणानाम् । |
| १७०३×३०२ | ८ | ९७ | वङ्ग. | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १८०२×३०२ | ८ | ११८ | " | " | | " | " |
| १६०८×३०६ | १० | ९१ | " | " | | अपू० | " |
| १८०२×३०५ | ६ | ६७ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|--|----------------------|
| ३१५०१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १ । |
| ३१५०२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२३ । |
| ३१५०३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १२-२० । |
| ३१५०४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १२२-१२९ । |
| ३१५०५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-७ । |
| ३१५०६ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | | ५-४९ । |
| ३१५०७ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १९ । (गणनया) |
| ३१५०८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३१ । |
| ३१५०९ | तत्त्वचिन्तामणिःसदीधितिः | गङ्गेशोपाध्यायः टी. रघुनाथशिरो- मणिः | ३-१० । |
| ३१५१० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | ५-१० । |
| ३१५११ | " | | १-५ । |
| ३१५१२ | " | | २-६ । |
| ३१५१३ | " | | १-१४, १६-२३, २३-२९ । |
| ३१५१४ | " | | १-२० । |
| ३१५१५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-५० । |
| ३१५१६ | प्रतिबध्यप्रतिबन्धक- भाववादः | | २ । (गणनया) |
| ३१५१७ | न्यायसिद्धान्तमाला | जयरामन्याय- पञ्चाननः | १-११ । |
| ३१५१८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-४ । |
| ३१५१९ | अनुमानोपमानविचारः | | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|---|
| १८२×३५ | ७ | ७७ | वङ्ग | का. | | अपू० | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १५३×३४ | ९ | ७६ | " | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १८३×३८ | १२ | ७८ | " | " | | अपू० | " |
| १७४×३४ | ८ | ८४ | " | " | | " | परामर्शप्रकरणे उद्यनाचार्यमतस्य । |
| १६१×३७ | ८ | ९२ | " | " | | " | असाधारणप्रकरणस्य । |
| ९५×४२ | १३ | ३७ | दे. ना. | " | | " | |
| १४५×३८ | ६ | ७४ | वङ्ग | " | | " | केवलान्वयिकेवलव्यतिरेक्यार्थपत्त्य- वयवप्रकरणानाम् । |
| १४४×४ | ११ | ५७ | दे. ना. | " | | पू० | " |
| १२८×२८ | ५ | ७० | वङ्ग | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १८८×४१ | १० | ९६ | " | " | | " | " |
| १८५×३७ | ९ | ८७ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणे अत्रवदन्ति- कल्पस्य । |
| १८६×४१ | १० | ७२ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणे स्वजातीय- कल्पस्य । |
| १८४×४१ | ८ | ८० | " | " | | पू०* | अवयवप्रकरणे न्यायलक्षणस्य । |
| १७३×४ | १० | ९२ | " | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १७१×३५ | ८ | १०४ | " | " | | पू० | " |
| १३३×४५ | ११ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| ८६×३६ | १३ | ४३ | " | " | | " | गौतमीयप्रथमसूत्रव्याख्या । |
| ९०×३८ | १४ | ३५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य, पूर्वपक्षव्याप्तेश्च । |
| ११८×४४ | १२ | ९३ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-----------------------------|----------------------------|
| ३१५२० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २-४ । |
| ३१५२१ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १ । |
| ३१५२२ | सङ्गतिविवरणम् | | १-६ । |
| ३१५२३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ५ । (गणनया) |
| ३१५२४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ११ । |
| ३१५२५ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | ३१-९२, १-२५, १-२९, ६१-६३ । |
| ३१५२६ | शाब्दबोधप्रकाशिका | रामकिशोर- भट्टाचार्यः | १-१० । |
| ३१५२७ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१५२८ | " | | १-४, ७-९ । |
| ३१५२९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-२ । |
| ३१५३० | माथुरीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३१५३१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | २७-३१ । |
| ३१५३२ | समासविचारः | | १-४ । |
| ३१५३३ | " | | २-४ । |
| ३१५३४ | समासवादः | भवानन्दसिद्धान्त- वागीशः | १-१९ । |
| ३१५३५ | " | जयरामपञ्चाननः | १-१२ । |
| ३१५३६ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-४ । |
| ३१५३७ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३१५३८ | तत्त्वचिन्तामणिव्याख्या | | १-७ । |
| ३१५३९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १ । |
| ३१५४० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १२*६×४*६ | ९ | ४९ | वज्र. | का. | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकादिप्रकरणस्य । |
| १२*६×४*६ | ८ | ४९ | " | " | | पू० | अनुमित्यादिप्रकरणस्य । |
| १२*४×३*८ | ७ | ३८ | " | " | | " | |
| १३*७×९*३ | १९ | ६३ | दे. ना. | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १३*३×४*१ | ८ | ७३ | मै. | " | | " | व्याप्तिवादे भेदान्यावृत्तानौपाधिक- त्वलक्षणयोः । |
| १६*६×३*३ | ८ | ८४ | " | " | | " | हेत्वाभासे सव्यभिचारप्रकरणाद्- वाधान्वा । |
| १२×४*४ | १० | ४१ | दे. ना. | " | | " | |
| १६*९×३*३ | १० | ९७ | वज्र. | " | | पू० | संक्षिप्तम् । संशयपक्षताप्रकरणस्य । |
| १८*१×३*८ | १० | ९१ | " | " | | अपू० | वृहत् । " |
| १८*६×३*३ | १० | १३२ | " | " | | पू० | पूर्वपक्षतायाः । |
| १८*३×२*९ | ९ | ८६ | " | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १८*१×३*१ | ७ | ९४ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १८*६×३*३ | ७ | १०० | " | " | | " | |
| १२*९×३*६ | ९ | ६१ | " | " | | " | |
| १२*६×२*१ | ६ | ६७ | " | " | | पू० | |
| १२*३×३*६ | ९ | ६३ | " | " | | " | |
| १८*८×३*९ | ९ | ९२ | " | " | | अपू० | साधारणप्रकरणस्य । |
| १४*४×२*९ | ७ | ६३ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १३*१×४*६ | १० | ७२ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणे प्रथमलक्षणस्य । |
| १६*४×३*१ | ८ | ६० | " | " | | अपू० | सामान्याभावप्रकरणस्य । |
| १३*६×२*९ | ४ | ६७ | " | " | | पू० | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--------------------------------|--|
| ३१५४१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-८ । |
| ३१५४२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-४, ६-१७ । |
| ३१५४३ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | १-९ । |
| ३१५४४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-६ । |
| ३१५४५ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२० । |
| ३१५४६ | " | | १-४ । |
| ३१५४७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२०० । |
| ३१५४८ | विधिविचारः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१५ । |
| ३१५४९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-२१, २३-३६, ३८-५९ । |
| ३१५५० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-५८ (=१-२) ५९-१३६, १३६-१७० । |
| ३१५५१ | शक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-५ (=१) ६-२० (=१) २१ । |
| ३१५५२ | मुक्तिवादटिप्पणी | कृष्णानन्दः | १-२ । |
| ३१५५३ | " | " | १-३९ । |
| ३१५५४ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१७ (=१) १८-२७ (=१-३) २८-३३ (=१) ३४-३५ (=१-३) ३६-५२ (=१) ५३-६१ (=१) ६२-८४ (=१-२) ८६ । |
| ३१५५५ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | गोलोकनाथः | १-२१ । |
| ३१५५६ | अन्वीक्षातत्त्वपरीक्षा | वंशधरशर्मा | १-५० । |
| ३१५५७ | " | " | १-४३ । |
| ३१५५८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-५४ । |
| ३१५५९ | दशलकारविचारः | सिद्धान्तवागीश- भट्टाचार्यः | १-६ । |
| ३१५६० | मुक्तिवादरहस्यम् | गदाधरभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३१५६१ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | प्रगल्भाचार्यः | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| १८०८×२०९ | ८ | ७७ | वङ्ग | का. | | अपू० | सामान्याभावप्रकरणस्य । |
| १६०३×३०१ | ६ | ६० | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १००८×८०८ | २९ | ३७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७०९×३०८ | ८ | ९९ | " | " | | " | " |
| १४०७×४०८ | ९ | ७० | " | " | | पू८ | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १८०३×३०४ | ८ | ७० | " | " | | अपू० | |
| १९०६×४०९ | १० | ७० | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्य सामान्य- लक्षणाप्रकरणान्ता । |
| १४०९×३०३ | ७ | ६३ | " | " | | " | |
| १७०३×४ | ८ | ८२ | " | " | | अपू० | शब्दखण्डे विधिवादस्य । |
| १९०४×३ | ७ | १०८ | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्य व्याप्तिपूर्व- पक्षप्रकरणान्ता । |
| १२×९ | १० | ९१ | " | " | १७७३ श. | " | |
| १७०४×३०८ | ८ | ६१ | " | " | | अपू० | |
| १९×३०८ | ८ | ७९ | " | " | | " | |
| १९०३×३०४ | ८ | ८४ | " | " | | पू० | |
| १६०३×३०८ | ९ | ८२ | " | " | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०९×३०९ | ८ | ९३ | मै. | " | | पू० | न्यायसूत्रटीका । प्रथमाध्यायः । |
| १३०९×३०९ | ८ | ६२ | " | " | | अपू० | " |
| १८०७×३०३ | ९ | ९३ | " | " | | पू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १६०७×३ | ६ | ९१ | वङ्ग | " | | " | |
| १९०८×३०९ | ८ | ८८ | " | " | | " | |
| १००३×४०९ | १३ | ९२ | दे.ना. | " | | " | उपमानपरिच्छेदस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------|----------------------|
| ३१५६२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-८ (= १)९-१६ । |
| ३१५६३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१३, १३-१५, १ । |
| ३१५६४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१५, २३ । |
| ३१५६५ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | २-१४ । |
| ३१५६६ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-५ । |
| ३१५६७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३१५६८ | " | " | ७-१३ । |
| ३१५६९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१५७० | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३१५७१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ६ । " |
| ३१५७२ | अवच्छेदकवादार्थः | | १-६ । |
| ३१५७३ | शब्दार्थसारमञ्जरी | जयकृष्णशर्मा | १-२२ । |
| ३१५७४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-८ । |
| ३१५७५ | अपादानकारकविचारः | | १-३ । |
| ३१५७६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-११, १३-२३, २३-२८ । |
| ३१५७७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१२ । |
| ३१५७८ | " | | १-७ । |
| ३१५७९ | " | | १-६ । |
| ३१५८० | " | | १ । |
| ३१५८१ | " | | १-२ । |
| ३१५८२ | " | | १-१७ । |
| ३१५८३ | " | | १-६ । |
| ३१५८४ | " | चन्द्रनारायणः | १-१० । |
| ३१५८५ | " | | ७-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- दिवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--------------------------------|
| १७*२×३*३ | ११ | ८० | वङ्ग. | का. | | पू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १९*४×४ | ८ | ८५ | " | " | | " | " |
| १७*७×३*९ | ८ | १०७ | " | " | | अपू० | " |
| १८*५×३*६ | ७ | ७९ | " | " | | " | " |
| १५×३*२ | ४ | ५८ | " | " | | पू० | " |
| १७*१×३*८ | ८ | ८३ | " | " | | अपू० | " |
| १५*८×३*९ | १० | ७७ | " | " | | " | " |
| १६*४×३*१ | ८ | ७९ | " | " | | " | " |
| १३*७×५*३ | १५ | ६१ | दे. ना. | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १४*७×३*४ | ९ | ७१ | वङ्ग. | " | | " | " |
| १४*२×३*३ | ८ | ६५ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७*७×३*२ | ६ | ७८ | " | " | १७०७ शक | पू० | " |
| १७*१×३*९ | ८ | ७५ | " | " | | अपू० | अपूर्ववादस्प । |
| १०*७×३ | ५ | ३५ | " | " | | " | " |
| ११*२×३*२ | १२ | ५८ | मैथि. | " | | " | विधिवादापूर्ववादयोः |
| १५*१×५*१ | १० | ६६ | वङ्ग. | " | | पू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १५×५*१ | १० | ६८ | " | " | | अपू० | " |
| १४*५×५*१ | ११ | ५७ | " | " | | पू० | " |
| १५*२×५*१ | ११ | ६६ | " | " | | अपू० | " |
| १५×५ | ९ | ६८ | " | " | | " | " |
| १५*१×५*१ | ९ | ७० | " | " | | " | " |
| १४*६×४ ८ | १० | ५१ | " | " | | " | " |
| १९*५×४ | १४ | ११२ | " | " | | " | " |
| १४*१×३*१ | ७ | ६४ | " | " | | " | " अवच्छेदकवादार्थो वा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|--------------------------------|--------------------------------|
| ३१५८६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | २-२० । |
| ३१५८७ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-४ । |
| ३१५८८ | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-५५ । |
| ३१५८९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३१५९० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-५, १ । |
| ३१५९१ | शब्दशक्तिप्रकाशिका- व्याख्या | रामभद्रः | १-६४ । |
| ३१५९२ | तत्त्व०मण्यालोकविवेकः | गुणानन्दः (मधु- सूदनशिष्यः) | १-५७ । |
| ३१५९३ | शक्तिवादविवृतिः | माधवः | १-३ । |
| ३१५९४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-२४, २९-७१ । |
| ३१५९५ | तत्त्व०मण्यालोकटीका | गदाधरः | १-६ । |
| ३१५९६ | " | " | १-७३, ७६-९६, ९८-२३०, २३२-२५४ । |
| ३१५९७ | व्युत्पत्तिवादः | " | ७-१०, ५१-६९, ८७ । |
| ३१५९८ | " | " | ११७-११८, १२०-१२५ । |
| ३१५९९ | " | " | २-३, ९-१९, १०४-११५, १२७-१६३ । |
| ३१६०० | " | " | ६३-१२० । |
| ३१६०१ | " | " | ३२-७५ । |
| ३१६०२ | " | " | १-३६, १-११३ । |
| ३१६०३ | " | " | १-१५, १५-२१८ । |
| ३१६०४ | व्युत्पत्तिवादटीका | | १-७, १-२४, १-२५, १-२, १-६९ । |
| ३१६०५ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | | २-१०४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आद्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|-------------------------|--|
| १८×३.५ | ८ | ९१ | वङ्ग. | का. | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १६.५×४ | ११ | ८६ | " | " | | " | अतएवचतुष्टयव्याप्तिग्रहोपायप्रकर- णयोः । |
| १९.२×४.१ | ८ | ७८ | " | " | | पू० | व्युत्पत्तिविचारोवा द्वितीयकारकात् सप्तमकारकान्तः । |
| १७.८×३.४ | ७ | ८५ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १३×३.३ | ५ | ५२ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । अत्र व्या- प्त्यनुगममाधुरीकोडपत्रञ्च विद्यते । |
| १५.७×३.५ | ५ | ६० | " | " | | अपू० | |
| १०.५×४.५ | ११ | ३९ | दे. ना. | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकर- णस्य । |
| १५.९×३.३ | ६ | ८२ | वङ्ग. | " | | " | |
| १०.५×३.२ | १० | ६६ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे प्रमालक्षणप्रकरणादनु- व्यवसायवादांशा । |
| १७.१×३.८ | ९ | ८८ | " | " | | " | शब्दखण्डे विधिविवादस्य । |
| १७.२×२.९ | ७ | १३३ | " | " | | " | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणादपूर्व- वादान्ता । |
| ९.६×४.२ | ८ | ३७ | दे. ना. | " | | " | |
| १०.१×४.२ | १० | ५५ | " | " | | " | |
| ११.४×३.६ | ९ | ५२ | " | " | | " | |
| १२.६×३.७ | १० | ५३ | " | " | | " | |
| १०×४.७ | १४ | ४६ | " | " | | " | |
| १३×४.२ | ८ | ४० | " | " | | पू० | |
| १०.७×४.६ | ७ | ३९ | " | " | १९२० | " | |
| १०.७×४.६ | ९ | ४७ | " | " | | अपू० | प्रथमव्युत्पत्तौ वचनार्थविचारांशा । |
| ९.६×४ | १० | ३६ | " | " | | " | अनौपाधिकत्वप्रकरणात्केवलव्यति- रेकिप्रकरणांशम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|-----------------------------------|--|
| ३१६०६ | नवीननिर्माणम् | रघुदेवशर्मा | १-२१, ३२-१०४ । |
| ३१६०७ | धर्मितावादार्थः | | १-२४ । |
| ३१६०८ | गादाधारीक्रोडपत्रम् | | १-२४ । |
| ३१६०९ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | महादेवः | १-५, ८-११, ११ । |
| ३१६१० | तर्कामृततरङ्गिणी | | १-७ । |
| ३१६११ | तर्कामृतं सटीकम् | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१८ । |
| ३१६१२ | तर्कामृतम् | " | १-१३ । |
| ३१६१३ | तर्कामृततरङ्गिणी | | १-१२, १४-१५, १७-२३ । |
| ३१६१४ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-३१ । |
| ३१६१५ | तर्कसङ्ग्रहचन्द्रिका | मुकुन्दगाडगिलः | १-१, २-४५ । |
| ३१६१६ | तर्कसङ्ग्रहसिद्धान्त- चन्द्रोदयः | कृष्णधूर्जटि- दीक्षितः | १-११ । |
| ३१६१७ | तर्कसङ्ग्रहचन्द्रिका | मुकुन्दगाडगिलः | १-४२ । |
| ३१६१८ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | अन्नम्भट्टः टी. का. गोवर्द्धनः | १-५ । |
| ३१६१९ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-८ । |
| ३१६२० | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | अन्नम्भट्टः टी. का. गोवर्द्धनः | १-१६ । |
| ३१६२१ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | २-४ । |
| ३१६२२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-४४, ४६-६५, ६५-८८, ८८-१४० (=१४१) १४२-१५४, + २, १५५-१६५, १६५-२०४ । |
| ३१६२३ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- टीका | हरिदासः | ६ । (गणनया) |
| ३१६२४ | " | " | ४१ " |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|-------------------------|---|
| १०८×४२ | १२ | ४६ | दे.ना. | का. | | अपू० | अनुमित्यादिलक्षणान्यधिकृत्य । |
| १३२×४२ | १० | ७४ | वङ्ग. | " | १७९६ श. | पू० | अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण- भावविचारात्मकः । |
| ७३×४७ | १८ | ३२ | दे.ना. | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०१×४७ | १० | २९ | " | " | | " | दिनकरीति नामान्तरम् । प्रत्यक्ष- खण्डस्य । |
| १०९×४६ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| १०३×४६ | १९ | ६३ | " | " | | पू० | टीका तरङ्गिणी । |
| ९७×४२ | ११ | ३० | " | " | | " | |
| १०९×४९ | १४ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| ९३×३९ | ७ | ३९ | " | " | | पू० | |
| ११६×३६ | ९ | ६८ | " | " | | अपू० | |
| १०६×४६ | ८ | २७ | " | " | | " | गूढार्थदीपिका वा । |
| १२६×६१ | १३ | ४६ | " | " | | पू० | |
| ९१×४२ | ११ | ३८ | " | " | | अपू० | टीका न्यायबोधिनी । |
| १२६×४९ | १० | ३२ | " | " | | पू० | |
| ९१×४ | ६ | ३१ | " | " | | " | टीका न्यायबोधिनी । |
| ९८×४३ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १२×४ | ७ | ३९ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य सामान्य- लक्षणाप्रकरणं यावत् |
| १८७×३८ | ७ | ६३ | मै. | " | | " | प्रथमस्तवकस्य । |
| १९९×४ | ६ | ८४ | वङ्ग. | " | | " | चतुर्थपञ्चमस्तवकयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-----------------------------|---|
| ३१६२५ | न्यायकुलुमाञ्जलिकारिकाटीका | हरिदासः | ८ । (गणनया) |
| ३१६२६ | तर्कसङ्ग्रहः | | ४-७, ९-११। |
| ३१६२७ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-२, ३-५५ । |
| ३१६२८ | तर्कभाषाभावार्थदीपिका | गौरीकान्तभट्टा- चार्यः | १-३४ । |
| ३१६२९ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १, ८-२२ । |
| ३१६३० | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठः | १-१५, १५-१६, १८-१६, १७ (= १८) १९- १०७, १०७-१६५, १६५-१९३, १९३-१९५, १९७-२१८ । |
| ३१६३१ | तर्कप्रकाशः | | ३-३१ । |
| ३१६३२ | जागदीशीक्रोडनिष्कर्षः | | १-२, १ । |
| ३१६३३ | तर्कचन्द्रिका | रामकृष्णभट्टः | १-१५ । |
| ३१६३४ | तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दसिद्धान्त- वागीशः | १ । |
| ३१६३५ | " | " | ३० । (गणनया) |
| ३१६३६ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | २५ । " |
| ३१६३७ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवमिश्रः | ४६ । " |
| ३१६३८ | तत्त्वचिन्तामणिः | | २-२० । |
| ३१६३९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-४ । |
| ३१६४० | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-७ । |
| ३११४१ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाशिका | नीलकण्ठः | १-६५ । |
| ३१६४२ | गादाधरीक्रोडपञ्चम् | कालीशङ्करः | १-१८ । |
| ३१६४३ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | २९-७१ । |

| भाकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| २००६४३० | ३ | ७८ | " | का. | | अ० | द्वितीयतृतीयस्तवकयोः । |
| १००७४४२ | ७ | ३७ | दे. ना. | " | | " | |
| १०९४४३ | ७ | ३८ | " | " | | " | तर्कप्रकरणस्य |
| १०६४४२ | १३ | ५३ | " | " | | " | |
| १०४४४८ | १० | ३२ | " | " | | " | |
| १०९४४२ | ९ | ३५ | " | " | १८३३ | " | तर्कप्रकाशो वा । |
| १०७४४२ | ११ | ४३ | " | " | | " | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका । |
| १२०५४५ | १७ | ६५ | " | " | | पू० | तर्कप्रकरणस्य । तर्कगादाधरो- कोडपत्रञ्च । |
| १००५४४६ | १४ | ४१ | " | " | १७५३ | " | |
| १०८४४१ | ११ | ४३ | " | " | | अ० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०३४४४ | १० | ३८ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०४४४२ | ११ | ४२ | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणमारभ्य वाधान्तः । भवानन्दकृतदीधिति- प्रकाशश्च । |
| १००५४३८ | ९ | ३७ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादसन्निकर्षवाद- योः । तत्त्वमग्निदीधितिटीका च । |
| १०५४४२ | १० | ४१ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणदुपाधिवादांशः । |
| १३०४४५ | १५ | ४२ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १३०६४५२ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| १३०४४५१ | ९ | ४४ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डाच्छब्दखण्डांशः । |
| १२०४४५ | १८ | ४४ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०८४४५ | १२ | ५७ | " | " | | अ० | अवच्छेदकनिरुक्तिप्रकरणाद्- विशेषव्याप्तिप्रकरणान्ता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------|-----------------------|
| ३१६४४ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ४१-६५ । |
| ३१६४५ | तत्त्व०मणिदीधितिटिप्पणी | जगदीशः | ४०-६२ । |
| ३१६४६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-४४ । |
| ३१६४७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-८ । |
| ३१६४८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १, १-२४ । |
| ३१६४९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| ३१६५० | " | | १-१७ । |
| ३१६५१ | " | | १ । (गणनया) |
| ३१६५२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ७-२३ । |
| ३१६५३ | " | " | १-६ । |
| ३१६५४ | " | " | १ । |
| ३१६५५ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १७ । (गणनया) |
| ३१६५६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | ३१-३९, ४१-६८ । |
| ३१६५७ | " | " | १२-५० । |
| ३१६५८ | सिद्धान्तचन्द्रोदयः | कृष्णधूर्जटिः | १-१८ । |
| ३१६५९ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१२ । |
| ३१६६० | " | | २-१८ । |
| ३१६६१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १०-२३, २५-२७, ५८-५९ । |
| ३१६६२ | व्युत्पत्तिवादः | | १-१५ । |
| ३१६६३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | ११-२८ । |
| ३१६६४ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | | ३६-३८ । |
| ३१६६५ | " | चूडामणिः | २-३५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- वाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-----------|----------|------------------------|--|
| १२*९×४*९ | १३ | ५९ | दे. ना. | का. | | अपू० | उपाधिप्रकरणात्सव्यभिचार- प्रकरणांशः । |
| १३×५ | १२ | ५४ | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १४*१×४*२ | ८ | ४१ | वङ्ग. | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १४*५×२*९ | ५ | ६३ | " | " | | पू० | " |
| १९*१×३*८ | ८ | १०८ | " | " | | " | " |
| १४*५×४*९ | ९ | ६९ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणे योयदीयकल्पस्य । |
| १४*४×२*९ | १० | ८६ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणे अनवच्छेदकत्वानु- सरणकल्पस्य । |
| १४*४×२*९ | ९ | ५४ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणस्य । |
| १५*६×३*२ | ८ | ९८ | " | " | | " | " |
| १५*८×३*२ | ८ | ७५ | " | " | | " | " |
| १५*८×३*६ | ११ | ८० | " | " | | " | " |
| ९*४×४*१ | १० | २९ | दे. ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद् व्यधिकरण- प्रकरणांशः । शशधरकृतन्यायसिद्धा- न्तदीपरच । |
| १२*८×४*८ | ११ | ३६ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ११×४*७ | १० | ३५ | " | " | | " | उपाधिवादस्य |
| १३*९×५*३ | १२ | ५४ | " | " | | " | तर्कसंग्रहटीका |
| १३*२×५ | १८ | ४८ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य |
| ११×४*६ | १२ | ४६ | " | " | | अपू० | " |
| ११×४*१ | ७ | ५१ | " | " | | " | " |
| १२*९×४*९ | १७ | ५० | " | " | | " | |
| १२*८×४*६ | ७ | ४५ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ६*८×३*६ | ८ | २३ | " | " | | " | |
| ६*७×३*५ | ९ | ३२ | " | " | | " | उपमानशब्दखण्डयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------------|----------------------------|
| ३१६६६ | व्युत्पत्तिवादः | | १-३, १०-१२, १७-१८, २१-२३ । |
| ३१६६७ | " | गदाधरः | ३४-५४ । |
| ३१६६८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ७८-९९ । |
| ३१६६९ | " | | ३ । (गणनया) |
| ३१६७० | " | | १-२२ । |
| ३१६७१ | " | | १ । |
| ३१६७२ | " | | ५ । (गणनया) |
| ३१६७३ | कार्यकारणभावविचारः | | १-८ । |
| ३१६७४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१६७५ | " | | १-२ । |
| ३१६७६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | २ । (गणनया) |
| ३१६७७ | " | जगदीशः | १-६ । |
| ३१६७८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३१६७९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-४५ । |
| ३१६८० | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-५ । |
| ३१६८१ | " | | १-६ । |
| ३१६८२ | " | | ३ । (गणनया) |
| ३१६८३ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३१६८४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-२ । |
| ३१६८५ | " | " | २ । (गणनया) |
| ३१६८६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | ६ । " |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|------|----------|-------------------------|---|
| १०२×४७ | १२ | ५४ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०२×४७ | १२ | ४८ | वङ्ग. | " | | " | |
| १४५×५११ | ११ | ६९ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणे अनवच्छेदकत्वा- नुसरणस्य । |
| १४४×४८ | १२ | ७६ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकस्य सिद्धान्तलक्षणस्या- वच्छेदकत्वनिरुक्तेः । |
| १४४×४९ | ११ | ६१ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणे उभयानवच्छिन्न- कल्पस्य । |
| ८४×४२ | १३ | ४२ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तेः । |
| १४४×४९ | ११ | ६१ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणे अनवच्छेदकत्वानु- सरणकल्पस्य । |
| ९१×४३ | १२ | ४६ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षसन्निकर्षयोः । |
| १४६×४९ | १० | ५५ | " | " | | " | सामान्याभावप्रकरणस्य । |
| १४४×४७ | ९ | ६३ | " | " | | " | " |
| १७२×३७ | ८ | १०२ | " | " | | अपू० | " |
| १६१×३८ | १० | ८२ | " | " | | " | " |
| १४०×४८ | ९ | ६७ | " | " | | पू० | सिंहव्याघ्रलक्षणस्य । |
| १२३×४२ | ९ | ४२ | दे.ना. | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४५×४८ | ९ | ६१ | वङ्ग. | " | | अपू० | सिंहव्याघ्रलक्षणस्य । |
| १४५×३१ | ९ | ६१ | " | " | | " | " |
| १८३×३८ | ११ | १११ | " | " | | " | " |
| १४४×३ | ९ | ५३ | " | " | | " | " |
| १८४×३७ | ७ | ८२ | " | " | | पू० | " |
| १८४×३७ | ७ | ८२ | " | " | | अपू० | व्याप्त्यनुगमस्य । |
| १७८×४२ | ११ | १०६ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------------------|-------------------|
| ३१६८७ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १ । |
| ३१६८८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१३ । |
| ३१६८९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ६ । (गणनया) |
| ३१६९० | " | | १-३ । |
| ३१६९१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दसिद्धान्त- वागीशः | १-८ । |
| ३१६९२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-३ । |
| ३१६९३ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३१६९४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ८ । (गणनया) |
| ३१६९५ | " | | १-१९, १ । |
| ३१६९६ | " | | ९ । (गणनया) |
| ३१६९७ | " | | १-२ । |
| ३१६९८ | " | | १-१७ । |
| ३१६९९ | " | | ३ । (गणनया) |
| ३१७०० | " | | १४ । " |
| ३१७०१ | " | | १-१७, १-३ । |
| ३१७०२ | " | न्यायपञ्चाननः | १-२ । |
| ३१७०३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | ७-८ । |
| ३१७०४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३१७०५ | " | | १-७ । |
| ३१७०६ | सिद्धान्तदीपः | महेश्वरन्याया- लङ्कारः | १-२४, २४, २६ । |
| ३१७०७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशतर्का- लङ्कारः | ३३-५३ । |
| ३१७०८ | " | जगदीशः | १-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| १६०३×४०१ | ९ | ८१ | दे. ना. | का. | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४०४×२०९ | ६ | ५१ | " | " | | पू० | सिंहव्याघ्रलक्षणस्य । |
| १४०४×३०१ | ६ | ६४ | " | " | | अपू० | " |
| १४०४×२०९ | ७ | ५६ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकस्य । |
| १५×३०३ | ६ | ५५ | " | " | | पू० | सिंहव्याघ्रलक्षणस्य । |
| १३०१×२०९ | ५ | ५२ | " | " | | " | " |
| १२०२×३०८ | १० | ६६ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणस्य । |
| १३०४×४०५ | १३ | ४७ | वङ्ग. | " | | " | " |
| १३०३×३०५ | १२ | ८४ | " | " | | " | " |
| १६०६×३०१ | १२ | ७९ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४०४×३०४ | ९ | ९५ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणस्य । |
| १८०१×३०७ | ८ | ७६ | " | " | | " | " |
| १८०५×३०८ | १० | १०५ | " | " | | " | " |
| १८०७×३०७ | ८ | ९२ | " | " | | " | " |
| १६०५×३०२ | १० | ९२ | " | " | | " | " |
| १६०९×३ | ९ | ७७ | " | " | | " | " |
| १५०७×३०१ | ८ | ७० | " | " | | " | " |
| १६०३×३०१ | १० | ८१ | " | " | | " | " |
| १६०६×३०१ | ९ | ८० | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणे गुणविभाजकस्य । |
| १३००×३ | ६ | ४९ | " | " | | "* | शब्दप्रमाणविषयकः । |
| १३०१×४०२ | ८ | ५२ | दे. ना. | " | १८८३ | अपू० | सिद्धान्तलक्षणावच्छेदकत्वनिरुक्ति- प्रकरणयोः । |
| १२०९×४०९ | १३ | ४९ | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------|-------------------|
| ३१७०९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-६ । |
| ३१७१० | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१७११ | " | चन्द्रनारायणः | १-२ । |
| ३१७१२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | ६-६३ । |
| ३१७१३ | " | जगदीशः | १-१३ । |
| ३१७१४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ६ । (गणनया) |
| ३१७१५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ६ । " |
| ३१७१६ | " | " | १ । |
| ३१७१७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | २७ । (गणनया) |
| ३१७१८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २-२६ । |
| ३१७१९ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथपञ्चाननः | १-११ । |
| ३१७२० | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | २२ । (गणनया) |
| ३१७२१ | " | | १-१५ । |
| ३१७२२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१७२३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | ९-१२ । |
| ३१७२४ | सारमञ्जरी | जयकृष्णः | १-११ । |
| ३१७२५ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१७२६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | ८ । |
| ३१७२७ | सामान्याभावपरिष्कारः | | १ । |
| ३१७२८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३१७२९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २-१६ । |
| ३१७३० | नव्यमतविचारः | | २-४६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १२*९×९ | १२ | ९१ | " | का. | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १४*३×३*७ | ८ | ७१ | वङ्ग. | " | | " | " |
| १४*६×४ | ९ | ७६ | " | " | | " | " |
| १३×९*१ | १३ | ४७ | दे.ना. | " | | " | " |
| १४*६×४*६ | ११ | ६६ | " | " | | " | " |
| १४*९×३*७ | ८ | ७६ | वङ्ग. | " | | " | " |
| १२*४×३*४ | ७ | ६४ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणावच्छेदकत्वनिरुक्ति- विशेषव्याप्तिप्रकरणानाम् । |
| १२*४×३*४ | ७ | ९३ | " | " | | " | व्यधिकरणसिद्धान्तलक्षणप्रकरणयोः । |
| १४*९×४*२ | ८ | ९१ | " | " | | " | |
| १२*८×४*९ | ११ | ४९ | दे.ना. | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| ९*२×४*१ | ९ | ३१ | " | " | १८७१ | पू० | |
| ८*३×३*९ | १३ | ४९ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डांशाच्छब्दखण्डांशा । |
| १२*९×४ | ९ | ३८ | वङ्ग. | " | | " | प्रत्यक्षखण्डांशा । |
| १४*१×४*१ | ११ | ७६ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रव्यधिकरणप्रकरणयोः । |
| १३*३×४*२ | ७ | ३९ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रप्रकरणांशस्य । |
| १७*६×३*९ | ७ | ६९ | " | " | | " | लकारादिशक्तिनिरूपणात्मिका । |
| १०*८×४ | १२ | ७२ | दे.ना. | " | | पू० | पक्षताप्रकरणे सार्वभौमलक्षणस्य । |
| १२*७×४*१ | ८ | ४३ | वङ्ग. | " | | अपू० | सिंहव्याघ्रलक्षणे सार्वभौममतस्य । |
| १४×३*७ | ४ | ७२ | " | " | | " | |
| १३*२×९*१ | १९ | ९९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणे परेतु- मतस्य । |
| १३*१×९ | १२ | ४७ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकव्यधिकरणप्रकरणयोः । |
| ९×३*४ | ९ | ४६ | " | " | | " | अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण- भावात्मकः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-------------------|----------------------|
| ३१७३१ | समवायवादार्थः | | १-४ । |
| ३१७३२ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २-१७ । |
| ३१७३३ | कार्यकारणभावविचारः | | १-२२ । |
| ३१७३४ | अनुमानप्रमाणान्तरत्वविचारः | | १-८ । |
| ३१७३५ | स्वप्रकाशरहस्यम् | | १-४, ६-१६ । |
| ३१७३६ | कारणताविचारः | | १-१० । |
| ३१७३७ | हिंसावादः | | १-१३ । |
| ३१७३८ | पुरुषोत्तमवादः | | १ । (गणनया) |
| ३१७३९ | भावप्रत्ययशक्तिविचारः | | १-५ । |
| ३१७४० | एवकारार्थवादः | | २-११ । |
| ३१७४१ | अन्यथासिद्धिविचारः | | १-२३ । |
| ३१७४२ | अनुमितिपरामर्शविचारः | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-३ (=४), ५-२४, २६ । |
| ३१७४३ | अनुमितिपरामर्शवादः | | २-२१ । |
| ३१७४४ | विषयतावादः | | २-७ । |
| ३१७४५ | अनुमितिपरामर्शवादः | | १-१८ । |
| ३१७४६ | अनुमितिपरामर्शविचारः | | १-८ । |
| ३१७४७ | आकाशवादः | | २-३ । |
| ३१७४८ | सादृश्यवादः | महादेवः | १-१२ । |
| ३१७४९ | लकारार्थवादः | | २-६ । |
| ३१७५० | वाक्यवादः | | १-६ । |
| ३१७५१ | णिज्वाक्यबोधः | | १-६ । |
| ३१७५२ | सामान्यलक्षणाविचारः | | १० । (गणनया) |
| ३१७५३ | पाकजप्रक्रिया | | १-४, ४ = १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| ११०५४० | ११ | ४० | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ७०५३०५ | १२ | ३१ | " | " | | अपू० | शब्दखण्डे विधिवादस्य । |
| १००५४० | १२ | ५१ | " | " | | " | अनुमितिपरामर्शयोः । |
| १२४३०९ | ९ | ५२ | " | " | | " | |
| ८०३४३०६ | ११ | ४५ | " | " | १६१६शकः | " | प्रामाण्यस्य स्वतोप्राप्त्यत्वे प्राभाकरा- दिमते । |
| ८०६४३०६ | ६ | ३२ | " | " | | पू० | |
| ९०५४३ | १४ | ५९ | " | " | | " | हिंसायाः क्रत्वङ्गत्वविचारः |
| ११०५४०९ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | निर्द्धारणार्थविचारः । |
| ९०५४३ | ११ | ६३ | " | " | | पू० | |
| १००४३३ | ६ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ८०३४३०६ | १० | ३२ | " | " | | पू० | कारणतावादार्थ इति नामान्तरम् । |
| १०४३०९ | ७ | ३४ | " | " | १११०(?) | अपू० | कार्यकारणभावरूपः । |
| ९०४३०८ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| १८४३०५ | १० | १०० | वङ्ग. | " | | " | |
| १३०५३०९ | ९ | ७५ | " | " | | " | |
| १००७४०६ | ११ | ४२ | दे.ना. | " | | " | |
| ११०५४०९ | १० | ५२ | " | " | | " | |
| १३४४०४ | ७ | ५२ | " | " | १८४९ | पू० | |
| ११०५५०३ | ९ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १००५४०६ | १० | ६६ | " | " | | पू० | |
| १९०८४०८ | ९ | ४९ | " | " | | " | |
| १००५४३०५ | ११ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| ८०७४३०८ | १२ | ६२ | " | " | | पू० | अनुभवत्वजातिसद्भावप्रमाणञ्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|-------------------------------------|-------------------------|
| ३१७५४ | रघुप्रकाशरहस्यम् | | १-११ । |
| ३१७५५ | विशेषणज्ञानरहस्यम् | | १-८ । |
| ३१७५६ | ईश्वरवादः | | १, ३, ६, ८, ११, १३ । |
| ३१७५७ | प्रश्नवादः | | १-९, १३ । |
| ३१७५८ | लकारार्थवादः | विद्यानिवासपुत्रः न्यायवाचस्पतिः | १-८ । |
| ३१७५९ | रत्नकोशविचारः | हरिरामतर्कालङ्कारः | २, २-११, ११-६०, ६२-६४ । |
| ३१७६० | अभाववादः | | २-८, ७-९ । |
| ३१७६१ | पक्षतावादः | रघुदेवः | १-३९ । |
| ३१७६२ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगद्वीशः | १-११ । |
| ३१७६३ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २२-३९ । |
| ३१७६४ | विध्यर्थविचारः | | २-३५ । |
| ३१७६५ | प्रामाण्यवादः | | १-२ । |
| ३१७६६ | " | | १-१२ । |
| ३१७६७ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १९ । (गणनया) |
| ३१७६८ | विवाहताण्डवम् | वादिराजः | १, ३-८ । |
| ३१७६९ | सम्बन्धवादः | | १-४ । |
| ३१७७० | धर्मितावादः | | ४-१८ । |
| ३१७७१ | प्रागभाववादः | | १ । |
| ३१७७२ | ईश्वरवादः | | ३-८ । |
| ३१७७३ | " | महादेवः | १-८ । |
| ३१७७४ | ईश्वरविचारः | | १-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०×४*४ | ११ | ५१ | दे. ना. | का. | १८२९ | पू० | प्रामाण्यस्य स्वतोऽग्राह्यत्वे मीमांस- कादिमतम् । |
| १७×३*३ | ८ | ८४ | वज्र | " | | " | अत्र विशेषणज्ञानस्य कारणत्वविचारः । |
| १०*५×३*३ | ६ | ४० | दे. ना. | " | | अपू० | |
| ९*७×४*३ | ८ | ३२ | " | " | | " | |
| १२*५×४*६ | ११ | ४७ | " | " | | पू० | लकारार्थपरिच्छेदो वा । |
| ८*७×३*४ | ७ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ९×३*७ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ११*१×४ | ८ | ४१ | " | " | | पू० | पक्षताविचारो वा । अनुमितिपक्ष- तयोः कार्यकारणभावरूपः । |
| १०*२×४*२ | ११ | ४५ | " | " | | अपू० | तर्कप्रकरणस्य । |
| १०*२×४*३ | ११ | ५३ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९*९×४*२ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| ९*८×३*५ | ९ | ४२ | " | " | | " | अत्र ज्ञानप्रामाण्यं स्वतः परतो वा गृह्यत इति विचारः । |
| १०*८×४*७ | १४ | ४७ | " | " | | " | " |
| ११*५×३ | ९ | ५४ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०*९×४*६ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| ९*४×४*२ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ९*४×३*७ | ८ | ४६ | " | " | | " | अनुमितिपरादर्शकार्यकारणभाव- रूपः । |
| ८*६×३*७ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| ८*३×३*७ | १३ | ४६ | " | " | | " | |
| १०*१×४*४ | १२ | ४० | " | " | | " | |
| ९*२×४ | १२ | ४७ | " | " | ११७० | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|------------------------|---------------------------|
| ३१७७५ | ईश्वरवादः | महादेवः | १-३२ । |
| ३१७७६ | " | | १-५ । |
| ३१७७७ | पदार्थतत्त्वनिर्णयः | गङ्गापुरी | १-१५ । |
| ३१७७८ | पदार्थमालाटीका | भास्करः | १-९६, ९८ । |
| ३१७७९ | पदार्थमाला | जयरामतर्क- पञ्चाननः | २-७८ । |
| ३१७८० | " | " | १-७६ । |
| ३१७८१ | " | " | २३, ३१-३६, ४१-७१, ७३-८९ । |
| ३१७८२ | " | " | ३०-५९ । |
| ३१७८३ | " | " | २-६६ । |
| ३१७८४ | पदार्थमणिमाला | " | १-१८ । |
| ३१७८५ | वालवोधः | गणकगोविन्दः | १-२१ । |
| ३१७८६ | तत्त्व-मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-१८ । |
| ३१७८७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | ४ । (गणनया) |
| ३१७८८ | " | | १० । " |
| ३१७८९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३१७९० | " | | १-३ । |
| ३१७९१ | " | | १-१८ । |
| ३१७९२ | " | | १-८ । |
| ३१७९३ | " | | ३ । (गणनया) |
| ३१७९४ | " | | १-६, ११, ७-२४ । |
| ३१७९५ | " | | १-१२ । |
| ३१७९६ | " | | ५ । (गणनया) |
| ३१७९७ | " | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | अ थ आ | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------------|----------|------------------------|----------------------------|
| १००५३०८ | ८ | ३९ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ७०६५३०६ | १३ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| ८०९५४०२ | १२ | ३६ | " | " | | " | |
| ९०७५५ | १२ | ३१ | " | " | | " | टीका प्रकाशः । |
| १०५४०४ | १५ | ४७ | " | " | | " | |
| ११०५३०४ | ९ | ६३ | " | " | | " | |
| ९०७५४०२ | ७ | ३६ | " | " | | " | |
| ८०९५४०१ | १३ | ३३ | " | " | | " | |
| १२०५३०८ | ८ | ५२ | " | " | | " | पदार्थमणिमाला वा । |
| ८०५३०७ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ८०९३०४ | ९ | ३९ | " | " | १६४९ | पू० | |
| १४०२५४ | ८ | ५५ | मै. | " | | अपू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १९०७५४ | ९ | १०२ | वङ्ग | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४०६५४०१ | १० | ७५ | " | " | | " | " |
| १३०४५४०१ | ९ | ६७ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १४०७५४ | १० | ७८ | मै. | " | | पू० | " |
| १४०५३०९ | ८ | ७८ | " | " | | " | " |
| १५०६५४०४ | १३ | ७३ | " | " | | अपू० | " |
| १४०२५३०९ | ९ | ७८ | वङ्ग | " | | " | " |
| १३०५०१ | १२ | ४० | दे.ना. | " | | पू० | " |
| १३०५५४०१ | १० | ६१ | मै. | " | | अपू० | " |
| १४०८५४०४ | १२ | ८४ | " | " | | " | " |
| १७५३०९ | १० | ९९ | वङ्ग. | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|--|----------------------|
| ३१७९८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ५१ (गणनया) |
| ३१७९९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-३१ । |
| ३१८०० | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१६ । |
| ३१८०१ | " | | १-१९ । |
| ३१८०२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-८ । |
| ३१८०३ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | हरिदासः | १-२२ । |
| ३१८०४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-६ । |
| ३१८०५ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३१८०६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | रुद्रन्यायवाचस्पतिः | २५ । (गणनया) |
| ३१८०७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ५-६२ । |
| ३१८०८ | " | " | १-९ । |
| ३१८०९ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१८, १९-२०, २४-३१ । |
| ३१८१० | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-७, १०-८० । |
| ३१८११ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३१ । |
| ३१८१२ | " | " | २६-६३ । |
| ३१८१३ | " | " | १-९ । |
| ३१८१४ | " | " | १-८ । |
| ३१८१५ | " | " | ६१-६६ । |
| ३१८१६ | शब्दशक्तिप्रकाशिकासटीका | जगदीशभट्टा- चार्यःटी.का.नारा- यणतीर्थः | १-३४ । |
| ३१८१७ | शक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२६ । |
| ३१८१८ | शक्तिवादः सटिप्पणः | " | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १४*२×३*७ | ११ | ७९ | मै. | का. | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १८×३*६ | ८ | ९१ | वङ्ग | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १८*१×३*४ | ९ | ११३ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४*१×३*४ | ११ | ६७ | " | " | | " | " |
| १७*१×३*७ | ७ | ११९ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १७*२×३*६ | ८ | ९३ | " | " | | " | |
| १८*२×३*८ | ८ | ७८ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०×४*१ | १२ | ३१ | दे. ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११*६×३*६ | १० | ६७ | " | " | | " | टीका रौद्री सामान्यनिरुक्तिसव्यभि- चारप्रकरणयोः । |
| ९*६×४*१ | ११ | ४६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्योपाधिप- र्यन्ता । |
| १३*९×३ | ६ | ६० | वङ्ग. | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १६*६×३*४ | ७ | ९४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७*९×३*८ | ८ | ७९ | " | " | | " | |
| १६*६×३*६ | ८ | ८६ | " | " | | पू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १६*७×३*४ | ८ | ११० | " | " | | अपू० | " |
| १७*९×३*७ | ८ | ९१ | " | " | | पू० | साधारणप्रकरणस्य । |
| १७*६×३*६ | ८ | ११९ | " | " | | अपू० | " |
| १६*८×३*४ | ८ | १०६ | " | " | | " | असाधारणप्रकरणस्य । |
| १०*४×६ | ११ | ४९ | दे. ना. | " | | पृ० | कारिकामात्रस्येयं टीका । |
| १७*६×३*३ | ८ | ९६ | वङ्ग. | " | | " | |
| १६*९×३*२ | ६ | ७९ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|---|--|
| ३१८१९ | शक्तिवादकोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३१८२० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ३ । (गणनया) |
| ३१८२१ | गादाधरीकोडपत्रम् | | १-१४ । |
| ३१८२२ | " | | ४-६ । |
| ३१८२३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२३ । |
| ३१८२४ | " | " | १-१९ । |
| ३१८२५ | गादाधरीकोडपत्रम् | | ६ । (गणनया) |
| ३१८२६ | " | | १-८ । |
| ३१८२७ | सामग्रीवादः | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३१८२८ | " | " | १-१६ । |
| ३१८२९ | " | " | १-९, १२-१३ । |
| ३१८३० | अनुमितिपरामर्शविचारः | शङ्करभट्टः | १-५ । |
| ३१८३१ | ईश्वरवादः | | ३ । (गणनया) |
| ३१८३२ | द्रव्यनाशकारणविचारः | शिरोमणिभट्टाचार्यः | ४ । " |
| ३१८३३ | अवच्छेदकानुमितिविचारः | | १-१३ । |
| ३१८३४ | आकाङ्क्षावादः | | १-७, ९-११ । |
| ३१८३५ | आसत्तिवादः | | १-८, ८-१३ । |
| ३१८३६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-४२ । |
| ३१८३७ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-७५ । |
| ३१८३८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- सटीका | विश्वनाथपञ्चा- ननः टी. का. दिनकरभट्टः | २-५ । |
| ३१८३९ | " | " | १-६२, ६२-६८, ८०-८२, ८२-९१, ९८-१०४, १२०-१२१, १२३, १३०, १३१-१३३, १३५, १५०-१५२, ६५२-१६३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १७°७×३°१ | ८ | ९९ | वङ्ग. | का. | | अपू० | सर्वशब्दविचारे । |
| १४°६×३°७ | ७ | ८३ | " | " | | " | साधारणप्रकरणस्य । |
| १८×२°९ | ८ | १०५ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १७°७×३°७ | ७ | १२६ | " | " | | अपू० | " |
| १८°१×३°७ | ९ | १०२ | " | " | | पू० | " |
| १६°६×३°३ | ८ | ८९ | " | " | | अपू० | " |
| १८°६×४ | ९ | १०५ | " | " | | " | सन्यभिचारसत्प्रतिपक्षप्रकरणयोः । |
| १८°६×३°५ | १० | १०९ | " | " | | " | सन्यभिचारप्रकरणस्य । |
| ११°२×४°९ | १३ | ५५ | दे. ना. | " | | पू० | |
| ९°९×४ | १२ | ५१ | " | " | | " | |
| १०°९×३°९ | १० | ४९ | " | " | | अपू० | |
| १०°१×३°९ | ८ | ३७ | " | " | | पू० | |
| १०°०×३°८ | १५ | ६० | " | " | | अपू० | |
| ८°९×३°३ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| ९°२×२°८ | ८ | ४८ | " | " | १७०९ | पू० | |
| ११×४ | १४ | ५६ | " | " | | अपू० | |
| ११×४ | १० | ४३ | " | " | १७५१ | पू० | |
| १०°५×४ | १० | ६१ | " | " | | अपू० | तर्कप्रकरणात्सामान्यलक्षणा- प्रकरणांशा । |
| ९°३×३°८ | ११ | ५५ | " | " | | " | शब्दखण्डे अपूर्ववादशक्तिवादसमा- सवादप्रकरणानाम् । |
| १०°६×५°२ | ९ | ४३ | " | " | | " | |
| १३°७×७ | १२ | ४३ | " | " | | " | टीका दीपिका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------------|-------------------------------|---|
| ३१८४० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | दिनकरभट्टः | १-१४ । |
| ३१८४१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | ४ । (गणनया) |
| ३१८४२ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- सप्रकाशा | विश्वनाथः टी का दिनकरभट्टः | १-८४ । |
| ३१८४३ | " | " | १-२४ (= २५) २६-३२, ३१-६० । |
| ३१८४४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- सदीपिका | " | १-३०, ३२-७१ । |
| ३१८४५ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | दिनकरभट्टः | ५२-६८, ९८-१००, १०२-१११, ११९-१६६, १६८-२०० । |
| ३१८४६ | कारिकावलीसटीका | विश्वनाथः | १-२६ । |
| ३१८४७ | न्यायचन्द्रिका | नारायणतीर्थः | १-२६ । |
| ३१८४८ | " | " | १-२ । |
| ३१८४९ | " | " | २-३७ । |
| ३१८५० | जागदीशीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-२ । |
| ३१८५१ | " | " | १-११ । |
| ३१८५२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-७ । |
| ३१८५३ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१८५४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१३ । |
| ३१८५५ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १४ । |
| ३१८५६ | " | | १ । |
| ३१८५७ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-४९ । |
| ३१८५८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-८ । |
| ३१८५९ | " | " | १-१० । |
| ३१८६० | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ३ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| १९०६×४०९ | ९ | ९३ | वज्र | का. | | अपू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १७×३०९ | ८ | ८१ | " | " | | " | सव्यभिचारसाधारणप्रकरणयोः । |
| १००७×४०३ | ११ | ४७ | दे. ना. | " | | पू० | प्रत्यक्षखण्डमात्रम् । |
| १००९×४०९ | १० | ४४ | " | " | | " | अनुमानखण्डमात्रम् । |
| १००९×४०३ | १२ | ४० | " | " | | अपू० | गुणनिरूपणप्रकरणस्य । |
| १००१×३०८ | ८ | ४२ | " | " | | " | |
| १२०८×६०९ | १५ | ५० | " | " | | पू० | टीका-न्यायसिद्धान्तमुक्तावली प्रका- शश्च । अनुमानादिशब्दान्ता । |
| १२०८×५०९ | १६ | ६० | " | " | | " | कारिकावलीटीका । |
| १२०८×५०९ | २१ | ६९ | " | " | | अपू० | " |
| १३०५×७ | १७ | ६३ | " | " | | " | |
| १९०२×४ | १० | ७६ | वज्र | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १९०१×४ | १० | १०१ | " | " | | पू० | " |
| १६०८×४ | ११ | ७९ | " | " | | " | " |
| १४०७×५ | ८ | ६० | " | " | | अपू० | " |
| १९०५×३०३ | ७ | ९५ | " | " | | पू० | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| १५×४०३ | १४ | ७७ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १५×३०२ | ७ | ५६ | " | " | | अपू० | " |
| १६०५×३०९ | ८ | ६३ | " | " | | पू० | अत्र व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याघ्रव्यधि- करणपूर्वपक्षसिद्धान्तविशेष-अतए- वाख्यानि प्रकरणानि सन्ति । |
| १९०३×३०९ | ८ | ११२ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १९०३×३०९ | ८ | १०८ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणप्रकरणस्य । |
| १९०३×३०८ | ११ | १०७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------------|-------------------|
| ३१८६१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ७ । (गणनया) |
| ३१८६२ | " | " | १-६ । |
| ३१८६३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-३ । |
| ३१८६४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-४९ । |
| ३१८६५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-६ । |
| ३१८६६ | " | " | १ । |
| ३१८६७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | ६, १ । |
| ३१८६८ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-११, १ । |
| ३१८६९ | " | " | १-४, ४-६ । |
| ३१८७० | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-३ । |
| ३१८७१ | माथुरीकोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३१८७२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-८ । |
| ३१८७३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-१० । |
| ३१८७४ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ४७-५० । |
| ३१८७५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १३ । (गणनया) |
| ३१८७६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-१२ । |
| ३१८७७ | माथुरीकोडपत्रम् | | १ । |
| ३१८७८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २-८ । |
| ३१८७९ | माथुरीकोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३१८८० | गादाधरीकोडपत्रम् | | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|--------|-------------|------------------------|---|
| १६*२×३*४ | ६ | ६१ | वङ्ग. | का. | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १६*३×४*९ | ९ | ६८ | " | " | | " | " |
| १८×३*६ | ८ | १०२ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १८×३*६ | ६ | ८६ | " | " | १७१७ शकः | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १४*६×३ | ६ | ७४ | " | " | | " | " |
| १६×३ | ६ | ६६ | " | " | | " | " |
| १६×३ | ६ | ६४ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । व्यधिकरण- धर्माविच्छिन्नाभावविचारश्च । |
| १६×३*३ | ६ | ६९ | " | " | | पू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १८*६×३*६ | ८ | ७४ | " | " | | अपू० | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १४×३*१ | ६ | ७० | " | " | | " | " |
| १६*१×६ | १० | ६९ | " | " | | " | " |
| १९×४*६ | ८ | ८७ | " | " | | " | " |
| १६*६×३*९ | ९ | ७६ | " | " | | " | " |
| १६*९×३*६ | ६ | ६४ | " | " | | " | " |
| १९*८×३*६ | ६ | ९९ | " | " | | " | " |
| १७*८×३*८ | ७ | ७८ | " | " | | पू० | " |
| १८×४ | ९ | ७८ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकन्याप्तिग्रहोपायप्रकर- णांशयोः । |
| १६*३×३*९ | १० | ७६ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १६*२×६*१ | १२ | ६३ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १६×३*३ | ६ | ६३ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---------------------------|-----------------------|
| ३१८८१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| ३१८८२ | " | न्यायभूषण भट्टाचार्यः | ३ । (गणनया) |
| ३१८८३ | " | | २०-२२ । |
| ३१८८४ | " | | १-७ । |
| ३१८८५ | जागदीशीविवरणम् | | १-१५ । |
| ३१८८६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३१८८७ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३१८८८ | " | | १-३ । |
| ३१८८९ | " | | १-३ । |
| ३१८९० | " | | १-२ । |
| ३१८९१ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-१२ ५ |
| ३१८९२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १३-२०, २७-३४, ३९-४७ । |
| ३१८९३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१४ । |
| ३१८९४ | " | कृष्णजीवन- भट्टाचार्यः | १-७ । |
| ३१८९५ | गौतमसूत्राणि | | १-२ । |
| ३१७९६ | जातिबाधकारिकाव्याख्या | | १-२ । |
| ३१८९७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ३ । (गणनया) |
| ३१८९८ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-४ । |
| ३१८९९ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १ । |
| ३१९०० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-२३ । |
| ३१९०१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- चिह्नः | विशेषविधरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|-------|----------|-------------------------|---|
| १५*१×५*२ | ११ | ६४ | वङ्ग. | का. | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १४*२×४*४ | १० | ७१ | " | " | | " | " |
| १४*७×५ | १० | ६३ | " | " | | पू०* | " |
| १५×५*१ | १० | ५५ | " | " | | अपू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १४*१×४*८ | ९ | ५२ | " | " | | पू० | " |
| १५×५ | ११ | ६२ | " | " | | अपू० | " |
| १४*९×५ | ११ | ५८ | " | " | | पू० | " |
| १९*४×३*९ | ९ | ८० | " | " | | " | " |
| १५×३ | ७ | ७८ | " | " | | " | " |
| १२*४×३*९ | १२ | ६५ | " | " | | " | " |
| १८*२×३*५ | ७ | ९५ | " | " | | " | " |
| १४*४×२*९ | ६ | ५५ | " | " | | अपू० | सिंहव्याघ्रप्रकरणांशाद् विशेषव्याप्ति- प्रकरणंशा । |
| १५×५ | ९ | ५३ | " | " | | पू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १५×५ | १२ | ५७ | " | " | | | " |
| १६*२×३*४ | ६ | ७० | " | " | | अपू० | |
| १५×३*३ | ६ | ६४ | " | " | | पू० | |
| १९*३×३*७ | ८ | ९७ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १४*३×३*६ | ७ | ५५ | " | " | | " | " |
| १५*५×३*२ | ५ | ८८ | " | " | | " | अनुमानप्रमाणव्याप्तिपञ्चकव्यधि- करणप्रकरणानाम् । |
| १९*३×३*५ | ८ | १०४ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १५*२×५ | ९ | ६३ | " | " | | पू० | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|------------------|-------------------|
| ३१९०२ | तत्त्वचिन्तामणिग्रहस्यम् | मथुरानाथः | १-६ । |
| ३१९०३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २-६ । |
| ३१९०४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १५-५६ । |
| ३१९०५ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३१९०६ | " | | १-८ । |
| ३१९०७ | " | | १-१८ । |
| ३१९०८ | " | | १-१२ । |
| ३१९०९ | " | चन्द्रनारायणः | १ । |
| ३१९१० | " | | १-४ । |
| ३१९११ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-९२ । |
| ३१९१२ | " | " | १-१५, १-३४ । |
| ३१९१३ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १ । |
| ३१९१४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-९ । |
| ३१९१५ | " | | १-१७ । |
| ३१९१६ | " | | १-११ । |
| ३१९१७ | " | चन्द्रनारायणः | १-११ । |
| ३१९१८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२ । |
| ३१९१९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १, १-१ । |
| ३१९२० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३१९२१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१९२२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दः | १-६ । |
| ३१९२३ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३१९२४ | " | | ६ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आशः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|-----|----------|------------------------|--|
| १७०७३०६ | ८ | ७८ | वङ्ग. | का. | | पू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १९५३ | ६ | ६९ | " | " | | अपू० | " |
| १६०१५३३ | ९ | ९९ | " | " | | " | " |
| १४०४५४०७ | १२ | ६३ | " | " | | " | " |
| ११५४ | १० | ६६ | " | " | | " | " |
| १४५४६ | १० | ६६ | " | " | | " | " |
| १९०५३०९ | १२ | १०४ | " | " | | " | " |
| १८०९५४ | ११ | ८७ | " | " | | " | " |
| १८०८५४ | ८ | ७९ | " | " | | " | " |
| २००७३३३ | ८ | १३४ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणसारभ्य विशेष- व्याप्तिप्रकरणान्ता । |
| २००२५३३ | ७ | १२३ | " | " | | पू० | व्याप्तिग्रहोपायतर्कव्याप्त्यनुगमप्रक- रणानाम् । |
| १३०५५२०८ | ६ | ६९ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १९०३५४ | ८ | ७९ | " | " | | " | " |
| १९०३५५२ | ९ | ६७ | " | " | | " | " |
| १९०२५५१ | ९ | ६६ | " | " | | " | " |
| १९०५३०९ | ९ | ७९ | " | " | | " | " |
| १९५४०९ | ८ | ६४ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १४५४०७ | ९ | ६८ | " | " | | " | " |
| १९५३०१ | ६ | ६७ | " | " | | " | " |
| १४५४०८ | ९ | ६९ | " | " | | " | " |
| १६५३३ | ६ | ६३ | " | " | | पू० | " |
| १९०२५५१ | ९ | ६८ | " | " | | अपू० | " |
| १९५३०१ | ६ | ६३ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------------------------|-------------------|
| ३१९२५ | माथुरीकोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३१९२६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१९ । |
| ३१९२७ | माथुरीकोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३१९२८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-२ । |
| ३१९२९ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-४५ । |
| ३१९३० | पदार्थबोधः सटीकः | | २-४० । |
| ३१९३१ | " | | १-९ । |
| ३१९३२ | पदार्थदीपिका | कौण्डभट्टः | १-३५ । |
| ३१९३३ | " | " | १-४० । |
| ३१९३४ | सिद्धान्तसङ्ग्रहः | | १-२ । |
| ३१९३५ | " | | १-५ । |
| ३१९३६ | " | | १-१६ । |
| ३१९३७ | तर्कप्रदीपः | कौण्डभट्टः | १-३०, ३५-४४ । |
| ३१९३८ | मुक्तिवादः | | १-११ । |
| ३१९३९ | तत्त्व-मण्यालोकटीका | रुद्रभट्टाचार्यः | १-२१ । |
| ३१९४० | चित्ररूपवादः | | १०, १२ १४ । |
| ३१९४१ | " | न्यायवाचस्पतिः विद्यानिवासपुत्रः | १-८ । |
| ३१९४२ | समासवादः | जयरामः | १-८ । |
| ३१९४३ | समासविचारः | रामभट्टः | १-४ । |
| ३१९४४ | समासवादः | | २-११ । |
| ३१९४५ | मङ्गलवादः | | १ । |
| ३१९४६ | " | | २-६ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|---------------------------|-------------------|
| ३१९४७ | वायरहस्यम् | | १-४० । |
| ३१९४८ | अनुद्धृतरूपादित्खण्डनम् | | १-६ । |
| ३१९४९ | त्वङ्मनोयोगस्य ज्ञानहे- तुत्वखण्डनम् | | १-४ । |
| ३१९५० | उपाधिवार्तिकम् | गोविन्दमिश्रः | १-९ । |
| ३१९५१ | मुक्तिवादः | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-११ । |
| ३१९५२ | मुक्तिवादविचारः | | ३-७ । |
| ३१९५३ | सिद्धान्तसारः | रामभट्टः | १-३ ५-२८ । |
| ३१९५४ | बुद्धिवादः | | १-६ । |
| ३१९५५ | न्यायसिद्धान्तदीपः | शशवराचार्यः | १-१३० । |
| ३१९५६ | न्यायसारः | माधवदेवः | १-१४१ । |
| ३१९५७ | विषयतावादः | | २-१२ । |
| ३१९५८ | " | | १-१७ । |
| ३१९५९ | तर्कसमयखण्डनम् | वेणीदत्तः | १-१३ । |
| ३१९६० | तर्कामृतम् | जगदीशः | १-१६ । |
| ३१९६१ | " | " | १-१२ । |
| ३१९६२ | तर्कामृततरङ्गिणी | | १-२८ । |
| ३१९६३ | तात्पर्यपरिशुद्धिः | उदयनाचार्यः | २-६६ । |
| ३१९६४ | तत्रार्थनिर्णयः | वेणीदत्तः | १-६ । |
| ३१९६५ | निर्विकल्पकभङ्गः | तर्कवागीशभट्टा- चार्यः | १-६ । |
| ३१९६६ | तात्पर्यपरिशुद्धिप्रकाशः | चर्द्धमानोपाध्यायः | २-४१, ७८-१०१ । |
| ३१९६७ | विषयताविचारः | हरिरामः | १-९, १३-१४ । |
| ३१९६८ | लौकिकविषयतावादः | | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०°५५४'६ | १२ | ३७ | दे. ना. | का. | १७१६ | पू० | विषयताविचारश्च । |
| ९°१५३'३ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ८°७५३'७ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| १०°५५४'४ | १७ | ५७ | " | " | | " | ईश्वरानुमानमधिकृत्योपाधिविचारः । |
| १०°४५४'४ | १३ | ४१ | " | " | १७३२ | " | |
| ७°७५३ | १२ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| ९°३५४'९ | १० | ४८ | " | " | | " | मोक्षनिरूपणम् । |
| ११°४५४'२ | १३ | ५३ | " | " | | " | |
| ९°६५३ | ६ | ४२ | " | " | | पू० | न्यायप्रकरणमाला वा । |
| १०°५३'२ | ९ | ४८ | " | " | | " | द्रव्यादिपदार्थनिरूपणम् । |
| ११°९५५ | ११ | ५८ | " | " | | अपू० | |
| ९°४५३'४ | ६ | ३४ | " | " | | पू० | |
| ९°६५४'१ | ९ | ४० | " | " | १७५० | " | द्रव्यादिपदार्थनिरूपणम् । |
| ९°८५३'४ | ९ | ३३ | " | " | १८०९ | " | |
| १०°३५४'९ | ११ | ४० | " | " | १७९८ | " | |
| १०°५४'५ | ११ | ३५ | " | " | १८०८ | " | |
| ९°७५४'२ | १३ | ३१ | " | " | | अपू० | त्रिसूत्रीनिबन्धोवा न्या. वा. तात्पर्यटीका । |
| १०°७५४'६ | ११ | ४३ | " | " | | पू० | |
| १०°७५३'३ | ६ | ४९ | " | " | | " | |
| ९°३५४'१ | १४ | ३५ | " | " | | अपू० | न्या. वा. तात्पर्यटी. टी. । त्रिसूत्री- पथ्यन्तम् । न्यायनिबन्धप्रकाशोवा । |
| १०°४५३'७ | ७ | ३६ | " | " | | " | |
| १०°४५४'५ | १० | ४३ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|---------------|-------------------|
| ३१९६९ | विशिष्टवैशिष्ट्यवादः | | १-३ । |
| ३१९७० | " | | २-१४ । |
| ३१९७१ | विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविचारः | | २-१३ । |
| ३१९७२ | " | रघुदेवः | १-१५ । |
| ३१९७३ | " | " | १-२४ । |
| ३१९७४ | विशिष्टवैशिष्ट्यवादः | | १-७ । |
| ३१९७५ | विशिष्टवैशिष्ट्यबोधरहस्यम् | मथुरानाथः | २-९ । |
| ३१९७६ | तर्कभाषाभाषार्थदीपिका | गौरीकान्तः | १ । |
| ३१९७७ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-२८ । |
| ३१९७८ | तर्कभाषाभाषार्थदीपिका | गौरीकान्तः | १-१४, १६ १७ । |
| ३१९७९ | तर्कधुन्ध्वंसनम् | वेणीदत्तभट्टः | १-८ । |
| ३१९८० | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-१९ । |
| ३१९८१ | " | " | १-८ । |
| ३१९८२ | " | " | १-१८ । |
| ३१९८३ | " | " | १-९ । |
| ३१९८४ | " | " | २-५ । |
| ३१९८५ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | " | १-२१ । |
| ३१९८६ | तर्कचन्द्रिका | वैद्यनाथः | १-७, ९-२० । |
| ३१९८७ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | | १-२ । |
| ३१९८८ | " | अन्नम्भट्टः | १-२७ । |
| ३१९८९ | तर्कसङ्ग्रहोपन्यासः | | १-२० । |
| ३१९९० | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | १-१७७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ९०९९९४ | १४ | ३४ | दे. ना. | का. | | अपू० | अत्र विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविशेषण- तावच्छेदकप्रकारकनिर्णययोः कार्यकारणभावविचारः । |
| १००८४४०८ | १३ | ५० | " | " | | " | |
| १२४४४४४ | १० | ५० | " | " | | " | |
| ९३४३३५ | १० | ४३ | " | " | १७९१ | पू० | |
| ८९४३३८ | १० | ३७ | " | " | १७०८ | " | |
| ९४४३३३ | ९ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| ९५४४ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| ८५४४ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| १११४४१ | ९ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १००८४४६ | १२ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| ९५४४१ | ११ | ४० | " | " | १९५० | पू० | अत्र सामान्यलक्षणाप्रत्यासत्तिसम- र्थनम् । |
| ९५४४३ | ७ | १७ | " | " | | " | |
| ८५४४ | ९ | ३७ | " | " | १८४३ | " | |
| ७४४३३७ | ९ | २६ | " | " | | " | |
| ९१४३३७ | ५ | ११ | " | " | | " | |
| १०४४४४ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १०७४३४ | १६ | ३६ | " | " | | पू० | |
| ९२४४५ | ८ | ३० | " | " | | अपू० | |
| ९४४४१ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| ९४३३७ | १० | ३३ | " | " | १७०६ | पू० | |
| १२३४४६ | ११ | ४८ | " | " | | " | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| १२४४४४ | ९ | ५५ | " | " | १७१४ | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य मुक्तिवादान्तः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|---------------|--------------------|
| ३१९९१ | विषयताविचारः | | १-६ । |
| ३१९९२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१७ । |
| ३१९९३ | विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविचारः | | ४ । (गणनया) |
| ३१९९४ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| ३१९९५ | वायुवादः | रामभद्रः | ७ । (गणनया) |
| ३१९९६ | तत्त्व०मणिवादार्थ- दीपिका | | १-८ । |
| ३१९९७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | २ । (गणनया) |
| ३१९९८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३१९९९ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३२००० | " | | १ । |
| ३२००१ | तर्कसङ्ग्रहवाक्यवृत्तिः | | १-८ । |
| ३२००२ | व्युत्पत्तिवादः | | ६३-६७, ६९, ९१-९६ । |
| ३२००३ | " | | ३९-८३ । |
| ३२००४ | " | | १-३, ५-३० । |
| ३२००५ | " | | १-३६ । |
| ३२००६ | " | | ६-२०, ४१-४८ । |
| ३२००७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | कालीशङ्करः | १-२ । |
| ३२००८ | " | | ३-६ । |
| ३२००९ | व्युत्पत्तिवादः | | १-३८ । |
| ३२०१० | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-२९ । |
| ३२०११ | " | " | ९ । (गणनया) |
| ३२०१२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| ९०८५२०६ | ६ | ३१ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १३०८५९३ | १५ | ६८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९०३५३०६ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| १००५५४०३ | १६ | ५० | " | " | | " | " |
| ८०९५३०१ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | अत्र वायोः प्रत्यक्षताविचारः । |
| ९०५५४०४ | ११ | ३७ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याघ्रलक्षणप्रकरणयोः । |
| १००९५४०३ | ११ | ४४ | " | " | | " | उपाधिप्रकरणस्य । |
| १३०७५५०३ | २० | ७० | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३०७५५०३ | १८ | ६५ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३०७५५०३ | २० | ६५ | " | " | | " | " |
| १३०७५५०३ | १६ | ५६ | " | " | | पू० | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| १००५५४०६ | ९ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १००७५४०६ | ९ | ४८ | " | " | | " | द्वितीयकारकम् । |
| १२०३५४०६ | ९ | ६३ | " | " | | " | प्रथमकारकम् । |
| १२०३५४०४ | १० | ६० | " | " | | " | द्वितीयकारकम् । |
| १००५५४०५ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| १३०८५५०३ | १७ | ५९ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १३०८५५०३ | १२ | ६० | " | " | | " | " |
| १००७५४०५ | ९ | ५५ | " | " | | " | |
| ९०६५४०४ | १३ | ४३ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद् व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणांशम् । |
| ९०२५४०१ | ९ | ३१ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १३०७५५०३ | १० | ५५ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|-------------------------|-------------------|
| ३२०१३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-१४ । |
| ३२०१४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३२०१५ | " | | १-३, ३-११, १३ । |
| ३२०१६ | गादाधारीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-६ । |
| ३२०१७ | विशेषलक्षणम् | | २ । (गणनया) |
| ३२०१८ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १६, १८-२४ । |
| ३२०१९ | तत्त्व०मणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | २ । (गणनया) |
| ३२०२० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ७ । " |
| ३२०२१ | किरणावलीप्रकाशः | वर्द्धमानोपाध्यायः | २-५० । |
| ३२०२२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१२, २५-८८ । |
| ३२०२३ | " | " | १-२१ । |
| ३२०२४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ३ । (गणनया) |
| ३२०२५ | तत्त्व०मणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १७ । " |
| ३२०२६ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १ । |
| ३२०२७ | तत्त्व०मणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २ । (गणनया) |
| ३२०२८ | " | " | १-७ । |
| ३२०२९ | " | " | १-२ । |
| ३२०३० | शाब्दबोधविचारः | रामेश्वरः | ५ । (गणनया) |
| ३२०३१ | शक्तिवादविवरणम् | कुलगम्भट्टः | १-१९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आशयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|--|
| १३*४×४*२ | ७ | ६३ | दे. ना. | का. | | पू० | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १२*२×४*४ | १३ | ५० | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १०*१×४*६ | १५ | ४२ | " | " | | " | " |
| १२*३×५*१ | १२ | ४९ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणे विशिष्टान्तरा- घटितत्वकल्पस्य । |
| ११*६×४*५ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| १०*४×३*७ | ११ | ३९ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदे उत्पत्तिवाद- प्रकरणस्य । |
| १०*९×३*२ | ११ | ७५ | " | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । |
| ९*२×३*६ | ९ | ३७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य "श. द." इत्यक्ष- राभ्यां सङ्केतिता । |
| १०*९×४*५ | १२ | ३४ | " | " | | " | द्रव्यप्रकरणस्य । प्रशस्तपादभाग्यटी.टी। |
| १०*८×४*१ | १२ | ४८ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणात् सिद्धान्त- लक्षणप्रकरणांशा । |
| १०*९×४*५ | १२ | ५७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११*८×४*४ | ११ | ४४ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०*९×४*६ | ९ | ४२ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणावच्छेदकत्वनिरुक्ति- सामान्याभावविशेषव्याप्ति- प्रकरणानाम् । |
| ९*९×४*२ | ११ | ४४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणादनुपसंहारि- प्रकरणांशः । |
| ९*९×४*२ | १३ | ४८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिसव्यभिचार- प्रकरणयोः । |
| १०*७×४*३ | १० | ४५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद् व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| ९*९×४*२ | १२ | ४१ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९*७×४*२ | ७ | ४० | " | " | | " | शाब्दिक-नैयायिकमतमाश्रित्य । |
| ११*८×४*१ | १० | ५९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|-------------------------|---|
| ३२०३२ | शक्तिवादः | | १-४ । |
| ३२०३३ | शक्तिवादक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३२०३४ | व्युत्पत्तिवादसङ्क्षेपः | | १-३ । |
| ३२०३५ | व्युत्पत्तिवादटीका | कृष्णम्भट्टः | १-८५ । |
| ३२०३६ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवः | ३-१५, १८-२१ । |
| ३२०३७ | " | " | २-९ । |
| ३२०३८ | " | " | १-१४६ । |
| ३२०३९ | " | " | १-३८ (= ३९) ४०-५१, ५५-६८, ६८- (= ७४) ७५-८४ । |
| ३२०४० | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली सप्रकाशा | दिनकरः | १-३८ । |
| ३२०४१ | " | महादेवः | १-३४ । |
| ३२०४२ | " | " | १-५८ । |
| ३२०४३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | दिनकरः | १-४१ (= ४२) ४२-९३ । |
| ३२०४४ | " | | ३१-३६, ३६-३८, ४०-६३ । |
| ३२०४५ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | दिनकरः | १६-३३, १, ३४-७१, ७१ । |
| ३२०४६ | तर्कसङ्ग्रहचन्द्रिका | मुकुन्दभट्ट- गाडगिलः | १-७४ । |
| ३२०४७ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | दिनकरः | २-२३ । |
| ३२०४८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पक्षधरः | ३, ५-३६ । |
| ३२०४९ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | | १-३२ । |
| ३२०५० | " | | ३-१६, १८-३१ । |
| ३२०५१ | " | | १-४, ११-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | श्लोक- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| १३०८५६३ | १३ | ५८ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १२०८५४१ | १३ | ४७ | " | " | | " | |
| १००१५३०५ | ८ | ३२ | " | " | | " | |
| १३०८५५३ | १३ | ६२ | " | " | | " | |
| १०७५४३ | ९ | ४४ | " | " | | " | |
| | | | | | | " | |
| १०९५४३ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| १०४५४१ | १३ | ४८ | " | " | १७८१ | पू० | दिनकरी वा । |
| १००८५४३ | ११ | ५० | " | " | | अपू० | |
| १३०५५५५ | १८ | ७३ | " | " | | पू० | गुणनिरूपणमात्रम् । |
| १३३३५५१ | १४ | ५५ | " | " | | " | अनुमानशब्दखण्डयोः । |
| १३०१५५ | १४ | ६८ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डमात्रम् । |
| १०९५४५ | १२ | ३८ | " | " | | अपू० | अनुमानखण्डाद् गुणनिरूपणान्ता । |
| १००२५४५ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| १००८५४ | १४ | ५१ | " | " | | " | प्रत्यक्षानुमानखण्डयोः । |
| ८०१५५५ | १३ | २१ | " | " | | पू० | |
| १४५५२ | ९ | ६७ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १०५४६ | १२ | ४३ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवाद- प्रकरणस्य । |
| १२०६५३१ | ९ | ७० | " | " | | " | अनुमानोपमानशब्दखण्डानाम् । |
| १५३०७ | १० | ४७ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १५३०८ | १० | ४१ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|--------------------------|--|
| ३२०५२ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | | १-१४, २ । |
| ३२०५३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली सटीका | विश्वनाथः टी० महादेवः | १-१८ । |
| ३२०५४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवः | १-१६, १८-३४+१ । |
| ३२०५५ | न्यायबोधिनी | गोवर्द्धनः | ७ । (गणनया) |
| ३२०५६ | " | " | १-२३ । |
| ३२०५७ | तर्कचन्द्रिका | | १-२० । |
| ३२०५८ | तर्कसङ्ग्रहचन्द्रिका | श्रीकृष्णधूर्जटिः | १-४, ६-११ । |
| ३२०५९ | न्यायबोधिनी | गोवर्द्धनः | १-१२ । |
| ३२०६० | कणादरहस्यम् | शङ्करमिश्रः | १-५७, ५७-५९, १-२, २-१२५ । |
| ३२०६१ | कारिकावली सटीका | विद्वन्नाथः | ९३-१०५, १०५-१४४, १४६-१४७ । १-६३, १-१५, १-१६, १-६, १ । |
| ३२०६२ | " | " | |
| ३२०६३ | शक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | ३७ । (गणनया) |
| ३२०६४ | " | | ६-६, ४३ । |
| ३२०६५ | " | | १-३३, ३६-४१ । |
| ३२०६६ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | | १५-८० । |
| ३२०६७ | " | जगदीशतर्कालङ्कारः | १-१५ । |
| ३२०६८ | " | " | १-३ । |
| ३२०६९ | " | " | १-९६, १-३१ । |
| ३२०७० | " | " | १-७१ । |
| ३२०७१ | " | | १-४६, १-१४, ६१-६३, ६५-८९, ७०-७९, १ |
| ३२०७२ | शब्दशक्तिप्रकाशिकाटीका | कृष्णकान्तः | १-३८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|-------|-----------|------------------------|--|
| १०८५९६ | १६ | ३५ | दे.ना. | का. | | अपू० | अनुमानखण्डस्य । |
| १३९५९३ | ११ | ४७ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| १०७५४९ | ७ | ३४ | " | " | | " | " |
| १०७५४९ | १२ | ३३ | " | " | | " | तर्कसङ्ग्रहटीका अनुमानखण्डस्य । |
| १०७५४९ | ९ | ३३ | " | " | | पू० | |
| ११९५६ | ११ | ३५ | " | " | | अपू० | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| १०९५५९ | १८ | ४० | " | " | | " | |
| १२०५५९ | १० | ५३ | " | " | | " | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| १०५६९ | २२ | २१ | " | " | ल.सं. ५४२ | पू० | |
| १४५७ | १५ | ६० | " | " | | अपू० | टीका-न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, प्रकाशश्च । शब्दखण्डाद् गुणनि- रूपणान्ता । |
| १३९५७२ | १५ | ५७ | " | " | १८५४ | " | " प्रत्यक्षखण्डाद् गुणनिरूपणांशा । |
| १२६५४१ | ८ | ६१ | " | " | | पू०* | |
| ७२५३६ | ११ | २४ | " | " | | अपू० | |
| १०५३६ | ७ | ४३ | " | " | | " | |
| १३३५९१ | १२ | ४८ | " | " | | " | |
| १३७५९३ | १२ | ५९ | " | " | | " | |
| १४५७२ | २३ | ६३ | " | " | | पू० | कारिकामात्रम् । |
| १३७५२८ | ५ | ७५ | वङ्ग | " | | "* | |
| १०६५४६ | १३ | ४१ | दे.ना. | " | १७५९ | " | |
| ९९५३३ | ७ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १३७५९३ | १२ | ५९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--------------------------------------|-------------------|
| ३२०७३ | शब्दशक्तिप्रकाशिकाटीका | रामभद्रसिद्धान्त- वागीशः | १-१०, १०-१६ । |
| ३२०७४ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशतर्क- लङ्कारः | ९४ । (गणनया) |
| ३२०७५ | विध्यर्थविचारः | | १ । |
| ३२०७६ | लघुपरिभाषा | | १-२८ । |
| ३२०७७ | तर्कदीपिका सटीका | विश्वनाथाश्रमः- टी.का.अद्वयारण्यः | १-१३ । |
| ३२०७८ | गुणरत्नावली | भास्करः | १-१० । |
| ३२०७९ | तर्ककौमुदी | लौगाक्षिभास्करः | १-१४ । |
| ३२०८० | " | " | १-१७ । |
| ३२०८१ | पदार्थरत्नमाला | रघुनाथः | १-१४, २३-३७ । |
| ३२०८२ | तर्कचन्द्रिका | विश्वेश्वराश्रमः | १-१३ । |
| ३२०८३ | नवीननिर्माणम् | रघुदेवशर्मा | १-८७ । |
| ३२०८४ | पदार्थविवेकटीका | गोपीनाथमौनी | १-३१ । |
| ३२०८५ | सिद्धान्ततत्त्वम् | | ३१-३६ । |
| ३२०८६ | गुणरहस्यम् | रामभद्रसार्वभौमः | १-८, ८-११ । |
| ३२०८७ | विभागलक्षणसमन्वयः | | १ । |
| ३२०८८ | शक्तिवादादर्थदीपिका | कृष्णम्भट्टः | १-१५, १५-५० । |
| ३२०८९ | कगादरहस्यम् | | १-२५ । |
| ३२०९० | पदार्थविवेचनम् | लक्ष्मीपतिः | १-२६ । |
| ३२०९१ | न्यायसारः | माधवदेवः | २-२१ । |
| ३२०९२ | द्रव्यसारसङ्ग्रहः | रघुवीरः रघुदेवो वा | १-९ । |
| ३२०९३ | तर्कसङ्ग्रहचन्द्रिका | मुकुन्दभट्ट- गाडगिलः | १-३५, १-२५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९०७४४२ | १० | ३६ | दे. ना. | का. | | पू० | टीका प्रवोधिनी । |
| १७००४३ | ६ | ७५ | वङ्ग. | " | १६२४शकः | अपू० | |
| १९३२४२०९ | ७ | ८७ | " | " | | " | |
| १८०९४३०५ | ७ | १०० | " | " | | पू० | अत्र द्रव्यादिपदार्थालोचनम् । |
| १३०६४५ | १४ | ५४ | दे. ना. | " | | " | अत्र तर्कलक्षणम् तदभेदाश्च । |
| १००९४३२ | ८ | ६४ | " | " | १५७० | " | अत्र गुणपदार्थविचारः । |
| ९०७४४३ | ११ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ११२४५२ | १२ | ४८ | " | " | | पू० | |
| ९४२०९ | १० | ४६ | " | " | | " | अत्र गौतमोक्तपदार्थनिरूपणम् । |
| ९०८४४२ | १२ | ४१ | " | " | | " | " |
| १०२४४ | ८ | ३६ | " | " | | अपू० | अत्रानुमितिलक्षणादिविचारः । |
| १०३४५०१ | १३ | ४४ | " | " | | पू० | सिद्धान्ततत्त्वसर्वस्वाख्या । द्रव्य- निरूपणम् । |
| ९३४४३ | ९ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १०३४४०५ | १२ | ३६ | " | " | | " | अत्र गुणभेदचित्ररूपादिविचारः । |
| १०६४४७ | ११ | ४१ | " | " | | पू० | |
| १०७४४६ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| १६३४२७ | ५ | ९५ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १२२४५२ | १३ | ४१ | दे. ना. | " | | पू० | अत्र द्रव्यपदार्थविवेचनम् । |
| १०१४३० | ८ | ३७ | " | " | | अपू० | अत्र द्रव्यादिपदार्थनिरूपणम् । |
| १०४४३७ | १० | ४७ | " | " | | " | अत्र मङ्गलमुक्तिद्रव्यपदार्थानां- विवेचनम् । |
| ११३४४२ | ७ | ५४ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|----------------------------|----------------------|
| ३२०९४ | तर्कसङ्ग्रहचन्द्रिका | वैजनाथभट्टः | १-४४ । |
| ३२०९५ | तर्कसङ्ग्रहवाक्यवृत्तिः | मेरुशास्त्री | २-१६ । |
| ३२०९६ | तर्कसङ्ग्रहटीका | | १-११ । |
| ३२०९७ | " | | १-१०, १२-१६, १७-२६ । |
| ३२०९८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशतरङ्गिणी | | १-३३ । |
| ३२०९९ | " | रामरुद्रः रामेश्वरसुनुः | १-८९ । |
| ३२१०० | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवः | १-११ । |
| ३२१०१ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- टिप्पणी | | १-१६ । |
| ३२१०२ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- ज्योत्स्ना | विश्वधिकेन्द्रयतिः | १-३६ । |
| ३२१०३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- विवरणम् | | १-१६ । |
| ३२१०४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- गूढार्थमणिः | देववल्लभः | १-३, ६-१२, ७३-७४ । |
| ३२१०५ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | त्रिलोचनः | १-४० । |
| ३२१०६ | " | रुद्रतर्कवागीशः | १-८० । |
| ३२१०७ | " | " | १-३८, ४०-५१, ६३-६९ । |
| ३२१०८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- प्रकाशः | महादेवः | १-३ । |
| ३२१०९ | " | " | १-८, ८-७७ । |
| ३२११० | " | " | १-३, ३-२० । |
| ३२१११ | " | " | १-८० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| १०*१×३*७ | ११ | ३९ | दे. ना. | का. | १६३७ शके | पू० | |
| १०*७×९*६ | ११ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ९*९×४*५ | १५ | ३६ | वङ्ग. | " | | " | न्यायबोधिनीपद्धत्यचन्द्रिकावाक्य- वृत्त्यादिभिन्ना । |
| ११*५×५*२ | १० | ३३ | दे. ना. | " | | " | " |
| १०*८×४*६ | ११ | ३४ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| १०*९×४*६ | १० | ३५ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| १०*५×४*९ | १३ | ५४ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| १३*१×५ | १४ | ४९ | वङ्ग. | " | | " | " |
| ९*७×४*२ | ८ | ३७ | दे. ना. | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| १३*४×४*७ | १२ | ६० | वङ्ग. | " | | पू० | प्रत्यक्षखण्डाद् गुणनिरूपणान्तम् । |
| १४×५*५ | ८ | ४९ | दे. ना. | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डांशः । |
| १८*२×४*३ | ९ | ८७ | वङ्ग. | " | | " | टीका मणिप्रभा प्रत्यक्षखण्डांशा । |
| १३*५×३*२ | ७ | ६७ | " | " | १७२३ | पू० | टीका रौद्री प्रत्यक्षखण्डाद्गुण- निरूपणान्ता । |
| १३*४×५*५ | ९ | ६२ | " | " | | अपू० | टीका रौद्री प्रत्यक्षखण्डाद्गुण- निरूपणांशा । |
| १२*२×४*३ | १२ | ४९ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डांशः । |
| ९*८×४*५ | १० | ३६ | दे. ना. | " | | पू० | प्रत्यक्षखण्डमात्रम् । |
| १३*५×५*२ | ९ | ५३ | " | " | | अपू० | मध्ये क्वाचित्कं टिप्पणम् । प्रत्यक्ष- खण्डे कारणनिरूपणांशः । |
| १०×४*६ | १७ | ४१ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डादनुमानखण्डांशः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------|---------------------------|-------------------|
| ३२११२ | शक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | ४-२९+१, ३०-६९ । |
| ३२११३ | शक्तिवादव्याख्या | कृष्णमित्रः | २-२९ । |
| ३२११४ | द्रव्यसारसङ्ग्रहः | रघुवीरः (रघुदेवो वा) | १-८८, १-४१ । |
| ३२११५ | तत्त्व मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२९ । |
| ३२११६ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-९ । |
| ३२११७ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | ४ । (गणनया) |
| ३२११८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३२११९ | तत्त्व-मणिदीधितिटीका | जगदीशः | २ । (गणनया) |
| ३२१२० | नव्यमतरहस्यम् | | १-१५ । |
| ३२१२१ | नवीनमतविचारः | हरिरामतर्कालङ्कारः | १-३० । |
| ३२१२२ | तत्त्व-मणिदीधिति- नवपत्रिका | | १-३ । |
| ३२१२३ | " | | १-१५ । |
| ३२१२४ | नववादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२७ । |
| ३२१२५ | नवार्थविवेचनम् | रघुनाथशिरोमणिः | १-२ । |
| ३२१२६ | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१० । |
| ३२१२७ | " | " | १-२५, २४-३९ । |
| ३२१२८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३२१२९ | " | | १-३ । |
| ३२१३० | " | | १-५ । |
| ३२१३१ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |
| ३२१३२ | जागदीशीवादार्थः | राधामोहनः | ७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | अक्षरः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|------------------------|---|
| १०°९×४°६ | ७ | ४२ | दे.ना. | का. | १९२० | ” | |
| १०°९×४°६ | १० | ३९ | ” | ” | | अपू० | |
| १२°६×८°६ | २८ | २९ | ” | ” | १९७३ | पू० | मङ्गलमुक्तिद्रव्यपदार्थानां निरूपणम् । |
| १९×४°९ | ९ | ९४ | वङ्ग | ” | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १९°४×३°३ | ९ | ६४ | ” | ” | | ” | पक्षतापरामर्शप्रकरणयोः । |
| १३°३×२°८ | ८ | ९८ | ” | ” | | ” | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १६°९×३°७ | ११ | १०० | ” | ” | | ” | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १९×३°२ | ६ | ९४ | ” | ” | | ” | व्यधिकरणप्रकरणस्य । अस्य क्रोडपत्रमपि । |
| १७°७×३°३ | ९ | १०३ | ” | ” | | पू० | अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण- भावविचारः । |
| १०°१×३°९ | १० | ४९ | दे.ना. | ” | | ” | ” |
| १८×३°७ | ८ | ६० | वङ्ग | ” | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १९°१×३°७ | ७ | ८३ | ” | ” | | ” | ” |
| १३°९×४ | १० | ९२ | ” | ” | | पू० | |
| १४×२°९ | ९ | ८४ | ” | ” | | ” | |
| १८°३×३°९ | ८ | ९४ | ” | ” | | अपू० | द्वितीयकारकम् । |
| १९×३°७ | ८ | ९६ | ” | ” | | ” | ” |
| १६°८×३°३ | ८ | ६९ | ” | ” | | ” | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १४°९×३°२ | ७ | ६८ | ” | ” | | ” | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १४°३×३°२ | ११ | ९९ | ” | ” | | ” | सामान्यनिरुक्तिपक्षताप्रकरणयोः । |
| १९×३ | ९ | ९० | ” | ” | | ” | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १३°९×३°३ | ११ | ६१ | ” | ” | | ” | पक्षताप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|-------------------------|-----------------------------|
| ३२१३३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-७ । |
| ३२१३४ | " | " | १-७ । |
| ३२१३५ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-२ । |
| ३२१३६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-३, ६-९ । |
| ३२१३७ | पदार्थखण्डनटीका | रामभद्रः | १-१० । |
| ३२१३८ | पदवाक्यरत्नाकरः | | १-१२० । |
| ३२१३९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-८, १०-१५ । |
| ३२१४० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३४ । |
| ३२१४१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२७ । |
| ३२१४२ | जागदीशीसंक्षेपपत्रिका | | १-२ । |
| ३२१४३ | " | | १-५ । |
| ३२१४४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ४ । (गणनया) |
| ३२१४५ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-२५ । |
| ३२१४६ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३२१४७ | तर्कप्रतिबन्धकत्वरहस्यम् | | १-१० । |
| ३२१४८ | तर्कभाषाटीका | | ८-२२, २४-२५, २८-३५, ३७-६३ । |
| ३२१४९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-८ । |
| ३२१५० | " | " | ११ । |
| ३२१५१ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-८ । |
| ३२१५२ | तर्कामृतम् | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१५ । |
| ३२१५३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-१९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १६*४×३*९ | ११ | ७९ | वङ्ग | का. | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १९×४ | ९ | ८९ | " | " | | " | " |
| १३*६×२*९ | ४ | ६६ | " | " | | " | " |
| १९×३*४ | ६ | ६३ | " | " | | अपू० | " |
| १९×३*४ | ७ | ७४ | " | " | | " | " |
| ११*३×९ | १० | ३९ | दे.ना. | " | | " | प्रारम्भतस्तृतीयकारकांशः । |
| १९*४×४ | १० | १०० | वङ्ग | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १६*८×३*९ | ८ | १०४ | " | " | | " | " |
| १९*९×३*९ | ७ | ८२ | " | " | | पू० | " |
| १६*२×३*७ | ११ | ९४ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १६*२×३*७ | ११ | ८७ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १९*४×३*९ | ९ | ९३ | " | " | | अपू० | " |
| १०*६×४*६ | ८ | ३४ | दे.ना. | " | | " | व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याघ्रव्यधिकरण- प्रकरणानाम् । |
| १७×३*९ | ९ | ७७ | वङ्ग | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । |
| १०×३*७ | ७ | ३६ | दे.ना. | " | | पू० | " |
| ९*९×२*८ | ७ | ४२ | " | " | | अपू० | " |
| १७*६×३*८ | ७ | ७१ | वङ्ग | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । |
| १६*३×४ | ११ | ७४ | " | " | | " | " |
| १३*३×३*८ | ७ | ६१ | " | " | | पू० | " |
| १३*९×३*३ | ६ | ६० | " | " | | " | " |
| १७*२×३*९ | ८ | ८१ | " | " | | " | शब्दखण्डे तात्पर्यप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|--|-----------------------------------|
| ३२१५४ | कारकखण्डनम् | रामनारायणमिश्रः | १-७ । |
| ३२१५५ | देवतावादः | | १-२ । |
| ३२१५६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३२१५७ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-२ । |
| ३२१५८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-१४ । |
| ३२१५९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२२, १२-१६ । |
| ३२१६० | माथुरीक्रोडपत्रम् | | ३ । (गणनया) |
| ३२१६१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३२१६२ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाशः | अन्नम्भट्टः प्रका.का.नीलकण्ठः | ४-५३ । |
| ३२१६३ | तर्कामृततरङ्गिणी | | ११-३० । |
| ३२१६४ | माथुरीक्रोडपत्रम् | कुलचन्द्रदेवशर्मा | १-३ । |
| ३२१६५ | तर्कामृततरङ्गिणी | | १० । (गणनया) |
| ३२१६६ | " | कृष्णकान्तः | १-३३ । |
| ३२१६७ | सिद्धान्तचन्द्रोदयः | कृष्णधूर्जटिः | १-४३, ४५-५४, ५६-७६, ७८-८१, ८३-११२ |
| ३२१६८ | तर्कामृततरङ्गिणी | मुकुन्दभट्टः | १-३४ । |
| ३२१६९ | " | | १-३१, ३३, ३५-४१ । |
| ३२१७० | " | | १-७, ७-२६, २८-३० । |
| ३२१७१ | " | | १-१४ । |
| ३२१७२ | " | | १-१७ । |
| ३२१७३ | तर्कामृतं सटीकम् | जगदीशभट्टाचार्यः टी.का.मुकुन्दभट्टः | १-२१ । |
| ३२१७४ | तर्कामृतम् | | १-१४ । |
| ३२१७५ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१३ । |
| ३२१७६ | " | | १-७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| १२*६*४ | ९ | ६३ | वङ्ग. | वा. | | पू० | त्रिलोचनचन्द्रिकायाम् । |
| १६*२*३*४ | ६ | ७५ | " | " | | अपू० | |
| १७*४*३*२ | ८ | ८५ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १५*३*३*४ | ७ | ६६ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणादुपाधिवादांशः । |
| १४*३*३*१ | ५ | ५६ | " | " | | पू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १९*५*३*४ | ९ | ८८ | " | " | | " | " |
| १४*३*३*४ | ८ | ४६ | " | " | | अपू० | जागदीशीपत्रिका च । पञ्चताप्रकरणस्य । |
| १३*५*४ | ३७ | २० | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणे यत्तुकल्पस्य । |
| ११*५*७ | २० | ४४ | दे. ना. | " | १७९१ | " | |
| ९*५*३*४ | ११ | ४१ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १७*५*३*८ | १२ | १०५ | वङ्ग. | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| ८*६*३*५ | ९ | ३० | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १२*९*३ | ७ | ६२ | वङ्ग. | " | | " | |
| १०*७*४*७ | ९ | ३५ | दे. ना. | " | १९३३ | " | तर्कसङ्ग्रहटीका । तर्कसङ्ग्रहविवरणं वा । |
| ९*७*४*१ | ९ | ४५ | " | " | १८५६ | पू० | |
| ११*१*४*७ | ९ | ४० | " | " | | अपू० | |
| १०*१*४*५ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| १०*४*४*३ | १५ | ५४ | " | " | | " | |
| १२*५*४*९ | १२ | ५९ | " | " | | पू० | |
| १२*३*५*८ | १५ | ४२ | " | " | | " | टीका तरङ्गिणी । |
| ९*३*३*५ | ७ | २५ | " | " | | अपू० | |
| १०*२*५*३ | ११ | ३४ | " | " | | पू० | |
| ९*६*४*३ | ११ | ३५ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|------------------|------------------------------|
| ३२१७७ | तर्कामृतम् | | १-९ । |
| ३२१७८ | " | | १-१० । |
| ३२१७९ | " | | २, ४-५, १२-१५ १७-२१, २३-२४ । |
| ३२१८० | " | | १-१० । |
| ३२१८१ | " | | ९-१४ । |
| ३२१८२ | " | | २-१६ । |
| ३२१८३ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-११ । |
| ३२१८४ | " | " | १-१८ । |
| ३२१८५ | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-९, १२-४० । |
| ३२१८६ | न्यायलीलावतीप्रकाश- प्रकाशिका | शङ्करभगीरथः | १-३२, +१, ३३-१४४ । |
| ३२१८७ | न्यायलीलावतीप्रकाशटीका | रुद्रः | १-१७, ३२-५२, १-१८ । |
| ३२१८८ | तर्कामृतम् | | ३-७, ९-११, ११-२६ । |
| ३२१८९ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१९ । |
| ३२१९० | " | " | १-१६ । |
| ३२१९१ | " | " | १-४६ । |
| ३२१९२ | " | | १-१३ । |
| ३२१९३ | " | | ४ । (गणनया) |
| ३२१९४ | " | | १-१३ । |
| ३२१९५ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१० । |
| ३२१९६ | " | " | १-१३ । |
| ३२१९७ | " | " | १-१७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९३×४१ | ८ | २० | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९६×४२ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ८३×३३ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| ९×३४ | १० | ३२ | " | " | | " | |
| ९१×४ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| १२९×९ | ८ | ८५ | " | " | | " | |
| ९८×४३ | ११ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९१×४२ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| १०१×४३ | ११ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १०३×४४ | १२ | ४२ | " | " | | पू० | जलद् इति विवृतिरिति च नाम- दृश्यते । |
| १०५×३९ | ८ | ३९ | " | " | | अपू० | टीका रौद्री । |
| ७१×३४ | ७ | २२ | " | " | | " | |
| ९७×४५ | ८ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १०३×४५ | १० | २६ | " | " | १८५४ | " | |
| १०×४३ | ५ | १९ | " | " | १८८५ | " | |
| ९७×४५ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| १२×४ | ११ | ७७ | वज्र. | " | | अपू० | |
| १२५×३ | ७ | ६४ | " | " | १७४९ शं. | पू० | यद्यपि जगदीशकृततर्कामृतादभिन्न- मिदं पुस्तकं तथापि ग्रन्थान्ते राम- कृष्णभट्टाचार्यस्य ग्रन्थकृत्स्थाने- उल्लेख इति विचारणीयम् । |
| ११६×६ | १४ | ३२ | दे. ना. | " | | " | |
| ९७×४३ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| ९५×४२ | ९ | ३१ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|-------------------------|-------------------|
| ३२१९८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोक- रहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-४० । |
| ३२१९९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | ७७-८१ । |
| ३२२०० | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-३१ । |
| ३२२०१ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१० । |
| ३२२०२ | " | " | ३० । (गणनया) |
| ३२२०३ | " | " | ११-१९ । |
| ३२२०४ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-२४ । |
| ३२२०५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २०-९३, ९५ । |
| ३२२०६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-७ । |
| ३२२०७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ३२२०८ | " | | १-६ । |
| ३२२०९ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १ । |
| ३२२१० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-३६ । |
| ३२२११ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-६ । |
| ३२२१२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३२२१३ | " | | १-२ । |
| ३२२१४ | " | | १-४ । |
| ३२२१५ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ११ । (गणनया) |
| ३२२१६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-६ । |
| ३२२१७ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ४७-१९२ । |
| ३२२१८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | २-६३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १६*१×४*८ | ८ | ७४ | वङ्ग. | का. | | अपू० | शब्दखण्डे आकाङ्क्षादिप्रकरणस्य । |
| १६*६×३*३ | ८ | ८४ | " | " | | " | विरोधप्रकरणस्य । |
| १७*७×३*६ | ८ | ६२ | " | " | | " | शब्दखण्डे विधिवादस्य । |
| १८*६×३*७ | ८ | ७४ | " | " | | " | विधिवादस्य । |
| १८*४×४*१ | ८ | ९१ | " | " | | " | विधिवादसिद्धान्तस्य । |
| १७*६×४*२ | ८ | ८७ | " | " | | " | विधिवादस्य । |
| १६×४ | ६ | ७१ | " | " | | " | विध्यपूर्ववादप्रकरणयोः । |
| १०*२×४*१ | १० | ३३ | दे. ना. | " | | " | उपाधिवादमारभ्यावयवप्रकरणान्ता । |
| १२*७×३*८ | ७ | ६४ | मै. | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १३*३×३*८ | १२ | ६८ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३*६×४*२ | १४ | ८७ | " | " | | " | " |
| ११*६×२*७ | ६ | ७४ | " | " | | पू० | " |
| १३*९×३*७ | ६ | ६० | वङ्ग | " | | अपू० | " |
| १२*२×३*२ | ७ | ६० | मै. | " | | " | " |
| १४*२×४ | १३ | ८२ | " | " | | " | " |
| १३*७×४*१ | १२ | ७४ | " | " | | " | " |
| १३*९×३*६ | १० | ६६ | " | " | | " | " |
| १६*९×३*६ | ८ | ८६ | वङ्ग. | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १७*६×३*१ | ८ | ६७ | " | " | | " | " |
| १२*७×३*८ | ९ | ६१ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणादन्यथाख्याति- वादांशम् । |
| १०*९×४*७ | १२ | ४४ | दे. ना. | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य गादाधरी- जागदीशीभिन्ना भवानन्दकृता प्रका- शाख्यटीका प्रतिभाति । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|----------------------------|-------------------|
| ३२२१९ | वाधविचारः | | १-२० । |
| ३२२२० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | २३ । (गणनया) |
| ३२२२१ | " | " | १०१-११९ । |
| ३२२२२ | आत्मतत्त्वविवेकदीधिति- विवृतिः | " | १-११ । |
| ३२२२३ | तत्त्वचिन्तामणिहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ४-३६ । |
| ३२२२४ | " | " | १-७७ । |
| ३२२२५ | " | " | १-१४ । |
| ३२२२६ | तत्त्व०मण्यालोकरहस्यम् | " | १-१९ । |
| ३२२२७ | मुक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-६ । |
| ३२२२८ | नव्वादटीका | " | १-१८ । |
| ३२२२९ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणर्भावविचारः | महादेवः | १-२४ । |
| ३२२३० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३२२३१ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | हरिदाससिद्धान्त- वागीशः | १-७, ९-१६ । |
| ३२२३२ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- टीका | शङ्करमिश्रः | १-५६ । |
| ३२२३३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथपञ्चाननः | ६-२६ । |
| ३२२३४ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १-२९ । |
| ३२२३५ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथन्याय- पञ्चाननः | ७-२२ । |
| ३२२३६ | " | " | १-१६, १२-२४ । |
| ३२२३७ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | " | १-५ । |
| ३२२३८ | न्यायसूत्राणि | गौतमः | १-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १५०८५३१ | ८ | १०५ | वङ्ग | का. | | पू० | |
| १५०५५३०५ | ९ | ७९ | " | " | | अपू० | वाधप्रकरणस्य । |
| १६०४५३०२ | ८ | १०७ | " | " | | " | |
| १६०८५३०७ | ९ | ९१ | " | " | | " | बौद्धाधिकारदीधितिविवृतिर्वा । |
| १७०३५३०७ | ९ | ८० | " | " | | " | मङ्गलवादस्य । |
| १७०४५३०६ | ८ | ८० | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| १५०८५३०५ | ८ | ७५ | " | " | | " | मङ्गलवादस्य । |
| १६०१५३०५ | ८ | ८४ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १८०७५४०१ | १० | ९७ | " | " | | पू० | |
| १८०९५३०९ | ९ | ९१ | " | " | | " | |
| ११०८५४०३ | १४ | ६२ | दे. ना. | " | | " | नव्यमतस्य । |
| १७०५५३०९ | ८ | ७४ | वङ्ग. | " | | " | अपूर्ववादस्य । |
| १७०८५३०२ | ८ | १०० | " | " | | अपू० | |
| १२०९५३०५ | ८ | ६८ | " | " | | " | टीका-आमोदाख्या प्रथमस्तवकात्पञ्च- मस्तवकाशा । |
| ९०२५४०३ | ४३ | २२ | दे. ना. | " | | " | |
| ८०२५३०९ | ९ | २८ | " | " | | " | प्रमाणनिरूपणपर्यन्ता । |
| ९०३५३०५ | १० | ४१ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ८०९५३०५ | ६ | २५ | " | " | | " | गुणनिरूपणस्य । |
| ९०३५३०३ | ६ | ३० | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १००६५४०३ | ११ | १०६ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|-------------------------|-------------------|
| ३२२३९ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-१५ । |
| ३२२४० | भास्करोदया | | १०-३७ । |
| ३२२४१ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाशः | नीलकण्ठः | ३-२६ । |
| ३२२४२ | " | " | १-२५ । |
| ३२२४३ | " | " | १-१३ । |
| ३२२४४ | तर्कामृततरङ्गिणी | मुकुन्दभट्टगाड- गिलः | ४-४१ । |
| ३२२४५ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-५ । |
| ३२२४६ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-४ । |
| ३२२४७ | " | " | १-५ । |
| ३२२४८ | " | " | १-१० । |
| ३२२४९ | " | " | १-७ । |
| ३२२५० | " | " | १-९ । |
| ३२२५१ | " | " | १-७ । |
| ३२२५२ | " | " | १-९ । |
| ३२२५३ | " | " | १-७ । |
| ३२२५४ | " | " | १-१२ । |
| ३२२५५ | " | " | १-११ । |
| ३२२५६ | " | " | १-८ । |
| ३२२५७ | " | " | १-७ । |
| ३२२५८ | " | " | १-१३ । |
| ३२२५९ | " | " | १-६ । |
| ३२२६० | " | " | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| १२०१×४ | १० | ४६ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १२०७×८ | २३ | ३९ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डस्य तर्कसङ्ग्रहदीपिका- प्रकाशटीका । |
| ९३×२०९ | ११ | ४९ | " | " | | " | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| ९३×३०१ | ८ | ३९ | " | " | | " | प्रत्यक्षानुमानपरिच्छेदयोः । |
| ९४×३ | ८ | ४२ | " | " | | पू० | अनुमानोपमानपरिच्छेदयोः । |
| १०२×४३ | १२ | ४८ | वङ्ग | " | १८१७ | अपू० | जगदीशतर्कालङ्कारकृत-तर्कामृतस्य- टीका । |
| १७४×३०४ | ९ | १०८ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ११×४२ | १३ | ४९ | दे.ना. | " | १८८८ | पू० | |
| ८६×३०९ | ११ | ३१ | " | " | १६४२ | " | |
| ९८×४९ | ७ | २९ | " | " | १७४४ | " | |
| ९९×४२ | १३ | ३१ | " | " | | " | |
| ८७×४ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| ९१×४६ | १२ | ३४ | " | " | १८८४ | " | |
| ९१×३०८ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| ९९×४३ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| १०×६०१ | ८ | २९ | " | " | १८४० | " | |
| ९६×३०९ | ७ | ३२ | " | " | | " | |
| १०×९०४ | १२ | २४ | " | " | | " | |
| ८८×४३ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ८१×४२ | ९ | २३ | " | " | | " | |
| ११९×६०८ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| ८४×४१ | ११ | ३८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------|--------------|-------------------|
| ३२२६१ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-७ । |
| ३२२६२ | " | " | १, ५-११ । |
| ३२२६३ | " | " | १-७ । |
| ३२२६४ | " | " | १-१० । |
| ३२२६५ | " | " | १-९ । |
| ३२२६६ | " | " | १-५, ७-८ । |
| ३२२६७ | " | " | १-८ । |
| ३२२६८ | " | " | १-६ । |
| ३२२६९ | " | " | १-५ । |
| ३२२७० | " | " | २-८ । |
| ३२२७१ | " | " | २, ४-१२ । |
| ३२२७२ | " | " | १-७ । |
| ३२२७३ | " | " | ३-९ । |
| ३२२७४ | " | " | १-८ । |
| ३२२७५ | " | " | १-६ । |
| ३२२७६ | " | " | ६-२ । |
| ३२२७७ | " | " | १-५ । |
| ३२२७८ | " | " | १-११+१ । |
| ३२२७९ | " | " | १-११ । |
| ३२२८० | " | " | १-८ । |
| ३२२८१ | " | " | १-१६ । |
| ३२२८२ | " | " | १-१२ । |
| ३२२८३ | " | " | १-१५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- धारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|--------------|
| ९°६×४°२ | ११ | ४३ | दे. ना. | का. | १८७७ | पू० | |
| ९°६×४°२ | ७ | १९ | " | " | शकः १७६३ | अपू० | |
| १२°२×६ | ८ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ८°२×४ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ९°६×६°२ | १० | ३१ | " | " | १८८४ | " | |
| ७°६×३°६ | ७ | २० | " | " | | अपू० | |
| १०°३×४°६ | ७ | २४ | " | " | | " | |
| १०°८×४°६ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| १२°८×४°७ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ११°१×६ | १० | ३० | " | " | | " | |
| ९°४×४°१ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| ९°३×४°३ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| १०°८×३°७ | ७ | ३७ | " | " | | " | |
| ९°९×४°६ | ९ | ३९ | " | " | | पू० | |
| ९°९×४°३ | १२ | ३४ | " | " | | " | |
| १०°८×४°६ | ९ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| १०°२×३°९ | १३ | ४९ | " | " | | पू० | |
| १०×४°३ | ८ | २८ | " | " | | " | |
| ९°६×६ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| ९°७×३°६ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| ९°३×४°१ | ६ | २६ | " | " | | अपू० | |
| ७°६×४°३ | ८ | २७ | " | " | | पू० | |
| ८°६×४°७ | ९ | २४ | " | " | १८६६ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------|--------------------------------------|-------------------------|
| ३२२८४ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-९ । |
| ३२२८५ | " | " | १-११ । |
| ३२२८६ | " | " | १-९ । |
| ३२२८७ | " | " | १-६ । |
| ३२२८८ | " | " | २-७, १०-१३ । |
| ३२२८९ | " | " | १-१५ । |
| ३२२९० | " | " | १-५ । |
| ३२२९१ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | टी. का. गोवर्द्धनः | १-२७ । |
| ३२२९२ | न्यायबोधिनी | " | १-२२ । |
| ३२२९३ | " | " | १-६ । |
| ३२२९४ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | अन्नम्भट्टः टी. का. चन्द्रजसिंहः | १-९ । |
| ३२२९५ | " | " | १-७ । |
| ३२२९६ | " | " | १-७ । |
| ३२२९७ | " | " | १-१७ । |
| ३२२९८ | " | " | १-११ । |
| ३२२९९ | तर्कसङ्ग्रहफकिा | | १-२१ । |
| ३२३०० | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | | १-३, ५-७ । |
| ३२३०१ | तर्कसङ्ग्रहसिद्धान्तचन्द्रोदयः | श्रीकृष्णधूर्जटिः | ५४ । (गणनया) |
| ३२३०२ | " | " | १, ३-२०, २५-३५, ३७-६२ । |
| ३२३०३ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | अन्नम्भट्टः टी. श्रीकृष्णधूर्जटिः | १-३४ । |
| ३२३०४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | १-४५ । |
| ३२३०५ | तर्कसङ्ग्रहसिद्धान्तचन्द्रोदयः | श्रीकृष्णधूर्जटिः | २-५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|----------------------------|
| ९०४४०१ | ८ | ३९ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ९४४०२ | १० | २९ | " | " | | " | |
| ९०५४४०५ | ९ | २८ | " | " | १८८२ | " | |
| १२०६४४ | ९ | ५२ | " | " | १७८३ | " | |
| ८०३४४०५ | १० | २३ | " | " | | अपू० | |
| १००९४४०५ | ७ | २६ | " | " | | पू० | |
| ११०९४५०६ | १३ | ४४ | " | " | | " | |
| ११०८४५०१ | ११ | ३५ | " | " | १७८३ | " | टीका न्यायबोधिनी । |
| ९०२४४०२ | ९ | ३२ | " | " | १९०६ | " | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| १२०७४४ | ९ | ४० | " | " | | अपू० | " |
| १३०४४०२ | १८ | ५५ | " | " | | पू० | टीका पदकृत्यम् । |
| ११४४४०५ | १० | ४९ | " | " | | अपू० | " |
| १००७४५०५ | ११ | ३८ | " | " | | " | " |
| ११०९४४०९ | १२ | ४६ | " | " | | " | " |
| ११०२४५०७ | ५० | १५ | " | " | | " | " |
| १२०७४४०८ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| १३०८४५०३ | ८ | ४२ | " | " | | " | टीका न्यायार्थलघुबोधिनी । |
| ९०८४५ | ७ | १९ | " | " | | " | |
| ११०९४४०५ | ७ | ३२ | " | " | | " | |
| १४४५०३ | १४ | ५४ | " | " | १९१६ | पू० | टीका सिद्धान्तचन्द्रोदयः । |
| ११०७४६ | ११ | ३८ | " | " | १८५४ | " | |
| १००८४५०१ | ११ | ३१ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|-------------------------------------|-------------------|
| ३२३०६ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | अन्नम्भट्टः टी.श्रीकृष्णधूर्जटिः | १-१४ । |
| ३२३०७ | " | " | १-४३ । |
| ३२३०८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१९ । |
| ३२३०९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१९ । |
| ३२३१० | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १, ३-४२ । |
| ३२३११ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | | २-८, १०-२९ । |
| ३२३१२ | " | | ८-११ । |
| ३२३१३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ६ । (गणनया) |
| ३२३१४ | विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविचारः | | १-१८ । |
| ३२३१५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २ । (गणनया) |
| ३२३१६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ३ । " |
| ३२३१७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३२३१८ | " | " | १-१३ । |
| ३२३१९ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | १-२१ । |
| ३२३२० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२६ । |
| ३२३२१ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-११, १३-१५ । |
| ३२३२२ | तर्कभाषाटीका | | ३-६५ । |
| ३२३२३ | तर्करत्नावली | बालोपण्डितसूरि- सूनुः | १-२५ । |
| ३२३२४ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-८ । |
| ३२३२५ | तर्करावली | | १-११, १३-३८ । |
| ३२३२६ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | १-४५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| ११°६×५°३ | १२ | ३८ | दे.ना. | का. | | पू० | टीका सिद्धान्तचन्द्रोदयः । |
| १३°७×५°३ | १६ | ४१ | " | " | | " | " |
| १७°१×३°१ | ६ | ७१ | " | " | | " | विशेषन्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १८°३×३°७ | ९ | ८७ | वङ्ग | " | | अपू० | " |
| १५°५×३°१ | ८ | ७२ | " | " | | " | द्वितीयकारकस्य । |
| १६°१×३°२ | ८ | ९३ | " | " | | " | |
| १६°१×३°२ | ८ | ९९ | " | " | | " | |
| १६°९×३°५ | ८ | १२४ | " | " | | " | विशेषन्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १७°६×३°९ | ८ | ७९ | " | " | | पू० | |
| १३°७×३°८ | ७७ | ८ | मै. | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३°१×३°८ | ७४ | ११ | वङ्ग | " | | " | " अत्र सामान्यनिरुक्तिगादाधर्याः क्रोडपत्रमपि विद्यते । |
| १८°२×४ | ८ | ४२ | " | " | | पू० | तर्कप्रकरणस्य । |
| १७°५×३°५ | ५ | ७४ | " | " | | " | " |
| ९°४×३°६ | ८ | २७ | दे.ना. | " | | अपू० | |
| १७°७×३°६ | ८ | ९८ | " | " | | " | तर्कप्रकरणस्य |
| १०°६×४°२ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| ८°९×४ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| ८°८×३°५ | १८ | ५३ | " | " | | " | तर्कभाषाटीका । प्रमाणपरिच्छेद- पर्यन्ता । |
| ८°६×४ | १० | ३० | " | " | १८९३ | पू० | |
| ११°१×५°३ | ११ | २४ | " | " | १९१८ | अपू० | तर्कसङ्ग्रहटीका । |
| ११°८×५°१ | ११ | ३४ | " | " | | " | द्रव्यप्रकरणान्ता |

| कनसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|----------|--------------------------------------|---------------------|-------------------------------------|
| ३२३२७ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | १-८ । |
| ३२३२८ | " | | १-१३ । |
| ३२३२९ | " | | १-११ । |
| ३२३३० | " | | १-२४ । |
| ३२३३१ | " | | १-२६ । |
| ३२३३२ | " | | १-३, ५-३०, ३६, ३९ । |
| ३२३३३ | " | | १-३४ । |
| ३२३३४ | " | | १-११, ११-२५, २७ । |
| ३२३३५ | " | | २१-३८ । |
| ३२३३६ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-२, ४-६ । |
| ३२३३७ | " | " | १-६ । |
| ३२३३८ | " | " | १-६ । |
| ३२३३९ | " | " | १, ३-७ । |
| ३२३४० | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिबिवेकः | | २-४, ४-४३, (= ४४) ४५-६७, १-२८, ३० । |
| ३२३४१ | न्यायलीलावतीप्रकाशविट्तिः | भट्टाचार्यशिरोमणिः | ४९-५६ । |
| ३२३४२ | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-२२ । |
| ३२३४३ | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिटीका | रामकृष्णः | १-७५, ७८-११६ । |
| ३२३४४ | " | " | १-७१ । |
| ३२३४५ | न्यायलीलावतीप्रकाश- दीधितिपरीक्षा | रुद्रभट्टाचार्यः | १-१५, ३७-७८ । |
| ३२३४६ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | ३९-४१, ४३-४८, ५०-६१, ७१-८८ । |
| ३२३४७ | " | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-४७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९०४४४२ | ९ | ३८ | दे. ना. | का. | | अपूर्० | प्रत्यक्षखण्डे अन्यथासिद्धिनिरूप- णान्ता । |
| १२०९४४०१ | ७ | ४८ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे जलनिरूपणान्ता । |
| ११०६४२०९ | ६ | ६२ | वङ्ग. | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे अन्यथासिद्धिनिरूप- णान्ता । |
| ९०७४३०६ | ८ | ४२ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डादनुमानखण्डांशा । |
| ९०९४४०४ | ११ | ३६ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डान्ता । |
| ९४४ | ९ | ३८ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डादनुमानखण्डांशा । |
| ९०८४४०३ | १२ | ३२ | दे. ना. | " | १८९७ | " | अनुमानखण्डाद् गुणनिरूपणान्ता । |
| ९०९४४०३ | ११ | ३४ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डांशा । |
| ८०६४३०६ | ८ | ३६ | " | " | | " | प्रत्यक्षानुमानखण्डांशा । |
| ११४३०७ | ९ | ६० | वङ्ग | " | | " | |
| १३४३०२ | ८ | ६० | " | " | | " | |
| ९०७४४०३ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| १४४४०२ | ८ | ४६ | " | " | | " | |
| ९०९४४०६ | १२ | ४३ | दे. ना. | " | | " | |
| ११०२४४०२ | ८ | ६८ | " | " | | " | |
| ९०९४४०४ | १६ | ६० | " | " | | " | |
| १००३४३०९ | ८ | ४२ | " | " | | " | |
| ११४४०६ | १३ | ४६ | " | " | | " | |
| १०४३०९ | १४ | ६३ | " | " | | " | |
| ८०६४३०६ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| १३०३४४०८ | ११ | ६२ | " | " | १८४७ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--------------|-----------------------------------|
| ३२३४८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | १-१२, १४, १-१८ । |
| ३२३४९ | " | | ३-३, ९-२४, २७-३४, ३७-३८, ४३-४४ । |
| ३२३५० | " | विश्वनाथः | १-४९ । |
| ३२३५१ | न्यायलीलावतीप्रकाशविवृतिः | शङ्करभगीरथः | १-१३४, १३९-१४०, १-९, ११-३६, ३६-४६ |
| ३२३५२ | न्यायलीलावतीकण्ठाभरणम् | शङ्करमिश्रः | १६९ । (गणनया) |
| ३२३५३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १-७४ । |
| ३२३५४ | " | " | २-१८ । |
| ३२३५५ | कारिकावली | " | १-९ । |
| ३२३५६ | " | " | १-१० । |
| ३२३५७ | " | " | २-१० । |
| ३२३५८ | " | " | १-११ । |
| ३२३५९ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | " | १-१० । |
| ३२३६० | " | " | १-७४१, ८-२४ । |
| ३२३६१ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-१२ । |
| ३२३६२ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथः | १-२० । |
| ३२३६३ | " | " | १-११ । |
| ३२३६४ | " | " | २-१० । |
| ३२३६५ | " | " | २-४ । |
| ३२३६६ | " | " | १-१५ । |
| ३२३६७ | " | " | १-२० । |
| ३२३६८ | " | " | १-१९ । |
| ३२३६९ | " | " | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | का. ना. | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|------------|----------|------------------------|--|
| ८०४३०८ | १० | ३० | दे.ना. | का. | | अपू० | प्रत्यक्षानुमानखण्डयोः । |
| ८०९४४ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| ११०९४९०८ | १४ | ४२ | " | " | | पू० | हरिकृष्णकृतविपमस्थलटिप्पणीयुता । |
| १२०४४२०७ | ७ | ५५ | " | " | | अपू० | यद्यपि मेघभगीरथस्येयं रचना, तथापि ग्रन्थान्ते शङ्करभगीरथ इत्युल्लेखाद् ग्रन्थकर्त्तृनाम विचारणीयम् । |
| १४०२४२ | ६ | ८४ | वङ्ग. | ताल. | | पू० | |
| १०९४४०३ | ९ | ३८ | दे.ना. | का. | | " | समूला । |
| १००९४३०६ | १० | ५७ | " | " | | अपू० | |
| १२०६४४ | ९ | ३३ | " | " | १९१८ | पू० | |
| ८०१४३ | ८ | ४१ | " | " | | " | भाषापरिच्छेदः । |
| ९४३०८ | ८ | २८ | " | " | | अपू० | |
| ८०९४३०१ | ७ | ४६ | " | " | १८५६ | पू० | भाषापरिच्छेदः । |
| ८०९४३०८ | १२ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १००२४४०४ | ११ | ४६ | " | " | | " | समूला । |
| ७०७४३०८ | ७ | २८ | " | " | | पू० | |
| ८०१४४०१ | ७ | २२ | " | " | १८९० | " | कारिकावली । |
| ५०७४३०३ | १३ | २८ | " | " | | " | " |
| ८०६४५०५ | ९ | २४ | " | " | | अपू० | " |
| ९०२४४ | १० | ३८ | " | " | | " | " |
| ९०८४४०२ | ८ | २६ | " | " | | पू० | " |
| ३०९४३०३ | ६ | १२ | " | " | | अपू० | " |
| ९०२४३०७ | ५ | १९ | " | " | १७१९ | पू० | " |
| ९०७४४ | १३ | ३५ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------|---|
| ३२३७० | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथः | १-८ । |
| ३२३७१ | " | " | १-११ । |
| ३२३७२ | " | " | १-९ । |
| ३२३७३ | " | " | १-७ । |
| ३२३७४ | कारिकावली | " | १-२, ४-५, ८-१० । |
| ३२३७५ | " | " | १-६ । |
| ३२३७६ | भाषापरिच्छेदः | " | १-५ । |
| ३२३७७ | " | " | १-१० । |
| ३२३७८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | " | १-७ । |
| ३२३७९ | " | " | १-३, ६-१६, २०-२१, २३-२७, २९-५४ । |
| ३२३८० | " | " | १-२४, १-३४ । |
| ३२३८१ | " | " | १-२, ४-७ । |
| ३२३८२ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-१६ । |
| ३२३८३ | " | " | १-१७ । |
| ३२३८४ | तर्कामृतचपकतात्पर्यटीका | गङ्गारामजडी | १-१३१ (= १३९) १४०-१६३, १६३-१७८, १७९ (= १८०) १८१-२४३ । |
| ३२३८५ | तर्कामृतचपकम् | " | २-६, ९-१०, १३-६८, (६९ = ६९-७९) ८०-१९८ । |
| ३२३८६ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | ३-११ । |
| ३२३८७ | कारिकावली | विश्वनाथः | १-८ । |
| ३२३८८ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-२३ । |
| ३२३८९ | " | " | १-३, ९-१२ । |
| ३२३९० | " | " | १-६, ८-११ । |
| ३२३९१ | " | " | १-२० । |
| ३२३९२ | " | " | १-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|-----------------------------|
| ९०४×४ | ९ | ४४ | दे.ना. | का. | | अपू० | कारिकावली । |
| ९०५×३० | ९ | ३४ | " | " | | " | " |
| ८०३×४ | ९ | ३२ | " | " | श. १७४२ | पू० | " |
| ९×४०१ | ९ | ३३ | " | " | | अपू० | " |
| ८०८×३०२ | ७ | २२ | " | " | | " | |
| १२०१×४०४ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १२०५×४०६ | १४ | ६१ | " | " | | पू० | अन्ते विभिन्नाः श्लोकाश्च । |
| १३०९×५०४ | ११ | २९ | " | " | १९३१ | " | कारिकावली । |
| १४×५०३ | १० | ३३ | " | " | | अपू० | |
| १२×४०७ | ११ | ६० | " | " | | " | समूला । |
| १३०९×५०४ | १२ | ४५ | " | " | | पू० | " |
| १०×४०४ | ११ | ४१ | " | " | | अपू० | " |
| १२०५×४०७ | १० | ४५ | वङ्ग. | " | १९०१ | पू० | |
| ९०८×४०५ | ११ | ४१ | दे.ना. | " | १८९७ | " | |
| १००५×४०९ | १२ | ४६ | " | " | १८३० | "* | |
| ९०५×४०४ | ११ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ९०३×३०६ | ११ | ५७ | " | " | १७६२ | " | |
| १३×४०६ | ८ | ५६ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १०×३०८ | ८ | ३५ | दे.ना. | " | | " | |
| ११×५०२ | १३ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १२०९×४०१ | ११ | ५१ | वङ्ग. | " | | " | |
| १२×३०४ | ७ | ४७ | " | " | | पू० | |
| १६०५×३०५ | १० | ८४ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------|-------------------|
| ३२३९३ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-४ । |
| ३२३९४ | " | " | १-११ । |
| ३२३९५ | भाषापरिच्छेदः | | १-३ । |
| ३२३९६ | " | | १-७ । |
| ३२३९७ | " | विश्वनाथः | १-१५ । |
| ३२३९८ | " | " | १-२, ७-९, १२-२० । |
| ३२३९९ | " | | १-४ । |
| ३२४०० | कारिकावली | विश्वनाथः | २-८ । |
| ३२४०१ | " | " | १-१० । |
| ३२४०२ | भाषापरिच्छेदः | " | १-९ । |
| ३२४०३ | " | | १-५ । |
| ३२४०४ | " | | १-५ । |
| ३२४०५ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-८ । |
| ३२४०६ | " | " | १-५ । |
| ३२४०७ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १-३९ । |
| ३२४०८ | " | | ५२ । (गणनया) |
| ३२४०९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । " |
| ३२४१० | " | | १-११ । |
| ३२४११ | " | | ४१-४५ । |
| ३२४१२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-१४ । |
| ३२४१३ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१० । |
| ३२४१४ | " | " | २ । (गणनया) |
| ३२४१५ | " | " | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | ः ज्ञा | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|-----------|----------|------------------------|--------------------------------|
| १३०५३ | ६ | ५२ | वज्र. | का. | | अपू० | |
| १३१५३३ | ९ | ६९ | " | " | | पू० | |
| १६२५३०९ | ५ | ७६ | " | " | | अपू० | |
| १३०५३३१ | ५ | ४७ | " | " | | " | |
| १३०५३३६ | ४ | ५१ | " | " | | पू० | |
| १००२५३६ | ४ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १५०५३३३ | ४ | ३९ | " | " | | " | |
| १३५३३३ | ७ | ५१ | " | " | | " | |
| १२०५३३९ | ७ | ४५ | " | " | | पू० | |
| १७५३३९ | ५ | ६३ | " | " | श. १७२४ | " | |
| १३३२५३९ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | |
| ९०५३४ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| १२०५३३५ | ६ | ४५ | " | " | | पू० | |
| १६०२५३४ | ७ | ६८ | " | " | | " | |
| १३३२५३५ | १६ | ५३ | दे.ना. | " | १९२० | " | |
| १२५३ | २३ | ३४ | " | " | १७४६ | "* | दिनकरीयसारोद्धारसहिता । |
| १४५३४ | ५ | ६७ | मै. | " | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४०५३४ | ९ | ८० | " | " | | " | " |
| १९३५३५० | १२ | १०२ | " | " | | " | " |
| १२०५३४४ | १२ | ४६ | दे.ना. | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १२०२५३४ | १२ | ५२ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १४०१५३० | १० | ६६ | मै. | " | | " | " |
| १६०५३३५ | ८ | ८२ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------------|-------------------|
| ३२४१६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१४ । |
| ३२४१७ | आख्यातवादटीका | रघुदेवभट्टाचार्यः | ७ । (गणनया) |
| ३२४१८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३२४१९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | २-४३ । |
| ३२४२० | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२९ । |
| ३२४२१ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | ११ । (गणनया) |
| ३२४२२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-४२ । |
| ३२४२३ | अतिरिक्ताभावपरिष्कारः | | १ । |
| ३२४२४ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३२४२५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-६५ । |
| ३२४२६ | प्रशस्तपादभाष्यसेतुः | पद्मनाभमिश्रः | १-२७० । |
| ३२४२७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-७ । |
| ३२४२८ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१५ । |
| ३२४२९ | " | " | ३ । (गणनया) |
| ३२४३० | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पक्षधरमिश्रः | १३ । " |
| ३२४३१ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथतर्क- वागीशः | २-५ । |
| ३२४३२ | " | " | ४-१४ । |
| ३२४३३ | विधिविचारः | | १-९ । |
| ३२४३४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ४५-५१ । |
| ३२४३५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २-१६ । |
| ३२४३६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-----------------------|--|
| १४*१×४*७ | ७ | ६७ | मै. | का. | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०*८×३*४ | ११ | ६९ | दे. ना. | " | | " | |
| १३*५×३*४ | १० | ९५ | मै. | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ८*९×४ | १५ | ४६ | दे. ना. | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १२*४×४*६ | १५ | ५२ | " | " | | पू० | " |
| २०*३×३*८ | ७ | ८८ | मै. | " | | अपू० | " |
| ९*८×४*४ | १२ | ३७ | दे. ना. | " | | " | अनुपसंहारिप्रकरणमारभ्य वाध- पर्यन्तम् । |
| ६*९×३*६ | ८ | ३८ | मै. | " | | पू० | |
| ७*९×२*६ | ८ | ४९ | वङ्ग. | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३*७×४ | ८ | ५३ | दे. ना. | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकमारभ्य व्यधिकरणप्रक- रणपर्यन्तम् । |
| १३*१×५*१ | ७ | ४० | " | " | १९७३ | " | तृतीयपरिच्छेदान्तः । |
| १७*९×३*७ | ८ | ८७ | वङ्ग. | " | | अपू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १८*३×४*१ | ८ | ८६ | " | " | | " | " |
| १३*७×३*८ | ९ | ५४ | मै. | " | | " | अतएवचतुष्टयप्रकरणस्य । |
| ९*८×३*८ | ८ | ४४ | दे. ना. | " | | " | अवयवहेत्वाभासप्रकरणयोः । |
| १६*६×४*१ | ९ | ७७ | वङ्ग. | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १६*७×४*९ | ९ | ७५ | " | " | | " | " |
| १७*२×३*२ | ७ | ९१ | " | " | | " | |
| १६*८×३*३ | ८ | ७८ | " | " | | " | विधिवादस्य । |
| १६*६×४*१ | ९ | ६६ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १७*१×३*२ | १० | ९७ | " | " | | पू० | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|----------------------------|-------------------|
| ३२४३७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १ । (गणनया) |
| ३२४३८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-९ । |
| ३२४३९ | " | | १-११ । |
| ३२४४० | " | | १-३ । |
| ३२४४१ | " | | १३ । (गणनया) |
| ३२४४२ | " | | १-७ । |
| ३२४४३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३२४४४ | " | | १-२ । |
| ३२४४५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३२४४६ | " | | २ । " |
| ३२४४७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । " |
| ३२४४८ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १४ । " |
| ३२४४९ | " | गङ्गेशोपाध्यायः | १ । |
| ३२४५० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |
| ३२४५१ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या । | शङ्करमिश्रः | १-१४ । |
| ३२४५२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-३ । |
| ३२४५३ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | हरिदाससिद्धान्त- वागीशः | १ । |
| ३२४५४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-५ । |
| ३२४५५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३२४५६ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | ४ । " |
| ३२४५७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| १७×३३ | १० | ८५ | वङ्ग. | च. १. | | अपू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १२०७×४९ | १४ | ५८ | दे. ना. | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १२०८×४८ | १४ | ५८ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १२०९×४३ | १४ | ४९ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| ११०७×४ | २० | ६६ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्ति तर्कपक्षताव्युत्पत्ति- वादव्याप्तिपञ्चकप्रकरणानाम् । |
| ११०८×३७ | ७ | ५३ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थाव्यापक- विषयिताशून्यत्वकल्पस्य । |
| १२०७×४५ | १९ | ८३ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्थोभयावच्छि- न्नकल्पस्य । |
| १२०४×३९ | ११ | ६१ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२×४१ | १३ | ६७ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १२×३७ | १० | ५७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०५×३८ | १० | ६१ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १०२×३८ | ११ | ५६ | " | " | | " | ईश्वरवादप्रकरणस्य । |
| १२०७×२४ | ४ | ६३ | मै. | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १२०७×२४ | ४ | ६३ | " | " | | " | " |
| १५०८×४ | ८ | ७५ | वङ्ग. | " | | " | आमोदाख्या । |
| १३०९×४ | ८ | ६१ | मै. | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १३३३×३७ | ७ | ८० | " | " | | " | " |
| १४०६×४१ | १३ | ७४ | " | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १२०५×४६ | १२ | ५८ | दे. ना. | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०७×४८ | १० | ५४ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । व्याप्तिवाद- स्याप्यस्मिन् क्रोडपत्रमस्ति । |
| १२०१×४१ | १४ | ५५ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|------------------------|--|
| ३२४५८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-१७६ । |
| ३२४५९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | २-१४ । |
| ३२४६० | लिङ्गार्थविचारः | | १-५ । |
| ३२४६१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १, १-८ । |
| ३२४६२ | अनुमितिपरामर्शवादः | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-८ । |
| ३२४६३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-४० । |
| ३२४६४ | " | जयरामः | २२-५० । |
| ३२४६५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ६ । (गणनया) |
| ३२४६६ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | दिनकरभट्टः | २-९ । |
| ३२४६७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ३ । (गणनया) |
| ३२४६८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २ । " |
| ३२४६९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ३२४७० | " | | ३ । (गणनया) |
| ३२४७१ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | दामोदरः | १० । " |
| ३२४७२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-८, ८-७१, ७३-१७५, १७९-१८०, १८२-१८६, १८८-२२० । |
| ३२४७३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३६ । |
| ३२४७४ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दसिद्धान्तवागीशः | ८ । (गणनया) |
| ३२४७५ | तत्त्वचिन्तामणिमयूखः | जगदीशभट्टाचार्यः | १-५६ । |
| ३२४७६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | पक्षधरमिश्रः | १ । |
| ३२४७७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |

| वाकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ७०९४२ | ९ | ३९ | दे. ना. | का. | | पू० | उपाधिमारभ्य बाधपर्यन्ता । |
| १२०४४०९ | १२ | ४४ | " | " | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०४४०९ | १० | ५३ | " | " | | पू० | अभिधावादाथो वा । |
| १३०८४०९ | ९ | ७७ | मै. | " | | " | अनौपाधिकत्वप्रकरणस्य । |
| १२३४३५ | ११ | ७० | दे. ना. | " | | " | अनुमितिपरामर्शकार्यकारणभाव- विषयकः । |
| १२०४४४ | १० | ४४ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११०४३३३ | ९ | ५० | " | " | | " | " |
| ९३४२९ | ९ | ३४ | " | " | | " | उपाधिवादस्य । |
| १००४३३८ | १२ | ६० | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| १४०४४२ | १२ | ६६ | मै. | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४०१४०९ | ७ | ७१ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिसामान्याभाव- प्रकरणयोः । |
| १४०९४०९ | ९ | ७३ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४०५४४ | ११ | ६२ | " | " | | " | " |
| १२०९४०८ | १४ | ५८ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकव्यधिकरणतर्क- प्रकरणानाम् । |
| १००४३३३ | ८ | ३३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य बाधपर्यन्ता । |
| १२०४४३६ | ११ | ४२ | दे. ना. | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणमारभ्य व्यधि- करणप्रकरणपर्यन्तम् । |
| १००४४०२ | १३ | ३९ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ९३४४०७ | ७ | २७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य सिद्धान्त- व्याप्तिपर्यन्तः । |
| १००५४०२ | ११ | ३० | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १००४४०३ | १३ | ४७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या। | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-------------|------------------------|-----------------------------|-------------------------------|
| ३२४७८ | तत्त्व०मण्यालोकटीका | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ३ । (गणनया) |
| ३२४७९ | कारकाद्यर्थनिर्णयः | भवानन्दसिद्धान्त- वागीशः | १-८ । |
| ३२४८० | पदार्थखण्डनम् | भट्टाचार्य्य- शिरोमणिः | ३-९ । |
| ३२४८१ | पदार्थतत्त्वनिरूपणम् | | १-१३ । |
| ३२४८२ | कारिकावलिः | विश्वनाथ भट्टाचार्य्यः | १-११ । |
| ३२४८३ | कालवादः | | १-३ । |
| ३२४८४ | पदार्थखण्डनम् | | ३-४ । |
| ३२४८५ | " | रघुनाथशिरोमणिः | १, ३-९ । |
| ३२४८६ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | कालीशङ्करः | १-२४ । |
| ३२४८७ | पदार्थतत्त्वनिरूपणम् | रघुनाथशिरोमणिः | १-६ । |
| ३२४८८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पक्षधरमिश्रः | १-२, ४-१५, १५-७७ । |
| ३२४८९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्य्यः | २८-५१ । |
| ३२४९० | " | जयरामः | १-१९ । |
| ३२४९१ | जातिवाधकार्यसङ्ग्रहः | | १ । |
| ३२४९२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १२ । (गणनया) |
| ३२४९३ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३२४९४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १ । |
| ३२४९५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १ । |
| ३२४९६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्य्यः | १-४४ । |
| ३२४९७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १, २३, २८-३८, ४३, ४६, ४८-५८ । |
| ३२४९८ | " | " | १-८८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | का. का. | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|---|
| १०५४४२ | ११ | ३४ | दे. ना. | का. | | अपू० | शब्दखण्डे आकाङ्क्षावादस्य । |
| १३१५५०१ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| १०१५३२ | १० | ५१ | " | " | | " | पदार्थतत्त्वनिरूपणं वा । |
| १०४५५४ | ७ | १५ | " | " | | " | पदार्थखण्डनं वा । |
| १०५४४२ | ११ | ३६ | " | " | १६९७ | पू० | |
| १०६५४६ | ११ | ३५ | " | " | | " | |
| ८०९५३० | १० | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ८०१५२० | १० | ५० | " | " | | " | पदार्थतत्त्वनिरूपणं वा । |
| १२०७४४८ | ११ | ५५ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४०७५३ | ६ | ७० | वङ्ग. | " | | पू० | पदार्थखण्डनं वा । |
| १००६५४६ | ११ | ४१ | दे. ना. | " | | अपू० | शब्दपरिच्छेदे शब्दाप्रामाण्यवाद- प्रकरणस्य । |
| १४०७५२० | ६ | ६९ | वङ्ग. | " | | " | प्रामाण्यवादस्य । |
| १०१५३०९ | १२ | ३८ | दे. ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०८५३०६ | १३ | ४८ | " | " | | " | |
| १२०८५५०१ | १० | ४९ | " | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । |
| १०३५४५५ | १३ | ५० | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थविशिष्ट- द्वयावदितत्त्वकल्पस्य । |
| १००४५४५ | ११ | ४२ | " | " | | अपू० | उपाधिवादस्य । |
| १५०१५३० | ६ | ५७ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्च सिंहव्याप्तिप्रकरणयोः । |
| १५०२५४२ | ७ | ५९ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १००९५४२ | ११ | ५१ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणादुपाधिप्रकरणांशा । |
| १००१५४४ | ८ | ४३ | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणात्सामान्यलक्षणांता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|--------------------------|----------------------|
| ३२४९९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथ- भट्टाचार्यः | १-७ । |
| ३२५०० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-२६ । |
| ३२५०१ | " | | ३ । (गणनया) |
| ३२५०२ | " | | १ । |
| ३२५०३ | कार्यकारणभावविचारः | | १-८ । |
| ३२५०४ | गादाधरीमुक्तामाला | | १-६ । |
| ३२५०५ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-३, ५-७, ९, ९-१५ । |
| ३२५०६ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-४ । |
| ३२५०७ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | ३६४-४२७ । |
| ३२५०८ | " | " | ६८ । (गणनया) |
| ३२५०९ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | नरसिंहः | १-८ । |
| ३२५१० | " | | १-९ । |
| ३२५११ | तत्त्वमण्यालोकटीका | गदाधरः | ६-११, ११-१२, २८-५२ । |
| ३२५१२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | २-१४ । |
| ३२५१३ | " | | १-८ । |
| ३२५१४ | " | | १-४ । |
| ३२५१५ | " | | १-५ । |
| ३२५१६ | " | चन्द्रनारायणः | १-३ । |
| ३२५१७ | " | | १ । |
| ३२५१८ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | हरिरासतर्कालङ्कारः | १ । |
| ३२५१९ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १२२४४०५ | १३ | ५५ | दे. ना. | का. | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३१४५०१ | ११ | ४२ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२१४४०२ | १३ | ५८ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२०८४४०६ | १४ | ६८ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १२०८४४०६ | १५ | ७९ | " | " | | " | अनुमितिपरामर्शयोः । |
| १२०८४४०६ | १४ | ६८ | " | " | | " | तत्त्व०मणि० दी. टी. टी. । पञ्च- लक्षणीप्रकरणस्य । |
| १०५४३०९ | १२ | ४९ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणादुपाधिप्रकरणांशः । |
| १३२४४०१ | १३ | ७४ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| ९०९४४०५ | ११ | ४४ | " | " | | " | सामान्याभावप्रकरणाद् व्याप्ति- वादान्ता । |
| १००९४४०२ | ११ | ५४ | " | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३१४५०१ | १२ | ६२ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १२०८४४०८ | १३ | ४७ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्थकूटलक्षणस्य । |
| ९०७४४०१ | ९ | ४२ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाग्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १२२४५०२ | ११ | २८ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| ९०७४४०६ | ११ | ३२ | " | " | | " | बाधप्रकरणस्य । |
| ९०७४४०६ | १२ | ३६ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| ९०७४४०६ | १४ | ४६ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३२४५०१ | १३ | ५३ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १२०८४४०८ | ४ | ४२ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १२०७४५०१ | ११ | ४७ | " | " | | " | |
| १३१४५०२ | १३ | ५६ | " | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------------|-------------------------|
| ३२०२० | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथ भट्टाचार्यः | १ । |
| ३२०२१ | तत्त्वमण्यालोकसारः | भवानन्दः | १-१२ । |
| ३२०२२ | पदार्थखण्डनव्याख्या | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-३२ । |
| ३२०२३ | " | " | १-६९ । |
| ३२०२४ | पदार्थखण्डनटीका | | ११ । (गणनया) |
| ३२०२५ | " | | २-१६ । |
| ३२०२६ | पदार्थखण्डनार्थसारः | रामभद्रभट्टाचार्यः | १, ३-२८, २८-३५, ४०-४३ । |
| ३२०२७ | पदार्थतत्त्वम् | | २-६ । |
| ३२०२८ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | अन्नम्भट्टः | १-११ । |
| ३२०२९ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | | १-१६ । |
| ३२०३० | " | | १-४४ । |
| ३२०३१ | " | | २-१९ । |
| ३२०३२ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | | १-१२ । |
| ३२०३३ | " | | १-५ । |
| ३२०३४ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | | १-१२ । |
| ३२०३५ | " | अन्नम्भट्टः | १-१९ । |
| ३२०३६ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | | १-१५ । |
| ३२०३७ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-२० । |
| ३२०३८ | " | | १-८+१ ९-१२ । |
| ३२०३९ | " | अन्नम्भट्टः | १-२६ । |
| ३२०४० | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | | १-२२ । |
| ३२०४१ | किरणावली | उदयनाचार्यः | १-६४, १-१२४ । |
| ३२०४२ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथः | १-८ । |

| आकारः | पक्षि- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | आशयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- दिवेकः | विशेषविवरण । |
|----------|------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|---|
| ९०७×४०४ | ११ | ४९ | दे. ना. | का. | | अपू० | तर्कप्रकरणस्य । |
| ९०६×४०६ | १० | ४४ | " | " | | " | प्रत्यक्षे मङ्गलवादस्य । |
| १००२×४०४ | १२ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १००५×४०४ | ७ | ३८ | " | " | | " | |
| ९०३×३०३ | ८ | ५० | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| ९०९×४०१ | १० | ४७ | दे. ना. | " | | " | |
| ९०१×४०१ | ११ | ३२ | " | " | | " | पदार्थखण्डनटीका । |
| ११०९×३०३ | ८ | ५१ | " | " | | " | पदार्थखण्डनं वा । |
| ११०२×५०३ | १७ | ५० | " | " | | पू० | टीका दीपिका । |
| ९०६×५ | ११ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १००१×४०४ | ७ | २८ | " | " | १८८५ | पू० | |
| ९×३०९ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १२×६ | १४ | ४४ | " | " | | पू० | टीका दीपिका । |
| १२×६०२ | ११ | ५१ | " | " | | अपू० | " |
| १००७×४०९ | १३ | ४८ | " | " | | पू० | |
| ९०६×४०४ | ११ | ३७ | " | " | १८९५ | " | |
| १६०३×३०५ | ७ | ७० | वङ्ग. | " | | " | टीका दीपिका । |
| १२०७×४०१ | १० | ४५ | दे. ना. | " | १७८३ शके | " | |
| ९०५×४०५ | १३ | ३५ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १००४×५०१ | ८ | ३४ | दे. ना. | " | | पू० | |
| ९०१×४०४ | ११ | ४८ | " | " | १८६१ | " | टीका दीपिका । |
| ९०२×६०१ | २४ | १७ | " | " | | " | प्रशस्तपादभाष्यटीका द्रव्यान्ता, न्यायकन्दली च । |
| ९०५×४०२ | १० | ४२ | " | " | १८९० | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|---------------|-----------------------------|
| ३२५४३ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथः | १-८ । |
| ३२५४४ | " | " | १-४ । |
| ३२५४५ | तर्ककुतूहलम् | विश्वेश्वरः | १-११८, १२५-१४३ । |
| ३२५४६ | तर्करहस्यम् | शूलपाणिमिश्रः | १-६५, १६८-२२४ । |
| ३२५४७ | वैशेषिकसूत्रोपस्कारः | शङ्करमिश्रः | १, ४२-६२, ६४-१२४, १२६-१६० । |
| ३२५४८ | प्रशस्तपादभाष्यम् | प्रशस्तपादः | १-९ । |
| ३२५४९ | " | " | २-७ । |
| ३२५५० | " | " | १, १-३४ । |
| ३२५५१ | " | " | १-१६ । |
| ३२५५२ | " | " | १-३० । |
| ३२५५३ | " | " | १-३२ । |
| ३२५५४ | " | " | १-९ । |
| ३२५५५ | " | " | १-७ । |
| ३२५५६ | कणादसूत्रम् | कणादः | १-७ । |
| ३२५५७ | प्रमाणमञ्जरीटीका | वल्लभद्रः | १-२५ । |
| ३२५५८ | कणादसूत्रम् | कणादः | २-८ । |
| ३२५५९ | " | " | ७ । |
| ३२५६० | किरणावली | उदयनाचार्यः | १-६५ । |
| ३२५६१ | प्रशस्तपादभाष्यम् | प्रशस्तपादः | १-३० । |
| ३२५६२ | " | " | १-५६ । |
| ३२५६३ | सुवर्थतत्त्वालोकः | विश्वनाथशर्मा | १-३३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|---|
| ९३४२ | १० | ३६ | दे.ना. | का. | | अपू० | कारिकावली वा । |
| ९३४२ | ७ | ३१ | " | " | | " | " |
| १०५४५ | ११ | ४२ | " | " | | " | " |
| १११४३९ | ८ | ४३ | " | " | | " | प्रमाणविचारात्मकम् । |
| ११३४३४ | ७ | ५० | " | " | | " | " |
| १२४२५ | ५ | ६८ | " | " | | पू० | पदार्थधर्मसङ्ग्रहो वा । द्रव्य- प्रकरणमात्रम् । |
| ९४४ | ८ | २७ | " | " | | अपू० | पदार्थधर्मसङ्ग्रहो वा । |
| ९६४५ | ८ | ४६ | " | " | | पू० | " |
| ८८४४ | ७ | २० | " | " | १६११ | " | पदार्थधर्मसङ्ग्रहो वा । द्रव्यपदार्थ- यावत् । |
| ९६४४२ | ८ | ३८ | " | " | | " | पदार्थधर्मसङ्ग्रहो वा । गुणादिसम- वायान्तमात्रम् । |
| १२८४४८ | ८ | ४९ | " | " | १९३७ | " | पदार्थधर्मसङ्ग्रहो वा । |
| १०२४३७ | ७ | ४१ | " | " | | अपू० | " |
| ९८४४४ | १२ | ३८ | " | " | | " | पदार्थधर्मसङ्ग्रहो वा । गुणमात्रम् । |
| ९६४३ | ९ | ४२ | " | " | | पू० | वैशेषिकसूत्रं वा । |
| ९५४३१ | ६ | ३४ | " | " | | अपू० | " |
| ६५४३७ | १३ | २७ | " | " | | " | वैशेषिकसूत्रं वा । |
| ९५४४१ | ११ | ३७ | " | " | | " | " |
| ९५४२९ | १० | ३७ | " | " | श. १५२३ | पू० | प्रशस्तपाद भाष्यटीका । द्रव्यप्रकरण- यावत् । |
| ९२४४१ | ११ | ४१ | " | " | | अपू० | पदार्थधर्मसङ्ग्रहो वा । |
| १०८४४५ | ७ | ३१ | " | " | | पू० | " |
| ८९४३८ | १० | ३७ | " | " | १७९८ | " | कारकचक्रं वा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|----------------------------|-----------------------------|
| ३२५६४ | तर्कतत्त्वनिरूपणम् | | १-३७ । |
| ३२५६५ | " | | १-४५ । |
| ३२५६६ | न्यायतन्त्रबोधिनी | | १-२७ । |
| ३२५६७ | न्यायचन्द्रिका | केशवभट्टः | १-३० । |
| ३२५६८ | भवानन्दीप्रकाशः | महादेवः | १-१३३, १३३-१०८४ । |
| ३२५६९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | रुद्रः न्याय- वाचस्पतिः | १-७१, ७३-७९, ७९-१२५ । |
| ३२५७० | " | " | १-१४ । |
| ३२५७१ | " | " | ४४-७८, ८०, ८०-२१० । |
| ३२५७२ | " | " | १-७४ । |
| ३२५७३ | तत्त्वमणिदीधिति- विवेचनम् | रामचन्द्रः | १-४८ । |
| ३२५७४ | तर्ककुतूहलम् | विश्वेश्वरः | १-२१, २१, २१-२०३, २०३-२६४ । |
| ३२५७५ | न्यायकौस्तुभः | महादेवः | १४९-५९३ । |
| ३२५७६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | पक्षधरमिश्रः | १-६३ । |
| ३२५७७ | सन्निकर्षविचारः | | १ । |
| ३२५७८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठदीक्षितः | १-१२६ । |
| ३२५७९ | सिद्धान्तरक्षामणिः | वेणीदत्तभट्टः | १-११२ । |
| ३२५८० | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | १-४ । |
| ३२५८१ | प्रमाणसङ्ग्रहः | वनमाली | ३४-८१ । |
| ३२५८२ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- टीका | जयरामः | १-१२, १२, १२-५० । |
| ३२५८३ | गादाधरीकोडपत्रम् | | १ । |

| आकारः | पद- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- धारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|---------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|---|
| ११×५ | १० | ५० | दे. ना. | का. | | पू० | कारणता-कार्यतास्वरूपनिर्वचनम् । |
| ११×५ | १० | ४७ | " | " | | " | प्रथमातर्कतर्कणयोः कार्यकारणभाव- परीक्षा । |
| १०*१×४ | १५ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ११×३*१ | ७ | ५५ | " | " | | " | |
| १२×४*६ | १० | ५१ | " | " | | पू० | तत्त्व.मणि.दी.टी.टी. । अनुमिति- प्रकरणादुपाधिवादान्तः । |
| १०×४*१ | ९ | ३७ | " | " | | अपू० | टीका रौद्री । प्रत्यक्षखण्डे प्रामाण्य- वादप्रकरणस्य । |
| ९*८×३*९ | १० | ४३ | " | " | | " | " |
| ९*२×४ | १५ | ४६ | " | " | | " | टीका रौद्री । अनुमानखण्डे व्यधिकरण- प्रकरणात्प्रामाण्यलक्षणाप्रकरणांशा । |
| ९*५×३*४ | ७ | ४१ | " | " | | " | अनुमानखण्डे उपाधिवादस्य । |
| १०*८×४*७ | १७ | ४७ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षखण्डे प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०*५×४*१ | ८ | ४२ | " | " | | " | प्रथमपरिच्छेदः । |
| ९*८×३*९ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | अनुमानोपमानशब्दखण्डाः । |
| १०*४×४*५ | १० | ४१ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवाद- प्रकरणस्य । |
| १०*७×४*६ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| १०*८×४*६ | ११ | ५१ | " | " | | पू० | तर्कप्रकाशाभिधा । शब्दखण्डस्य । |
| १०*२×२*३ | १० | ५३ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षानुमानपरिच्छेदौ । |
| १२*३×४*३ | ९ | ५१ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदः । |
| ११*४×३*६ | ७ | ४९ | " | " | | " | अनुमानशब्दपरिच्छेदौ । |
| ९*६×३*९ | १० | ३९ | " | " | | पू० | |
| ८*८×३*६ | ७ | ४२ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|----------------------|--------------------------------------|
| ३२५८४ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका | उदयनाचार्यः | १-३ । |
| ३२५८५ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | | ४-२ । |
| ३२५८६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | मथुरानाथः | १-५७ । |
| ३२५८७ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १०, १२-२६ । |
| ३२५८८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-३, ५-११, १३-२३, २६-३४, ३६-३७, ३९ । |
| ३२५८९ | जातिमाला | | १-२३ । |
| ३२५९० | " | | १-४, ६-११, १५-१७, १९ । |
| ३२५९१ | पदार्थखण्डनम् | प्रगल्भाचार्यः | १-२७ । |
| ३२५९२ | परामर्शविमर्शः | वेणीदत्तभट्टः | १-५ । |
| ३२५९३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठदीक्षितः | १-९१ । |
| ३२५९४ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीव्याख्या | श्रीकृष्णभट्टाचार्यः | १-७ । |
| ३२५९५ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १-२८ । |
| ३२५९६ | " | " | २२-२६, २८-३०, ३२-३५, ३८-३० । |
| ३२५९७ | न्यायसूत्रवृत्तिः | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-२१ । |
| ३२५९८ | मङ्गलवादः | हरिरामतर्कवागीशः | १-६ । |
| ३२५९९ | " | " | १-८ । |
| ३२६०० | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-१४ । |
| ३२६०१ | भेदसिद्धि | " | १-२९ । |
| ३२६०२ | वाधवुद्धिविचारः | | १-३२ । |
| ३२६०३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | महादेवः | १-१२, १४-३२ । |
| ३२६०४ | गादाधरीफक्किा | | १-३ । |
| ३२६०५ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ९*५९*३९ | १२ | ४३ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९*७५*३*७ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ९*३*३*६ | १० | ३७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ९*९*३*७ | ९ | ४६ | " | " | | अपू० | अनुपसंहारिप्रकरणादसाधकतासाध- कत्वप्रकरणांशः । |
| ८*८*३*९ | ९ | ४६ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ७*८*३*७ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| ७*८*३*३ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| १०*१*३*२ | ७ | ४५ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षखण्डनपरिच्छेदः । |
| ९*६*४*१ | १२ | ४० | " | " | | " | |
| १०*८*४*६ | १२ | ५० | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डादुपमानपरिच्छेदान्ता । |
| ८*९*३*६ | १० | ३३ | " | " | | " | उपमानखण्डस्य । |
| १०*६*४*६ | १२ | ४७ | " | " | १७५६ | " | |
| ११*९*४*१ | १२ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १२*९*४*४ | ९ | ५५ | " | " | | " | प्रथमाध्यायांशः । |
| १२*४*४*४ | ९ | ५० | " | " | | पू० | |
| १०*३*३*९ | ७ | ३९ | " | " | | " | |
| १२ ३*२*९ | ५ | ४६ | " | " | १७७८ | " | |
| १०*५*४*५ | १० | ४५ | " | " | | " | प्रथमपरिच्छेदः । |
| ९*३*७ | १० | ४७ | " | " | | " | |
| १२*८*४*८ | ११ | ५१ | " | " | | अपू० | दिनकरी । प्रत्यक्षपरिच्छेदांशः । |
| १२*२*६*२ | १२ | ४० | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षे विभाजकलक्षणस्य । |
| १२*२*६*२ | ११ | ३० | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|---------------|-------------------|
| ३२६०६ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३२६०७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १३ । (गणनया) |
| ३२६०८ | वाक्यवादटीका | | १-१४ । |
| ३२६०९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३३ । |
| ३२६१० | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | महादेवः | १-२२ । |
| ३२६११ | " | | २-२७ । |
| ३२६१२ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाश- सर्वोपकारिणी | महादेवभट्टः | ८७ । (गणनया) |
| ३२६१३ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाश- टीका | | १-१७ । |
| ३२६१४ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-३ । |
| ३२६१५ | पदार्थमाला | जयरामः | २४-९८ । |
| ३२६१६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | ५-१४ । |
| ३२६१७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-९ । |
| ३२६१८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | " | १-४ । |
| ३२६१९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३ । |
| ३२६२० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३२६२१ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १-४ । |
| ३२६२२ | पदार्थदीपिका | कौण्डभट्टः | २-५, ७-१४ । |
| ३२६२३ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-४ । |
| ३२६२४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-६ । |
| ३२६२५ | विषयतावादः | | २-१५ । |
| ३२६२६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| १२२४६२ | १२ | ३६ | दे. ना. | का. | | अपू० | अवयवप्रकरणस्थप्रतिज्ञालक्षणस्य । |
| ९४४ | १० | ३० | " | " | | " | गदाधरजगदीशभवानन्दकृतटीका- भिन्नाकाचिदियं व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ११५४४५ | ८ | ४४ | " | " | | " | |
| १३२४४२ | ७ | २६ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ९४४३६ | ११ | ३७ | " | " | | " | दिनकरी । प्रत्यक्षपरिच्छेदांशा । |
| १२१४४७ | १० | ४९ | " | " | | " | " |
| ९६४४१ | ११ | ६० | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणाद् व्याप्त्यनुगम- प्रकरणान्ता । |
| १०१४४२ | १२ | ३८ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणात्सिंहव्याघ्र- लक्षणांशा । |
| १२४४३९ | १२ | ६२ | " | " | | पू० | बाधप्रकरणस्य । |
| १०६४४६ | १० | २६ | " | " | | अपू० | द्रव्यपरिच्छेदः । |
| ८७४२९ | ९ | ३५ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १२४४४५ | १२ | ५२ | " | " | | " | पञ्चलक्षणीप्रकरणस्य । |
| ९३४२८ | ९ | ३९ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद् व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| १२२४४७ | १० | ३९ | " | " | | " | पञ्चलक्षणीप्रकरणस्य । |
| १३८४५३ | १९ | ५८ | " | " | | " | " |
| १०६४४६ | ११ | ४४ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| ८९४३८ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| ९९४४८ | १५ | ४२ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३७४५२ | १३ | ४६ | " | " | | " | " |
| १०३४४३ | १० | ६२ | " | " | | " | |
| १३७४४४ | १२ | ४८ | " | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|-------------------|--------------------------|
| ३२६२७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-११ । |
| ३२६२८ | न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकाश- टिप्पणी | जयदेवः | ४६ । (गणनया) |
| ३२६२९ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-३ । |
| ३२६३० | " | | १ । |
| ३२६३१ | माधुरीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ३२६३२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | कृष्णसञ्जीवनः | १-१० । |
| ३२६३३ | " | | ८ । (गणनया) |
| ३२६३४ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीन्याख्या | शितिकण्ठः | ४९-१०० । |
| ३२६३५ | पदार्थमाला | जयरामः | १-१६१ । |
| ३२६३६ | पदार्थदीपिका | कौण्डभट्टः | १-३८ । |
| ३२६३७ | अनुमितिपरामर्शकार्यकारण- भावविचारः | | १-११ । |
| ३२६३८ | न्यायसिद्धान्तमाला | जयरामः | १-११७ । |
| ३२६३९ | तत्त्वचिन्तामणिसारः | गोपीनाथः | १-१८, २०-२७, ३०, ३७-३८ । |
| ३२६४० | तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १, ९-६ । |
| ३२६४१ | प्रामाण्यवादः | हरिरामभट्टाचार्यः | १९-२७ । |
| ३२६४२ | क्रोडपत्रविशेषः | | १-३, ३-४ । |
| ३२६४३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-३ । |
| ३२६४४ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३२६४५ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३ । |
| ३२६४६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | २ । (गणनया) |
| ३२६४७ | " | वज्रटङ्कः | १-८ । |
| ३२६४८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | दामोदरः | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- कारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|------------|----------|------------------------|-----------------------------|
| १०×४०६ | १५ | ४५ | दे.ना. | का. | | अपूर्० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १०×४३१ | ७ | ४० | " | " | | पूर्० | |
| १००१×४०५ | १६ | ४५ | " | " | | अपूर्० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १००१×४०५ | १६ | ४३ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १००४×४०६ | १६ | ४४ | " | " | | " | " |
| १२×४०९ | १० | ५९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२०५×५ | १२ | ५१ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| ८०४×४०१ | १४ | ४५ | " | " | | पूर्० | अनुमानखण्डस्य । |
| ८०१×३०७ | ६ | ३३ | " | " | | " | द्रव्यपरिच्छेदान्ता । |
| १००७×३०७ | ८ | ४० | " | " | | " | |
| १००९×३०९ | १२ | ४० | " | " | | अपूर्० | |
| १०९×३०१ | ८ | ५६ | " | " | | पूर्० | शब्दपरिच्छेदः । |
| ८०५×४०२ | १३ | ३२ | " | " | | अपूर्० | अनुमानखण्डस्य । |
| ८०८×३०७ | ९ | ३३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ८०९×४०३ | १२ | ४० | " | " | | " | |
| १००२×४०८ | १३ | ४६ | " | " | | पूर्० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३०६×५०१ | १० | ५३ | " | " | | अपूर्० | " |
| १२०८×४ | १५ | ७० | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ११०४×४ | १५ | ७० | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १२०७×५ | १६ | ६१ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १३×५ | १६ | ६८ | " | " | | " | " |
| १२×४०१ | ११ | ३४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|------------------------|---------------------------------|
| ३२६४९ | जागदीशीमञ्जूपा | | १-२७ । |
| ३२६५० | माथुरीक्रोडपत्रम् | कालीशङ्करः | १-५ । |
| ३२६५१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३२६५२ | " | कृष्णजीवनः | १-२ । |
| ३२६५३ | क्रोडपत्रसङ्ग्रहः | | १-२५, २५-३३ । |
| ३२६५४ | न्यायसारः | माधवदेवः | ११५-१७८ । |
| ३२६५५ | तर्कसङ्ग्रहटीका | | ४-५, ७-९ । |
| ३२६५६ | न्यायकौस्तुभः | | १-१९ । |
| ३२६५७ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-३० । |
| ३२६५८ | न्यायग्रन्थविशेषः | | २८ । (गणनया) |
| ३२६५९ | " | | १५-२९ । |
| ३२६६० | कारिकावली | | १-५ । |
| ३२६६१ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१५ । |
| ३२६६२ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १-२४ । |
| ३२६६३ | " | भट्टाचार्य चूडामणिः | २१-४६ । |
| ३२६६४ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | शितिकण्ठः | ३-१६ । |
| ३२६६५ | " | श्रीकण्ठः | १-५९ । |
| ३२६६६ | " | " | १-११, १५-५३ । |
| ३२६६७ | " | " | १-८ । |
| ३२६६८ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | ३०-७७ । |
| ३२६६९ | " | " | १-६, ८-९, ११-२०, २२-२८, ३०-३६ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|----------------|-------------------|
| ३२६७० | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १-२९ । |
| ३२६७१ | " | " | १-६७ । |
| ३२६७२ | न्यायसूत्रसङ्ग्रहः | वाचस्पतिमिश्रः | १-११ । |
| ३२६७३ | न्यायसूत्रभाष्यम् | वात्स्यायनः | १-२८, ३०-८९, ८८ । |
| ३२६७४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-९३ । |
| ३२६७५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३२६७६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-२ । |
| ३२६७७ | क्त्वाप्रत्ययवादः | | ३-९ । |
| ३२६७८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-२७ । |
| ३२६७९ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१२ । |
| ३२६८० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-९९ । |
| ३२६८१ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २-६ । |
| ३२६८२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | कालीशङ्करः | १-११ । |
| ३२६८३ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | रघुदेवः | १-२७ । |
| ३२६८४ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | महादेवः | १-६० । |
| ३२६८५ | कारिकावली | विश्वनाथः | १-७ । |
| ३२६८६ | " | " | १-६ । |
| ३२६८७ | तर्कसङ्ग्रहटीका | | ४-९ । |
| ३२६८८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३२६८९ | आख्यातविवेकः | रघुनाथशिरोमणिः | १-६ । |
| ३२६९० | आख्यातवादः | " | १-१० । |
| ३२६९१ | आख्यातवादव्याख्या | जयरामः | १-३९ । |
| ३२६९२ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | भवानन्दः | ३-१०९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--------------------------------|
| १०५४४५ | ९ | ३९ | दे. ना. | का. | | पू० | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ९३४४१ | ११ | २९ | " | " | १७१३ | अपू० | |
| १०५४४५ | ११ | ४५ | " | " | १७३९ | " | |
| ११४४९ | १२ | ४८ | " | " | | " | चतुर्थाध्यायान्तम् । |
| १३४४१ | ७ | ४४ | " | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १२८४४ | १४ | ७० | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२४४३९ | १२ | ६५ | " | " | | " | वाधप्रकरणस्य । |
| १०३४४६ | १७ | ५३ | " | " | | " | |
| १२६४३९ | १२ | ६५ | " | " | १७८९ | " | वाधप्रकरणस्य । |
| ९७४४२ | १८ | ४३ | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १२९४४ | ११ | ६३ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १२६४४ | ११ | ७२ | " | " | | अपू० | " |
| ११५४४८ | १६ | ५५ | " | " | | " | अवच्छेदकनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०५४४६ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ९६४४ | ११ | ४० | " | " | | पू० | |
| ९८४४२ | १२ | ३३ | " | " | | " | |
| ९२४४२ | ११ | ३२ | " | " | | " | |
| ९३४४४ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १३७४५३ | २० | ६० | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०४४४३ | ९ | ४३ | " | " | | " | आख्यातवादो वा । |
| ८८४२५ | ७ | ३५ | " | " | | " | |
| ९३४४२ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| ११२४३८ | १० | ६० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणादवयवप्रकरणांशा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--------------|---|
| ३२६९३ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | | २-७, ९-५४ । |
| ३२६९४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१३ । |
| ३२६९५ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | भवानन्दः | ३८-४०, ४२-७९ । |
| ३२६९६ | तत्त्वचिन्तामणिः | | ३ । (गणनया) |
| ३२६९७ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-३ । |
| ३२६९८ | तत्त्वचिन्तामणिः सटिप्पणः | | १-७ । |
| ३२६९९ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-१२ । |
| ३२७०० | " | | १-२ । |
| ३२७०१ | किरणावली | | १-१४ । |
| ३२७०२ | " | उदयनाचार्यः | १ । |
| ३२७०३ | " | " | १-८ । |
| ३२७०४ | " | | ६-२४, २६, २८-३०, ३२-३३, ४१-५४ । |
| ३२७०५ | " | उदयनाचार्यः | ३० । (गणनया) |
| ३२७०६ | " | " | १-५३, ५८-५९ । |
| ३२७०७ | वैशेषिकसूत्रोपस्कारः | शङ्करमिश्रः | १०१ । (गणनया) |
| ३२७०८ | गादाधरीटीका | कृष्णम्भट्टः | २-१२४ । |
| ३२७०९ | " | " | २-४७, ४७-५२, ५२-९१, ९३-९६, १२६-१५७, १५७-१८७, १८९-१९४, १९४-१९६ । |
| ३२७१० | " | " | २-२५ = २८, २५-२६ = २९, २७, २७-५८, ५८-१७२, १७२-१८८ । |
| ३२७११ | गादाधरीविवृतिः | " | १-१०३, १-३४, ३४-६२, ६४-८७, १-१०, १०-२७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०*७×४*७ | ८ | ३९ | दे. ना. | का. | | अपू० | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्या |
| १०*७×४*६ | १२ | ३७ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायतर्कप्रकरणयोः । |
| ११*८×३*६ | १० | ५१ | " | " | | " | उपाधिवादप्रकरणस्य । |
| ९*८×२*९ | ८ | ५७ | " | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । अत्रान्तिमपत्रम्- प्रगल्भविरचिततत्त्वचिन्तामणि- टीकायाः । |
| १३*८×५*२ | १२ | ५१ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १२*७×३*७ | ८ | ५१ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवाद- प्रकरणस्य । |
| १०×४*४ | ९ | ३५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणात्सामान्यलक्षणा- प्रकरणांशः । |
| ९*५×३*८ | ११ | ४६ | " | " | | " | अनुमानखण्डे अनुमितिप्रकरणा- द्व्यधिकरणप्रकरणांशः । |
| ९*५×४*१ | १७ | ३८ | " | " | | " | प्रशस्तपादभाष्यटीका । द्वय- प्रकरणांशा । |
| ९×३*४ | ८ | ३३ | " | " | | " | " |
| १०*७×४*७ | १४ | ३९ | वङ्ग. | " | | " | " |
| ८*५×३*७ | १० | ३७ | दे. ना. | " | | " | " |
| १०*९×३*१ | ११ | ८२ | " | " | | " | " |
| ११×४*७ | ११ | ३५ | " | " | | " | " |
| १०*३×३*७ | ९ | ३८ | " | " | | " | प्रथमाध्यायांशात् सप्तमाध्यायान्तः । |
| ९*७×५ | ११ | ३८ | " | " | | " | तत्त्व०मणि दी. टी.टी. । सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९*३×५ | ११ | ४४ | " | " | | " | तत्त्व०मणिदी.टी.टी. सव्यभिचार- साधारणासाधारणप्रकरणानाम् । |
| ९*६×५*१ | ११ | ३० | " | " | | " | तत्त्व०मणिदी.टी.टी. । अवयव- प्रकरणस्य । |
| ९*९×४*२ | ३८ | १० | " | " | | " | तत्त्व०मणिदी.टी.टी. । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|-------------------------|-------------------------|
| ३२७१२ | गादाधरीविवृतिः | कृष्णभट्टआरडे | १-१५६ । |
| ३२७१३ | घेपेपिकसूत्रोपस्कारः | | ७-३० । |
| ३२७१४ | तत्त्व०मणिदीधितिगृढार्थ- विद्योतनम् | जयरामः | १, ३-६० । |
| ३२७१५ | " | " | १-२, ४, ७-२० । |
| ३२७१६ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रवेशः | विश्वेश्वरः | १-१२९, ७१-७२, ११५-११७ । |
| ३२७१७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | २६-५५ । |
| ३२७१८ | " | " | १-११ । |
| ३२७१९ | " | " | १-२३ । |
| ३२७२० | " | " | ४ । (गणनया) |
| ३२७२१ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ८ । " |
| ३२७२२ | " | " | ३ । " |
| ३२७२३ | " | " | १ । |
| ३२७२४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | ५ । (गणनया) |
| ३२७२५ | व्युत्पत्तिवादः | " | १ । |
| ३२७२६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ५ । (गणनया) |
| ३२७२७ | " | " | ७ । " |
| ३२७२८ | " | " | ४ । " |
| ३२७२९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |
| ३२७३० | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ७ । (गणनया) |
| ३२७३१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|--|
| ९०९४३ | १० | ५० | दे. ना. | का. | | अपू० | तत्त्व०मणिदी.टी.टी. । व्यधिकरण- प्रकरणस्य । |
| १३९४५ | १० | ४५ | वङ्ग. | " | | " | प्रथमद्वितीयाध्यायांशयोः । |
| ११४४ | ११ | ३८ | दे. ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ९०७४३ | १० | ३४ | " | " | | " | " |
| १०२४६ | ११ | ३६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद् व्यधिकरण- प्रकरणांशः । |
| १९५४१ | ८ | ८१ | वङ्ग. | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १८३४४ | ८ | ६१ | " | " | | पू० | बाधप्रकरणस्य । |
| १८३४१ | १० | ८६ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १९२३८ | ८ | ५६ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १८५३९ | ११ | ८३ | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १८२३८ | ११ | ८० | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १८३३४ | १२ | ७९ | " | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १९१३९ | ८ | ६७ | " | " | | " | बाधप्रकरणस्य । |
| १९१३७ | १० | ७१ | " | " | | " | द्वितीयकारकांशः । |
| १९१३८ | ११ | ७१ | " | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १८८३९ | १४ | १०० | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १८८३९ | १३ | ८४ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १२४३७ | १२ | ६० | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १९५३९ | १५ | १०३ | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १६३२९ | ८ | ७६ | " | " | | " | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|-------------------------|-------------------|
| ३२७३२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२२, १, २६ । |
| ३२७३३ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३२७३४ | " | " | १-१६ । |
| ३२७३५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २-८ । |
| ३२७३६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २ । (गणनया) |
| ३२७३७ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | कालीशङ्करः | १-४ । |
| ३२७३८ | " | | १-२१ । |
| ३२७३९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ३८ । (गणनया) |
| ३२७४० | " | | १-१६ । |
| ३२७४१ | व्युत्पत्तिवादक्रोडपत्रम् | | १-३१ । |
| ३२७४२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-५२ । |
| ३२७४३ | " | " | १-४८ । |
| ३२७४४ | न्यायसिद्धान्तदीपः | म म. शशधरमिश्रः | ५९ । (गणनया) |
| ३२७४५ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पक्षधरमिश्रः | १-७ । |
| ३२७४६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १ । |
| ३२७४७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १६-५९ । |
| ३२७४८ | किरणावलीप्रकाशरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ५-७ । |
| ३२७४९ | लिङ्गार्थविचारः | | १-२ । |
| ३२७५० | तर्कभाषाटीका | गौरीकान्तः | ३३-७७ । |
| ३२७५१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ११-२७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| १६*७×३*४ | ८ | ८८ | वङ्ग. | का. | | पू० | केवलान्वयिप्रकरणस्य अत्र व्यतिरेकि- सव्यभिचारप्रकरणयोः द्वे पत्रे स्तः। |
| १२*६×४*८ | ११ | ४६ | दे. ना. | " | | अपू० | केवलान्वयिप्रकरणस्य । |
| १८*४×३*६ | ९ | ९२ | वङ्ग. | " | | पू० | " |
| १२*७×३ | ५ | ४८ | " | " | | अपू० | " |
| १७*२×३*५ | ८ | १०५ | " | " | | " | " |
| १२*८×३*९ | १० | ६६ | " | " | | पू० | सव्यभिचारप्रकरणस्थसधर्मिताव- च्छेदककल्पस्य । |
| १३*३×४*१ | ८ | ५५ | दे. ना. | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२*१०×३*९ | ८ | ५८ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १२*७×४*८ | ९ | ४२ | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्थानवच्छेद- कत्वानुसरणकल्पस्य । |
| १२*७×३*९ | ११ | ६३ | " | " | | " | |
| १२*७×३*९ | ९ | ५६ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १४*१×४*१ | ९ | ४९ | " | " | | " | सव्यभिचारसाधारणप्रकरणयोः । |
| १०*३×३*१ | ९ | ४७ | " | " | | " | |
| ९*८×४*३ | १३ | ३८ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवाद- प्रकरणस्य । |
| १०*३×४*६ | ११ | ४४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४*१×४*४ | ७ | ५७ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्थप्रतिज्ञालक्षणस्य । |
| १६*१×३*८ | ९ | ८२ | वङ्ग. | " | | " | प्रशस्तपादभाष्यटी.टी.टी. गुण- प्रकरणस्य । |
| १५*८×३*६ | ८ | ७७ | " | " | | " | |
| ९*१×३*६ | ९ | ३६ | दे. ना. | " | | " | प्रत्यक्षखण्डाच्छब्दखण्डान्ता । |
| १०*७×३*८ | ९ | ४७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------------------|-------------------------------------|
| ३२७५२ | कारकाद्यर्थनिर्णयः | भयानन्दसिद्धान्त- वागीशः | ७ । (गणनया) |
| ३२७५३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-५ । |
| ३२७५४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | ३६-७३ । |
| ३२७५५ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-२३ । |
| ३२७५६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | ३०-३९ । |
| ३२७५७ | " | जगदीशः | २ । (गणनया) |
| ३२७५८ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | २ । " |
| ३२७५९ | न्यायकोस्तुभः | महादेवः | २-८१, १-८, ५२-९८, ९८-१९३, १९३-२१२ । |
| ३२७६० | " | " | १-१५ । |
| ३२७६१ | " | " | १-६० । |
| ३२७६२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जयरामः | ४-६२ । |
| ३२७६३ | प्रशस्तपादभाष्यम् | | १-७ । |
| ३२७६४ | " | | २, ४-३६ । |
| ३२७६५ | धैशेषिकनृत्रम् | | १-९ । |
| ३२७६६ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | | १-५ । |
| ३२७६७ | " | | १-१५ । |
| ३२७६८ | " | अन्नम्भट्टः | ४-२५ । |
| ३२७६९ | " | " | १६-२५ । |
| ३२७७० | " | | १-१० । |
| ३२७७१ | " | | १-८, १० । |
| ३२७७२ | " | अन्नम्भट्टः | १-१७ । |
| ३२७७३ | तर्कसङ्ग्रहःसटीकः | | १-४ । |

| वाक्यारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आशयः | लिपिकालः | पूर्णपूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|-----------------------|--|
| १५*९×३*४ | ६ | ५३ | वज्र. | का. | | अपू० | |
| १०*९×३*५ | १० | ५६ | दे. ना. | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०*८×४*४ | ११ | ४० | " | " | | " | व्याप्तिवादे अतएवचतुष्टयव्याप्ति- ग्रहोपायप्रकरणयोः । |
| ९*४×४*१ | ११ | ४५ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । दीधिति- माथुरीभिन्नेयं टीका । |
| ९*३×३*६ | १० | ३४ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १३*३×३*८ | ८ | ६२ | मै. | " | | " | व्याप्तिवादे व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३*८×३*४ | १० | ७९ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १०×४*४ | ८ | ४१ | दे. ना. | " | | " | शब्दखण्डस्य । मध्ये १-५ शोधपत्राणि । |
| १३*४×३*४ | ५ | ४३ | " | " | | " | प्रत्यक्षे मङ्गलप्रकरणस्य । |
| १२*८×६ | ११ | ६३ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १०×४*४ | १२ | ३८ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १३*६×२*७ | ६ | ७८ | वज्र. | " | | पू० | द्रव्यपदार्थमात्रम् । |
| १३*८×४*४ | ८ | ४३ | " | " | | अपू० | विशेषपदार्थनिरूपणान्तम् । |
| १२*८×५ | ८ | ३८ | " | " | | पू० | कणादसूत्रं वा । १-१० अध्यायाः । |
| ९*५×३*७ | ८ | ३६ | दे. ना. | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ९*७×४*३ | ८ | २८ | " | " | | " | " |
| ९*५×४*३ | ९ | २९ | " | " | | " | " |
| ९*६×३*८ | ९ | ३९ | " | " | १८१० | " | " |
| ९*८×४*४ | १२ | ३४ | " | " | | " | " |
| १०*५×४*७ | १८ | ४१ | " | " | | " | " |
| १३*७×६*९ | १६ | ४२ | " | " | | पू० | " |
| १२*४×६*१ | १५ | ४२ | " | " | | अपू० | टीका दीपिका । प्रत्यक्षखण्डस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|--------------|--|
| ३२७७४ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | भवानन्दः | १-११ । |
| ३२७७५ | " | " | २-८०, २५७-२७६, २७८-२८७, २८९ । |
| ३२७७६ | " | " | २-१२ । |
| ३२७७७ | " | " | ३-९९ । |
| ३२७७८ | " | " | ३-३१, १-२, ४-१०, १०-२४ । |
| ३२७७९ | " | " | २०, २३-३२ । |
| ३२७८० | " | " | १५० । (गणनया) |
| ३२७८१ | " | " | ५३-६४, ६७-७० । |
| ३२७८२ | " | " | २-४८, १-१० (= ५८) ५९-१०५ (= ८) ९-१०, ८, १३-१६ । |
| ३२७८३ | " | " | २-१०, १२-१६, १८-४० । |
| ३२७८४ | " | " | २८७-३२४, ३०९-३३२, ३३५-३३६, ३३९-३४०, ३४७-३४८, ३५५-३५६ । |
| ३२७८५ | " | " | १-२६, २६-४१ । |
| ३२७८६ | " | " | १-१२, १२, १२-४२ । |
| ३२७८७ | " | " | १-२५, २६ (= २७) २८-११३, ११३-१४२, १४२-१८३, १८३-२३७ । |
| ३२७८८ | " | " | १-८९ । |
| ३२७८९ | " | " | ५३, ५५, ६०-६६, ६८-७१, ७३, ७५-७६, ७८-७९, १३०-१३१, १३५-१३८, १४०-१४६, १७०-१७१, १७७, १८१-१८५, १८७-१९० । |
| ३२७९० | " | " | ७३ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९०७४४*१ | १० | १० | दे. ना. | का. | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ११४३*१ | ७ | ११ | " | " | | " | अवयवतर्कप्रकरणयोः । |
| १००८४४ | ११ | ४९ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ९०२४४*२ | १२ | ३९ | " | " | | " | पक्षतापरामर्शप्रकरणयोः । |
| ११११४४*९ | १२ | ४१ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिसामान्याभाव- विशेषव्याप्तिप्रकरणानाम् । |
| १००४४४*३ | १२ | ४३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ९०८४४*१ | १३ | ४४ | " | " | | " | अत्र कानिचित्पत्राणि शब्दखण्डस्य कानिचिच्चानुमानखण्डे व्याप्तिवादहे- त्वाभासप्रकरणयोरसम्बद्धानि सन्ति । |
| १००३४३*७ | ९ | ३८ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १२०१४३*९ | ६ | ६२ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद्व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| ११०७४४*८ | ११ | ६० | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद्व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| १३०४४४*१ | ८ | ४७ | " | " | | " | उपाधिवादप्रकरणस्य । |
| १००७४४*७ | १३ | ६० | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १००८४४*६ | १३ | ६८ | " | " | | पू० | हेत्वाभासे सामान्यनिरुक्तिप्रकरणाद्- वाधान्ता । प्रारम्भे च व्याप्तिवादस्य पत्रद्वयमधिकम् वर्तते । |
| १००८४४*६ | १४ | ६७ | " | " | | "* | अनुमितिप्रकरणादवयवप्रकरणान्ता । |
| १००१४४*१ | ८ | ३९ | " | " | | अपू० | व्याप्तिग्रहोपायसामान्यलक्षणा- प्रकरणयोः । |
| १०४४*६ | १२ | ३४ | " | " | | " | व्याप्तिवादप्रकरणस्य । |
| ११०८४३*१ | १२ | ११ | " | " | | " | परामर्शहेत्वाभासप्रकरणयोः । |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------|-------------------------|-------------------------|--|
| ३२७९१ | तत्त्वचिन्तामण्यलोकटीका | गदाधरः | २-५१ । |
| ३२७९२ | " | रघुदेवः | २-२० । |
| ३२७९३ | " | | ५१-१७० । |
| ३२७९४ | न्यायलीलावतीरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-१९ । |
| ३२७९५ | न्यायलीलावतीप्रकाशः | वर्द्धमानोपाध्यायः | १-३० । |
| ३२७९६ | जागदीशीक्रीडपत्रम् | | १-५ । |
| ३२७९७ | तत्त्वचिन्तामणिद्वितीया | गदाधरभट्टाचार्यः | १-४५ । |
| ३२७९८ | " | " | १-३० । |
| ३२७९९ | " | " | १-१० । |
| ३२८०० | " | " | १-१० । |
| ३२८०१ | " | " | १-२६ । |
| ३२८०२ | " | " | १-३४९ । |
| ३२८०३ | " | " | १८७ । (गणनया) |
| ३२८०४ | भवानन्दीप्रकाशः | महादेवः | २-५८ । |
| ३२८०५ | खण्डनोद्धारः | वाचस्पतिमिश्रः | १-११० । |
| ३२८०६ | भवानन्दीप्रकाशः | महादेवः | १-२२ । |
| ३२८०७ | " | " | १-३९ । |
| ३२८०८ | " | " | २-४८ । |
| ३२८०९ | " | " | १-५६, २-२२, २२-२८ । |
| ३२८१० | " | " | २०४-२०९, २६-३४, ४७३, ५६१, १, १५४-१६२, २ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| १०°९×४°५ | ९ | ४९ | दे.ना. | का. | | अपू० | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवाद- प्रकरणस्य । |
| १०°६×४°७ | ११ | ५० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद् विशेषव्याप्ति- प्रकरणान्ता । |
| १०°४×४°२ | १० | ४२ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे उत्पत्तिवादांशात्प्रत्यक्ष- लक्षणांशा । |
| १८°१×३°९ | ९ | ७५ | वङ्ग. | " | | " | शक्तिनिरूपणान्तम् । |
| १८°६×४°५ | ९ | ७६ | " | " | | " | पृथिवीनिरूपणांशः । |
| १५°१×४°२ | १३ | ७८ | मै. | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| २०°७×३°७ | ६ | ११५ | वङ्ग. | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| २०°७×३°८ | ६ | १०२ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १९°९×३°६ | ६ | १०२ | " | " | | अपू० | सिंहव्याघ्रलक्षणयोः । |
| १९°६×३°५ | ६ | ९८ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| २०°५×३°८ | ६ | ११५ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १९°१×३°८ | ७ | ६८ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकमारभ्य सामान्यलक्षणा- पर्यन्ता । |
| १७°८×२°७ | ८ | ९२ | " | " | | " | परामर्शमारभ्यानुपसंहारिपर्यन्ता । |
| ९°५×४°४ | ११ | ४३ | दे.ना. | " | | " | भवानन्दीटीका । पक्षताप्रकरणस्य । |
| १३°९×४°४ | ७ | ६० | " | " | १९४९ | पू० | |
| १०°८×४°८ | १० | ४३ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणयोः भवानन्दी- टीका वा । |
| १०°५×४°८ | १० | ४५ | " | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| १०°७×४°८ | १२ | ३९ | " | " | | अपू० | उपाधिवादस्य । |
| १०°७×४°८ | ११ | ४७ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १०°७×४°९ | १२ | ३९ | " | " | | " | अनुमानशब्दखण्डयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|----------------------------|--|
| ३२८११ | तत्त्व०मणिदीधितिन्याख्या | रामकृष्णः | १-३१ । |
| ३२८१२ | न्यायसारः | माधवदेवः | २-१६, १८-६३, ६७-७७ । |
| ३२८१३ | " | " | १-९४, ९४-११४ । |
| ३२८१४ | " | " | १-१८२ । |
| ३२८१५ | " | " | २-८, १०-११ । |
| ३२८१६ | " | " | १-२५ । |
| ३२८१७ | न्यायकौस्तुभः | महादेवः | १-४२ । |
| ३२८१८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिटीका | रुद्रः न्याय- वाचस्पतिः | १-३, ३-८, ८-११६ । |
| ३२८१९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जयरामः | २२-२९, ५८-७७, ८१-२८६, २८९-३२३, ३५२, ३७५-४००, ५०३-५१३, ५१६-५७२ । |
| ३२८२० | " | जगदीशतर्का- लङ्कारः | १-०४, ५८-१०६ । |
| ३२८२१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३२८२२ | " | | १-१४ । |
| ३२८२३ | " | | १-११ । |
| ३२८२४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२८ । |
| ३२८२५ | " | | १-३ । |
| ३२८२६ | तत्त्वचिन्तामणिः सटीकः | | १-५ । |
| ३२८२७ | मित्तभाषिणी | माधवसरस्वती | ३-४ ६-३३ । |
| ३२८२८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-१३ । |
| ३२८२९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १ । |
| ३२८३० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | कालीशङ्करः | १-२६ । |
| ३२८३१ | " | चन्द्रनारायणः | १-३ । |
| ३२८३२ | " | | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ११×३०९ | ९ | ४० | दे. ना. | का. | | अपू० | प्रत्यक्षे प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ९०×४०५ | १० | ४४ | " | " | | " | अनुमानपरिच्छेदः । |
| १००१×४०५ | ९ | ३२ | " | " | | " | प्रत्यक्षादनुमानपरिच्छेदांशः । |
| ११०८×४ | ८ | ४५ | " | " | | पू० | |
| ७०९×३०९ | ९ | ४१ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षानुमानपरिच्छेदयोः । |
| ९०८×३०८ | ९ | ४४ | " | " | | " | अनुमानोपमानपरिच्छेदौ । |
| ९०६×४०२ | १० | ३४ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डांशः । |
| १००४×३०५ | ९ | ४५ | " | " | | पू० | रौद्री वा । प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ११×४ | ८ | ६१ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणात्सत्प्रतिपक्ष- प्रकरणांशा । |
| १३०४×४०२ | ७ | ४४ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद् व्याप्तिपूर्वपक्ष- प्रकरणांशा । |
| १००७×४०७ | १३ | ३७ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १००७×४०६ | १४ | ४४ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणे विभाजकलक्षणस्य । |
| १३०९×५०३ | १८ | ६४ | " | " | | अपू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १२०९×४ | १० | ६१ | " | " | | पू० | " |
| १३०८×५०५ | १२ | ५७ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणे विभाजकलक्षणस्य । |
| १२०६×४ | ११ | ६४ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य, टीका दीधितिः । |
| १०×४०४ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | सप्तपदार्थटीका । |
| १००८×४०५ | १४ | ४४ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १००९×४०६ | १३ | ४० | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १००८×४०६ | १३ | ४४ | " | " | | पू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १००८×४०५ | १४ | ५२ | " | " | | " | " |
| १००३×४०७ | १६ | ४६ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|------------------|-------------------|
| ३२८३३ | तत्त्वचिन्तामणिः सटीकः | | १-५ । |
| ३२८३४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३८ । |
| ३२८३५ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-३ । |
| ३२८३६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ५ । (गणनया) |
| ३२८३७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १२ । " |
| ३२८३८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३२८३९ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | " | १-३ । |
| ३२८४० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | " | १-१८ । |
| ३२८४१ | सामग्रीप्रतिवध्यप्रतिवन्धक- भावविचारः | हरिरामः | २-१५ । |
| ३२८४२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १९ । (गणनया) |
| ३२८४३ | " | | १-२ । |
| ३२८४४ | " | दामोदरः | १-३ । |
| ३२८४५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | ३-२९ । |
| ३२८४६ | " | " | १-३५ । |
| ३२८४७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | गोलोकनाथः | १-३६ । |
| ३२८४८ | " | दामोदरः | २-२१ । |
| ३२८४९ | " | | १-४ । |
| ३२८५० | " | | ९-१० । |
| ३२८५१ | " | | २ । (गणनया) |
| ३२८५२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |
| ३२८५३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-२८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १२*७×४ | १० | ६७ | दे. ना. | का. | | अपू० | टीका दीधितिः । सव्यभिचार- प्रकरणस्य । |
| १३*९×९*४ | ९ | ४६ | " | " | | पू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य, अत्र गा० सव्य० चा० इति पृष्ठभागे लिखितमस्ति । |
| १०*९×४*१ | ९ | ४८ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणात्सव्यभिचार- प्रकरणांशः । |
| १३*८×९*४ | २० | ९४ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १३*८×९*४ | ११ | ९७ | " | " | | " | साधारणप्रकरणस्य । |
| १३*३×४*१ | १३ | ६७ | " | " | | " | " |
| १३*९×९*२ | १७ | ९८ | " | " | | " | " |
| १२*८×९*३ | १३ | ९९ | " | " | | " | साधारणासाधारणानुपसंहारि- प्रकरणानाम् । |
| १०*२×३*७ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| १२*४×९*१ | १९ | ९४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९*९×४*४ | १२ | ४१ | " | " | | " | " |
| १२*३×४*२ | १० | ४८ | " | " | | " | " |
| १२×४*२ | १० | ९२ | " | " | श. १७८९ | " | " |
| १३×४ | १० | ९७ | " | " | १७८६ | पू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १३*१×४*२ | ९ | ९९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३*३×९*३ | १० | ९९ | " | " | | अपू० | " |
| १३*९×९*४ | १४ | ९३ | " | " | | " | " |
| ९*७×४*३ | १२ | ४२ | " | " | | " | " |
| १२*४×९*२ | १३ | ९७ | " | " | | " | अवयवप्रकरणे प्रतिज्ञालक्षणस्य । |
| १३*९×९*१ | २८ | ८४ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १२*९×४ | ९ | ९८ | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|----------------------------------|-------------------|
| ३२८५४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली सटीका | विश्वनाथः टी. महादेवः | ५७ । (गणनया) |
| ३२८५५ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १-६५ । |
| ३२८५६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१४ । |
| ३२८५७ | तत्त्वचिन्तामणिः सटीकः | गङ्गेशः टी.का. रघुनाथशिरोमणिः | १-३ । |
| ३२८५८ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशः | १ । |
| ३२८५९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-४ । |
| ३२८६० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| ३२८६१ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-२ । |
| ३२८६२ | तत्त्वचिन्तामणिव्याख्या | | १-१४ । |
| ३२८६३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१२ । |
| ३२८६४ | " | | ५-१० । |
| ३२८६५ | " | | १-४३ । |
| ३२८६६ | सिद्धान्तसङ्ग्रहः | यादवव्यासः | १-१९ । |
| ३२८६७ | तत्त्वचिन्तामणिव्याख्या | | ३-७ । |
| ३२८६८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिटीका | गदाधरः | १६९-१७२ । |
| ३२८६९ | तत्क्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३२८७० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| ३२८७१ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-३७ । |
| ३२८७२ | " | " | १-३७ । |
| ३२८७३ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-६० । |
| ३२८७४ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २६-३६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| १३×१०८ | १२ | ४४ | दे. ना. | का. | | अपू० | टीकां गूढार्थप्रकाशिका । |
| ९०४×४२ | ११ | ३३ | " | " | १८३३ | पू० | |
| ९०७×४३ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| ९०९×४३ | १३ | ३८ | " | " | | अपू० | टीका दीधितिः । |
| १२०८×४ | ७ | ६३ | " | " | | पू० | व्यधिकरणप्रकरणात्सिद्धान्तलक्षण- प्रकरणान्तः । |
| ९०२×४ | १४ | ४३ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| ११०४×४०८ | १४ | ४० | " | " | | " | " |
| ८०८×३०१ | ९ | ३७ | " | " | | अपू० | " |
| १००१×४३ | १० | ४२ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । दीधिति- माथुरीभिन्ना । |
| १००९×४०७ | १२ | ४९ | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १२०४×३०८ | १० | ६४ | " | " | | अपू० | " |
| १६०६×४०९ | ६ | १४ | " | " | | पू० | " |
| १००२×४०६ | १० | ४१ | " | " | | " | शब्दखण्डः । |
| १०×४०४ | ११ | ४४ | " | " | | अपू० | सिंहयात्रलक्षणयोः । दीधिति- माथुरीभिन्ना । |
| ११०६×३०९ | १० | ६१ | " | " | | " | बाधप्रकरणस्य । |
| १२०२×४०६ | १० | ३७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १००९×४०९ | १४ | ४३ | " | " | | पू० | अनुपसंहारिप्रकरणस्य । |
| १७०६×३०६ | ८ | ८२ | वङ्ग. | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १९०६×४०६ | ८ | ७४ | " | " | | " | " |
| १८×३०८ | ८ | ८४ | " | " | | " | " |
| १६०३×२०८ | ६ | ६१ | " | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षसिद्धान्तलक्षणाव- च्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणानाम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|---|----------------------|
| ३२८७५ | तत्त्व०मणिदीधितिटिप्पणी | जगदीशभट्टाचार्यः | २-२३, १-१५, १-१३ । |
| ३२८७६ | तत्त्व०मणिदीधितिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-३४+१ |
| ३२८७७ | माथुरीक्रोडपत्रम् | " | ५ । (गणनया) |
| ३२८७८ | आख्यातवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२७ । |
| ३२८७९ | " | रघुनाथशिरोमणिः | १-७ । |
| ३२८८० | आख्यातशक्तिवादविवृतिः | रघुनाथशिरो- मणिः टी. मथुराना- थतर्कवागीशः | १-४० । |
| ३२८८१ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकदर्पणः | महेशठक्कुरः | ४-८२ । |
| ३२८८२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-११ । |
| ३२८८३ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-३ । |
| ३२८८४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | " | १-१७ । |
| ३२८८५ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१७, २०-३७, ४०-८१ । |
| ३२८८६ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-१६ । |
| ३२८८७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशतर्कालङ्कारः | १-३४ । |
| ३२८८८ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशिका | जगदीशभट्टाचार्यः | ३२-२०६ । |
| ३२८८९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | " | १-३१ । |
| ३२८९० | शब्दसारमञ्जरी | भवानन्दसिद्धान्त- वागीशः | ११ । (गणनया) |
| ३२८९१ | शब्दबोधप्रक्रिया | | १-४ । |
| ३२८९२ | शब्दसारमञ्जरी | " | १-२७ । |
| ३२८९३ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-----------------------|--|
| १९०७×३०३ | ६ | ९१ | वङ्ग. | का. | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणावच्छेदकत्वनिरुक्ति- विशेषव्याप्तिप्रकरणानाम् । |
| १७०७×३०८ | ८ | ९८ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १९०४×३०५ | १२ | ६७ | " | " | | " | सिंहलक्षणविधिवादयोग्यताकाङ्क्षा- प्रकरणानाम् । |
| ९०७×३०४ | ८ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १२०५×३०७ | ६ | ५१ | " | " | | " | |
| १७०३×३०५ | ८ | ७४ | " | " | | " | |
| ११०५×३०४ | ११ | ६६ | मै. | " | | अपू० | मङ्गलवादांशात्प्रमाणलक्षणांशः । |
| १७०२×३०८ | ८ | ८० | वङ्ग. | " | | " | योग्यतासत्तिप्रकरणयोः । |
| १६०३×३०२ | ४ | ५५ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १९०३×४ | ७ | ६८ | " | " | | " | " |
| १००६×३०२ | ८ | ५२ | मै. | " | | पू० | शब्दखण्डे विधिवादादुपसर्गवान्ता । |
| १३०४×४०२ | ७ | ५५ | दे.ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद्व्यधिकरणप्रक- रणांशा । |
| १३०४×४०३ | ७ | ५८ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १८०८×४ | ९ | ६९ | वङ्ग. | " | श. १६७० | " | परामर्शप्रकरणाद्वाधान्ता । |
| १८०३×३०३ | ८ | ८७ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| ११०९×३०६ | १० | ५५ | " | " | | अपू० | कारकविचारः । |
| १३०१×४ | ९ | ५६ | मै. | " | | " | |
| १६०५×३ | ५ | ५३ | वङ्ग. | " | | पू० | कारकाद्यर्थनिर्णयो वा । |
| १८०१×३०१ | ६ | ८१ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------|-------------------|
| ३२८९४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २३ । (गणनया) |
| ३२८९५ | " | " | १-१५ । |
| ३२८९६ | तत्त्व०मणिटीका | मथुरानाथः | १-२ । |
| ३२८९७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२ । |
| ३२८९८ | " | " | ३-६ । |
| ३२८९९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३२९०० | " | चन्द्रनारायणः | १-१८ । |
| ३२९०१ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | २ । (गणनया) |
| ३२९०२ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | २ । " |
| ३२९०३ | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१९ । |
| ३२९०४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | कालीशङ्करः | १-८ । |
| ३२९०५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२ । |
| ३२९०६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३२९०७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १२ । (गणनया) |
| ३२९०८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-११ । |
| ३२९०९ | " | | १-२ । |
| ३२९१० | " | | २ । (गणनया) |
| ३२९११ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २६-३० । |
| ३२९१२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ५ । (गणनया) |
| ३२९१३ | " | | २ । " |
| ३२९१४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-१३ । |
| ३२९१५ | " | " | १६-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आनां | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|------|----------|------------------------|--|
| १८०३×३०३ | ८ | ७९ | वङ्ग. | का. | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिसामान्याभा- वप्रकरणयोः । |
| १८०३×३०३ | ९ | ८४ | " | " | | पू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १४०१×३०९ | १३ | ६७ | मै. | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १३०७×३०९ | ८ | ७४ | " | " | | अपू० | " |
| १३०३×३०९ | ८ | ७४ | " | " | | " | " |
| १३०९×३०६ | १० | ७९ | " | " | | " | " |
| ११०८×३०७ | ८ | ६६ | " | " | | पू० | " |
| ११०४×३०३ | ६ | ६७ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणानौपाधिकत्वव्या- प्त्यनुगमप्रकरणानाम् । |
| १३०६×३०४ | ९ | ७८ | " | " | | अपू० | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १४०३×३०८ | ८ | ६२ | " | " | | " | " |
| १४०६×४ | १३ | ६७ | " | " | | पू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १४०१×४०१ | ९ | ६३ | " | " | | अपू० | " |
| १६०३×४०१ | १२ | ८३ | " | " | | पू० | " |
| १२०१×३०१ | ६ | ४७ | " | " | | अपू० | विशेषव्याप्त्यनौपाधिकत्वव्याप्त्य- नुगमप्रकरणानाम् । |
| १३०३×३०६ | १२ | ९४ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्थप्रथमलक्षणस्य । |
| १४×४०२ | १२ | ८० | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्थकूटघटितलक्ष- णस्य । |
| १४०६×४ | १२ | ८० | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १३०३×३०९ | ९ | ६३ | " | " | | " | " |
| १२०१×३०९ | ९ | ६७ | " | " | | " | " |
| ११०८×३०७ | ८ | ६६ | " | " | | " | " |
| १३०१×३०८ | ८ | ६८ | " | " | | " | " |
| १२०९×३०८ | ७ | ६० | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|-------------------------|-------------------|
| ३२९१६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ३२९१७ | " | | १-९ । |
| ३२९१८ | " | | १-२ । |
| ३२९१९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ६ । (गणनया) |
| ३२९२० | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ९ । " |
| ३२९२१ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ७-८ । |
| ३२९२२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३२९२३ | " | | १ । |
| ३२९२४ | " | | १-२ । |
| ३२९२५ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-९ । |
| ३२९२६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | रघुदेवः | २८७-२८८ । |
| ३२९२७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधिति- व्याख्या | भवानन्दः | १-६८ । |
| ३२९२८ | " | " | १-१६४ । |
| ३२९२९ | तत्त्वचिन्तामणिनिरुक्ति- प्रकाशः | | १-१२ । |
| ३२९३० | " | | १-११ । |
| ३२९३१ | " | | १२-४९, १-२८ । |
| ३२९३२ | " | | १-२० । |
| ३२९३३ | तत्त्वचिन्तामण्यालोक- दर्पणः | महेशठाक्कुरः | १-३८, ४३-११७ । |
| ३२९३४ | तत्त्वचिन्तामणिनिरुक्ति- प्रकाशः | रघुदेवः | १-२३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|---|
| १६*२×४*१ | १२ | ८६ | मै. | का. | | पू० | व्यधिकरणप्रकरणस्थचक्रवर्ति- लक्षणस्य । |
| १४*९×४ | १२ | ८६ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्थप्रगल्भलक्षणस्य । |
| १३*१×४ | १४ | ८६ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२*१×३*२ | ६ | ७० | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकव्यधिकरणप्रकरणयोः । |
| १३*४×४ | १२ | ६८ | " | " | | " | व्याप्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १४*१×४ | ९ | ७५ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| ११*९×३*६ | ८ | ६४ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| ११*९×३*६ | १२ | ६७ | " | " | | " | " |
| १३*९×३*४ | ११ | १०० | " | " | | " | " |
| १२*६×४ | ९ | ५१ | " | " | | " | " |
| ११*७×४*१ | ११ | ६० | दे. ना. | " | | " | अवयवप्रकरणांशस्य । |
| ९*६×४ | १३ | ४१ | " | " | | पू० | अनुमानखण्डे सामान्यनिरुक्ति- प्रकरणाद्वाधान्ता । |
| ९*६×४ | १३ | ३९ | " | " | | " | अनुमानखण्डे उपाधिप्रकरणाद्- वयवान्ता । |
| १०*४*३ | १४ | ५० | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणाद् व्यधिकरण- प्रकरणांशः । |
| १०*३×३*८ | ९ | ४५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०*४×४ | ९ | ४८ | " | " | | " | अनुमित्यवयवप्रकरणयोः । |
| १०*४×४ | १० | ४६ | " | " | | " | व्यधिकरणपूर्वपक्षसिद्धान्तलक्षण- प्रकरणानाम् । |
| १०*१×३*३ | ११ | ४० | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| ९*५×३*७ | १७ | ३६ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादप्रामाण्यवाद- प्रकरणयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|--------------------------|-----------------------------|
| ३२९३५ | आख्यातवादटिप्पणी | रघुदेवः | २-२१ । |
| ३२९३६ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-१९, २२-५५, ११८, १२०-१२८ । |
| ३२९३७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | रामकृष्णः | १-३४ । |
| ३२९३८ | मितभाषिणी | माधवसरस्वती | ६-१९, २१-४४ । |
| ३२९३९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीव्याख्या | श्रीकृष्णभट्टाचार्यः | १-२३, २५-३१ । |
| ३२९४० | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीप्तिः | केशवः | १-२८ । |
| ३२९४१ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीविवृतिः | " | १-३५ । |
| ३२९४२ | कारकचक्रम् | विश्वनाथशर्मा | १-२५ । |
| ३२९४३ | तत्त्व०मणिनिरुक्तिप्रकाशः | रघुदेवः | १-१७ । |
| ३२९४४ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-४७, ४७-७६ । |
| ३२९४५ | सप्तपदार्थी | शिवादित्यमिश्रः | ९ । (गणनया) |
| ३२९४६ | मितभाषिणी | माधवसरस्वती | १-१८ । |
| ३२९४७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दः | १४ । (गणनया) |
| ३२९४८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीगूढार्थ- दीपिका | श्रीकृष्णशर्मा | १-७१ । |
| ३२९४९ | शब्दपरिच्छेदः | रुद्रभट्टाचार्यः | १-१२० । |
| ३२९५० | शब्दार्थतर्कानृतम् | कृष्णभट्टमौनी | १-२६ । |
| ३२९५१ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-११३ । |
| ३२९५२ | किरणावलीप्रकाशदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ३-३८ । |
| ३२९५३ | किरणावलीप्रकाशरहस्यम् | मथुरानाथ- भट्टाचार्यः | १-४६ । |
| ३२९५४ | वर्द्धमानेन्दुः | पद्मानाथः | १-११० (= १११-११२) ११३-१२७ । |
| ३२९५५ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | १, १३४-१९७ + १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाहः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| ९°४×४°२ | ९ | ३८ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०°५×२°८ | ९ | ५५ | " | " | १६६४ | " | प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादात्सवि- कल्पकवादान्तः । |
| ९°६×३°९ | १० | ४४ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद् व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| ८°८×३°४ | ११ | ३६ | " | " | | " | सप्तपदार्थटीका । |
| ८°७×३°७ | ७ | ४० | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| ८°८×३°७ | ९ | ३४ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ८°८×३°८ | १० | ३२ | " | " | | " | अनुमानोपमानपरिच्छेदयोः । |
| ११°८×३°८ | ९ | ६७ | " | " | | " | सुवर्ततत्त्वाल्लोको वा । |
| ११°१×३°५ | १२ | ५९ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १२°५×२°९ | ७ | ४० | " | " | | पू० | |
| १०°२×२°४ | ६ | ५२ | " | " | १६७८ | अपू० | |
| १०°१×४°६ | १३ | ५५ | " | " | | " | सप्तपदार्थटीका । |
| १०°६×४°८ | १६ | ४५ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ८°८×३°७ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | शब्दखण्डस्य । |
| ९°६×३°८ | १२ | ४० | " | " | | " | प्रतीकमधृत्वापि तत्त्वचिन्तामणि- माधारीकृत्य व्याख्यातः । |
| ९°८×४°२ | ८ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| ९°९×३°४ | ९ | ५१ | " | " | | पू० | |
| १०°१×४°४ | १४ | ३८ | " | " | | अपू० | गुणनिरूपणखण्डस्य । |
| १२°४×४°९ | १० | ५४ | " | " | | " | " |
| ११°२×५°१ | १० | ४४ | " | " | १६६८ | पू० | किरणावलीटी. टी. |
| १०°५×३°३ | ११ | ५६ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणाच्छक्तिवादांशः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|---------------------------------------|--|
| ३२९५६ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रचिदत्तः | ४२-७०, ७२-७५, ७६-१७१, १७४-२१४ । |
| ३२९५७ | " | " | १-६ । |
| ३२९५८ | तत्त्व०मणिनिरुक्तिप्रकाशः | रघुदेवः | १५-२८ । |
| ३२९५९ | तत्त्वचिन्तामणिसारः | गोपीनाथः | १-३०, ४१-४८, ६१-१३० । |
| ३२९६० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | न्यायवाचस्पतिः | १-१८ । |
| ३२९६१ | तत्त्व०मणिरश्मिचक्रम् | गोकुलनाथः | १-४४ । |
| ३२९६२ | तत्त्व०मणिदीधितिविवरणम् | " | १-४७ । |
| ३२९६३ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | माधवभट्टः | १-७१, ७१, ७१, ७१, ७१, ७१, ७१-१०३, १११-१२५, १२७ । |
| ३२९६४ | " | गुणानन्दः | १-११३ । |
| ३२९६५ | तत्त्व०मण्यालोकदर्पणः | महेशाठक्कुरः | १-६०, ३१-६६, ६०-६३ । |
| ३२९६६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | मथुरानाथः | १-९ । |
| ३२९६७ | " | श्रीरामः | १-३१, ३३-४६ । |
| ३२९६८ | तत्त्व०मणिनिरुक्तिप्रकाशः | रघुदेवः | १-१४६, ९६-११८ । |
| ३२९६९ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाटीका | रामरुद्रभट्टाचार्यः | १-४७ । |
| ३२९७० | पदार्थतत्त्वनिरूपणम् | रघुनाथशिरोमणिः | १-४ । |
| ३२९७१ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाशिका | नीलकण्ठभट्टः | १-५८ । |
| ३२९७२ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाश- भास्करोदया | लक्ष्मीनृसिंहः | १-२४१ । |
| ३२९७३ | पदार्थतत्त्वनिरूपणं सटीकम् | रघुनाथशिरोमणिः टी. रामरुद्ररघुदेवौ | १-६, १-४६, १-५६ । |
| ३२९७४ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रभा | हनुमत्सङ्ख्यावाग् | १-५१८ । |
| ३२९७५ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पक्षधरः | १-१२, १५-१५४ । |
| ३२९७६ | " | जयदेवः पक्षधरोवा | १-२१, २३-२५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| ७×३१ | ७ | ३४ | दे.ना. | का. | | अपू० | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणाच्छक्तिवादांशः । |
| १०×३३ | ९ | ४७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०×५४५ | १० | ४८ | " | " | | " | शब्दखण्डांशः । |
| १०×४५ | ११ | ४६ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०×५४१ | ९ | ४६ | " | " | | " | " |
| ९×४४२ | ८ | ४४ | " | " | | पू० | उपमानपरिच्छेदस्य । |
| ९×५४४ | १७ | ४६ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १०×३३७ | १० | ४८ | " | " | | अपू० | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणादपूर्व- वादांशा । |
| १०×६४५ | १२ | ३९ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०×७३६ | ७ | ४८ | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| ९×९३७ | १० | ४० | " | " | | " | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| ९×५४ | ११ | ४० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०×१४४ | १२ | ४४ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणादवच्छेदकत्वनिरुक्ति- प्रकरणांशः । |
| ८×३६६ | १४ | २२ | " | " | | पू० | |
| ११×२२१ | ६ | ८१ | मै. | " | | अपू० | |
| १३×७५३ | ७ | ३७ | दे.ना. | " | | पू० | |
| ८×२६६ | १६ | १६ | " | " | | " | |
| ६×७४८१ | १६ | २२ | " | " | | " | टीके—प्रकाशपदार्थखण्डनव्या- ख्याख्ये । |
| ७×९६५ | १९ | २१ | " | " | | " | |
| १०×१३४ | ९ | ५४ | "मै. | " | १६६७ | अपू० | अनुमितिप्रकरणान्मुक्तिवादान्तः । |
| ९×८३३ | ७ | ३६ | दे.ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|-----------------|--|
| ३२९७७ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवःपक्षधरोवा | १-१४, ११-१५, २-१४, १६-३४, ५६-९२ । |
| ३२९७८ | " | " | १४-६६ । |
| ३२९७९ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | ६-७८ । |
| ३२९८० | " | " | ३-३५, ३५-६५, ६७-२४८ । |
| ३२९८१ | तत्त्व०मण्यालोकसहस्रम् | गोपीनाथः | १-३६१, ३६५-३९९ । |
| ३२९८२ | तत्त्व०मण्यालोकप्रकाशः | जयरामः | १-३३ (= ३४) ३५-७१, ७९-१४८ । |
| ३२९८३ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवः | ४१ । (गणनया) |
| ३२९८४ | तत्त्व०मणिदीधितिहस्यम् | मथुरानाथः | ३-२०९ । |
| ३२९८५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दः | २७-१२१ । |
| ३२९८६ | " | " | १-८० । |
| ३२९८७ | " | " | १-४२, ५३, ९२-२५३ । |
| ३२९८८ | " | " | १-२३१ । |
| ३२९८९ | तत्त्व०मण्यालोकटीका | गदाधरः | २-६६, ६६-२१७ । |
| ३२९९० | " | " | १-११५, १-७२, २-२७, ५३-४८, १-३०, २-१९, २-२८, १-१०, २-२७ । |
| ३२९९१ | तत्त्व०मण्यालोककण्टकोद्धारः | | १-२२ (= २३) २४-४५, ४७-६७ । |
| ३२९९२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-७२, ७२-७४, ७४-१०४, १०४-१२१, १३०- १५३, १५३-२२८, २२८क-२२८ख, २२९- २८७, २८९-२९४, ३१३-३९० । |
| ३२९९३ | तत्त्व०मण्यालोककण्टकोद्धारः | मधुसूदनः | १-५, ५-१९७ । |
| ३२९९४ | " | " | १-३७ (= ३८) ३९-५६, ५६-१२५, १२५-१२८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १००८×३०४ | ८ | ४० | दे. ना. | का. | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादप्रामाण्यवाद- प्रकरणयोः । |
| ९०८×४०१ | १३ | ३७ | " | " | | " | विशेषव्याप्त्यतएवचतुष्टयव्याप्तिप्र- होपायप्रकरणानाम् । |
| १००८×३०१ | ८ | ५३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११०३×३०३ | ७ | ४८ | " | " | | " | अर्थापत्तिप्रकरणान्मुक्तिवादान्तः । |
| १००५×४०२ | ९ | ३२ | " | " | १७५० | " | शब्दखण्डमात्रम् । |
| ११०४×४०९ | ११ | ५२ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणा- च्छब्दखण्डांशः । |
| ९०५×३०३ | ७ | ४५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद्व्याप्त्यनुगमप्रक- रणांशः । |
| १००९×४०७ | १० | ४४ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशास्तिद्वान्तलक्षणा- प्रकरणांशम् । |
| १००१×४०३ | ११ | ४८ | " | " | | " | परामर्शप्रकरणांशादवयवप्रकरणान्ता । |
| ९०९×४०५ | ११ | ४५ | " | " | १८१२ | " | सामान्यनिस्क्तिप्रकरणांशादीश्वरवा- दप्रकरणान्ता । |
| १००१×४०४ | ९ | ४८ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणात्सामान्यलक्षणा- प्रकरणान्ता । |
| ९०२×३०९ | ११ | ३७ | " | " | | पू० | " |
| १००९×४०६ | १० | ७३ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डे प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ९०६×४०२ | ८ | ४२ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रक- रणाच्छब्दानित्यतावादान्तः । |
| १००८×४०९ | ११ | ५८ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १००१×४०५ | ११ | ५० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणादवयवप्रकरणान्ता । |
| ११०३×५०२ | १० | ४५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणादवयवप्रकरणांशः । |
| ११०२×४०८ | ११ | ६२ | " | " | | पू० | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणात्प्रमाण- चतुष्टयप्रामाण्यवादान्तः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|--------------|---|
| ३२९९५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | ६९। (गणनया) |
| ३२९९६ | " | " | १-१२ । |
| ३२९९७ | " | " | १४८ । (गणनया) |
| ३२९९८ | " | " | २-९८, १२४-१२५, १-१३९, १-२१, १-२० । |
| ३२९९९ | " | " | १, ३-९२, ९२-१७३, १७३-२९९ । |
| ३३००० | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाश- प्रकाशः | महादेवः | १-१००६ । |
| ३३००१ | " | " | ७-१७७, १७९-३०२, ३०५-३२१, ३२३-६७८ । |
| ३३००२ | न्यायलीलावतीप्रकाशः | वर्द्धमानः | ४-१४९ । |
| ३३००३ | किरणावलीप्रकाशविवृतिः | मेघभगीरथः | ३-२६३ । |
| ३३००४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | २-७९, ८१-१२६, १२६-२०२, २०४-२०७, २०७-२४५, २४७-२४९, २५१-२६३, २६३-२६६, २७०-२९४ । |
| ३३००५ | किरणावलीप्रकाशः | वर्द्धमानः | १-२७ । |
| ३३००६ | " | " | १-३२ । |
| ३३००७ | " | " | १-६८ । |
| ३३००८ | " | " | १-५, २१, ४३-४७ । |
| ३३००९ | " | " | १ । |
| ३३०१० | मितभाषिणी | माधवसरस्वती | १-३३ । |
| ३३०११ | " | " | १-५८ । |
| ३३०१२ | मितभाषिणी | माधवसरस्वती | २-६३ । |
| ३३०१३ | " | " | १-४० । |
| ३३०१४ | सप्तपदार्थी | शिवादित्यः | १, ४-१२ । |
| ३३०१५ | " | " | १९ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०६×४३ | ९ | ४० | दे. ना. | का. | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०९×४७ | १५ | ७१ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०९×४७ | १० | ४८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणांशाद्वाधान्ता । |
| १२९×४७ | ९ | ४९ | वङ्ग. | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशान्तर्कप्रकरणांशा । |
| १२८×४९ | ९ | ४७ | " | " | | " | प्रमाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०८×४८ | १० | ४८ | दे. ना. | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणादुपाधिवादप्रक- रणान्तः । दी. टी. टी. । |
| ११२×४७ | १० | ४३ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणांशादुपाधिवाद- प्रकरणांशः । दी. टी. टी. । |
| १०३×४३ | १२ | ४३ | " | " | | " | |
| ९९×३२ | ८ | ४२ | " | " | | " | किरणावलीप्रकाशजलदो वा । |
| १०२×३४ | ८ | ४८ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशादुपाधिवादांशा । प्रकाशमाधुरीगादाधरीजागदीशी- भिन्ना । |
| १०२×४४ | १६ | ५७ | " | " | | " | गुणनिरूपणे विभागनिरूपणान्तः । |
| १०९×२९ | ११ | ८९ | " | " | | " | द्रव्यप्रकरणे वायुनिरूपणांशः । |
| १०१×३६ | १० | ३४ | " | " | | " | द्रव्यप्रकरणे तेजोनिरूपणांशः । |
| ९३×३६ | १३ | ४८ | " | " | | " | द्रव्यप्रकरणे सृष्टिनिरूपणांशः । |
| ११×२९ | ७ | ३६ | " | " | | " | द्रव्यप्रकरणस्य । |
| १०५×४६ | १५ | ४३ | " | " | | पू० | सप्तपदार्थाटीका । |
| १०१×३८ | ९ | ३३ | " | " | १६०७ | " | " |
| ८६×२९ | ८ | ३२ | " | " | १९३९ | अपू० | सप्तपदार्थाटीका । |
| ९३×४४ | १३ | ३६ | " | " | १६८९ | पू० | " |
| ७४×२९ | ८ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ९४×३९ | ७ | ३३ | " | " | १४१५ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याचिवरणम् |
|------------|---|---------------------------|------------------------|
| ३३०१६ | सप्तपदार्थी | शिवादित्यः | १-१९ । |
| ३३०१७ | किरणावलीप्रकाशविवृतिः | रुचिदत्तमिश्रः | १-७, १०-१२३ । |
| ३३०१८ | सप्तपदार्थी | शिवादित्यमिश्रः | ८ । (गणनया) |
| ३३०१९ | किरणावलीप्रकाशदीधिति- तात्पर्यदीपिका | गुणानन्दविद्या- वागीशः | १-३९, ७१-८७ । |
| ३३०२० | किरणावलीप्रकाशदीधिति- गूढार्थविवृतिः | जयरामः | १-५५ । |
| ३३०२१ | किरणावलीप्रकाशदीधिति- टीका | रुद्रभट्टाचार्यः | १-३० (= ३०+३१) ३२-४८ । |
| ३३०२२ | " | " | १-७९ । |
| ३३०२३ | किरणावलीप्रकाशदीधिति- भावप्रकाशिका | " | १-१४, १६-९८, ९८-१०० । |
| ३३०२४ | किरणावलीप्रकाशदीधिति- टीका | रामकृष्णः | १-७९ । |
| ३३०२५ | तत्त्वमणिदीधितिप्रकाश- सर्वापकारिणी | महादेवः | १-५४२ । |
| ३३०२६ | " | दिनकरः | ३३६ । (गणनया) |
| ३३०२७ | सप्तपदार्थी | शिवादित्यः | ६ । " |
| ३३०२८ | " | " | ५-१० । |
| ३३०२९ | किरणावलीभास्करः | पद्मानाभमिश्रः | १-१३६ । |
| ३३०३० | " | " | १-२, ७-१९, २१-३३ । |
| ३३०३१ | किरणावलीप्रकाशः | वर्द्धमानः | ४-५९ । |
| ३३०३२ | तत्त्वमण्यालोककण्टकोद्धारः | मधुसूदनः | १-३७ । |
| ३३०३३ | " | " | १-१४२, १४२-१९७ । |
| ३३०३४ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | मथुरानाथः | ६३ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपि. | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| ९०४४२ | ६ | ३३ | वङ्ग. | का. | | पू० | |
| ९०३४३० | ८ | ४४ | दे. ना. | " | | अपू० | द्रव्यप्रकरणस्य । |
| ८०३४३० | ९ | ३९ | " | " | श. १४१६ | " | अन्तिमपत्रे वन्धयष्ट्युपनामकमहादेव- कृतटीकायाः मङ्गलं पुष्पिका च । |
| ११०९४४० | १२ | ५१ | " | " | | " | गुणप्रकरणस्य । |
| १००५४३० | ८ | ५७ | " | " | | " | " |
| १००२४३१ | १२ | ६३ | " | " | | " | " |
| १०४४०४ | १२ | ४९ | " | " | | " | " |
| ११०९४४०६ | ६ | ५५ | " | " | | " | " |
| १००५४३०६ | १० | ५४ | " | " | | " | " |
| १२०९४४०८ | ९ | ४६ | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणादीश्वरवादान्ता । |
| १००९४४०२ | ११ | ३० | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणादिसिद्धान्तलक्षण- प्रकरणांशा । |
| ९०४४०१ | ११ | ४८ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९०३४३०८ | ११ | २२ | " | " | | " | |
| ११०८४४०६ | ९ | ४२ | दे. ना. | " | | पू० | |
| ९०६४४०१ | ८ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १००८४३०६ | ८ | ५० | " | " | | " | द्रव्यप्रकरणस्य । |
| ११०६४४०७ | १३ | ४६ | " | " | | पू० | मङ्गलवादस्त्व । |
| ११०९४३०९ | ११ | ५८ | " | " | १६४० | " | प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादात्सर्विकल्प- कवादान्तः । |
| ११०३४४०९ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणाद्व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|-------------------------|--|
| ३३०३५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ३-१६, २७-४० । |
| ३३०३६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-९१, ९१-१०५ । |
| ३३०३७ | आख्यातशक्तिवादटिप्पणी | | २-३० । |
| ३३०३८ | तत्त्व०मण्यालोकटीका | | ३-१७ । |
| ३३०३९ | तत्त्व०मण्यालोकरहस्यम् | | २-१०१, १०७, ११५-१३९, १४१ । |
| ३३०४० | " | | २-१३, १६-५९, ७०-७२, ७७-११५, ११७-१२६, १२६-१६०, १६२ । |
| ३३०४१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १३५ । (गणनया) |
| ३३०४२ | " | " | १, ३-४, ६-३३, ६१-८४ । |
| ३३०४३ | " | " | २-३१ । |
| ३३०४४ | आत्मतत्त्वविवेक- भावोद्भावः | रघुनाथशिरोमणिः | १-२२६ । |
| ३३०४५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २-४ । |
| ३३०४६ | तत्त्व०मण्यालोकरहस्यम् | मथुरानाथतर्कवा- गीशः | १-५, ८-१९ । |
| ३३०४७ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाश- सर्वोपकारिणी | महादेवः | १-३९, ३०-९१ । |
| ३३०४८ | पदार्थचन्द्रिकाटीका | | २-४२, ४४-४५ । |
| ३३०४९ | लक्षणावली | उदयनाचार्यः | १-३ । |
| ३३०५० | लक्षणावलीप्रकाशः | महादेवः | १-१३ । |
| ३३०५१ | न्यायलीलावती | वल्लभाचार्यः | १-४६ । |
| ३३०५२ | " | " | ६-२४, १, ५८-६६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| ९०८४३०७ | १० | ४१ | दे.ना. | का. | | अपू० | सिद्ध्यन्तलक्षणप्रकरणादुपाधि- वादांशा । |
| १००९४४०६ | १३ | ५५ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद्व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| १००८४४०७ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| १००१४४०१ | ११ | ४६ | " | " | | " | प्रत्यक्षे उत्पत्तिवादप्रकरणस्य । |
| १००३४३०६ | ९ | ५४ | " | " | | " | शब्दाप्रामाण्यवादाकांक्षावाद- प्रकरणयोः । |
| १००९४३०९ | १० | ६२ | " | " | | " | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणांशादासत्ति- वादांशम् । |
| ११०४४३०६ | १३ | ५५ | वङ्ग. | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशाद्व्याप्तिपञ्चक- प्रकरणांशा । |
| ९०४४४०१ | १२ | ४१ | दे.ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद्व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| १००२४४०३ | १२ | ४८ | " | " | | " | व्यधिकरणव्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणयोः । |
| १००३४४०६ | ८ | २८ | वङ्ग. | " | श. १७९७ | पू० | |
| १००२४४०३ | १४ | ४८ | दे.ना. | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०४४०७ | १५ | ४३ | " | " | | " | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १००१४४०३ | १३ | ३७ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणाद्व्यतिरेकिप्रकरणान्ता । |
| १००५४३०५ | ११ | ४४ | " | " | | " | सप्तपदार्थटी. टी. । |
| ५०३४८०८ | १९ | ४० | " | " | | पू० | |
| १००९४४०४ | १३ | ५२ | " | " | | " | |
| १००८४४०३ | ८ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| ९०९४४०३ | ११ | ५० | " | " | | " | सङ्ख्यानिरूपणप्रकरणांशा । पृथिवीनिरूपणांशात्संयोगनि- रूपणांशा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् : |
|------------|----------------------------------|---------------------------------|---|
| ३३०५३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | २८० । (गणनया) |
| ३३०५४ | किरणावली | उदयनाचार्यः | ३०-४१, ४३-४४ । |
| ३३०५५ | " | " | १-२७ । |
| ३३०५६ | " | " | १-३, ५-८, १०-१६, १७ । |
| ३३०५७ | गुणरहस्यम् | रामभद्रसार्वभौमः | २-१९ । |
| ३३०५८ | किरणावली | उदयनाचार्यः | १-१५१ । |
| ३३०५९ | " | " | ८-३९, ४२-६६ । |
| ३३०६० | किरणावलीप्रकाशदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-५९ । |
| ३३०६१ | " | " | २-७८ । |
| ३३०६२ | " | " | २-१९, २२-२८ । |
| ३३०६३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-८५, १-२९, २९-३७, २०-२२, २२-५८, ५८-२०५ । |
| ३३०६४ | " | " | १-१८ । |
| ३३०६५ | " | " | १-४८ । |
| ३३०६६ | सप्तपदार्थी | | १-६ । |
| ३३०६७ | न्यायनिबन्धप्रकाशः | वर्द्धमानः | ५१-५६ । |
| ३३०६८ | " | " | १-१०१, १-८६, २-१०९, १-२२ । |
| ३३०६९ | प्रशस्तपादभाष्यम् | | ५-१२ । |
| ३३०७० | तत्त्व०मणिः सदीधितिः | दी. का. रघुनाथः | १-३ । |
| ३३०७१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३०७२ | किरणावलीप्रकाशः विवृत्तिसहितः | वर्द्धमानः वि. का. रुचिदत्तः | १-६२ । |

| शतारः | पङ्क्ति- संख्या | श्लोक- संख्या | दिनाः | काः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- दिवसः | विशेषविपरगम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-----|----------|-----------------------|--|
| १०१५४३ | १९ | ९० | दि. ना. | का. | | अपूर्० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणादतएवच- तुष्ट्यप्रकरणान्ता । |
| १०१५४३९ | ९ | ४३ | " | " | | " | प्रशस्तपादभा. टी. । द्रव्यप्रकरणस्य । |
| १०१५४३ | १४ | ४६ | " | " | | " | गुणप्रकरणस्य । " |
| १०१५४३७ | ९ | ५२ | " | " | | " | " |
| १०१५४३४ | १४ | ४२ | " | " | | " | अत्र गुणभेदचित्ररूपादिविचारः । |
| १०१५४३७ | ७ | ३० | " | " | | पूर्० | प्रशस्तपादभा. टी. । द्रव्य- प्रकरणस्य । |
| १०१५४३३ | ८ | ३८ | " | " | | अपूर्० | प्रशस्तपादभा. टी. । द्रव्यप्रकरणांशा । |
| १०१५४३५ | ६ | ५० | " | " | | पूर्० | गुणप्रकरणस्य । |
| १०१५४३९ | ६ | ४९ | " | " | | अपूर्० | " |
| १०१५४३४ | ८ | ४० | " | " | | " | " |
| १०१५४३३ | ८ | ३३ | " | " | | " | पक्षतापरामर्शकियलान्वयिसामान्य- निरुक्तिप्रकरणानां, व्याप्तिपञ्चकमा- रभ्य सामान्यलक्षणाप्रकरणपर्यन्तस्य च । |
| १०१५४३९ | १० | ५८ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०१५४३२ | १० | ४१ | " | " | | " | " |
| १०१५४३७ | १० | ४० | " | " | | " | " |
| १०१५४३५ | १२ | ४० | " | " | | " | न्यायसूत्रटी. टी. टी. टी. टी. । |
| १०१५४३५ | ११ | ४५ | " | " | | " | कवीन्द्राचार्यसरस्वतीसङ्ग्रहस्थः । |
| १०१५४३३ | ८ | १९ | " | " | | " | " |
| १०१५४३८ | १४ | ५३ | " | " | | पूर्० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०१५४३३ | १७ | ५० | " | " | | अपूर्० | " |
| १०१५४३३ | १३ | ५० | " | " | १९७० | " | ३८ पृष्ठपर्यन्तं प्रकाशाख्यभागो वर्द्धमानरचितः, समाप्तिपर्यन्तं प्रका- शविद्युतिरूपो भागो रुचिदत्तरचितः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|-------------------------|--|
| ३३०७३ | पदार्थतत्त्वनिरूपणम् | रघुनाथशिरोमणिः | १-९ । |
| ३३०७४ | " | " | १-६ । |
| ३३०७५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | ९४ । (गणनया) |
| ३३०७६ | " | | १-६, १-५ । |
| ३३०७७ | शाब्दबोधविचारः | | ३ । (गणनया) |
| ३३०७८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १० । ,, |
| ३३०७९ | " | | १-३, ३ । |
| ३३०८० | " | | १७ । (गणनया) |
| ३३०८१ | " | | ७ । " |
| ३३०८२ | " | | १-४, १-७, १-९, १-२ । |
| ३३०८३ | " | | ४ । (गणनया) |
| ३३०८४ | किरणावलीप्रकाशदीधिति- रहस्यम् । | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-१४८ । |
| ३३०८५ | " | " | २-१२७ । |
| ३३०८६ | तत्त्वचिन्तामणिसारावली | सार्वभौमः | ४-१०२, १०१-१०६, १०९-११०, ११२, ११४-२०५ । |
| ३३०८७ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथः | ९६-१०५, १०७-१०९ । |
| ३३०८८ | " | " | ११-१५+२, १८-७७ । |
| ३३०८९ | " | " | २ । |
| ३३०९० | " | " | ४-३१, ४४-४७, ४९-५५, ५७, ५९, ६१, ६३, ६५, ६७-६९, ७१, ७३, ७५, ७९, ८१, ८३, ८५-८६, ८८, ९०, ९२, ९४-१०८ । |
| ३३०९१ | " | " | १-२, १५-३०, ३०-५२ + २ । |

| आकारः | परि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|----------------|------------------|---------|-------|----------|-----------------------|--|
| १०*६५५० | ७ | ४२ | दे. ना. | का. | १७५१ | पृ ० | |
| ९*४५३*८ | ८ | ५५ | " | " | | " | पदार्थखण्डनं वा । |
| १२*३५४*३ | १२ | ४८ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२*५५३*८ | १२ | ७४ | " | " | | पू० | नामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थान्यापक- विपयिताशून्यत्वकल्पस्यात्रवदन्ति- कल्पस्य च । |
| १२*७५३*९ | १२ | ६२ | " | " | | अपू० | चैत्रः पञ्चमीत्यत्र वैयाकरणमते । |
| १३*३५४*१ | १३ | ७७ | " | " | | " | बाधसामान्यनिरुक्तिप्रकरणयोः । |
| १२*६५४*१ | १२ | ७० | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १२*७५४ | १२ | ५७ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १३*३५४*१ | १२ | ६८ | " | " | | " | साधारणप्रकरणस्य । |
| १२*८५३*९ | १२ | ७८ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १२*७५४*१ | १४ | ५६ | " | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १०*४*६ | १३ | ३८ | वङ्ग. | " | | " | प्रश्नपादभा.टी.टी.टी.टी. । गुण- प्रकरणस्य । |
| १२*४५४*७ | ११ | ५७ | दे. ना. | " | | " | " |
| ११*५*३ | ८ | ६६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशाद्बाधकतासाध- कत्वप्रकरणांशा । |
| ११*४*३ | १२ | ३३ | " | " | | " | अनुपसंहारिप्रकरणांशाद् बाध- प्रकरणांशा |
| ८*५*३*२ | १० | ४२ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणांशात्परामर्श- प्रकरणांशा । |
| १५*२*५ | ५ | ८५ | वङ्ग. | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| ११*१*४ | ९ | ५२ | दे. ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशाद्बाधप्रकरणान्ता । |
| ८*८*३*४ | ८ | ३९ | " | " | | " | सव्यभिचारपरामर्शवियवप्रकरणानाम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|-------------------------|-------------------------------------|
| ३३०९२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | रघुपतिः | १-२८, ३०-९६, ९७-१०३, १०६-१०७ । |
| ३३०९३ | तत्त्वचिन्तामणिपरीक्षा | " | १-१६, १९-६४, ९४-९६, ९७-६०, ६०-१७१ । |
| ३३०९४ | तत्त्व०मण्यालोकटीका | महेशः | २-१०० । |
| ३३०९५ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पक्षधरः | ४६-२०० । |
| ३३०९६ | " | " | १-२३ । |
| ३३०९७ | " | " | ६-८ । |
| ३३०९८ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-७ । |
| ३३०९९ | " | " | २-१४, १७-१८ । |
| ३३१०० | " | " | १-१८ । |
| ३३१०१ | कार्यकारणभावविचारः | | १-४ । |
| ३३१०२ | लौकिकविषयताविचारः | | ४ । (गणनया) * |
| ३३१०३ | मुक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-११ । |
| ३३१०४ | तत्त्वचिन्तामणिः | | २-२८ । |
| ३३१०५ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | २-६ । |
| ३३१०६ | तत्त्व०मणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १ । |
| ३३१०७ | तत्त्वचिन्तामणिः रहस्यम् | मथुरानाथतर्कवा- गीशः | ८ । (गणनया) |
| ३३१०८ | " | " | १-२ । |
| ३३१०९ | " | " | १-२० । |
| ३३११० | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ३३१११ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | " | २० । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ११*५३*९ | ११ | ५४ | दे. ना. | का. | | अपू० | अनुमितिप्रकरणादवयवप्रकरणान्ता । |
| ११*३*३ | ९ | ४४ | " | | १९४४ | " | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणाच्छक्ति- वादान्ता । |
| १०*४*४*५ | १३ | ४४ | " | " | | " | प्रत्यक्षे मङ्गलवादप्रामाण्यवाद- प्रकरणयोः । |
| ९*५*४*२ | १० | ३४ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणांशान्निधिविकल्प- कवादान्तः । |
| १०*३*२ | ९ | ४५ | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| ९*३*३ | ८ | ४० | " | " | | " | मङ्गलवादप्रकरणस्य । |
| ७*९*४ | ७ | ३० | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डांशा । |
| ८*३*७ | १० | ३२ | " | " | | " | " |
| १०*९*४*६ | १० | ३९ | " | " | १७५० | पू० | |
| १७*३*३*२ | ९ | ७८ | वङ्ग. | " | | " | अभावप्रत्यक्षप्रतियोगिज्ञानयोः । |
| १०*३*३*९ | ११ | ५० | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १५*८*२*४ | ८ | ६५ | वङ्ग. | " | | " | |
| १०*४*४*३ | १२ | ५२ | दे. ना. | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणांशात्प्रमाणलक्षण- प्रकरणांशः । |
| १७*५*३*१ | ८ | १०६ | वङ्ग. | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १५*३*२*७ | ८ | ७० | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १६*५*३*९ | १० | ८५ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १६*४*४*१ | ११ | ७५ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १७*४*३*२ | ८ | ८३ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायतर्कप्रकरणयोः । |
| १८*२*३*३ | ६ | ९४ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १७*४*३*३ | ८ | ११३ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणमारभ्यातएवचतुष्टय- पर्यन्ता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याचिवरणम् |
|------------|---------------------|------------------|-------------------|
| ३३११२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १७ । (गणनया) |
| ३३११३ | " | | १-८ । |
| ३३११४ | " | | २ । (गणनया) |
| ३३११५ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-५ । |
| ३३११६ | " | " | १-१० । |
| ३३११७ | " | " | १-५ । |
| ३३११८ | " | " | १-९ । |
| ३३११९ | " | " | १-५ । |
| ३३१२० | " | " | १-९ । |
| ३३१२१ | " | " | ५ । (गणनया) |
| ३३१२२ | " | " | १-७ । |
| ३३१२३ | " | " | १-७ । |
| ३३१२४ | " | " | १-१४ । |
| ३३१२५ | " | " | १-४ । |
| ३३१२६ | " | " | ५-९ । |
| ३३१२७ | " | " | १-१५ । |
| ३३१२८ | " | " | ४५ । (गणनया) |
| ३३१२९ | " | " | २४ । " |
| ३३१३० | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-८० । |
| ३३१३१ | " | " | १-१० । |
| ३३१३२ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३३१३३ | " | कालीशङ्करः | १ । |
| ३३१३४ | " | | १-४४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|-------------------------|---|
| १०*४×४*८ | १९ | ४३ | चङ्ग. | का. | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १८*२×३*९ | ९ | १०२ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १३*३×३*३ | १२ | ७८ | " | " | | " | " |
| १६*५×४*१ | १० | १०७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १८*४×३*९ | ८ | ८३ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १६*५×४*१ | ९ | ७५ | " | " | | " | " |
| १८*४×३*७ | ८ | ८४ | " | " | | " | " |
| १८*२×३*६ | ८ | ७१ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १६*३×४ | १२ | ६९ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याम्रलक्षण- प्रकरणयोः । |
| १८*५×३*३ | ९ | १०९ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १८*१×३*७ | ८ | ७८ | " | " | | " | " |
| १८*३×३*६ | ९ | ८५ | " | " | | पू० | " |
| १८*४×४ | ९ | ८४ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिसव्यभिचार- प्रकरणयोः । |
| १४*६×३*५ | ७ | ६८ | " | " | | " | " |
| १७*९×३*२ | ७ | १०० | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १६*९×३*४ | ७ | १२१ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १८*५×३*४ | ८ | १०० | " | " | | " | सामान्यलक्षणापरामर्शप्रकरणयोः । |
| १६*७×३*३ | ६ | ६१ | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १८*१×३*७ | ८ | ९६ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १७×३*६ | ८ | ८१ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १२*८×४*८ | १३ | ६४ | दे.ना. | " | | " | संशयपक्षतायाः । |
| १२*१०×४*९ | ११ | ५८ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १३*५×५ | ९ | ५७ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-------------------------|-------------------|
| ३३१३० | गदाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३२, ३६-३९ । |
| ३३१३६ | " | | १-१९ । |
| ३३१३७ | " | | १-१९ । |
| ३३१३८ | " | | १०-१३ । |
| ३३१३९ | " | | ६-७ । |
| ३३१४० | " | कालीशङ्करः | २ । (गणनया) |
| ३३१४१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-६, ८-२८ । |
| ३३१४२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ६ । (गणनया) |
| ३३१४३ | तत्त्व०मणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १ । |
| ३३१४४ | " | " | १-१२ । |
| ३३१४५ | " | " | १-३ । |
| ३३१४६ | " | " | १-२ । |
| ३३१४७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१९ । |
| ३३१४८ | " | | ९९ । (गणनया) |
| ३३१४९ | " | | ९ । " |
| ३३१५० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-३२ । |
| ३३१५१ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | २-३६ । |
| ३३१५२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | " | १-३२ । |
| ३३१५३ | " | " | १-८ । |
| ३३१५४ | " | " | १-७ । |
| ३३१५५ | " | " | १-९ । |
| ३३१५६ | " | | १-२३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|--|
| १३×५४ | १३ | ५६ | वङ्ग. | का. | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४×७×३०५ | ८ | ८३ | " | " | | पू० | " |
| ९०४×४ | १० | ३० | दे. ना. | " | | अपू० | " |
| १८०७×३०९ | १० | ६९ | वङ्ग. | " | | " | " |
| १३०२×३०८ | १४ | ७१ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थात्रवदन्ति- कल्पस्य । |
| १५०२×३०४ | ९ | ८५ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १५०१×४०४ | १२ | ६८ | दे. ना. | " | | " | " |
| १५०५×३०६ | ६ | ६८ | वङ्ग. | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १६०७×३०६ | ११ | १०० | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १७०२×३०२ | ८ | ९१ | " | " | | पू० | " |
| १६०६×३०८ | ८ | ६८ | " | " | | अपू० | सामान्याभावविशेषव्याप्तिप्रकरणयोः । |
| १८०५×४०१ | ८ | ९३ | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १८०८×३०२ | ६ | ९० | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४०५×३०१ | ७ | ६२ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १६०३×३०६ | १२ | ६६ | " | " | | " | " |
| १२०४×३०८ | ८ | ५९ | दे. ना. | " | | " | " |
| ९०८×३०६ | १० | ३८ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १८०२×३०६ | ८ | ९६ | वङ्ग. | " | | पू० | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १८०५×४०१ | ८ | ८६ | " | " | | " | सामान्याभावप्रकरणस्य । |
| १६०४×४ | ८ | ८१ | " | " | | अपू० | " |
| १८०२×३०७ | ८ | ८७ | " | " | | " | " अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य च । |
| १७०४×२०३ | ७ | ८६ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|------------------|---------------------|
| ३३१५७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२२ । |
| ३३१५८ | " | " | १-२५ । |
| ३३१५९ | " | " | १-१० । |
| ३३१६० | गादाधरीकोडपत्रम् | | १-१६ । |
| ३३१६१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-५ । |
| ३३१६२ | " | " | ५५ । (गणनया) |
| ३३१६३ | " | " | १-४३ । |
| ३३१६४ | " | " | १-७ । |
| ३३१६५ | " | " | १-३० । |
| ३३१६६ | " | " | १-१० । |
| ३३१६७ | " | " | १ । |
| ३३१६८ | मणिसारः | | ३-८७ । |
| ३३१६९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठः | १-५४ । |
| ३३१७० | " | " | १-४५ । |
| ३३१७१ | तर्कप्रकाशः | | ५-१०१ । |
| ३३१७२ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीप्रकाशः | | २-४७ । |
| ३३१७३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीभास्कर | भास्करः | ३-१०, १५-२३ । |
| ३३१७४ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीसारः | यादवः | १-४७, (=४८) ४९-९८ । |
| ३३१७५ | " | " | १-११, १३-३८ । |
| ३३१७६ | " | " | १-३८ । |
| ३३१७७ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १८°५×४°१ | ८ | ९३ | वङ्ग. | का. | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १८°२×३°७ | ८ | ९४ | " | " | | " | " |
| १७°७×३°४ | ९ | ७६ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याघ्रलक्षण- प्रकरणयोः । |
| १२°४×३°७ | ८ | ५६ | दे. ना. | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्थविभाजक- लक्षणस्य । |
| १०°३×४°५ | १३ | ५५ | " | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्थोदाहरणलक्षणस्य । |
| १२°४×४ | ९ | ४४ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १४×४°४ | ९ | ४४ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १८°२×३°५ | ७ | ८४ | वङ्ग. | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १८°१×३°६ | ८ | ९२ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७°५×३°४ | ८ | ८६ | " | " | | अपू० | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्य । |
| १७°४×३°४ | ९ | ८८ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| ९°४×३°१ | ५ | ३२ | दे. ना. | " | | " | तत्त्व०मणि.टी. । अनुमाने उपाधि- पक्षतापरामर्शवयवप्रकरणानाम् । |
| १०°२×४°३ | ११ | ३६ | " | " | | पू० | अनुमानपरिच्छेदस्य । |
| १०°२×४°३ | १० | ३५ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ९°८×४°४ | १० | ३९ | " | " | | अपू० | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका । शब्द- खण्डस्य । |
| ८°८×४ | १० | ३१ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ८°४×४ | ९ | ३० | " | " | | " | " |
| ९°१×३°८ | १० | ४९ | " | " | | पू०* | उपमानपरिच्छेदस्य । |
| ९°१×३°८ | १० | ४५ | " | " | | अपू० | अनुमानपरिच्छेदस्य । |
| ९°१×३°८ | ११ | ३३ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ९°८×३ | ८ | ४६ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणात्पक्षताप्रकरणान्तः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|--------------|---------------------------|
| ३३१७८ | तत्त्वचिन्तामणिः | | २-१४, १६ । |
| ३३१७९ | " | | १-१६, १८-१४७ । |
| ३३१८० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | प्रगल्भः | ३९-१०४ । |
| ३३१८१ | न्यायसूत्रोद्धारः | वाचस्पतिः | १-१२ । |
| ३३१८२ | न्यायसूत्रम् | | ९-१७, १७ । |
| ३३१८३ | " | गौतमः | १-१२ । |
| ३३१८४ | " | " | १-८ । |
| ३३१८५ | न्यायभाष्यम् | वात्स्यायनः | १-५६, ५८-११२ । |
| ३३१८६ | " | " | १-११० । |
| ३३१८७ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-६ । |
| ३३१८८ | " | " | ६-९, ११-१२, १७-३६ । |
| ३३१८९ | न्यायरहस्यम् | रामभद्रः | १-१६६ । |
| ३३१९० | " | " | १६८ । |
| ३३१९१ | न्यायनिबन्धप्रकाशः | वर्द्धमानः | १-७१ । |
| ३३१९२ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-५, ७-११, १३-१८, २४-३९ । |
| ३३१९३ | न्यायसारः | राघवभट्टः | २-३२, ४२ । |
| ३३१९४ | न्यायकुसुमाञ्जल्यामोदः | शङ्करमिश्रः | १-३३, ३३-११६ । |
| ३३१९५ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | जयरामः | १-१६ । |
| ३३१९६ | " | " | १-१६, १६-२७, २७-५० । |
| ३३१९७ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-१२ । |
| ३३१९८ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | रघुदेवः | १-३१ । |
| ३३१९९ | " | " | २-३३ । |

| आचारः | पक्ष- संख्या | वश- संख्या | तिथिः | आचारः | तिथिकालः | पूर्वापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|-----------------|---------------|---------|-------|-----------|------------------------|---|
| ११४:०९ | ८ | ३९ | दे. ना. | का. | | अपू० | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवाद- प्रकरणस्य । |
| १००७४३:५ | ११ | ३९ | " | " | | " | " |
| १००६४३:३ | ८ | ४७ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डे प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १००४०:४ | १२ | ३८ | " | " | | पू० | |
| ७००४३:९ | ११ | ३० | " | " | | अपू० | |
| १३६४५:३ | १० | ५४ | " | " | | पू० | |
| १०४४३:९ | १२ | ५२ | " | " | | " | |
| १२३४४:२ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| ११३४४:९ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ८०८४३:९ | ११ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| ८०८४३:२ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| ११२४२ | १० | ४६ | " | " | | पू० | न्यायसूत्रटीका । |
| १०५४४:३ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | " |
| ११७४३:० | १० | ३० | " | " | ल.सं. ३५५ | पू० | (४अ०)न्यायसूत्रटी०टी०टी०टी०टी० । |
| १००४४४:३ | ८ | २६ | " | " | | अपू० | |
| ८०९४३:७ | १२ | ४२ | " | " | | " | |
| ११४३:७ | ९ | ५५ | " | " | | पू० | |
| ११४४:९ | १२ | ४२ | " | " | | अपू० | प्रथमाध्यायात्पञ्चमाध्यायांशा । |
| १०६४४:२ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | |
| ८४३ | ७ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ८०८४४ | ११ | २९ | " | " | | " | प्रथमाध्यायाच्चतुर्थाध्यायांशा । |
| १००८४४:७ | १९ | ४८ | " | " | १७३९ | " | प्रथमाध्यायांशात्पञ्चमाध्यायान्ता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------------|-------------------------|--------------------------------------|
| ३३२०० | आत्मतत्त्वविवेककल्पलता | शङ्करमिश्रः | १-४० । |
| ३३२०१ | " | " | २२-६६, ६६-९७ । |
| ३३२०२ | आत्मतत्त्वविवेकः | उदयनाचार्यः | १-६३ । |
| ३३२०३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथ- चूडामणिः | १९-२०, २३-३३ । |
| ३३२०४ | " | " | १-३२ । |
| ३३२०५ | " | " | १२-१७, २०-३७ । |
| ३३२०६ | " | " | १-२६ । |
| ३३२०७ | " | " | १-३४ । |
| ३३२०८ | " | भट्टाचार्य- चूडामणिः | १-१२ । |
| ३३२०९ | " | " | १-४ । |
| ३३२१० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | प्रगल्भः | १-१३८, १४०-१४९, १५२-१७० । |
| ३३२११ | न्यायसिद्धान्तदीपटीका | विश्वनाथः | १३-१७, १९-२७ (+२) ३८-४८, ६३, ६६-७१ । |
| ३३२१२ | " | " | ३-३० । |
| ३३२१३ | न्यायसिद्धान्तदीपप्रभा | शेषानन्तः | १-९०, ९२-१३४ । |
| ३३२१४ | न्यायसिद्धान्तदीपकोमला | विश्वनाथः | १-१३२ । |
| ३३२१५ | " | " | २०-४३ । |
| ३३२१६ | न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकाश- प्रकाशिका | मेघभगीरथः | १-८, १०-१२६ । |
| ३३२१७ | न्यायनिबन्धप्रकाशः | वर्द्धमानः | १ । |
| ३३२१८ | " | " | १ । |
| ३३२१९ | न्यायसूत्रोद्धारः | अभिनववाचस्पतिः | १-१७ । |
| ३३२२० | न्यायपरिशिष्टम् | | ४१ । (गणनया) |
| ३३२२१ | तत्त्वचिन्तामणिसारः | गोपीनाथः | ३३ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | आशयः | लिपिकालः | पूर्णार्थ- विवेकः | विशेषविषयम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|------|----------|----------------------|---|
| ११×३० | १० | ५६ | दे.जा. | का. | | अपू० | |
| १००९×४०५ | ९ | ५२ | " | " | | " | |
| १००९×४०५ | ९ | ४४ | " | " | | पू० | |
| ९×३० | १० | ३७ | " | " | | अपू० | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| १००२×४०३ | १२ | ३९ | " | " | | पू० | " |
| १००९×५०४ | ९ | ३२ | " | " | १८२४ | अपू० | अनुमानपरिच्छेदस्य । |
| ९०१×३०९ | ११ | ३८ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदाच्छब्दपरिच्छेदांशा । |
| १००३×४०५ | १३ | ४९ | " | " | | " | उपमानशब्दपरिच्छेदयोः । |
| ९०१×४०२ | १२ | ४९ | " | " | | " | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| ९०३×४०१ | १० | ४३ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १००१×५०३ | ११ | ३५ | " | " | | " | प्रत्यक्षे मङ्गलवादप्रामाण्यवाद- प्रकरणयोः । |
| १००४×३०५ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| १००३०७ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| १००१×४०३ | १५ | ५२ | " | " | | " | |
| ९०९×३०२ | ८ | ४६ | " | " | | " | |
| १००१×३०८ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ११×४०६ | १० | ४९ | " | " | | " | जलद इत्यपि नामान्तरम् । |
| १००२×३०५ | १० | ४३ | वङ्ग. | " | | " | न्यायसूत्र टी०टी०टी०टी०टी० । |
| ९०६×३०५ | १० | ४२ | " | " | | " | " |
| ९०९×४०३ | ९ | ३७ | मै. | " | | पू० | |
| १००६×३०३ | ८ | ६१ | वङ्ग. | " | | अपू० | न्यायसूत्रटीका । |
| ११०५×३०३ | १० | ५४ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|-------------------|---|
| ३३२२२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-२१, १२-४३, ५४-५७ । |
| ३३२२३ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | महेशः | २-३, ५-५२, ५२-१५९, १६१-१८०, १८०-२१६, २१८-२४८, २४८-२६७, २६९-३००, ३००-३०७ । |
| ३३२२४ | " | गदाधरः | २-१५८, १६०-१६५ । |
| ३३२२५ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवमिश्रः | २-१६५ । |
| ३३२२६ | " | " | १३-८९+१ ९०-१०२ । |
| ३३२२७ | " | " | १-१२८ । |
| ३३२२८ | " | " | १-४८ । |
| ३३२२९ | " | " | १८८ । |
| ३३२३० | " | " | १-५९ । |
| ३३२३१ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | हरिदासभट्टाचार्यः | १-३५ । |
| ३३२३२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-४८, ४८-१९६ । |
| ३३२३३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | रघुनाथः | १-१०१ । |
| ३३२३४ | तत्त्वचिन्तामणिदीपनी | कृष्णकान्तः | १-३१ । |
| ३३२३५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | " | १-४ । |
| ३३२३६ | " | " | ३-४ । |
| ३३२३७ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | पक्षधरः | १-१२, १४-१९, २१-३२, ३४-३५, ३५-३८, ४६, ४८-७२ । |
| ३३२३८ | " | प्रगल्भः | १-१२ । |
| ३३२३९ | " | " | १-३३, ३९-१७४, १७४-२०८ । |
| ३३२४० | " | पक्षधरः | १-४८, ५२-६० । |
| ३३२४१ | तत्त्वचिन्तामणिः | " | २-१६, १८-१९ । |

| आधारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम्. |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| १००९×४०८ | ११ | ४२ | वङ्ग | का. | | अपू० | अनुमितिप्रकरणात्सामान्यलक्षणा- प्रकरणांशा । |
| १००८×३०७ | ७ | ४८ | दे. ना. | " | | " | प्रत्यक्षे मङ्गलवादान्निर्विकल्पकवादांशा । |
| १२०९×४०९ | ८ | ५४ | वङ्ग | " | | " | प्रत्यक्षे प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १२०७×३०२ | ७ | ५३ | दे. ना. | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ९०२×३०४ | १० | ४३ | " | " | | " | अनुमाने अर्थापत्तिपरामर्शप्रकरणयोः । |
| ११०८×२०७ | ९ | ५९ | " | " | | " | प्रत्यक्षे मङ्गलवादान्निर्विकल्पकवादान्तः । |
| १००८×३०१ | ८ | ४५ | " | " | | " | शब्दखण्डेशब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ११०४×३०५ | ६ | ४७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद्वाधप्रकरणान्तः । |
| १००२×३०९ | १० | ४० | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १२×३०८ | ८ | ५२ | वङ्ग | " | १७५८ शकः | पू० | |
| १२०९×४०७ | ११ | ७१ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणाद्वैत्वाभास- प्रकरणान्तम् । |
| १००५×४ | १२ | ३७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद् व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| १७०८×४०५ | ९ | ७१ | " | " | १७३५ शकः | पू० | उपमानखण्डस्य । |
| १००४×४०३ | १० | ३६ | दे. ना. | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १००७×३०९ | ८ | ३६ | " | " | | " | " |
| ८०७×३०५ | १० | ३२ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १००३×३ | ७ | ४८ | " | " | | " | " |
| १००४ × ४ | १३ | ४९ | " | " | | " | अनुमानोपमानपरिच्छेदयोः । |
| ९×३०८ | १२ | ३८ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ९०८×४०५ | १० | २३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशादुपाधिप्रकरणांशः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|---------------|----------------------------|
| ३३२४२ | तत्त्वचिन्तामणिः | | २-९३ । |
| ३३२४३ | " | | १४-४१ । |
| ३३२४४ | न्यायभाष्यम् | वात्स्यायनः | १-२० । |
| ३३२४५ | " | | ६-१४ । |
| ३३२४६ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठशर्मा | १-९५+१, क-भ । (१२० गणनया) |
| ३३२४७ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १, ३, ६-७, ९-१९ । |
| ३३२४८ | " | " | १-२, ४-५, ७ । |
| ३३२४९ | " | " | १-१३ । |
| ३३२५० | " | " | १-९ । |
| ३३२५१ | " | " | १-७ । |
| ३३२५२ | " | " | ९ । (गणनया) |
| ३३२५३ | " | " | १, ४-७, ९-१४, २५-२६ । |
| ३३२५४ | " | " | ४-१० । |
| ३३२५५ | " | भट्टचूडामणिः | १-६, १-५+२, १६-२०, २२-२३ । |
| ३३२५६ | " | जानकीनाथः | १-१० । |
| ३३२५७ | " | " | ३ । (गणनया) |
| ३३२५८ | " | भट्टचूडामणिः | १०-३४ । |
| ३३२५९ | " | " | २-३ । |
| ३३२६० | " | " | १-२४ । |
| ३३२६१ | " | " | २-५, ७-१२, १४-१८ । |
| ३३२६२ | " | जानकीनाथः | १-१० । |
| ३३२६३ | " | " | १-२, १३-४६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ११३×४६ | ८ | ५० | दे. ना. | का. | | अपू० | प्रत्यक्षे मङ्गलवादप्रकरणांशात्सविक- ल्पकवादप्रकरणांशः । |
| १०२×४३ | १५ | ५५ | " | " | | " | अनुमाने उपाधिप्रकरणांशाद्- विरुद्धप्रकरणांशः । |
| १०४×३ | ७ | ४१ | " | " | १५९२ | पू० | पञ्चमाध्यायमात्रम् । |
| ११०×५ | १२ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १०३×४४ | १२ | ४२ | " | " | श. १७०८ | " | शब्दखण्डस्य, तर्कप्रकाश इति- नामान्तरम् । |
| १०७×४५ | ९ | ३५ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ९×३८ | ११ | ३५ | " | " | | " | " |
| ९७×४३ | ९ | ३५ | " | " | | " | " |
| ८९×३८ | ९ | ३४ | " | " | | पू० | " |
| ८९×३८ | १० | ४० | " | " | १८१२ | अपू० | अनुमानोपमानपरिच्छेदयोः । |
| १०५×३७ | १० | ३४ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ८९×३८ | ११ | ३६ | " | " | | " | प्रत्यक्षानुमानपरिच्छेदयोः । |
| १०×४४ | १५ | ६० | " | " | | " | उपमानशब्दपरिच्छेदयोः । |
| ९×४१ | १४ | ३५ | " | " | | " | अनुमानोपमानशब्दपरिच्छेदानाम् । |
| ९५×३६ | ८ | ३९ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ९×४१ | ८ | ३२ | " | " | | " | " |
| १२५×४२ | ९ | ४५ | " | " | | " | अनुमानपरिच्छेदस्य । |
| १०६×४५ | ६ | ३६ | " | " | | " | उपमानपरिच्छेदस्य । |
| ९३×४१ | १० | ४१ | " | " | | " | उपमानशब्दपरिच्छेदयोः । |
| १०८×४४ | १० | ४५ | " | " | | " | " |
| ८६×३४ | ५ | २९ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ८६×३७ | ९ | ३७ | " | " | | " | प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दपरिच्छे- दानाम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|-----------------|--|
| ३३२६४ | न्यायरत्नम् | मणिकण्ठः | १-६६, ७८ । |
| ३३२६५ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-८ । |
| ३३२६६ | तत्त्वमण्यालोककण्ठ- कोद्धारः | मधुसूदनठक्कुरः | १-१२, १४-७९, २-७२ । |
| ३३२६७ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | २-४, ६-७, ७-२३ । |
| ३३२६८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीविवृतिः | केशवः | १-४०, ४२-४४, ४७-४८, ५०-५४, ५६-७९ ८१-८२, ८५-९५, ९७ । |
| ३३२६९ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | २-८७ । |
| ३३२७० | ” | ” | १३५ । (गणनया) |
| ३३२७१ | ” | ” | ७-२५ । |
| ३३२७२ | योगरूढिविचारः | | १-२ । |
| ३३२७३ | नवर्थविचारः | | १-६ । |
| ३३२७४ | क्त्वाप्रत्ययवादः | | १, १-२ । |
| ३३२७५ | त्वङ्मनोयोगवादः | | १ । |
| ३३२७६ | आत्ममनोयोगवादः | | १ । |
| ३३२७७ | शरीरहेतुतावादः | | १ । |
| ३३२७८ | शरीरकारणतावादः | | १-३ । |
| ३३२७९ | विष्णुप्रीतिकामनापदविचारः | | १ । |
| ३३२८० | सन्ध्यावन्दनविचारः | | १ । |
| ३३२८१ | प्रतियोगिज्ञानवादः | | १-४ । |
| ३३२८२ | क्रियासंयोगवादः | | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|--|
| १०*१x२*९ | ६ | ३८ | दे. ना. | का. | | अपूर्० | अनुमाननिरूपणात्मकम् । |
| १०*७x३*४ | ८ | ४६ | " | " | | " | मङ्गलवादप्रकरणम् । |
| ९*४x३*९ | १० | ४६ | " | " | १६६७ | " | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| १२*२x४*६ | ११ | ५१ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणम् । |
| ८*८x३*४ | १४ | ४९ | " | " | | " | प्रत्यक्षमारभ्य शब्दपरिच्छेदान्ता । |
| १०*२x४*१ | १२ | ३९ | " | " | | " | अनुमानखण्डान्तर्गतव्यधिकरणप्रक- रणमारभ्येश्वरसिद्धिपर्यन्तः । |
| ८*५x२*५ | ८ | ३३ | " | " | | " | |
| ९*६x३*४ | १० | ३५ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणांशात्पक्षता- प्रकरणांशः । |
| १८*४x४*२ | ९ | ७३ | वङ्ग | " | | पूर्० | |
| १३*५x३*१ | ६ | ५१ | " | " | | " | |
| १८*५x४*४ | १० | ७० | " | " | | " | सापेक्षवादश्च । |
| १८*४x४*३ | १० | ७४ | " | " | | " | जन्यज्ञानत्वङ्मनःसंयोगयोः कार्य- कारणभावविचारात्मकः । |
| १८*१x४*२ | १० | ७३ | " | " | | " | ज्ञानात्ममनोयोगादेः कार्यकारण- भावविचारात्मकः । |
| १८x४*२ | ११ | ८३ | " | " | | " | शरीरज्ञानयोः कार्यकारणभाववि- चारात्मकः । |
| १८*६x४*२ | १० | ९८ | " | " | | " | आत्ममनोयोग-त्वङ्मनोयोगवाद्वा । |
| १८*८x३*१ | ८ | ९८ | " | " | | " | |
| १८*७x३*१ | ८ | ११० | " | " | | " | |
| १८*४x४*२ | १० | ८९ | " | " | | " | अभावप्रतियोगिज्ञानयोः कार्यकार- णभावविचारात्मकः । |
| १७*६x४*२ | ८ | ६३ | " | " | | " | क्रियासंयोगयोः कार्यकारणभाववि- चारात्मकः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|---------------------------|-------------------------|
| ३३२८३ | प्रामाण्यवादः | | १-१११- |
| ३३२८४ | प्रतियोगिज्ञानवादः | | १-३ । |
| ३३२८५ | ज्ञानलक्षणावादः | | १-३ । |
| ३३२८६ | कारणतावादः | | १-२४ । |
| ३३२८७ | सामान्यलक्षणाविचारः | | १-९ । |
| ३३२८८ | कारणतावादः | | १०-१३ । |
| ३३२८९ | वाधविचारः | | १-२२ । |
| ३३२९० | लङ्घनवादादर्थः | | १ । |
| ३३२९१ | त्वङ्मनोयोगवादः | | १-७ । |
| ३३२९२ | आर्द्रेन्धनवादः | | १-१९ । |
| ३३२९३ | अहिलङ्घनवादः | | १ । |
| ३३२९४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २-८०, १५८-२१५ । |
| ३३२९५ | " | मथुरानाथतर्क- वागीशः | २-६०, ८१-२०३, २१६-२२९ । |
| ३३२९६ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २७, २९-८९, ९१-९९ । |
| ३३२९७ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | ८ । (गणनया) |
| ३३२९८ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-१२७, १२७-१६२ । |
| ३३२९९ | " | " | १-१६ । |
| ३३३०० | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीभाव- दीपिका | श्रीकृष्णन्याय- वागीशः | १-८ । |
| ३३३०१ | " | " | १-२७, १-३८ । |
| ३३३०२ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | " | ८-७२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १७०५४४२ | १० | ९१ | वङ्ग. | फा. | | पू० | |
| १८०३४४१ | ९ | ८१ | " | " | | अपू० | |
| १८०३४४२ | १० | ९१ | " | " | | " | |
| १८०२४४४ | १० | ९५ | " | " | | पू० | |
| १८०४४४३ | १० | ८३ | " | " | | " | चन्द्रभूतरूपविचारश्च । |
| १८०१४४३ | ८ | ८८ | " | " | | अपू० | अशौचान्तद्वितीयदिनयोगरूढिवादी च । |
| १८०१४४२ | ८ | ८४ | " | " | | " | |
| १८०७४३३ | ८ | ७४ | " | " | | पू० | |
| १८०३४४३ | १० | ८३ | " | " | | " | ज्ञानद्वयहेतुताविचारश्च । |
| १८०३४४३ | १० | ९० | " | " | | " | अत्रवह्निभूमयोः कार्यकारणभाववि- चारसदयश्च । |
| १८०१४४२ | १० | ६५ | " | " | | " | |
| १२०२४४६ | ८ | ५६ | " | " | | अपू० | शब्दस्रष्टव्य, दीधित्यालोकमाधुरी- भिन्नेयम् । |
| १२०४४४८ | ९ | ५७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्यवाधपर्यन्ता । |
| ९०३४३१ | ८ | ५७ | दे.ना. | " | | " | व्याप्तिवादस्य । |
| ९०९४२१ | ७ | ६१ | " | " | | " | व्याप्तिप्रक्षोपायमारभ्यसामान्यल- क्षणान्तः । |
| ९०८४२०८ | ७ | ५३ | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणमारभ्यवाधपर्यन्ता । |
| ९०७४२०८ | १० | ५५ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ९०४४३०६ | १० | ५४ | " | " | | " | अनुमानपरिच्छेदस्य । |
| १३०२४५ | १३ | ६४ | " | " | | पू० | |
| १००५४४५ | १७ | ४१ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदांशाच्छब्दपरिच्छे- दांशा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|--------------------------|--|
| ३३३०३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीसारः | यादवः | १-३१, ३१-३९ = (३६) ३७-४२, ४४-४६, ४६-८३ । |
| ३३३०४ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | शङ्करभट्टः | १-१९, २१-५२ । |
| ३३३०५ | न्यायनिबन्धप्रकाशः | वर्द्धमानः | १-२२ । |
| ३३३०६ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | २-९, ११-२२, २६-२७ । |
| ३३३०७ | तत्त्वमणिदीधितिटिप्पणी | जगदीशतर्कालङ्कारः | ११९ । (गणनया) |
| ३३३०८ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका सटीका | टी०का० नारायण- तीर्थः | १३-३८ । |
| ३३३०९ | तर्कभाषा | | १-८ । |
| ३३३१० | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यपरिशुद्धिः | | १-९६ । |
| ३३३११ | " | उदयनः | २-१३ । |
| ३३३१२ | " | | १-८८ । |
| ३३३१३ | तत्त्वमणिदीधितिगादा- धरीचिह्नितः | कृष्णभट्टः | २६७ । (गणनया) |
| ३३३१४ | तर्कदीपिका | केशवभट्टः | १-६९ । |
| ३३३१५ | तर्कभाषाटीका | नारायणः | १-२, ५-२१ । |
| ३३३१६ | " | गोवर्द्धनः | १० । (गणनया) |
| ३३३१७ | " | " | २-७, १२-५२ । |
| ३३३१८ | न्यायप्रदीपः | विश्वकर्मा | १, ३-४३ । |
| ३३३१९ | तत्त्वमणिदीधितिटिप्पणी | जगदीशः | १-२८ । |
| ३३३२० | तत्त्वचिन्तामणिटिप्पणी | | १-४ । |
| ३३३२१ | न्यायवार्त्तिकम् | | १-५१ । |
| ३३३२२ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-४९, ५६-१०३ । |
| ३३३२३ | मितभाषिणी | महादेवः | १-६५ । |
| ३३३२४ | न्यायसूत्रवृत्तिः | विश्वनाथः | १-२३ = (२४) २५-२६ । |

| आकारः | पक्षि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आमरः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विभक्तः | विशेषविवरणम् |
|--------|------------------|------------------|---------|------|----------|--------------------------|---|
| ११×४४ | ११ | ४७ | दे. ना. | का. | १७६३ | पू० | उपमानशब्दपरिच्छेदयोः । |
| १०२×४२ | १२ | ३२ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डादुपमानखण्डान्ता । |
| १०१×३१ | ८ | ७३ | चङ्ग. | " | | " | उपमानपरिच्छेदस्य, न्या०नि० टी० । |
| १३५×४१ | ९ | ४९ | दे. ना. | " | | " | |
| १०५×४६ | १२ | ३५ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| १२×५४ | १४ | ५३ | " | " | | " | तृ० च० पञ्चमस्तवकाः । |
| १३४×३२ | १९ | ७१ | " | " | | " | |
| १२१×५९ | ११ | ४९ | " | " | | " | १-२ अध्यायोः । |
| १११×४२ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ९५×४५ | ८ | ३२ | " | " | | " | तृ० सूत्रस्य । |
| १२६×४३ | ११ | ४६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशान् व्यधिकरणप्र- करणांशः । |
| ९६×४६ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | तर्कभाषा टी० । |
| ८२×३ | ९ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १०५×३४ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| १०×३३ | ८ | ५१ | " | " | | " | |
| १०३×४२ | १० | ४८ | " | " | | " | तर्कभाषा टी० । |
| १२१×४८ | १३ | ३४ | " | " | | " | मिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १३१×४३ | १५ | ४७ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकमिद्धान्तलक्षणप्रकरणयोः । |
| १२६×४८ | १२ | ५२ | " | " | | पू० | १ अध्यायः । |
| १२१×४८ | ११ | ५५ | " | " | | अपू० | सामान्याभावप्रकरणस्य । |
| १११×३५ | ८ | ४५ | " | " | | पू० | न्यायसूत्रवृत्तिः द्वितीयाध्यायान्ता । |
| १३२×५१ | ९ | ४२ | " | " | | अपू० | १ अध्यायः । |

| कनसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|----------|----------------------------|--|--|
| ३३३२५ | न्यायसूत्रवृत्तिः | | २-११, १-३ । |
| ३३३२६ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | | १-१७, १५-२०, २२-८८ । |
| ३३३२७ | मितभाषिणी | महादेवः | १-५, ५-१५, १५-२०, २०-३६ । |
| ३३३२८ | तर्कभाषाप्रकाशः | माधवदेवः | १-५० । |
| ३३३२९ | तर्कभाषाभावप्रकाशः | गोपीनाथः | १-३० । |
| ३३३३० | तत्त्वचिन्तामणिदीधिति-टीका | न्यायवाचस्पतिः- (विद्यानिवासपुत्रः) | १-४७, ४३-४५, ४०-४२, ४६-५२, ३-३२+२, १-१६, १८-३९, ३४ । |
| ३३३३१ | न्यायवार्त्तिकम् | | १-४४ । |
| ३३३३२ | " | उद्योतकरः | १-७४ । |
| ३३३३३ | " | | १-८१, ८३-९२+१ । |
| ३३३३४ | " | उद्योतकरः | १-२३ । |
| ३३३३५ | तर्कभाषाभावार्थदीपिका | गौरीकान्तः | १५९-१६९ । |
| ३३३३६ | " | " | १, ७-२९, ५०, ५२-६६ । |
| ३३३३७ | " | " | १-३, ५-१० । |
| ३३३३८ | तर्कभाषाटीका | | २-३०, ३२-८१, १०९-१५६ । |
| ३३३३९ | " | गौरीकान्तः | १३६-१४१ । |
| ३३३४० | " | " | ८३-१०४ । |
| ३३३४१ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १-४८ । |
| ३३३४२ | तर्कभाषाभावार्थदीपिका | गौरीकान्तः | २-५२ । |
| ३३३४३ | " | " | १-५२ ५४-६४, ६४-८४ (= ८५) ८६-८७ । |
| ३३३४४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | १-२३, २३-३३, ४७-४९, ४९-१२२, १३१- १६०, ६१-६२, १६३-२५६, २५६-२७४, २७४-२७५, २७५-२८६, २९०-३०१, ३०१-३६२ । |
| ३३३४५ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | " | १-३८, ३८-८२ । |

| वाकारः | पङ्क्ति- संख्या | शब्द- संख्या | लिपिः | अक्षर- संख्या | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|-----------------|---------|------------------|----------|-------------------------|---|
| १३०३४०१ | ७ | ४९ | दे. ना. | का. | | अपू० | पञ्चमाध्यायस्य । |
| १२०४४०७ | १२ | ४८ | " | " | | " | प्रथमाध्यायांशा । |
| ११०३४०५ | ७ | ४८ | " | " | | पू० | 'न्यायसूत्रवृत्तिः ४ अध्यायस्य । |
| १००४४०२ | ७ | २६ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षानुमानपरिच्छेदयोः । |
| १००४४०२ | १९ | ४२ | " | " | | पू० | न० भा० टी० । |
| १४४ | ११ | ३६ | " | " | | अपू० | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०४४०१ | १२ | ४२ | " | " | | पू० | १ अध्यायः । |
| १००४३०४ | ११ | ४८ | " | " | १६०० | " | २ " |
| १००४३०३ | ७ | ४४ | " | " | | अपू० | ३ " |
| १००४३०१ | ७ | ४३ | " | " | १५९२ | पू० | ५ " |
| ११०४४०९ | १७ | १९ | " | " | | अपू० | |
| १००४४०५ | १० | ३२ | " | " | | " | |
| ८०४३०६ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| १००४४०३ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| १००४४०२ | १२ | ४३ | " | " | | " | |
| ११०४४०६ | ११ | ५१ | " | " | | " | |
| १०४३०८ | ८ | ४१ | " | " | १८१८ | पू० | |
| १३०४४०१ | १० | ५३ | " | " | | अपू० | |
| १३०४४०१ | ९ | ४९ | " | " | | " | |
| १२०३४४ | ८ | ४६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरण।द्व्याप्तिवादांशा । |
| १२०४४०९ | ११ | ५२ | " | " | | " | पञ्चताप्रकरणांशार्थापत्तिप्रकरण- न्तम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-----------------|--------------------------|
| ३३३४६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | २-६२, ७८-१२८ । |
| ३३३४७ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठः | ३७-४७ । |
| ३३३४८ | " | | ३९-४३, ४५-६१ । |
| ३३३४९ | " | | २-६ । |
| ३३३५० | " | | ८-१६२ । |
| ३३३५१ | तत्त्वमणिदीधितिप्रकाश-टीका | महादेवः | ८८४ । (गणनया) |
| ३३३५२ | सिद्धान्ततत्त्वम् | | १-२१, २४-२७ । |
| ३३३५३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठः | १-२४ । |
| ३३३५४ | " | | १-५ । |
| ३३३५५ | " | श्रीकण्ठः | १-८१ । |
| ३३३५६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | २६२-३३१ । |
| ३३३५७ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | | १७-२४ । |
| ३३३५८ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १, ३-१२ । |
| ३३३५९ | " | | ४४-५७, ६०-८९ । |
| ३३३६० | " | | १-८, १०-१२ । |
| ३३३६१ | " | गङ्गेशोपाध्यायः | १-२, ४ ११, ११-१९, १-३६ । |
| ३३३६२ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | २-७४ । |
| ३३३६३ | " | " | १-११ । |
| ३३३६४ | " | " | २-२६ । |
| ३३३६५ | " | " | १-२२ । |
| ३३३६६ | " | " | २-२८ । |
| ३३३६७ | " | " | २-५३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | श्रीः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- यिकः | विशेषनियमः |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-----------------------|---|
| ११°८×४°९ | ९ | ३९ | दे.ना. | का. | | अपू० | अनुमितिप्रकरणांशादुपाधि- प्रकरणांशा । |
| १°२×४ | १९ | ४० | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य, तर्कप्रकाशो वा । |
| १×४ | ११ | ४१ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । " |
| ८°९×३°८ | १० | ३९ | " | " | | " | उपमानखण्डस्य । " |
| ९×३°६ | ११ | ४२ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । " |
| ११°३×४°९ | १३ | ४९ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । टी० टी० टी० । |
| ९°५×३°७ | ९ | ३९ | " | " | | " | शब्दपरिच्छेदः । |
| १०°९×४°२ | ११ | ४२ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । तर्कप्रकाशो वा । |
| ९°२×३°८ | ११ | ४९ | " | " | | " | अनुमानपरिच्छेदस्य । " |
| ९°६×४°१ | ११ | ४१ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षानुमानपरिच्छेदयोः । " |
| ११°१×४°३ | १० | ५० | " | " | | अपू० | शब्दखण्डे अपूर्ववादस्य । |
| ८°३×३°९ | ११ | ३३ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| ८°६×३°८ | १६ | ४० | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणे । |
| ११°९×३°९ | ७ | ५६ | " | " | | " | अन्यथाख्यातिसन्निकर्षवादप्रकरणे । |
| ९°८×३°३ | ७ | ५२ | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणे । |
| ९°८×४ | ९ | ३३ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदः । |
| ११°६×४°४ | १३ | ४७ | " | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| १३°४ | ९ | ४४ | " | " | | " | मङ्गलवादस्य । |
| १३×९ | ९ | ४४ | " | " | | " | परामर्शकेवलान्वयिप्रकरणयोः । |
| १२°७×४°९ | १२ | ५७ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १२°९×४°९ | १३ | ५७ | " | " | | " | उपाधिप्रकरणस्य । |
| १२°७×४°९ | १३ | ५७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणांशाद्वाध- प्रकरणांशा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|--------------------|-------------------|
| ३३३६८ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | १-४ । |
| ३३३६९ | " | " | २-६ । |
| ३३३७० | " | " | १ । |
| ३३३७१ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १६२४ । (गणनया) |
| ३३३७२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-४० । |
| ३३३७३ | किरणावलीप्रकाशप्रकाशिका | मेघभगीरथः | १, ३-१८ । |
| ३३३७४ | न्यायनिबन्धप्रकाशः | वर्द्धमानोपाध्यायः | २३-४३ । |
| ३३३७५ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिः | १८-३८, ४०-५६ । |
| ३३३७६ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | २-६६, ६६-६९ । |
| ३३३७७ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिः | २-५४, ५७, ५९-६० । |
| ३३३७८ | न्यायसूत्रोद्धारः | " | १-१५ । |
| ३३३७९ | लघुदीपिका | ज्ञानपूर्णः | १-४६ । |
| ३३३८० | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- विवेकः | गुणानन्दः | १-६६, ६६-१०५ । |
| ३३३८१ | अन्वीक्षानयतत्त्वबोधः | वर्द्धमानोपाध्यायः | १-११८ । |
| ३३३८२ | आत्मतत्त्वविवेकदीधिति- विवृतिः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-७८ । |
| ३३३८३ | " | " | २-२१ । |
| ३३३८४ | " | " | ३ । (गणनया) |
| ३३३८५ | न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकाशः | वर्द्धमानोपाध्यायः | १-५५, ५५-७६ । |
| ३३३८६ | आत्मतत्त्वविवेकदीधितिटीका | गुणानन्दः | १-२७ । |
| ३३३८७ | न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकाशः | वर्द्धमानोपाध्यायः | २-१३ । |
| ३३३८८ | न्यायकुसुमाञ्जलिबोधिनी | वरदराजः | १-८७ । |
| ३३३८९ | न्यायकुसुमाञ्जलिः | | ४७-४९, ५६-७१ । |
| ३३३९० | " | | २-२३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | अध्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|---|
| १२८४४९ | ८ | ३७ | दे. ना. | का. | | पू० | उपाधिवादस्य । |
| १३३४४२ | ९ | ५७ | " | " | | अपू० | विरुद्धप्रकरणस्य । |
| ११६४४२ | १३ | ६५ | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १३४४७ | ९ | ४२ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशाद्वाधप्रकरणांशा । |
| १६२४२३ | ५ | ८५ | वङ्ग. | " | १५७६ शकः | पू० | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| ११४३७ | ८ | ४७ | " | " | | अपू० | द्रव्यप्रकरणस्य । कि. टी. टी. । |
| १०४४३२ | ७ | ६४ | मै. | " | | " | " |
| १०५४३३ | ६ | ७२ | " | " | | " | तृतीयाध्यायस्य । |
| ८८४२२ | ५ | ३१ | दे. ना. | " | १६५४ | " | " |
| ९९४३६ | १० | ४२ | मै. | " | | " | तृतीयाध्यायस्य । |
| १६१४२५ | ५ | ७४ | वङ्ग. | " | | पू० | १-५ अध्यायाः |
| ११८४५ | १२ | ४२ | दे. ना. | " | | " | तार्किकरक्षाटीका । |
| ९६४३४ | १७ | ४४ | वङ्ग. | " | | अपू० | प्रथमस्तवकात्पञ्चमस्तवकांशः । |
| १३४५५ | १२ | ४० | मै. | " | | " | सौत्रपञ्चमाध्यायस्य । |
| १०४४४६ | १५ | ४७ | दे. ना. | " | | " | बौद्धधिकारशिरोमणिटीका वा (आ. त. टी. टी.) । |
| १३६४५१ | १६ | ५९ | वङ्ग. | " | | " | " |
| १७९४३९ | ८ | ६३ | " | " | | " | " |
| १०३४२९ | ६ | ३८ | दे. ना. | " | | " | प्रथमस्तवकात्तृतीयस्तवकांशः । |
| १३७४५ | १५ | ५२ | वङ्ग. | " | | " | बौद्धधिकारशिरोमणिटीका वा । |
| १०७४३३ | ७ | ५० | दे. ना. | " | | " | चतुर्थपरिच्छेदः । |
| ९३४४३ | १२ | ५० | " | " | | पू० | ३ परिच्छेदान्ता । |
| १०८४३७ | ७ | ३६ | " | " | | अपू० | चतुर्थस्तवकः । |
| १०५४२९ | ६ | ४७ | " | " | | " | प्रथमस्तवकः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|------------------|----------------------------------|
| ३३३९१ | न्यायकुसुमाञ्जलिः | | १-१४ । |
| ३३३९२ | " | उदयनाचार्यः | २-७, १४-१५, २१-२५, ३२ । |
| ३३३९३ | बाधबुद्धिविचारः | | २-१६ । |
| ३३३९४ | न्यायलीलावती | | १-३, ५-७ । |
| ३३३९५ | लक्षणावली | उदयनाचार्यः | १-५ । |
| ३३३९६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | २-३२ । |
| ३३३९७ | " | " | २-१००, १०२-३६७, ३८९-४४२ । |
| ३३३९८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | | १-४० । |
| ३३३९९ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-२३=(२३-२५) २६-५१, ५१-९८, १-२ । |
| ३३४०० | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवमिश्रः | १-५०, ५४-८९ । |
| ३३४०१ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-३७, ३९-९६, १२७-१४४ । |
| ३३४०२ | अपेक्षाबुद्धिविचारः | | १-२ । |
| ३३४०३ | अभावज्ञानप्रतियोगिज्ञान- कार्यकारणभावविचारः | | १-४ । |
| ३३४०४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | २७-३४१ । |
| ३३४०५ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | ५३७ । (गणनया) |
| ३३४०६ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी- तर्कप्रकाशः | श्रीकण्ठः | १-१० । |
| ३३४०७ | " | " | १-३५ । |
| ३३४०८ | " | | २-११, १४-५५ । |
| ३३४०९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १४-२८ । |
| ३३४१० | " | " | १-६५ । |
| ३३४११ | " | " | १-१९ । |
| ३३४१२ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-२१, २१-४८, ५०-६६ । |

| भाकारः | पङ्क्ति- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|--|
| ११×३०३ | ८ | ४६ | दे. ना. | का. | | अपू० | प्रथमस्तवकः । |
| १०×३०४ | ७ | ३७ | " | " | | " | " |
| १५×२०५ | ७ | ९५ | वङ्ग. | " | | " | |
| १५×२३ | ६ | ७१ | " | " | | " | |
| १३×५ | ९ | ५२ | मै० | " | | पू० | |
| १३×१५०९ | ९ | ५२ | दे. ना. | " | | अपू० | असिद्धिप्रकरणस्य । |
| १३×४०९ | ८ | ४८ | वङ्ग | " | | " | परामर्शप्रकरणाद् बाधप्रकरणांशः । |
| ९०९×३०३ | ९ | ४८ | दे. ना. | " | | " | मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| १००७×२०८ | ६ | ६६ | " | " | | " | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ११०५×३०८ | १० | ५८ | " | " | १६६४ | " | केवलव्यतिरेकिप्रकरणान्मुक्तिवादान्तः |
| ८०५×४ | १३ | ५२ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणात्सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य |
| ९०७×४०३ | २० | ६० | " | " | | पू० | |
| ९०८×४०३ | २० | ५५ | " | " | | " | |
| १२०७×४०९ | ९ | ४० | " | " | | अपू० | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ११×४०८ | १२ | ६० | " | " | | पू० | अनुमितिप्रकरणात्केवलान्वयि- प्रकरणान्ता । |
| ८×३०५ | ९ | २७ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ९०६×४०३ | ९ | ३६ | " | " | | " | " |
| १००१×४०४ | ९ | ३० | " | " | | " | " |
| ९०८×४०२ | ९ | ३२ | " | " | | " | अनुमानोपमानपरिच्छेदौ । |
| ८०८×३०३ | ९ | ३३ | " | " | १८४५ | पू० | |
| ९०६×४०५ | १२ | ४० | " | " | | " | उपमानपरिच्छेदः । |
| ११×४०८ | १३ | ६४ | " | " | | अपू० | केवलव्यतिरेक्यार्थापत्त्यवयव- प्रकरणानाम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|---------------------------------|-------------------------|
| ३३४१३ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटिप्पणी | हरिदासभट्टाचार्यः | २४-५० । |
| ३३४१४ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकसारः | भवानन्दः ६ | १-५३ । |
| ३३४१५ | तत्त्व०मण्यालोकरहस्यम् | मथुरानाथः | १-५१ । |
| ३३४१६ | " | " | १-३८, ३८-१५७ । |
| ३३४१७ | " | म०म०रघुपतिः | १, ४-१६६ । |
| ३३४१८ | तत्त्वःमण्यालोकटीका | गुणानन्दः | १-२, ४, ४-५३, ३३ । |
| ३३४१९ | तत्त्वःमण्यालोकसारसङ्ग्रहः | रघुपतिः | १-३८, ४०-११४, ११६-११९ । |
| ३३४२० | तत्त्वःमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १, ४-५४, ५६-२५४ । |
| ३३४२१ | वृषोत्सर्गवादः | | १ । |
| ३३४२२ | शब्दानित्यत्ववादः | रामभट्टसार्वभौम- भट्टाचार्यः | १-६ । |
| ३३४२३ | सापेक्षवादः | जगदीशभट्टाचार्यः | १-२ । |
| ३३४२४ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-५, ७-९, ११-४२ । |
| ३३४२५ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-१६ । |
| ३३४२६ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | मथुरानाथः | १-६ । |
| ३३४२७ | प्रशस्तपादभाष्यकिरणावली | उदयनाचार्यः | १-८२ । |
| ३३४२८ | लक्षणावली | " | १-४ । |
| ३३४२९ | आलोकोद्योतः | म०म०वाहिनीपतिः | १-४३, ४५-५२ । |
| ३३४३० | तत्त्वःमणिदीधितिप्रकाश- टीका | दिनकरः | १-१६ । |
| ३३४३१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३४३२ | एकत्वविचारः | | १ । |
| ३३४३३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | वाच्यः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|------------------------|--|
| ११२४४६ | १२ | ९० | दे.ना. | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १०३४३७ | ९ | ३६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद् सिंहव्याघ्र- लक्षणप्रकरणांशः । |
| १०९४४६ | १० | ४१ | " | " | | पू० | अन्यथाख्यातिप्रकरणस्य । |
| १११४४६ | ११ | ६२ | " | " | | अपू० | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०९४३८ | १२ | १६ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १११४४२ | १० | ४९ | " | " | | " | शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०९४३७ | १० | ४७ | " | " | | " | अवयवान्तः । |
| ११४४८ | १० | ५३ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०९४४३ | १० | ९२ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १०९४४३ | १० | ९४ | " | " | | " | योग्यानुपलब्धिवादः शिष्टलक्षणश्च । |
| १०९४४२ | १० | ९१ | " | " | | " | सादृश्यवादः जातिवाधकवादश्च । |
| ८९४४ | ८ | २४ | दे.ना. | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणाद् विशेषव्याप्तिप्र- करणांशा । |
| १३९४४७ | १६ | ४७ | " | " | १९०३ | पू० | |
| १०९४३७ | ११ | ४४ | " | " | | अपू० | ग्रन्थग्रान्ते मथुरानाथ इति लेखनाद्- ग्रन्थकर्तृस्थाने मथुरानाथ इत्यनुमीयते । |
| १०७४४३ | १० | ६३ | " | " | | पू० | गुणप्रकरणस्य । |
| १०९४४२ | १० | ६२ | " | " | | " | |
| १०९४४४ | ११ | ६० | " | " | १६४२ | अपू० | शब्दखण्डस्य । |
| १०९४४६ | १० | ३७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । (भवाः टी०) |
| १३०४५२ | १७ | ६६ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०९४४४ | १० | ३६ | " | " | | " | पशुना यजेतेतिवाक्ये । |
| १३०४५४ | १६ | ६० | " | " | | " | पृष्ठैकदेशे जाः टी० कृष्णमित्यपि । व्याप्तिपञ्चकस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------|-------------------|
| ३३४३४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३४३५ | तत्त्वचिन्तामणिः | | २ । (गणनया) |
| ३३४३६ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-८ । |
| ३३४३७ | क्त्वाप्रत्ययवादः | | १-२ । |
| ३३४३८ | गदाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-१२ । |
| ३३४३९ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३३४४० | " | | १-१४ । |
| ३३४४१ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२५ । |
| ३३४४२ | माथुरीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ३३४४३ | वाधविचारः | | २-१८ । |
| ३३४४४ | दशलकारवादार्थः | सिद्धान्तवागीशः | १-६ । |
| ३३४४५ | विधिवादरहस्यम् | | १-३३ । |
| ३३४४६ | स्वर्गवादः | | १ । |
| ३३४४७ | सादृश्यवादः | | १ । |
| ३३४४८ | कारणतावादः | | १-२ । |
| ३३४४९ | विषयहेतुताविचारः | | १-२ । |
| ३३४५० | संशयपक्षतारहस्यम् | | ४-६ । |
| ३३४५१ | " | | १-३ । |
| ३३४५२ | संशयपक्षताविचाररहस्यम् | रामभद्रसार्वभौमः | १-५ । |
| ३३४५३ | नव्यमतविचारः | कृष्णकान्तः | १-१५ । |
| ३३४५४ | जन्यभावविनाशित्ववादः | | १-२ । |
| ३३४५५ | मुक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|--------|------------|------------------------|--|
| १३×९३ | ९ | ९१ | दे.ना. | का. | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकस्य । |
| ७६×३३ | ७ | ३० | " | " | | " | व्याप्तिवादस्य । |
| १९०×३०९ | ६ | ९६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १८६×३०४ | ७ | ८० | वङ्ग | " | श. १७०६(?) | पू० | |
| २१×४ | ६ | ८९ | " | " | | अपू० | व्युत्पत्तिवादीयप्रथमान्युत्पत्तेः । |
| १९०×३०४ | ६ | १०७ | " | " | | पू० | अनुमाने विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| २१×४ | ६ | ८४ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिपञ्चताप्रकरणयोः । |
| २१०×३०८ | ६ | ११३ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| २०×३०९ | ६ | ११७ | " | " | | पू० | हेत्वाभासे सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७०×३०७ | ८ | ९९ | " | " | | अपू० | |
| ८०१×२०९ | १० | ४० | दे.ना | " | १७१० | पू० | दशलकारसारमञ्जरी इत्यपि नामा- न्तरम् । |
| १९०×४४०४ | १० | ८९ | वङ्ग | " | | " | |
| १८०२×४०२ | ८ | ७३ | " | " | | " | |
| १८०१×३०२ | ८ | ८७ | " | " | | " | |
| १६०४×३०६ | १० | ७८ | " | " | | अपू० | |
| १६०४×३०७ | ९ | ७१ | " | " | | पू० | |
| १८०८×४०४ | ११ | ८१ | " | " | | "* | प्रारम्भे भावप्रत्ययार्थविचारश्च । |
| १८०६×४०४ | १० | ९२ | " | " | | " | |
| १९×४०९ | १० | ८१ | " | " | | " | |
| १८०९×४०३ | १० | ८२ | " | " | श. १७१० | " | अनुमितिपरामर्शकार्यकारणभाव- विचारे । |
| १९०१×४०३ | १० | ९७ | " | " | | अपू० | |
| १७०६×४०१ | ९ | ७६ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|---------------------|------------------------------------|
| ३३४५६ | सामग्रीप्रतिबन्धकतावादार्थः | | १-१० । |
| ३३४५७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-५ । |
| ३३४५८ | तत्त्वचिन्तामणिसारः | गोपीनाथः | १-६५, ६५-९२, ९२-२११ । |
| ३३४५९ | " | " भवनाथसुतः | ४३-१८२ । |
| ३३४६० | तत्त्वचिन्तामणिः | | ८-२५, २७-४१, ४४, ४७, ६७-१०८ । |
| ३३४६१ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १५७-१५८, १७३-१८३ । |
| ३३४६२ | " | रघुनाथः | १०-४२ । |
| ३३४६३ | " | | १३-२२+१, ३२-३३, ३५-३६, ४१-४२+१ । |
| ३३४६४ | आत्मतत्त्वविवेकः | | २-२० । |
| ३३४६५ | आत्मतत्त्वविवेकदीधितिः | रघुनाथः | १-३९, ४१-३८ । |
| ३३४६६ | " | " | १-११, १४-१०९ । |
| ३३४६७ | आत्मतत्त्वविवेककल्पलता | | २-३१ (=३१, ३२) ३३-५२, ५४-५६, ६२-९५ |
| ३३४६८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ३-३६ । |
| ३३४६९ | आत्मतत्त्वविवेकदीधितिः | रघुनाथः | २-१९ । |
| ३३४७० | न्यायसिद्धान्तमाला | जयरामः | १-७६ । |
| ३३४७१ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-३६ । |
| ३३४७२ | न्यायपरिशिष्टम् | उदयनाचार्यः | १-३९ । |
| ३३४७३ | न्यायसूत्रवृत्तिः | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-१३२ । |
| ३३४७४ | न्यायसिद्धान्तमाला | जयरामः | १-३४, ७०-१४५ । |
| ३३४७५ | न्यायसूत्रवृत्तिः | विश्वनाथभट्टाचार्यः | १-७३ । |
| ३३४७६ | स्मृतिवादार्थः | | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|--|
| ११*४×३*९ | ११ | ५२ | मै० | का. | | पू० | |
| २०×३*५ | ६ | ११४ | वङ्ग. | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| ९*२×४ | १० | ३३ | दे. ना. | " | | अपू० | अनुमानखण्डस्य । |
| ९*२×३*२ | १० | ३८ | " | " | १७०१ | " | शब्दखण्डस्य । |
| १०×३*७ | ८ | ४१ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकर- णाच्छक्तिवादांशः । |
| ११*६×३*५ | ७ | ३९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणात्सत्प्रतिपक्ष- प्रकरणांशा । |
| १३*२×४*५ | ८ | ४९ | " | " | १८४६ | " | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| १०*९×३*५ | १० | ५० | " | " | | " | अनुमाने व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणात्सा- मान्यलक्षणाप्रकरणांशा । |
| ११*४×३*५ | ७ | ३९ | " | " | | " | बौद्धाधिकार इत्यपि नामान्तरम् । |
| १०×४*२ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| ११×४*४ | ११ | ४९ | " | " | | " | |
| ११*४×५*५ | १३ | ४७ | " | " | | " | |
| ९*५×४*१ | १० | ३० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११*३×३*४ | ६ | ३९ | " | " | | " | बौद्धाधिकारशिरोमणिरित्यपि नामा- न्तरम् । |
| ११*१×४*६ | १० | ४५ | " | " | | पू० | |
| १०*४×४*५ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| ८*३×६*८ | २२ | २६ | " | " | १९६८ | " | ५ अ०, बोधसिद्धिरित्यपि नामान्तरम् । |
| १३*४×४*२ | ७ | ५१ | " | " | १९३० | " | |
| ११*५×४*३ | ७ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १४*१×४*३ | ९ | ६८ | " | " | | पू० | |
| १८*८×४*४ | १० | ७८ | वङ्ग. | " | | " | विचारोऽयं नात्मगुणस्मृतेः, किन्तु न्यायरीत्या स्मृतिवाक्यस्य (धर्मशा- स्त्रीयोऽयं ग्रन्थः) । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|---------------------|--|
| ३३४७७ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | हरिदासभट्टाचार्यः | ४५-१२१, १२३-१६३, १६३-१९४, १९६-२१६, २१८-२२१ । |
| ३३४७८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका | शितिकण्ठ-दीक्षितः | १-७६ । |
| ३३४७९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीप्रकाशः | जनार्दनव्यासः | १-३७, ३७-५७, ५७-८३, ८२-१४२ । |
| ३३४८० | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क-वागीशः | १-२१ । |
| ३३४८१ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-१२ । |
| ३३४८२ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | २३८ । (गणनया) |
| ३३४८३ | तत्त्व-मणिदीधितिटीका | " | १-१५९, २१६-२८९, ६५-६९ + १ । |
| ३३४८४ | तत्त्वचिन्तामणिव्याख्या | रुचिदत्तः | ४-९०, ९२-१४४, १४६-१६२, ३२ + १ । |
| ३३४८५ | न्यायवार्त्तिकम् | उद्योतकरः | २-६४, ६६-८८ + १ । |
| ३३४८६ | न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकाश-मकरन्दः | रुचिदत्तः | ११२ । (गणनया) |
| ३३४८७ | " | " | १-५१, ५३-८६ । |
| ३३४८८ | न्यायनिबन्धप्रकाशः | वर्द्धमानः | १-१५३ । |
| ३३४८९ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिमिश्रः | १-५६, ५८-८१ । |
| ३३४९० | जातिबाधकविचारः | | १ । |
| ३३४९१ | प्रशस्तपादभाष्यं सटीकम् | | ४८ । (गणनया) |
| ३३४९२ | किरणावलीप्रकाशदीधितिः | रघुनाथः | ९२ । " |
| ३३४९३ | तत्त्व-मणिदीधितिटीका | जगदीशतर्कालङ्कारः | १-४० । |
| ३३४९४ | अनुमितिपरामर्शकार्यकार-णभावविचारः | | १-१७ । |
| ३३४९५ | विषयतावादार्थः | हरिरामभट्टाचार्यः | १-१३ । |
| ३३४९६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-२१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आध्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|------------------------|--|
| ९०४४३ | १० | ३२ | दे.ना. | का. | | अपू० | अनुमानपरिच्छेदस्य । |
| ११०९३०८ | ६ | ४४ | " | " | | पू० | " |
| १००६४०१ | ८ | ४४ | " | " | | " | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| २००८४३६ | ६ | १०३ | वङ्ग. | " | | " | शब्दखण्डान्तर्गताकाङ्क्षावादप्रकरणस्य । |
| १३२४२३ | ४ | ६६ | " | " | | अपू० | अनुमानखण्डान्तर्गतानुमितिप्रकरण- मारभ्य व्याप्तिग्रहोपायान्तः । |
| १६०४४२७ | ६ | ९७ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १८२४३०८ | ८ | ११० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य सामान्यल- क्षणापर्यन्ता । |
| १४४१०९ | ६ | ९६ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| १३०५४२ | ५ | ७३ | " | " | | " | प्रथमोऽध्यायः । |
| १३०५४१७ | ५ | ७५ | " | " | ल.सं.४२३ | " | पञ्चमस्तवकान्तः । |
| १५४२३ | ६ | ९० | मै० | " | " ४२४ | " | " |
| १३०७४२३ | ६ | ७३ | वङ्ग. | " | | पू० | न्यायसू० टी० टी० टी० टी० टी० । |
| १३४१०८ | ५ | ८२ | मै० | " | ल.सं.४१७ | अपू० | प्रमाणलक्षणान्ता, ५४-५६ पत्रत्रयम- द्धे भग्नम् । |
| १७०८४३०८ | ९ | ६७ | वङ्ग. | " | | पू० | अन्ते व्याप्तिपञ्चकलक्षणविचारश्च । |
| ९०९४८०५ | १२ | २९ | दे.ना. | " | | अपू० | गुणनिरूपणे परिमाणनिरूपणम् । |
| ९०९४८०५ | ११ | २९ | " | " | | " | गुणनिरूपणम् । |
| १२०५४३०९ | ९ | ४३ | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०४४३ | ११ | ३२ | " | " | | " | |
| ९०८४४२ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| १०४३६ | ९ | ४६ | " | " | | " | विधिवादरहस्यमित्यपि नामान्तरम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|----------------------|-------------------|
| ३३४९७ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | श्रीकृष्णभट्टाचार्यः | २-४४ । |
| ३३४९८ | " | शङ्करभट्टः | २-३० । |
| ३३४९९ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीप्तिः | " | १-३९ । |
| ३३५०० | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | चूडामणिभट्टाचार्यः | २७-२८, ३०-३८ । |
| ३३५०१ | " | जानकीनाथः | ८ । (गणनया) |
| ३३५०२ | न्यायवार्तिकम् | | १-१७ । |
| ३३५०३ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३३५०४ | न्यायभाष्यविवृतिः | | ११-१६ + १ । |
| ३३५०५ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-१२ । |
| ३३५०६ | " - | " | १-६ । |
| ३३५०७ | " | | १-६ । |
| ३३५०८ | " | | १-६, ८-१३ । |
| ३३५०९ | " | अन्नम्भट्टः | १-३ । |
| ३३५१० | तर्कसङ्ग्रहः सपदकृत्यः | " टी०चन्द्रजसिंहः | १-७ । |
| ३३५११ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | | १-२२, ३२ । |
| ३३५१२ | न्यायबोधिनी | गोवर्द्धनः | १-१७ । |
| ३३५१३ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३३५१४ | न्यायबोधिनी | गोवर्द्धनः | १-१९ । |
| ३३५१५ | तर्कसङ्ग्रहव्याख्या | | १-१६ । |
| ३३५१६ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-१९ । |
| ३३५१७ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाशिका | | १-७, २-५, ५-३३ । |
| ३३५१८ | नव्वादटिप्पणी | रघुदेवः | १-१३ । |
| ३३५१९ | नव्वादरहस्यम् | " | १-१६ । |

| धाकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| १३४४३ | १९ | ४९ | दे. ना. | का. | १८२७ | अपू० | प्रत्यक्षानुमानपरिच्छेदयोः । |
| १०७४४७ | १० | ४० | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| १०८४४७ | १० | ४४ | " | " | | पू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १०४३६ | ७ | ४८ | " | " | | अपू० | अनुमानोपमानपरिच्छेदयोः । |
| १०१४४ | ९ | ३९ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १०५४३७ | ९ | ३५ | " | " | | पू० | त्रिसूत्रीवार्त्तिकान्तम् । |
| १०१४४६ | १४ | ४२ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १३६४४२ | १३ | ८४ | " | " | | अपू० | मधुरभाषिणीतिनामान्तरम् । प्रथ- माध्यागत्य । |
| १०४४३ | ७ | ३० | " | " | | पू० | |
| १०४४३७ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १०४४४१ | ७ | ३३ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डमात्रम् । |
| १०२४४३ | ७ | २१ | " | " | | अपू० | |
| १०४४४१ | ११ | ३३ | " | " | | पू० | अनुमानभागतः समाप्तिं यावत् पूर्णः । |
| १३०४५४ | ८ | ५३ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदः । |
| १०९४४२ | १० | ३६ | " | " | | पू०* | |
| १२०४५ | ८ | ३३ | " | " | १९०५ | " | |
| १०१४४४ | १२ | ३९ | " | " | | " | लक्षणलक्षणविचारस्य । |
| १०४४४२ | १२ | ३३ | " | " | १८८९ | " | |
| १०३४४१ | ११ | ३२ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य । |
| १०४४३ | १० | ३७ | " | " | १८८८ | " | |
| १४४५४ | ११ | ५३ | " | " | | अपू० | |
| १०४४४५ | १४ | ४५ | " | " | | पू० | |
| १०१४४४ | ११ | ४३ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|----------------------------|-------------------|
| ३३५२० | नव्वादविवेचनम् | रघुनाथशिरोमणिः | १-३ । |
| ३३५२१ | तर्कभाषा | | २-७, ७-८, ८-२० । |
| ३३५२२ | तर्कभाषाटीका | | १-१०, १०-१९ । |
| ३३५२३ | तर्कभाषाभावार्थदीपिका | गौरीकान्त- भट्टाचार्यः | १-५७ । |
| ३३५२४ | तर्कसङ्ग्रहोपन्यासः | | १-२२ । |
| ३३५२५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १ । |
| ३३५२६ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १ । |
| ३३५२७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | ११०-१७२ । |
| ३३५२८ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रवेशः | विश्वेश्वरः | १-१८ । |
| ३३५२९ | तत्त्व०मणिदीधितिक्रोडपत्रम् | | १-८, ११-१५ । |
| ३३५३० | तर्कभाषा | | १-२ । |
| ३३५३१ | " | | १-१३ । |
| ३३५३२ | तर्कामृतम् | | १-११ । |
| ३३५३३ | न्यायसङ्ग्रहटीका | रुक्मांगदसुरक- रामसिंगः | १४ । (गणनया) |
| ३३५३४ | तर्कामृततरङ्गिणी | अनन्तभट्टसुतः | १-१९ । |
| ३३५३५ | न्यायसि०मुक्तावलीटीका | दिनकरभट्टः | ६३१-१४९ । |
| ३३५३६ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १-७ । |
| ३३५३७ | किरणावलीव्याख्या | | १-४१, ४३, ४३ । |
| ३३५३८ | किरणावलीटीका | | २-८५(१) १०-१५४ । |
| ३३५३९ | न्यायग्रन्थविशेषः | | २८ । |
| ३३५४० | किरणावली | | १, ६२-१३२ । |
| ३३५४१ | न्यायलीलावती | | ८ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|---|
| ९०×३६ | ९ | ३६ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ७०×३९ | १२ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ९०×४ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| ९०×४२ | १० | ३९ | " | " | | पू० | |
| १०×४५ | १४ | ३६ | " | " | | " | |
| १००×४६ | १३ | ४३ | " | " | | अपू० | बाधप्रकरणस्य । |
| १०६×४६ | १३ | ४३ | " | " | | " | " |
| ९९×४२ | ९ | ४४ | " | " | १८३८ | पू०* | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिसामान्याभाव-प्रकरणयोः । |
| ११०×५१ | १४ | ४० | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ९०×४३ | १० | ४२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । गादा-धरीक्रीडपत्रञ्च । |
| ८×३४ | १० | २८ | " | " | | " | |
| १०×४३ | १२ | ३७ | " | " | | पू० | प्रमाणपरिच्छेदः । |
| ९०×४५ | ९ | २३ | " | " | | अपू० | |
| ९६×४५ | ७ | २८ | " | " | | " | |
| ९०×४४ | ११ | ५२ | " | " | १८६५ | पू० | |
| १०×४७ | १० | ४४ | " | " | | अपू० | गुणनिरूपणस्य । |
| १००×४६ | १० | ४५ | " | " | | " | सव्यभिचारसाधारणप्रकरणयोः । |
| ८०×३८ | १३ | ४९ | " | " | | " | गुणनिरूपणस्य । |
| ९०×४१ | १४ | ५० | " | " | | " | द्रव्यगुणप्रकरणयोः । |
| ९२×३८ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| १०३×३५ | ८ | ४० | " | " | | " | गुणप्रकरणस्य । |
| १३०×५३ | ९ | ४५ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-------------------------|--------------------|
| ३३५४२ | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-६ । |
| ३३५४३ | न्या०ली०प्रकाशविवृतिः | भट्टाचार्य- शिरिमणिः | २-४३ । |
| ३३५४४ | पदार्थमाला | | ३ । (गणनया) |
| ३३५४५ | तर्कभाषाटीका | वल्लभट्टः | १ । „ |
| ३३५४६ | न्यायसारः | माधवदेवः | १-६, ९-२८, ४७-५६ । |
| ३३५४७ | भाषापरिच्छेदः | विश्वनाथः | ५-१३ । |
| ३३५४८ | ” | ” | १-२ । |
| ३३५४९ | व्युत्पत्तिवादः | | ४-३१ । |
| ३३५५० | लघुबोधिनी | रङ्गाचार्यः | १-१९ । |
| ३३५५१ | तर्कभाषाटीका | | २-११ । |
| ३३५५२ | भाषापरिच्छेदः | | १ । - |
| ३३५५३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-२ । |
| ३३५५४ | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | टी०का०गोवर्द्धनः | १-२ । |
| ३३५५५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १९-२१ । |
| ३३५५६ | तत्त्वचिन्तामणिटिप्पणी | | २ । (गणनया) |
| ३३५५७ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | | २६ । |
| ३३५५८ | उपाधिविवेचनम् | | २-३ । |
| ३३५५९ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १ । |
| ३३५६० | केवलान्वयिवादः | हनुमान् | १-२ । |
| ३३५६१ | विषयताविचारः | गदाधरभट्टाचार्यः | १७ । |
| ३३५६२ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-३ । |
| ३३५६३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | विश्वनाथः | १ । |
| ३३५६४ | शक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-४१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ८३×४ | १२ | ४० | दे. ना. | का. | १७८६ | पू० | |
| १०५×४३ | १२ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १०×४४ | १९ | ५४ | " | " | | " | |
| ८५×२६ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| ८८×३७ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| १०×४३ | ८ | ३२ | " | " | १७२० | " | |
| १०८×४५ | १० | ३२ | " | " | | " | |
| १२×६ | १३ | ३३ | " | " | | " | |
| १३३×४९ | १० | ५६ | " | " | | पू० | तर्कसङ्ग्रह टी. । |
| १०८×४९ | ११ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| ८४×६ | १२ | ४० | " | " | | " | कारिकावली वा । |
| १०४×४५ | १० | ३९ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १२४×४ | ९ | ६१ | " | " | | " | टीका-न्यायग्रोविनी । |
| १३८×३५ | ६ | ४४ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणावच्छेदकस्वनिर्दिष्ट- प्रकरणयोः । |
| ९०×३३ | ९ | ४१ | " | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । |
| ९५×३५ | १० | ४० | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| ८६×४ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| ८८×४७ | ६ | २७ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १०१×४५ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| १०१×३७ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| १०५×३७ | ६ | २५ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १०३×४४ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| १२४×४४ | ९ | ४९ | " | " | १९०४ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|------------------|----------------------|
| ३३५६५ | शक्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३६ । |
| ३३५६६ | तर्कसङ्ग्रहः | | १-३ । |
| ३३५६७ | व्युत्पत्तिवादः | गदाधरभट्टाचार्यः | १-५१, ५१-१५९ । |
| ३३५६८ | " | | ३५-४० । |
| ३३५६९ | " | | १ । |
| ३३५७० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-३९, ४१-४३, ४३-७३ । |
| ३३५७१ | " | | १-१३ । |
| ३३५७२ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १-१२९ । |
| ३३५७३ | " | | २-५ । |
| ३३५७४ | लौकिकविषयताविचारः | | २१-२५ । |
| ३३५७५ | विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविचारः | | २-२१ । |
| ३३५७६ | विषयताविचारः | | १-१२ । |
| ३३५७७ | व्याप्तिकौतुकम् | | २-५ । |
| ३३५७८ | लक्षणावली | | १८-२०, २४, २८-४५ । |
| ३३५७९ | मुक्तिवादः | | २-११ । |
| ३३५८० | मोक्षवादः | रामभट्टः | १-२८ । |
| ३३५८१ | लकारपरिच्छेदः | रुद्रभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३३५८२ | लकारार्थनिरूपणम् | न्यायवाचस्पतिः | १-६ । |
| ३३५८३ | लक्षणावली | | १-८ । |
| ३३५८४ | न्या०सि०मु०सुबोधिनी | लक्ष्मणः | १-१५ । |
| ३३५८५ | प्रमाणनिरूपणम् | | १-२२ । |
| ३३५८६ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाविवेचना | | १-३ । |

| श.अ.सं. | पक्ष- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|-----------------|------------------|--------|-------|------------------|------------------------|--|
| १००५४०५ | ११ | ४८ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ८०६४०१ | ९ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| १००५४०५ | ९ | ४९ | " | " | | पू० | |
| १००७४०६ | ९ | ४५ | " | " | | अपू० | प्रथमायाः । |
| १२००४०३ | ९ | ५६ | " | " | | " | |
| १००५४०२ | १२ | ३४ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ११०६४३३ | १० | ५१ | " | " | | " | " |
| ११०८४३४ | ७ | ४१ | " | " | १६५८ | पू० | शब्दपरिच्छेदस्य । |
| ९०५४०२ | १३ | ४७ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणांशाद् व्याप्तिप्रहो- पायप्रकरणांशः । |
| ११०३४०१ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| ११०९४२० | ६ | ६३ | " | " | | " | |
| १००५४३४ | ८ | ४८ | " | " | | पू० | |
| १००९४०९ | १३ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| ८०९४३४ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| १०४४०१ | १३ | ५० | " | " | | " | |
| ९०५४०२ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| १००७४०५ | १० | ४५ | " | " | १७३२ १६१७ शकः | पू० | |
| १००३४०६ | १० | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १००८४२० | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| ९०७४०३ | ९ | ३३ | " | " | १९५० | पू० | व्याप्तिवादस्य । |
| १०४४०३ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | अनुमानोपमानशब्दानाम् । |
| ९०७४०२ | १० | ३७ | " | " | १८५८ | पू० | लक्षणलक्षणविचारस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|------------------|--------------------|
| ३३५८७ | तर्कभाषाटीका | | १-५ । |
| ३३५८८ | शब्दद्रव्यनिरासः | | १ । |
| ३३५८९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १ । |
| ३३५९० | " | गदाधरः | १ । |
| ३३५९१ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | ४८ । (गणनया) |
| ३३५९२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १३ । " |
| ३३५९३ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पद्मधरमिश्रः | ४-४९ । |
| ३३५९४ | तत्त्वमण्यालोकव्याख्या | मथुरानाथः | १-८, ३-७, १ । |
| ३३५९५ | कारकादर्थनिर्णयः | भवानन्दः | १-१७, २०-२१ । |
| ३३५९६ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-२५ । |
| ३३५९७ | " | " | १-१३ । |
| ३३५९८ | व्युत्पत्तिवादक्रोडपत्रम् | | १-३, ३-१४, १४-१८ । |
| ३३५९९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | ५६-६९ । |
| ३३६०० | " | " | ७०-८२ । |
| ३३६०१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३३६०२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१३ । |
| ३३६०३ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-३६ । |
| ३३६०४ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२+१ । |
| ३३६०५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१३ । |
| ३३६०६ | " | | १-४ । |
| ३३६०७ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-१५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९*६×४*१ | ८ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९*९×४*२ | १२ | ४१ | " | " | | पू० | |
| १२*३×३.८ | १३ | ५७ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १२*३×३*७ | ११ | ५३ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ११*५×३*४ | १० | ५१ | " | " | | अपू० | अनुमानखण्डस्य । |
| १२*७×३*४ | १० | ३० | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षसामान्यनिरुक्तिप्रामाण्य- वादप्रकरणानाम् । |
| १०*३×४*३ | १० | ४७ | " | " | | " | शब्दखण्डे शक्तिवादप्रकरणस्य । |
| ११*४×४*८ | ११ | २९ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवाद- प्रकरणस्य । |
| ८*६×४ | १० | ४२ | " | " | | " | शब्दार्थसारमञ्जर्या, पट्टकारकचक्रंवा । |
| ११*४×३*९ | ८ | ५२ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणास्तिस्रान्तलक्षणप्रक- रणांशा । |
| ९*९×४*४ | १० | ३४ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद् विशेषव्याप्ति- प्रकरणांशा । |
| १३*१×९*१ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | प्रथमव्युत्पत्तेः । |
| ९*९×४*२ | ९ | ४३ | " | " | | अपू० | तर्कव्याप्त्यनुगमप्रकरणयोः । |
| ९*९×४*३ | ८ | ४५ | " | " | | " | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १३*२×९*१ | १७ | ५८ | " | " | | पू० | व्याप्त्यनुगमस्य, तर्कमाथुरीक्रोड- पत्रञ्च । |
| १२*३×९*६ | १८ | ६४ | " | " | | " | व्याप्तिवादस्य । |
| ९*२×४*२ | ९ | ३० | " | " | | अपू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद् व्यधिकरणप्र- करणांशा । |
| १२*३×४*८ | १२ | ३९ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १३×९*२ | ११ | ४२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३*१×९ | १४ | ५७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १५*६×४*३ | ७ | ५२ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|-------------------|-------------------|
| ३३६०८ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशतर्कालङ्कारः | १-१९ । |
| ३३६०९ | " | गदाधरः | १-६ । |
| ३३६१० | जागदीशीकोडपत्रम् | | १-२३ । |
| ३३६११ | कणादसूत्रम् | | १-८ । |
| ३३६१२ | वेदलक्षणम् | शिरोमणिः | १-५ । |
| ३३६१३ | विषयतावादार्थः | | ३-९ । |
| ३३६१४ | " | | २-९ । |
| ३३६१५ | " | चतुर्भुजः | १-७ । |
| ३३६१६ | वाक्यपादः | | १-४ । |
| ३३६१७ | युग्मत्ववादार्थः | | १ । |
| ३३६१८ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-४ । |
| ३३६१९ | भ्रातृत्वविचारः | रामभद्रसार्वभौमः | १०-१६, १६-२१ । |
| ३३६२० | ज्ञानत्वप्रकारतारहस्यम् | | १-२ । |
| ३३६२१ | सादृश्यवादः | रघुनाथशिरोमणिः | १-७ । |
| ३३६२२ | सापेक्षवादः | | १-२ । |
| ३३६२३ | " | | १ । |
| ३३६२४ | स्वाप्रत्ययविचारः | | १-२ । |
| ३३६२५ | " | | १-२ । |
| ३३६२६ | अनुमितिपरामर्शविचार- रहस्यम् | | १-२२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १३२४४४ | ७ | ४६ | दे.ना. | का. | | प० | न्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद् व्यधि- करणप्रकरणान्ता । |
| १२८४४ | ९ | ५७ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२४४२ | १० | ५१ | " | " | १९२५ | " | " |
| ९८४५२ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ९७४४४ | १० | २४ | " | " | | " | |
| ९४४३२ | १० | २७ | " | " | | अपू० | |
| १०६४३८ | १० | ५० | " | " | | " | |
| १२९४४९ | १३ | ५३ | " | " | | पू० | |
| १३२४५१ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| २०४४३७ | ७ | ८७ | चङ्ग. | " | | " | |
| १३९४३७ | ८ | ५९ | मै. | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १८४४३२ | ८ | ११० | चङ्ग. | " | | पू०* | दशलकारविचारः सापेक्षवादविचारः एकवचनाद्यर्थविचारः शब्दानित्यत्व- विचारः अभाववादविचारः शिष्ट- लक्षणविचारश्च । |
| १७९४४३ | १० | ८७ | " | " | | " | अत्र समासलक्षणस्य स्वर्गलक्षणस्य च विचारः । |
| १८४४४३ | १० | ८९ | " | " | | " | उपसर्गवादस्य एकदेशान्वयवादस्य एवकारवादस्य रूपनाशवादस्य द्रव्यनाशवादस्य च विचारः । |
| १९४४३ | ९ | ७५ | " | " | | " | समासघटकसमासाघटकपदार्थयोः परस्परमन्वयबोधविचारः । |
| १८६४४४ | १० | ८७ | " | " | | " | " |
| १८४४४३ | ९ | ७६ | " | " | | " | |
| १७६४४२ | ९ | ६९ | " | " | | " | |
| १८६४४६ | १० | ८७ | " | " | | " | कार्यकारणभावात्मकम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|-------------------------------|--------------------------|
| ३३६२७ | अनुमितिपरामर्शविचारः | | ७ । (गणनया) |
| ३३६२८ | कारकाद्यर्थनिर्णयः | भवानन्दः | १-९ । |
| ३३६२९ | अप्रामाण्यग्रहविचारः | | १ । |
| ३३६३० | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | ८१-८६, ९८-१८३, २२-२३ । |
| ३३६३१ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | १-४ । |
| ३३६३२ | " | " | १-२७ । |
| ३३६३३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-४, ६-७, १०-२१, २४-२७ । |
| ३३६३४ | " | " | १-१२७, १२७-१६६ । |
| ३३६३५ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | त्रिलोचनदेवन्याय- पञ्चाननः | ३-३८ । |
| ३३६३६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | ६-४८ । |
| ३३६३७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२, १०-८ । |
| ३३६३८ | " | | १-६ । |
| ३३६३९ | तर्कभाषाभावार्थदीपिका | गौरीकान्तः | १-८९, ४-८, १०३-१२३ । |
| ३३६४० | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-१० । |
| ३३६४१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| ३३६४२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | ४-२० + १ । |
| ३३६४३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| ३३६४४ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१२ । |
| ३३६४५ | " | " | १७-२६ । |
| ३३६४६ | तत्त्वचिन्तामणिप्रभा | नीलकण्ठः | १-२ । |
| ३३६४७ | तत्त्वचिन्तामणिःसदीधितिः | | १-३ । |
| ३३६४८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोक- रहस्यम् | मथुरानाथः | २-२८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| ७०९×३०२ | १२ | ४८ | वङ्ग. | का. | | अपू० | कार्यकारणभावात्मकः । |
| ९०९×४ | १२ | ३८ | दे. ना. | " | | " | कारकवाद इत्यपि नामान्तरम् । |
| १८०७×३०२ | ८ | ९७ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १२०४×३०६ | १० | ६८ | मै० | " | | अपू० | हेत्वाभाससामान्यस्य सव्यभिचार- भेदस्य च । |
| १३०३×४१ | ७ | ६० | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| ११०९×४०१ | १५ | ५४ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११०९×३०३ | १० | ५२ | " | " | श. १६४४ | " | परामर्शव्यवसत्प्रतिपक्षप्रकरणानाम् । |
| १४०७×२०५ | ५ | ५५ | वङ्ग. | " | | " | अनुमितिप्रकरणादसिद्धिप्रकरणांशा । |
| १२०८×४०२ | ११ | ५२ | दे. ना. | " | | " | प्रथमस्तवकाच्चतुर्थस्तवकांशा । |
| १३०९×४०३ | ७ | ५८ | " | " | | " | सामान्याभावविशेषव्याप्तिप्रकरणयोः । |
| १०×४०५ | १२ | ४१ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १३०६×५०२ | २० | ५६ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| ९०६×३०६ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १००८×४०८ | १० | ४० | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १००१०×४०४ | १२ | ५९ | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| ११०६×४०९ | ११ | ५३ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १८०४×४०३ | ८ | ९६ | मै० | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९०७×४०३ | १८ | ४९ | दे. ना. | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद्व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| ११०१×४ | ९ | ४५ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य |
| ९०४×४०३ | १२ | ३६ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १००७×४०८ | १७ | ५१ | " | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १००१×४०१ | १० | ५४ | " | " | | " | शब्दखण्डे अपूर्ववादस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|---------------------|--|
| ३३६४९ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | अन्नम्भट्टः | १-२९ । |
| ३३६५० | न्यायलीलावती | | १-२३ । |
| ३३६५१ | किरणावलीप्रकाशः | | २-१२+१, १३-४४ । |
| ३३६५२ | " | | १२-९ । |
| ३३६५३ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | रुद्रन्यायवाचस्पतिः | १-६१ (= ६२) ६३-७५, ७६-७८, ८३-११८ |
| ३३६५४ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिः | १-५९, ७०-७६, ७७-८० । |
| ३३६५५ | " | " | १-७७ । |
| ३३६५६ | न्यायसूत्रवृत्तिः | " | ४६ । (गणनया) |
| ३३६५७ | आत्मतत्त्वविवेकः | उदयनः | १-१०४ । |
| ३३६५८ | न्यायनिबन्धप्रकाशः | | १-४४, ४६-५७, ५९-१०२, १०४-११८ । |
| ३३६५९ | मितभाषिणी | महादेवः | १-४७ । |
| ३३६६० | कारिकावलीव्याख्या | | १ । |
| ३३६६१ | व्युत्पत्तिवादः | | १-५ । |
| ३३६६२ | लक्षणावली | | १ । |
| ३३६६३ | किरणावलीभास्करः | पद्मानाभः | १-७० । |
| ३३६६४ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | | १-२, १-२, ३-२०, १९-२०, २१-४ ४२-५४, २-५५, १-७९ । |
| ३३६६५ | तार्किकरक्षानिष्कण्टका | महिनाथः | १-११ । |
| ३३६६६ | तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशः | | १-७२, ७२-२२२, २२२-२२३ । |
| ३३६६७ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २-३०५ । |
| ३३६६८ | न्यायमञ्जरी | जयन्तभट्टः | १-२२० । |
| ३३६६९ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | | २-५८, १-५७, १००-१३५ । |
| ३३६७० | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिः | १-५०, १-२८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | अक्षर- संख्या | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------------------|----------|------------------------|---|
| ९०१४३० | ७ | ३४ | दे. ना. | का. | श. १६७८ | पू० | |
| १०४४०२ | ११ | ३७ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डमात्रम् । |
| ९०८४४०२ | १४ | ५० | " | " | | अपू० | गुणपदार्थस्य । |
| ९०९४४०५ | ८ | ३३ | " | " | १८१३ | " | गुणखण्डस्य । |
| ९४४ | ७ | २५ | " | " | | " | |
| १००८४३०४ | ९ | ५७ | " | " | | " | प्रथमाध्यायस्य । |
| १२४५०५ | ११ | ४५ | " | " | | " | द्वितीयाध्यायस्य । |
| ८०१४६०७ | २१ | २० | " | " | | " | प्रसिद्धवाचस्पतिमिश्रादन्यः । |
| १०४४०१ | ७ | ३१ | " | " | | पू० | |
| १००१४३०६ | ९ | ४५ | " | " | | अ० | न्यायसू. टी. टी. टी. टी. टी. । |
| ११०४४३०६ | ७ | ४७ | " | " | | " | न्यायसूत्रवृत्तिः । |
| १००४४४०५ | १४ | ६७ | " | " | | " | गुणप्रकरणे प्रामाण्यविचारस्य । |
| १००५४४०४ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| ११०१४४०५ | ८ | ३६ | " | " | | " | |
| १३०४४८०५ | १३ | ५७ | " | " | १९७० | पू० | |
| ११४५०७ | ११ | ३७ | " | " | | अपू० | प्रथमाध्यायस्य । |
| ९०६४३०३ | ९ | ४७ | " | " | | पू० | न्यायसारसंग्रहप्रकरणस्य । (प्रथम- परिच्छेदमात्रम् ।) ता. र. टी. |
| ९०९४४०३ | १० | ३२ | " | " | | अपू० | परामर्शप्रकरणाच्छक्तिवादांशः । |
| ८०९४३०५ | ९ | ३० | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणांशाच्छक्तिवादांशः । |
| १३४५०५ | १६ | ४६ | " | " | १७०४ | पू० | |
| १००१४४०३ | ११ | ५२ | " | " | | अपू० | शब्दखण्डस्य । |
| ११०७४५०१ | १० | ४५ | " | " | | " | चतुर्थपञ्चमाध्याययोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरण |
|------------|-------------------------------------|-------------------------|---|
| ३३६७१ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिः | १-२४(=२५-२९), ३०-६२ । |
| ३३६७२ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | जयरामः | १-२६, १-१६, १-२६ । |
| ३३६७३ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यपरिशुद्धिः | उदयनः | १-८६ । |
| ३३६७४ | " | " | ४०-६७ । |
| ३३६७५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २-२९३, २२६-२२९ । |
| ३३६७६ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथतर्क- वागीशः | १-८९, ८९-९२, ९६-९७+३, १-७+१, १-११, १-१६, १-३, ५-८, १+१, २५-२९, २९-५७ । |
| ३३६७७ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | पद्मधरमिश्रः | १-४५ । |
| ३३६७८ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी | जानकीनाथः | १-३ । |
| ३३६७९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-४, १-६, २-१६, २६-४२, ८-२९ । |
| ३३६८० | " | " | १-७, १-२५ । |
| ३३६८१ | " | " | १-१२६, १२८, १३२-२३९ । |
| ३३६८२ | " | " | १-४९, १-२६, १-१७, १-२३, १-१९ । |
| ३३६८३ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१२ । |
| ३३६८४ | " | जगदीशभट्टाचार्यः | ४३१ । (गणनया) |
| ३३६८५ | तार्किकरक्षासारसङ्ग्रहः | वरदराजः | १-५० । |
| ३३६८६ | तर्कभाषाव्याख्या | चित्रीभट्टः | १-९४ । |
| ३३६८७ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-९, ३३-३५ । |
| ३३६८८ | " | " | १-४३ । |
| ३३६८९ | " | " | ४-६, २०-२४, २६-२८, ३१-३२, ३७-३९ । |
| ३३६९० | " | " | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- निवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| १२×५०४ | ११ | ४७ | दे. ना. | का. | | अपू० | तृतीयाध्यायस्य । |
| १३×३×८०१ | ३६ | १६ | " | " | | पू० | |
| १३×७०९ | २८ | ३१ | " | " | | " | १ अध्यायः त्रिसूत्री । |
| १३×७०९ | २६ | ३० | " | " | | अपू० | |
| १२×६×४०८ | ९ | ४६ | वज्र. | " | | " | पक्षतामारभ्य बाधपर्यन्ता । |
| १७×२×२०७ | ८ | ८२ | " | " | | पू०* | अनुमितिप्रकरणमारभ्य बाधान्तम् । |
| १२×७×४०७ | ८ | ६५ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षखण्डान्तर्गतमङ्गलवादस्य । |
| १२×९×४०५ | ११ | ५१ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदः । |
| १७×३×३०१ | ७ | ८८ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकसिंहलक्षणव्यधिकरणा- वच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणानाम् । |
| १७×२×३०१ | ७ | ७९ | " | " | | पू० | सिद्धान्तलक्षणव्यधिकरणप्रकरणयोः । |
| १५×२×३०१ | १० | ८७ | " | " | | अपू० | अनौपाधिकत्वपक्षतापरामर्शकेवला- न्वयिहेत्वाभासप्रकरणानाम् । |
| १७×६×३०१ | ६ | ९४ | " | " | | " | व्यधिकरणसिद्धान्तलक्षणावच्छेद- कत्वनिरुक्तिकेवलान्वयिसामान्य- निरुक्तिप्रकरणानाम् । |
| १७×६×३०१ | ६ | ९४ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १५×१×४०९ | १० | ६४ | दे. ना. | " | | " | अनुमितिमारभ्य बाधपर्यन्ता । |
| ८×३×३०१ | ८ | २७ | " | " | | पू० | प्रथमपरिच्छेदः । |
| १०×७×४०७ | १२ | ३५ | " | " | | " | प्रमेयादिनिरूपणमात्रम् । |
| ११×३×३०९ | ७ | ४३ | " | " | १६८० | अपू० | |
| ८×७×३०३ | ८ | ३८ | " | " | | पू० | |
| ८×५×३०४ | ९ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ९×९×२०८ | ८ | ५६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|----------------|--|
| ३३६९१ | तार्किकरक्षासारसङ्ग्रहः | वरदराजः | १ । |
| ३३६९२ | " | " | १-६६ । |
| ३३६९३ | न्यायसिद्धान्तदीपप्रभा | शेषानन्तः | १६, ५०-६८, ७४-८५, ८८-९४, १०९-१६७ । |
| ३३६९४ | " | " | १-१० । |
| ३३६९५ | " | " | १-१०८ । |
| ३३६९६ | न्यायसिद्धान्तदीपः | शशधरः | १-५१ । |
| ३३६९७ | " | " | १-२, ६-१९, २३-२४, २६-३०, ३२, ३५-४४, ४७-६९, ७२-७६ । |
| ३३६९८ | " | " | १-९६ । |
| ३३६९९ | तर्कभाषा | | १-१७ । |
| ३३७०० | " | केशवमिश्रः | ४-३८ । |
| ३३७०१ | " | " | १-३८, ४०-४२ । |
| ३३७०२ | " | | १-२०, २२-२८ । |
| ३३७०३ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | भवानन्दः | १-४७ । |
| ३३७०४ | " | " | १-६१, ६३-६६, ६९-७०, ७७-१२० । |
| ३३७०५ | " | " | २-५३ । |
| ३३७०६ | आत्मतत्त्वविवेकदीधितिटीका | श्रीरामः | १-२८, १-२३ (= ५१), ५२-६०, ६०-१२१, १३२-१०९, १३१-१३२ । |
| ३३७०७ | तार्किकरक्षाकारिका | | १-२ । |
| ३३७०८ | " | | ३-७, ९ । |
| ३३७०९ | तर्कभाषा | | १-९ । |
| ३३७१० | " | | १-४० । |
| ३३७११ | " | | १-२९ । |
| ३३७१२ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिमिश्रः | १-५७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विधेयः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| १०१×३०६ | ३ | ४२ | दे.ना. | का. | १९८३ | अपू० | तृतीयपरिच्छेदः । |
| १०×४ | ८ | ३२ | " | " | १६६१ | पू० | प्रथमपरिच्छेदः । |
| १००१×३०३ | १२ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १००३×३०८ | ८ | ३१ | " | " | | " | |
| ११०३×४०३ | १५ | ६३ | " | " | | " | |
| १००३×३०९ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| ८०६×३०५ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ८०६×३ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| १०६×४०२ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १०×३०३ | ६ | ३३ | " | " | | " | |
| १०९×३०९ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| १२०२×५०३ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| १०१×४०२ | १० | ४२ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १००५×३०९ | १० | ४५ | " | " | | " | पक्षतापरामर्शचयवप्रकरणानाम् । |
| १०८×४०३ | १० | ३५ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १११×४०१ | ७ | ३३ | " | " | | " | बौद्धाधिकारदीधित्युपटिप्पणमित्यपि नामान्तरम् । |
| १०×३०७ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| ७०२×२०७ | ८ | ३१ | " | " | | " | |
| १०६×३०७ | ९ | ४७ | " | " | | " | |
| १००३×३ | ५ | ३७ | " | " | | " | |
| ८×३०७ | १० | २५ | " | " | | " | |
| ६०९×५०४ | १२ | १८ | " | " | १९४२ | पू० | पञ्चमाध्यायस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|-----------------|---|
| ३३७१३ | तार्किकरक्षाकारिका | | १-८ । |
| ३३७१४ | न्यायसूत्रवृत्तिः | विश्वनाथः | १-२१, ४६-१०३ । |
| ३३७१५ | न्यायसिद्धान्तदीपः | | ३-१४, १६-३०, ३४-४७, ५९, ५९, ६१-६८, ७०-७३ । |
| ३३७१६ | तर्कभाषाभावार्थदीपिका | गौरीकान्तः | १-१३, १३-३७ । |
| ३३७१७ | " | " | १-११, ११-१०२ । |
| ३३७१८ | आत्मतत्त्वविवेकटीका | तार्किकशिरोमणिः | १-४५, १-७७, १-१५, १-११+२, १-१८ । |
| ३३७१९ | न्यायसिद्धान्तदीपप्रभा | शेषानन्तः | १-५० । |
| ३३७२० | " | " | १४-३२, ३४-३५ । |
| ३३७२१ | तार्किकरक्षानिष्कण्टका | मह्लिनाथः | १-४७, ४७-५०, ५२-८३, ८९-९४ । |
| ३३७२२ | तर्कभाषा | केशवमिश्रः | १-२८ । |
| ३३७२३ | " | | २५-३५ । |
| ३३७२४ | तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १-१९, १-३६ । |
| ३३७२५ | आत्मतत्त्वविवेकदीधितिटीका | गुणानन्दः | १-९१, ९१-१०८ । |
| ३३७२६ | तद्धितार्थविचारः | | १-२ । |
| ३३७२७ | तार्किकरक्षासारसङ्ग्रहः | वरदराजः | १-१०० । |
| ३३७२८ | ईश्वरवादः | | १-२ । |
| ३३७२९ | प्रामाण्यवादरहस्यम् | | १-१६ । |
| ३३७३० | अभावज्ञानप्रतियोग्यारोप- कारणकारणभावविचारः | | १ । |
| ३३७३१ | विशिष्टवैशिष्ट्यबोध- हेतुताविचारः | | १-३ । |
| ३३७३२ | ब्राह्मणत्वजातिविचारः | | १-३ । |
| ३३७३३ | सामग्रीवादः | | १-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- कारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|------------|----------|------------------------|---|
| ११°८×५ | ९ | ३३ | दे.ना. | का. | | पू० | प्रथमतः पञ्चमाध्यायान्ता । |
| १२°३×६°५ | १५ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ११°२×३°३ | ७ | ४४ | " | " | | " | |
| ९°६×४°६ | १२ | १९ | " | " | | " | |
| ९°७×४°५ | १३ | ३३ | " | " | | पू० | |
| १३°४×४°३ | ६ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| ८°८×३°३ | १० | ३३ | " | " | | पू० | |
| १०°२×३°१ | १२ | ६३ | " | " | | अपू० | |
| ११°३×३°५ | ७ | ३२ | " | " | | " | |
| ९°७×४°३ | १४ | ४२ | " | " | सन १८२७ | पू० | |
| ७°७×३°२ | ७ | ३२ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणात्सिद्धान्तलक्षण- प्रकरणांशः । |
| १०°५×४°१ | १३ | ५४ | " | " | | " | |
| १०°१×४°३ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| १८°३×४°२ | १० | ८५ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १२°५×२ | ९ | ३४ | दे.ना. | " | ५७ (?) | " | |
| १७°८×४°२ | १० | ८३ | वङ्ग. | " | | " | |
| १८°१×३°९ | ९ | ८७ | " | " | | " | |
| १८°७×४°२ | १० | ९२ | " | " | | " | |
| १७°६×४°१ | ९ | ८० | " | " | | अपू० | |
| १८°६×३°२ | ८ | ९९ | " | " | | " | |
| १८°२×४°३ | १० | ८३ | " | " | | " | स्वतन्त्रोऽयं निबन्धग्रन्थः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|---------------------------|-------------------|
| ३३७३४ | लाघवगौरवविचारः | गोकुलनाथः | १-२ । |
| ३३७३५ | लङ्घनवादार्थः | | १ । |
| ३३७३६ | संशयविचारः | | १-५ । |
| ३३७३७ | " | | १-५ । |
| ३३७३८ | समासवादटिप्पणी | | १ । |
| ३३७३९ | विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविचारः | मथुरानाथः | १-७ । |
| ३३७४० | पक्षताविचारः | | १ । |
| ३३७४१ | " | | १-१५ । |
| ३३७४२ | ज्ञानलक्षणाविचारः | | १-७ । |
| ३३७४३ | ज्ञानलक्षणाप्रत्यासत्ति- रहस्यम् | | १-६ । |
| ३३७४४ | समासवादः | गोविन्दभट्टाचार्यः | ३-९ । |
| ३३७४५ | " | " | १-५ । |
| ३३७४६ | विषयतावादः | | १ । |
| ३३७४७ | अनुमितिपरामर्शकार्यका- रणभावविचारः | | १-५ । |
| ३३७४८ | " | | १-१० । |
| ३३७४९ | लाघवज्ञानवादः | | २-३ । |
| ३३७५० | " | | १-३ । |
| ३३७५१ | स्वर्गलक्षणवादः | तर्कवागीशभट्टा- चार्यः | १-२ । |
| ३३७५२ | शब्दविशेषविचारः | " | १-३ । |
| ३३७५३ | " | " | १-५ । |
| ३३७५४ | विशेष्यविशेषणवादः | | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|-------|----------|------------------------|---|
| १८°६×४°३ | १० | ९७ | चङ्ग | का. | | अपू० | |
| १८°०×३°३ | ८ | ९७ | " | " | | पू० | |
| १८°६×४°२ | १० | ९२ | " | " | | " | |
| १८°२×४°३ | १० | १०७ | " | " | | " | |
| १८°२×३°१ | ८ | ९८ | " | " | | " | |
| १८°३×४°३ | १० | ६९ | " | " | | " | |
| १७°६×३°१ | ९ | १०५ | " | " | | अपू० | |
| १७°६×३°२ | ८ | १२५ | " | " | | पू० | |
| १७°५×३°२ | ८ | १२२ | " | " | | " | |
| १६°८×३°३ | ८ | ८० | " | " | | " | |
| १७°६×४°३ | १० | ८२ | " | " | | "* | अत्र कारणताविचारोऽपि प्रारब्धः ; परन्त्वजातावसानः । |
| १८°२×४°२ | १० | ७१ | " | " | | " | |
| १८°२×४°२ | ११ | ११० | " | " | | अपू० | |
| १८×४°२ | १० | ९८ | " | " | | पू० | |
| १७°६×४°१ | ८ | ७९ | " | " | श. १७६१ | " | |
| १७°८×३°२ | ८ | ११५ | " | " | | अपू० | सहकारित्वविचारे । |
| १८°५×३°३ | ९ | १०७ | " | " | | पू० | " |
| १७°१×३°६ | ९ | ९० | " | " | | " | सप्तमीशक्तेश्च विचारोऽत्र प्रस्तुतः । |
| १७×३°६ | ९ | ८१ | " | " | | " | अन्धकारस्य चात्र विचारः प्रस्तुतः । |
| १७°२×४°२ | ११ | ७७ | " | " | | " | अन्धकारस्य स्वर्गस्य सप्तम्याश्च- विचारोऽत्र प्रस्तुतः । |
| १८°४×४°१ | ९ | ७७ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|----------------------------|--|
| ३३७५५ | व्युत्पत्तिवादक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३७५६ | सन्निकर्षविचारः | | १ । |
| ३३७५७ | न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका- व्याख्या | हरिदाससिद्धान्त- वागीशः | १-४४ । |
| ३३७५८ | मासलक्षणविचारः | | १-२ । |
| ३३७५९ | दशलकारसारमञ्जरी | सिद्धान्तवागीशः | १-३ । |
| ३३७६० | दशलकारवादः | | १-३ । |
| ३३७६१ | कारककौमुदी | | १-१० । |
| ३३७६२ | शब्दप्रामाण्यवादः | | १-३ । |
| ३३७६३ | वाक्यवादः सटीकः | टी. हरियशोमिश्रः | १-२, २-१४ । |
| ३३७६४ | वाक्यवादः | अचलोपाध्यायः | १-२ । |
| ३३७६५ | तदादिशक्तिविचारः | | १ । |
| ३३७६६ | दानविचारः | | १ । |
| ३३७६७ | वृषोत्सर्गवादः | | १-२ । |
| ३३७६८ | शब्दरत्नम् | रामशरणभट्टाचार्यः | १-४, १ । |
| ३३७६९ | " | " | १-३ । |
| ३३७७० | " | " | १-३ । |
| ३३७७१ | शाब्दबोधविचारः | | १ । |
| ३३७७२ | वीप्सावादः | | १-२ । |
| ३३७७३ | अर्थाध्याहारवादः | | १-३ । |
| ३३७७४ | न्यायसारविचारः । | राघवभट्टः | २-५४, ६७-६९, ७०, ७०-१०० । |
| ३३७७५ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिमिश्रः | १-८७ + १, १-२८, १-४९, १-४९ + १, १-३९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १९*१×४*१ | ९ | ८२ | वङ्ग. | का. | | अपू० | प्रथमायाः । |
| १६*२×३*३ | ७ | ७१ | दे. ना. | " | | " | |
| १४*९×२*९ | ५ | ५६ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १८*८×३*६ | ८ | ८९ | " | " | | " | |
| १८*४×४ | १० | ८६ | " | " | | " | |
| १८*७×४*३ | १० | १०२ | " | " | | " | |
| १७*२×४*२ | १० | ७० | " | " | | " | |
| १९*२×४*३ | १० | ९२ | " | " | | " | |
| १८*८×४*३ | १० | ८९ | " | " | | " | टी० दोपिकाख्या । |
| १८*८×४*४ | १० | ९५ | " | " | | " | |
| १४*२×३ | ८ | ६८ | " | " | | " | |
| १८*८×४*३ | ९ | ६८ | " | " | | " | |
| १७*५×४*१ | ९ | ७२ | " | " | | " | प्रेतत्वविमुक्तिसपिण्डीकरणयोः कार्य- कारणभावविचारः । |
| १८*२×३*८ | ९ | ७१ | " | " | | " | पञ्चम्यर्थविचारश्च । |
| १८*७×४*४ | १० | ९२ | " | " | | " | |
| १८*७×४*४ | १२ | ८९ | " | " | | " | |
| १८*२×४*३ | १० | ८३ | " | " | | " | एवकार-भ्रातृपदघटितवाक्यस्य । |
| १८*२×४*१ | ९ | ८६ | " | " | | " | |
| १८*२×४*३ | १० | ८६ | " | " | | " | शाब्दबोधोपस्थित्योः कार्यकारण- भावविचारे प्राभाकरमतप्रदर्शनेन न्यायमतव्यवस्थापनम् । |
| १२×२*९ | ७ | ६० | दे. ना. | " | | अपू० | न्यायसारटीका । |
| ८*१×६*१ | १८ | २१ | " | " | १९४३ | पू० | अ० २-५ । |

| क्रमसंख्या। | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-------------|----------------------------|--------------------|---|
| ३३७७३ | न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिमिश्रः | १-२९६ । |
| ३३७७७ | न्यायवार्त्तिकम् | उद्योतकराचार्यः | २-६, ८-६९ । |
| ३३७७८ | " | " | २-४६ । |
| ३३७७९ | " | " | २-३३ । |
| ३३७८० | न्यायपरिशिष्टप्रकाशः | वर्द्धमानोपाध्यायः | ३-३३, ३६-६६ । |
| ३३७८१ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-६ । |
| ३३७८२ | " | गदाधरभट्टाचार्यः | १-२६, २६-२८, २८-१३० । |
| ३३७८३ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मधुरानाथः | १-३००, ३०२, १-२ । |
| ३३७८४ | " | " | ४४-४८ । |
| ३३७८५ | " | " | १-१२ । |
| ३३७८६ | " | " | ५-१२, १४-२२, २४-४४, ५८-६५, ६५-८१, ८४-९९, १०३, १०३-१०४, १०८-१२७, ११९-१२८, १२८, १२८-१२९, १२७-१३३, १३३-१३४, १३४-१७२, १७४-१९३, १९७, १९८, २०३, २०५-२३०, २३३-२४६, २४३-२४५ । |
| ३३७८७ | " | " | १-१०, २-९, २-१२ (=१), १-४ (=१), १९, १-२, २-११, १, १-१०, १-१५, १-१८, १-३ (=१), २-११, १-११, २-१७, १-११, १३-२८, १-३ (=१), २-१२, १-३० । |
| ३३७८८ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | २-३ । |
| ३३७८९ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | २-१८४ । |
| ३३७९० | " | " | १-४५, ५१-३१ । |
| ३३७९१ | पदार्थधर्मसङ्ग्रहटीका | व्योमशिवाचार्यः | १७१ । (गणनया) |
| ३३७९२ | " | " | १८२ । " |

| अङ्कः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ८१×३१ | १९ | १६ | दे. ना. | का. | | पू० | अ० १ । |
| ९०×३९ | १० | ३९ | मै० | " | | अपू० | अ० ३ । |
| १००×३१ | ८ | ६१ | " | " | | " | अ० ३ । |
| १००×३२ | ८ | ७२ | " | " | | " | अ० ४ । |
| १००×३२ | ८ | ७१ | " | " | | " | न्यायसू० टी.टी.टी.टी.टी । |
| १६९×३४ | ९ | ८६ | वङ्ग. | " | | " | अनुमानखण्डान्तर्गतोपाधिवादस्य । |
| १२४×३१ | ७ | ९७ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डान्तर्गतप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १९१×४ | ७ | ६८ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणादाकाङ्क्षावादांशम् । |
| ९०×४ | १० | ४० | दे. ना. | " | | " | हेत्वाभासे विरुद्धप्रकरणस्य । |
| १२४×४९ | ९ | ६९ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १८१×३ | ७ | ९८ | वङ्ग. | " | शकः १८६० | " | अनुमितिप्रकरणमारभ्य बाधपर्यन्तम् । |
| १७१×३१ | ६ | ८२ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| १७४×३३ | ८ | १०० | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १३२×९३ | ९ | ३८ | दे. ना. | " | | " | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादांशादुपसर्गवादांशः । |
| १३×९ | ९ | ४९ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणादसिद्धिप्रकरणांशः । |
| ७९×१२६ | २१ | २७ | " | " | १४४९ | " | द्वितीयभागस्य । प्रशस्तपादभाष्यटीकेति च नामान्तरम् । |
| ७९×१२६ | २० | १९ | " | " | १४४९ | " | प्रथमभागस्य । प्रशस्तपादभाष्यटीकेति च नामान्तरम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|------------------------------|--------------------|
| ३३७९३ | न्यायलीलावतीप्रकाश- प्रकाशिका | शङ्करभगीरथः | १-१९ + १, १६-१६९ । |
| ३३७९४ | आख्यातवादटिप्पणी | रघुदेवभट्टाचार्यः | १-३८ । |
| ३३७९५ | तत्त्वमग्निरहस्यम् | मथुरानाथः | १-१६ । |
| ३३७९६ | सप्तपदार्थटीका | | १-८ । |
| ३३७९७ | गादाधरीकोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३३७९८ | " | चन्द्रनारायण- भट्टाचार्यः | १-६ । |
| ३३७९९ | " | | १-८ । |
| ३३८०० | " | | १-५ । |
| ३३८०१ | " | | १-३ । |
| ३३८०२ | " | | १-४ । |
| ३३८०३ | " | | १-५ । |
| ३३८०४ | " | | १-१० । |
| ३३८०५ | " | | १-३ । |
| ३३८०६ | " | | २-३ । |
| ३३८०७ | " | | १-८ । |
| ३३८०८ | " | | १-२१ । |
| ३३८०९ | " | | १-१० । |
| ३३८१० | " | | १ । |
| ३३८११ | " | | १ । |
| ३३८१२ | " | | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लि.पि. | आद्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|-------------------------|--|
| १०७४ | ११ | ४४ | दे.ना. | का. | १६६४ | पू० | न्यायलीलावतीप्रकाशविवृतिरिति नामान्तरम् । |
| १०४३ | १० | ३९ | " | " | | " | आख्यातवादसद्व्याख्या वा । |
| १४३६ | ८ | ६९ | तेलगू | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १०४१ | १२ | ४९ | दे.ना. | " | | अपू० | टीका - तत्त्वविवेकाख्या । |
| ९९४३ | ११ | ४२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रथमलक्षणे प्रमात्व- लक्षणस्य । |
| ९९४३ | १२ | ४० | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिद्वितीयलक्षणे विशि- ष्टद्वयावहितत्वकल्पस्य । |
| ११४१ | १२ | ४२ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिद्वितीयलक्षणस्य । |
| १०७४२ | १० | ६२ | " | " | | " | " |
| १०६४८ | १२ | ४४ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिद्वितीयलक्षणांशस्य । |
| ११३४८ | १४ | ६० | " | " | | अपू० | " |
| १०९४८ | १३ | ४७ | " | " | | " | " |
| ११२४२ | १३ | ६२ | " | " | | " | " |
| ११३४८ | १३ | ६० | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिद्वितीयलक्षणे यद्रूप- पदस्य । |
| १२७४ | १० | ४६ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिद्वितीयलक्षणांशस्य । |
| १३१५१ | १३ | ६४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रथमद्वितीयलक्षणयोः । |
| ११५९४ | १० | ४० | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिद्वितीयलक्षणांशस्य । |
| १२८४८ | १० | ४७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तौ सिद्धान्तकल्पस्य । |
| ११३४६ | १४ | ४८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तौ विशिष्टद्वयावहि- तत्वस्य । |
| ११३४७ | १९ | ६२ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिद्वितीयलक्षणे यद्रू- पावच्छिन्नकल्पस्य । |
| ११४४८ | १४ | ६० | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तौ प्रथमद्वितीय- लक्षणयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्यादिवरणम् |
|------------|------------------------|------------------|-------------------|
| ३३८१३ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३३८१४ | " | | १-१६ । |
| ३३८१५ | " | | १-२ । |
| ३३८१६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३३८१७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३८१८ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-८ । |
| ३३८१९ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-१५+१, १६-३२+२ । |
| ३३८२० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३३८२१ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३३८२२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३३८२३ | " | | ३ । (गणनया) |
| ३३८२४ | " | | १-६ । |
| ३३८२५ | " | | २ । (गणनया) |
| ३३८२६ | " | | १-८ । |
| ३३८२७ | " | | १-५ । |
| ३३८२८ | " | | १-८ । |
| ३३८२९ | " | | १-१० । |
| ३३८३० | " | | ५ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ११*४×४*८ | १३ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | सामान्यनिरुक्तौ द्वितीयलक्षणांशस्य । |
| १२*९×४ | १५ | ७० | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तौ प्रथमद्वितीयलक्ष- णांशयोः । |
| १०*७×४*१ | १० | ४८ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तौ द्वितीयलक्षणांशस्य । |
| १२*७×४*७ | १२ | ५० | " | " | | पू० | व्यधिकरणप्रकरणस्थकूटघटित- लक्षणस्य । |
| १५*१×३*५ | ८ | ७३ | मै. | " | | अपू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्थविभाजक- लक्षणस्य । |
| १५*१×४ | १० | ६२ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १५*१×३*९ | ८ | ६५ | " | " | | " | " |
| १४*१×३*६ | १२ | ७४ | " | " | | अपू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्थव्यवहारोपयिक- लक्षणस्य । |
| १४*५×३*९ | १३ | ७७ | " | " | | " | व्याप्तिवादस्थ-यत्समानाधिकरण- लक्षणस्य । |
| १४*२×३*६ | ११ | ६४ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १३*९×३*६ | ११ | ७० | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्थविभाजक- लक्षणस्य व्याप्तिवादस्य च । |
| १५*१×४*२ | १३ | ८० | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्थविभाजक- लक्षणस्य । |
| १३*८×३*५ | १२ | ९५ | " | " | | "* | सव्यभिचारप्रकरणस्थसंशयघटित- लक्षणस्य । |
| १३*९×३*४ | १० | ८५ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्थप्रतिबन्धकता- घटितलक्षणस्य । |
| १४*१×३*५ | १३ | ८६ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्थसंशयघटित- लक्षणस्य । |
| १५*३×४*२ | १२ | ७२ | " | " | | " | साधारणप्रकरणस्य । |
| १४*१×३*६ | १० | ८२ | " | " | | " | " |
| १०*८×३*२ | ९ | ५९ | " | " | | अपू० | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|------------------|-------------------|
| ३३८३१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३३८३२ | " | | १-२१+१, २२-२३+३ । |
| ३३८३३ | " | | २ । (गणनया) |
| ३३८३४ | " | | १-२ । |
| ३३८३५ | " | | १-१८ । |
| ३३८३६ | " | | १-२ । |
| ३३८३७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ३३८३८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-१३ । |
| ३३८३९ | " | | १, १-४ । |
| ३३८४० | " | | १-२ । |
| ३३८४१ | " | | २ । (गणनया) |
| ३३८४२ | " | | १-१० । |
| ३३८४३ | " | | १-५ + १ । |
| ३३८४४ | " | | १-२ । |
| ३३८४५ | " | | १-२ । |
| ३३८४६ | " | | १ । |
| ३३८४७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-३२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|-------|----------|------------------------|---|
| १४*१×३*५ | ११ | ८२ | मै. | का. | | अपू० | साधारणप्रकरणस्य । |
| १३*८×३*६ | १० | ७९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थविशिष्ट- द्वयावदितत्त्वकल्पस्य । |
| १४*१×४*१ | १४ | ८५ | " | " | | " | " |
| १२*१×३*९ | १३ | ७७ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थज्ञान- वैशिष्ट्यान्वयचिह्नत्वकल्पस्य । |
| १४*५×४*१ | १० | ७० | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३*९×३*४ | १० | ७१ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रथमलक्षणे समूहा- लम्बनकल्पस्य । |
| १२*८×३*८ | १० | ७८ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थसाक्षात्कार- कल्पस्य । |
| १४*२×३*५ | ११ | ८३ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थप्रथम- लक्षणस्य । |
| १३*९×३*५ | १२ | ८८ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थसाक्षा- त्कारकल्पस्य । |
| १५*३×४*३ | १३ | ८२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थ अथेत्यादि- शब्दस्य । |
| १४*९×३*९ | १२ | ७२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थविशिष्टा- द्वयावदितत्त्वकल्पस्य । |
| १४*१×३*५ | १० | ६८ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थात्रयदन्ति- कल्पस्य । |
| १३*६×३*३ | १० | ७९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थलिङ्ग- ज्ञानवद्वितीयलक्षणस्य । |
| १४*१×४*१ | ९ | ६९ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थद्वितीय- लक्षणे प्रतिबन्धकत्वस्य । |
| १३*९×३*४ | ९ | ७० | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थविशिष्टा- न्तरावदितकल्पस्य । |
| १५*९×४*१ | १२ | ५२ | " | " | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थ न च चतुष्टयकल्पस्य । |
| १४*१×४ | ६ | ५५ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------|-------------------|
| ३३८४६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १९-२० । |
| ३३८४९ | " | " | २१-३६ । |
| ३३८५० | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेशोपाध्यायः | १ । |
| ३३८५१ | " | " | १-२ । |
| ३३८५२ | " | " | २ । (गणनया) |
| ३३८५३ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-३ । |
| ३३८५४ | " | " | ४-५ । |
| ३३८५५ | " | " | १-३ । |
| ३३८५६ | " | " | १, ४ । |
| ३३८५७ | " | " | १-२ । |
| ३३८५८ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरभट्टाचार्यः | १-९ । |
| ३३८५९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ३ । |
| ३३८६० | तत्त्वमणिरहस्यम् | मथुरानाथः | १-२ । |
| ३३८६१ | " | " | १-१० । |
| ३३८६२ | " | " | १-६ । |
| ३३८६३ | माथुरीकोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३३८६४ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-२ । |
| ३३८६५ | प्रतिबन्धकत्वविचारः | | १ । |
| ३३८६६ | जागदीशीकोडपत्रम् | | १ । |
| ३३८६७ | " | | १ । |
| ३३८६८ | " | | २ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|-------|----------|------------------------|---|
| १३*८×३*८ | ९ | ७३ | मै० | का. | | अपू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १३*९×३*८ | ९ | ७१ | " | " | | " | " |
| ११*८×२*९ | ६ | ४९ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| ११*६×२*४ | ९ | ९६ | " | " | | " | " |
| १०*९×२*४ | ९ | ९९ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| ११*९×३*३ | ६ | ४७ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| ११*८×३*३ | ८ | ६२ | " | " | | " | " |
| १२*१×३*२ | ७ | ६१ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १२*९×३*३ | ८ | ६६ | " | " | | " | साधारणप्रकरणस्य । |
| १२*१×३*१ | ९ | ९८ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३*९×३*८ | ११ | ६६ | " | " | | पू० | साधारणप्रकरणस्य । |
| १२*३×३*१ | ६ | ८७ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १४*९×३*३ | ९ | ७१ | " | " | | " | साधारणप्रकरणस्य । |
| १४*१×३*९ | १० | ७७ | " | " | | पू० | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १३*९×४ | १० | ६६ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १३*९×३*४ | १२ | ९२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रथमलक्षणस्य । |
| ११*९×३*४ | ४ | ९८ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिसव्यभिचारप्रकरणयोः । |
| १३*१×३*१ | १० | ६८ | " | " | | पू० | नानानिश्चयानामेकरूपेण प्रतिबन्ध- कत्वविचारोऽत्र प्रतीकमनवतार्थ- स्वातन्त्र्येण कृतः । |
| १३*४×३*९ | ८ | ७४ | " | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्थसिद्धान्तलक्षणस्य । |
| ८*१×३ | १० | ४९ | " | " | | पू० | व्यधिकरणप्रकरणस्थप्रथम- लक्षणांशस्य । |
| १२*१×४*१ | ११ | ६९ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्थप्रगतभलक्षणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|-------------------|-------------------------------------|
| ३३८६९ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १, १ । |
| ३३८७० | " | | १ । |
| ३३८७१ | " | | १ । |
| ३३८७२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | २-७, १७-२४ (= ५), ६-१६, ८-१९, ३९-४० |
| ३३८७३ | सङ्कल्पवादः | | १-४ । |
| ३३८७४ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३३८७५ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | जगदीशः | १ । |
| ३३८७६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | " | १-३ । |
| ३३८७७ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३८७८ | " | | १-२ । |
| ३३८७९ | " | | १-१ । |
| ३३८८० | व्युत्पत्तिवादक्रोडपत्रम् | | ६ । (गणनया) |
| ३३८८१ | सामान्यलक्षणावादार्थः | | २ । " |
| ३३८८२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३८८३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३८८४ | " | | १ । |
| ३३८८५ | तत्त्वचिन्तामणिमयूखः | जगदीशतर्कालङ्कारः | ३-५, ५-८, २+१, ३-६, १-६ । |
| ३३८८६ | तत्त्व०मणिदीधितिक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३८८७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ५ । (गणनया) |
| ३३८८८ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १२-२५ । |
| ३३८८९ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | | १३-१४, २३-२५ । |

| आकारः | पद्धि- संख्या | वाक्य- संख्या | विधिः | आधारः | निधिकारः | पूर्वोक्त- विषयः | विशेषविचारः |
|----------|------------------|------------------|---------|-------|----------|---------------------|--|
| १४*२×३*६ | १२ | ६९ | मै. | का. | | पू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्थज्ञानविरो- धित्वकल्पस्य गादाधरीयसाक्षात्कार- कल्पस्य च । |
| १२*९×३*९ | ११ | ७६ | " | " | | अपू० | संशयपक्षतायाः । |
| १३*३×३*८ | १३ | ८८ | " | " | | पू० | व्यधिकरणप्रकरणस्थसौन्दर्यमतस्य । |
| १२*०×३*९ | ८ | ७० | दे. ना. | " | | अपू० | प्रत्यक्षे ग्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १८*१×३*२ | ७ | ८२ | वङ्ग. | " | | पू० | सङ्कल्पस्य न्यायरीत्या विचारः । |
| १७*२×३*६ | ८ | ६६ | " | " | | " | व्यधिकरणे प्रथमलक्षणस्य । |
| १७*१×३*६ | ७ | ९७ | " | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १७*०×३*६ | ८ | ६६ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १७*७×३*८ | ८ | ६८ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७*०×३*८ | ८ | ६३ | " | " | | " | " |
| १७*७×३*८ | ८ | ६६ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १६*८×३*४ | ८ | ७७ | " | " | | " | प्रथमव्युत्पत्तेः, अन्तेयोग्यतासत्ति- प्रकरणयोर्मोक्षुरी च । |
| १७*६×३*६ | १० | १२२ | " | " | | " | अन्ते सामान्यनिरुक्तिजागदीशीकोड- पत्रञ्च । |
| १७*६×३*६ | ९ | ८९ | वङ्ग. | का. | | " | साधारणप्रकरणस्य । |
| १७*७×३*६ | ६ | १०४ | " | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणे सिद्धान्तलक्षणस्य । |
| १७*६×३*९ | ८ | ६८ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १७*१×३*६ | ७ | ९६ | " | " | | " | अवयवप्रकरणांशाद्वाधप्रकरणान्तः । |
| १६*६×३*९ | ७ | ९२ | दे. ना. | " | | " | सिद्धान्तलक्षणे चो यदीयकल्पस्य । |
| १६*२×३*९ | ११ | ६७ | वङ्ग. | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७*३×३*६ | ७ | १०४ | " | " | | " | असाधारणप्रकरणांशादसिद्धिप्रकर- णांशा । |
| १७*२×३*६ | ८ | ९६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|------------------|--------------------------|
| ३३८९० | किरणावलीप्रकाशदीधिति- व्याख्या | भवानन्दः | १-२५, २६-२७, २७, २९-५७ । |
| ३३८९१ | व्युत्पत्तिवादक्रोडपत्रम् | | २-७ । |
| ३३८९२ | किरणावलीव्याख्या | मथुरानाथः | १-५०, ५२-९६ । |
| ३३८९३ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशभट्टाचार्यः | १-४२ । |
| ३३८९४ | किरणावलीप्रकाशविवृतिः | मथुरानाथः | १-५५ । |
| ३३८९५ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | २ । |
| ३३८९६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | हेरम्बः | १-११ । |
| ३३८९७ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | | ३१ । |
| ३३८९८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३८९९ | " | | १-२ । |
| ३३९०० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २ । |
| ३३९०१ | पञ्चतावादाथः | | ३ । (गणनया) |
| ३३९०२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३३९०३ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३३९०४ | विवाहवादाथः | | १-२ । |
| ३३९०५ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | जगदीशभट्टाचार्यः | ६-१४ । |
| ३३९०६ | क्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३३९०७ | स्वर्गलक्षणविचारः | | १ । |
| ३३९०८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३३९०९ | अपूर्ववादः | | १ । |
| ३३९१० | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-२, १-३ । |
| ३३९११ | तर्करहस्यवादाथः | | २ । (गणनया) |

| श्रमणः | पक्षि- संख्या | शहर- संख्या | चित्रः | जानः | तिथिस्थानः | पूर्णाङ्क- निर्देशः | विशेषविवरणम् |
|----------|------------------|----------------|---------|------|------------|------------------------|--|
| १७०२४३०४ | ७ | १०३ | वह्नः | का. | १७७६ | अपू० | गुणप्रकरणस्य । |
| १००८४२३ | ७ | ९९ | दे. ना. | " | | " | प्रथमव्युत्पत्तेः । |
| १७०२४२३ | ८ | १०९ | वह्नः | " | | " | द्रव्यप्रकरणस्य । |
| १६०७४३०९ | ८ | ८२ | " | " | | " | |
| १७०६४३०९ | ६ | ९९ | " | " | १७७३ | पू० | गुणप्रकरणस्य । |
| १७०७४३०८ | ८ | ६६ | " | " | | अपू० | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १७०२४३०६ | ७ | ९३ | " | " | | " | ज्ञानान्यनिस्तिकप्रकरणस्य । |
| १३०९४३०४ | ९ | ८० | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १७४३०९ | ७ | ६४ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १७०६४३०८ | ८ | ६२ | " | " | | पू० | अवच्छेदकस्य निरुक्ती प्रतियोगिता- वच्छेदकानतिरिक्तकल्पस्य । |
| १७०१४३०६ | ७ | ९१ | " | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १७०७४३०९ | ९ | ११९ | " | " | | " | बाधनादार्थश्च । |
| १७०४४३०८ | ८ | ६९ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १७०३४३०७ | ८ | ७० | " | " | | पू० | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १७०७४३०६ | ८ | ६८ | " | " | | " | |
| १७०२४३०६ | ७ | ९० | " | " | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १७०२४३०६ | ८ | ९३ | " | " | | " | कारकविचारः । |
| १७०९४३०७ | ८ | ६७ | " | " | | पू० | |
| १७०७४३०८ | ९ | ६८ | " | " | | अपू० | व्याप्त्यनुगमप्रकरणस्य । |
| १७०२४३०६ | ८ | ९९ | " | " | | पू० | अङ्गविगमेऽपि चिह्नस्मरणात्कर्मणां साक्षतेत्यस्य विचारः । |
| १७०७४३०८ | ८ | ७० | " | " | | अपू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १६०८४३०९ | ६ | ९६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|----------------|------------------------------------|
| ३३९१२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३९१३ | कारकविचारः | | ३-१२, १६, १७-२२ । |
| ३३९१४ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३९१५ | विवाहवादाथः | | १-३ । |
| ३३९१६ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १२ । |
| ३३९१७ | लक्षणसङ्ग्रहः | नरोत्तमः | १-१५ । |
| ३३९१८ | न्यायमतम् | | १ । |
| ३३९१९ | उपमानादिलक्षणम् | | २ । (गणनया) |
| ३३९२० | तर्कसङ्ग्रहः सटीकः | | ३ । ” |
| ३३९२१ | तत्त्वचिन्तामणिः | | ३ । ” |
| ३३९२२ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-७ । |
| ३३९२३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-१३ (= ११-२३) । |
| ३३९२४ | आत्मतत्त्वविवेकदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २ । (गणनया) |
| ३३९२५ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाश- टीका | दिनकरः | १-९६, १-१९, १-२, १-२, १-३३, १-१३ । |
| ३३९२६ | न्यायग्रन्थविशेषः | | २-१० । |
| ३३९२७ | समवायलक्षणविचारः | | १ । |
| ३३९२८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ३३९२९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-४, ७-२३ । |
| ३३९३० | न्यायग्रन्थविशेषः | | १०३ । (गणनया) |
| ३३९३१ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २ । ” |
| ३३९३२ | ” | | १-१३ । |
| ३३९३३ | न्यायग्रन्थविशेषः | | ४६-५२, ६२-९१ । |
| ३३९३४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-१४६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | श्लोक- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्ण-पूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १८१×३३ | ६ | १४० | मै० | का. | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७२×३६ | ८ | १३ | वङ्ग | " | | " | |
| १७५×३६ | ९ | १५ | " | " | | पू० | वाधप्रकरणस्य । |
| १७३×३८ | ८ | ६९ | " | " | | " | |
| १७७×३८ | ८ | ६८ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १३४×७५ | १२ | ३३ | दे. ना. | " | | " | गौतमोक्तप्रमाणादिपदार्थानाम् । |
| १०८×४६ | २१ | ५३ | " | " | | अपू० | |
| ७४×४९ | २० | ५० | " | " | | " | |
| १११×४७ | १८ | ४६ | " | " | | " | प्रत्यक्षानुमानखण्डौ । |
| १४७×३ | ७ | ७९ | वङ्ग. | " | | " | विधिवादस्य । |
| १६१×३४ | १२ | १०२ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७७×३९ | ८ | ८९ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणयोः । |
| १२८×३३ | १३ | ६८ | " | " | | " | बौद्धाधिकारटिप्पणीतिनामान्तरम् । |
| ९२×४२ | ११ | ४४ | दे. ना. | " | | " | अनुमितिप्रकरणाद्व्यधिकरण- प्रकरणांशा (टी.टी.टी.) |
| १०९×४४ | ९ | ४० | " | " | | " | कणादोक्तपदार्थविवेचनात्मकः । |
| ९४×३६ | ३४ | २२ | " | " | | पू० | |
| ८२×४ | ११ | ४२ | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०५×३६ | ११ | ५५ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणावच्छेदकत्वनिरुक्ति- प्रकरणयोः । |
| १०४×४६ | १४ | ३९ | वङ्ग. | " | | " | |
| १०८×४३ | ११ | ४२ | दे. ना. | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १०५×४३ | ११ | ४१ | " | " | | पू० | " |
| १००×३७ | १२ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १०१×४ | ८ | ३३ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणात्परामर्शप्रकरणांशा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--------------|--|
| ३३९३५ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | | ९, १२-२० । |
| ३३९३६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १७, २५-२७, २९-३०, ३४-३८, ४०-४२, ४४-४६, ४८-४९, ५१, १००-१०२, १०६-१०९, १०९-१११, ११३-११८, १२०-१२५, १२८-१३५, १३५-१४२, १४२-१६२, १६४-१६८, १९८ । |
| ३३९३७ | न्यायसिद्धान्तदीपः | शशधरः | ११५ । (गणनया) |
| ३३९३८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ३, १२-१४, २४-३१, ७४+१ । |
| ३३९३९ | " | गादाधरः | ३+१ । |
| ३३९४० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-३ । |
| ३३९४१ | तत्त्वचिन्तामणिः | | ८ । (गणनया) |
| ३३९४२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ६१-६३, ६३-६४, ६४-६५, ६५-८० । |
| ३३९४३ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३९४४ | न्यायग्रन्थविशेषः | | २ । (गणनया) |
| ३३९४५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३३९४६ | " | | १ । |
| ३३९४७ | " | | १-२ । |
| ३३९४८ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३३९४९ | किरणावलीप्रकाशटीका | | ५०-६१, ७२-९०, १०१-१०६, १०९-११५ । |
| ३३९५० | तत्त्वचिन्तामणिरूपणी | | १ । |
| ३३९५१ | न्यायग्रन्थविशेषः | | ३-५, ७, ७-१२ । |
| ३३९५२ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाटीका | नीलकण्ठः | ४-८ । |
| ३३९५३ | न्यायग्रन्थविशेषः | | १० । |
| ३३९५४ | तर्कसङ्ग्रहदीपिकाटीका | | ९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|---|
| १०*२×४*१ | १२ | ४२ | दे. ना. | का. | | अपू० | शब्दखण्डे शब्दाप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १*३×३*८ | ८ | ४५ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| १×३*५ | ७ | ३४ | " | " | | " | अत्र शक्तेः मोक्षस्य सुवर्णतैजसस्त्वा- देर्विचारः प्रस्तुतः । |
| १०*६×४*४ | १४ | ४४ | " | " | | " | व्याप्तिवादस्य (जागदीशी) । |
| १०*५×४*३ | १३ | ४७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १*१×४*५ | १४ | ४२ | " | " | | पू० | सिंहलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०*५×४*५ | ११ | ३६ | " | " | | अपू० | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य, अन्ते चोर्व- रितपत्राण्यपि सन्ति । |
| १०*६×४*३ | ११ | ३६ | " | " | | " | व्याप्तिवादस्य । |
| १०*५×४*६ | ४ | ४५ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ८*२×३ | ७ | ४२ | " | " | | " | |
| ११*३×४*८ | १४ | ४५ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १०*३×४*७ | १५ | ४४ | " | " | | " | बाधप्रकरणस्य । |
| १०*३×४*७ | १७ | ४७ | " | " | | " | प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०*३×४*७ | १४ | ४५ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०*५×३*१ | ८ | ३३ | " | " | | " | |
| ६*९×४*४ | २४ | २४ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चके साध्यवदन्यावृत्तित्व- लक्षणस्य । |
| १×४ | १४ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| १*२×४*२ | १५ | ३८ | " | " | | " | |
| ८*८×३*६ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १*१×४*१ | १८ | ४५ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|---------------|--|
| ३३९५५ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-७ । |
| ३३९५६ | न्यायग्रन्थविशेषः | | ४ । (गणनया) |
| ३३९५७ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-८ । |
| ३३९५८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दः | १४-३५, ४८-५२ । |
| ३३९५९ | भ्रमत्वानुगमविचारः | | १ । |
| ३३९६० | न्यायरहस्यम् | | १-९ । |
| ३३९६१ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-२ । |
| ३३९६२ | न्यायग्रन्थविशेषः | | ११-१६ । |
| ३३९६३ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १६-१८, २०-३१, २०-२२, २५-२७, ३०-३४, ३७ |
| ३३९६४ | न्यायग्रन्थटीका | | ७४-८० । |
| ३३९६५ | न्यायग्रन्थविशेषः | | २४-२८+१, ३०, ३२, ३४, ३६-४४, ४७-५०, ५२, ६५-६६, ६९, ७१-७६, ७८, ८१-९४ । |
| ३३९६६ | " | | १-४+१ = (३) । |
| ३३९६७ | " | | १ । |
| ३३९६८ | " | | १३, २६-२७ । |
| ३३९६९ | " | | १+१ । |
| ३३९७० | रत्नकोशकारमतम् | | २-५, ७-१२, १४-२५, २८-३१, ३८-३९, ४१-४७, ४९-५३ । |
| ३३९७१ | न्यायग्रन्थविशेषः | | १७-१८, २३-२४, १७, ३९ । |
| ३३९७२ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | | ८-२८, २८ । |
| ३३९७३ | तत्त्व०मणिदीधितिग्रहस्यम् | | १-७, २९-५१, ६०-७३, ७३-७८ । |
| ३३९७४ | न्यायग्रन्थविशेषः | | ३९-४२ । |
| ३३९७५ | " | | २-५५ । |
| ३३९७६ | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | ३-३० । |
| ३३९७७ | विविधपत्राणि | | ५९ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १०°६×४°६ | १५ | ४६ | दे.ना. | का. | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| ९°६×४°२ | १३ | ३६ | " | " | | अपू० | व्याप्तिवादस्य । |
| १०°५×४°६ | १४ | ४७ | " | " | | पू० | सव्यभिचारसिद्धान्तलक्षणस्य । |
| १०×३°८ | ९ | ४३ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १०°७×४°४ | १५ | ४५ | " | " | | पू० | |
| १०°६×३°९ | ९ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| १०°४×४°६ | १७ | ४७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य |
| १०×३°५ | ११ | ५४ | " | " | | " | अभावप्रत्यक्षविचारः । |
| ९°४×४°४ | १४ | ५२ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| ८°८×३°७ | ८ | ३३ | " | " | | " | |
| ९°७×३°२ | ७ | ४० | " | " | | " | |
| ९°५×३°४ | ८ | ४३ | " | " | | " | |
| ९°७×४°२ | ७ | ४६ | " | " | | " | |
| ९°८×३°५ | ८ | ४९ | " | " | | " | पृष्ठैकदेशे "र०न०" इति लिखितं वर्त्तते । |
| ९°९×४°२ | १२ | ४ | " | " | | " | |
| ९°९×३°४ | ८ | ५२ | " | " | | " | |
| ९°५×४ | ७ | ३७ | " | " | | " | पृष्ठैकदेशे "रा०द०" इतिलिखितमस्ति । |
| ९°३×३°४ | ८ | ३४ | " | " | | " | व्याप्तिवादस्य । |
| ९°१×३°३ | १० | ५० | " | " | | " | " |
| १०°४×४°४ | १३ | ४५ | " | " | | " | शब्दपरिच्छेदः । |
| ९°९×४°२ | १४ | ३५ | " | " | | " | |
| १०°२×४°२ | १२ | ३५ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| विविधः | × | × | " | " | | " | न्यायग्रन्थानाम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|----------------|-------------------|
| ३३९७८ | कारकाद्यर्थनिर्णयः | | २ । (गणनया) |
| ३३९७९ | शब्दार्थसारमञ्जरी | जयकृष्णः | १२-२१ । |
| ३३९८० | तत्त्वमण्यालोकटीका | मथुरानाथः | १ । |
| ३३९८१ | गादाधरीपत्रिका | | १ । |
| ३३९८२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १ । |
| ३३९८३ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १ । |
| ३३९८४ | जागदीशीपत्रिका | | १ । |
| ३३९८५ | गादाधरीपत्रिका | | १-२ । |
| ३३९८६ | उर्वरितपत्राणि | | १०८ । (गणनया) |
| ३३९८७ | तत्त्वमणिटीका | मथुरानाथः | ५-६ । |
| ३३९८८ | जागदीशीपत्रिका | | १, ३-४ । |
| ३३९८९ | तदादिशब्दशक्तिविचारः | | १-४ । |
| ३३९९० | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-३, ३-४, ७ । |
| ३३९९१ | सामान्यनिरुक्तिपत्रिका | | ९ । (गणनया) |
| ३३९९२ | शक्तिवादः | | १७ । |
| ३३९९३ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | २६ । |
| ३३९९४ | तत्त्वचिन्तामणिः | | ३३-३६ । |
| ३३९९५ | गादाधरीपत्रिका | | ९ । |
| ३३९९६ | जागदीशीपत्रिका | | १-२ । |
| ३३९९७ | गादाधरीपत्रिका | | ५-७ । |
| ३३९९८ | " | | ८-९ । |
| ३३९९९ | तत्त्वमणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | १-९, ३, ५+१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विशेषः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १२×३०५ | ८ | ३७ | वङ्ग. | का. | | अपू० | भवानन्दीयः, करणलक्षणविचारः । |
| १७×६×३०६ | ६ | ५६ | " | " | | " | " |
| १०×२×४०५ | १५ | ५० | दे.ना. | " | | " | प्रत्यक्षे प्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| ९×६×४०९ | १६ | ४५ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १२×३×३०५ | ८ | ५४ | मै. | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| ११×२×७ | ५ | ५३ | " | " | | " | " |
| १२×८×३०९ | १२ | ७७ | " | " | | " | न्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १२×८×४०१ | ११ | ७२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १९×५×४ | × | × | वङ्ग. | " | | " | न्यायग्रन्थानाम् । |
| १०×४×३०५ | १२ | ४९ | मै. | " | | " | तर्कप्रकरणस्य । |
| १८×३×४ | ८ | १०० | वङ्ग. | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १८×३×२ | ८ | ९८ | " | " | | " | अपेक्षाबुद्धिविचारश्च । |
| १३×४×३०२ | ५ | ५२ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । अवयव- दीधितिश्च । |
| १६×४×३ | १२ | १०१ | " | " | | " | " |
| १८×३×२ | ८ | ८७ | " | " | | " | " |
| १७×३×२×८ | ८ | १०० | " | " | | " | सत्प्रतिपत्तप्रकरणस्य । |
| १३×३×२ | ८ | ५० | " | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १७×८×४०१ | १२ | ९० | " | " | | " | माधुरीपत्रिका च, सव्यभिचार- प्रकरणस्य । |
| १७×४×३ | ११ | ७२ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १९×२×४×३ | १० | ७२ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७×४×४×२ | १२ | ८५ | " | " | | " | " |
| १३×७×२×९ | ६ | ५६ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-------------------|----------------------------|
| ३४००० | तत्त्व०मणिदीधितिदिप्पणी | | ३ । (गणनया). |
| ३४००१ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | ६४-६५ । |
| ३४००२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १० । |
| ३४००३ | तत्त्व०मणिदीधितिदिप्पणी | गदाधरभट्टाचार्यः | १०-१०० । |
| ३४००४ | शक्तिवादविवृतिः | मथुरानाथः | १, ४, ७, ९, १२-१३, १५-१७ । |
| ३४००५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १७ । (गणनया) |
| ३४००६ | जागदीशीपत्रिका | | १-३, १-४ । |
| ३४००७ | तत्त्वचिन्तामणिदिप्पणी | | ५ । (गणनया) |
| ३४००८ | गादाधरीपत्रिका | | १-२ । |
| ३४००९ | जागदीशीपत्रिका | | २ । (गणनया) |
| ३४०१० | " | | २ । " |
| ३४०११ | तत्त्व०मणिदीधितिदिप्पणी | जगदीशतर्कालङ्कारः | १ । |
| ३४०१२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | " | १ । |
| ३४०१३ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | २ । (गणनया) |
| ३४०१४ | पदवाक्यरत्नाकरः | | १-५६ । |
| ३४०१५ | शब्दशक्तिप्रकाशिका | जगदीशतर्कालङ्कारः | ७ । (गणनया). |
| ३४०१६ | आख्यातवादटीका | | १-२० । |
| ३४०१७ | ब्राह्मणत्वजातिवादः | | २-७ । |
| ३४०१८ | पदवाक्यरत्नाकरकारिका | गोकुलनाथः | १-६ । |
| ३४०१९ | शब्दार्थसारमञ्जरी | जयकृष्णः | १-२० + १, १९ । |
| ३४०२० | " | " | २९ । (गणनया) |
| ३४०२१ | कारकचक्रम् | | २० । " |
| ३४०२२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-५० । |

| आकारः | परि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १८२२३० | १० | १२ | चक्ष. | का. | | अपू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| १७११३० | ८ | ७० | " | " | | " | पक्षतापरामर्शप्रकरणयोः । |
| १२०४४ | ७ | ६४ | मी० | " | | " | सव्यभिचारप्रकरणस्य । |
| १७०५३० | ७ | ९६ | चक्ष. | " | | " | परामर्शप्रकरणस्य । |
| १६०६३२ | ८ | ८० | " | " | | " | |
| १७०५३० | ८ | ७८ | " | " | | " | सामान्याभाव-सामान्यलक्षणा- प्रकरणयोः । |
| १३०५४२ | ८ | ६० | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १८२३० | १० | ८७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १८२३४ | ८ | ११० | " | " | | पू० | सिद्धलक्षणस्य । |
| १८३३३६ | ९ | ६४ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १७३३४३ | १३ | ७६ | " | " | | अपू० | अवच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १७२३४ | ७ | ८४ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायप्रकरणस्य । |
| १७३३४१ | ९ | ६१ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १७०५३० | ८ | ८७ | " | " | | " | अपूर्ववादप्रकरणस्य । |
| १२२२४८ | १० | ४६ | दे. ना. | " | | " | प्रथमाविवरणाष्टतुर्थीविवरणांशः । |
| ११३३४१ | ११ | ४९ | " | " | | " | |
| १००८३० | ८ | ६६ | " | " | | " | |
| १०८४३३ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| १३३५ | १२ | ४४ | " | " | | पू० | |
| १६११३२ | ६ | ७६ | चक्ष. | " | | अपू० | |
| १४२२३१ | ४ | ६४ | " | " | श. १७६२ | " | |
| १४२२३२ | ६ | ६९ | " | " | | " | |
| १०५४३ | ११ | ४३ | दे. ना. | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य, गादा- ध्याष्टीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|-------------------|---------------------------|
| ३४०२३ | सर्वोपकारिणी | महादेवः | ४७ । (गणनया) |
| ३४०२४ | आख्यातशक्तिवादटिप्पणी | | १-१८, १५-१९+१ । |
| ३४०२५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | २, २ । |
| ३४०२६ | कारकाद्यर्थनिर्णयः | भवानन्दः | १-९ । |
| ३४०२७ | न्यायकुसुमाञ्जलिटीका | रामभद्रः | १-१७ । |
| ३४०२८ | कारकचक्रम् | भवानन्दः | १-७ । |
| ३४०२९ | व्युत्पत्तिवादः | | ७० । |
| ३४०३० | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली सटीका | | ४, ६, ९-२६ । |
| ३४०३१ | किरणावलीप्रकाशटीका | | १ । |
| ३४०३२ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २७-३५, ३८, ३६-४३, ४३-५२ । |
| ३४०३३ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | | २-६ । |
| ३४०३४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दः | २-१० । |
| ३४०३५ | " | | ४३-५० । |
| ३४०३६ | न्यायसिद्धान्तसारः | रामभद्रसार्वभौमः | ६४ । (गणनया) |
| ३४०३७ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २७-३१, ३१-२१० । |
| ३४०३८ | न्यायसिद्धान्तमाला | | २-१५६ । |
| ३४०३९ | सर्वोपकारिणी | महादेवः | ८०-१६९ । |
| ३४०४० | व्युत्पत्तिवादः | | १-२२ । |
| ३४०४१ | आख्यातवादटीका | रघुदेवभट्टाचार्यः | १, ३-४४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ९४×४४ | ९ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | तत्त्वमणिदीधितिभवानन्दीयटीका । |
| १०६×३० | ८ | ३७ | " | " | | " | अन्तिमं पत्रं सूर्यसप्ततिनामार्घ्य- दानस्य । |
| १०९×४३ | १२ | ३० | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य, पदार्थदीपिका च । |
| १०८×४१ | ९ | ४० | " | " | | " | कारकवाद इति नामान्तरम् । |
| १७७×३३ | ८ | ६२ | वङ्ग. | " | | " | |
| २०×४५ | १० | ८८ | " | " | | " | कारकाद्यर्थनिर्णयो वा । |
| १८×३३ | ६ | ५७ | " | " | | " | |
| १३९×५४ | १२ | ४६ | दे. ना. | " | | " | टीका-दिनकरी । प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ९७×४१ | १३ | ४५ | " | " | | " | द्रव्यप्रकरणस्य । |
| १२८×५१ | ९ | ५८ | " | " | | " | केवलव्यतिरेक्यर्थापत्तिप्रकरणयोः । टीका-माधुरी । |
| ८८×३६ | ११ | ४९ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| ८८×३७ | १५ | ५० | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिसव्यभिचारप्रकरणयोः |
| १०५×४१ | १० | ४३ | " | " | | " | सामान्यलक्षणाप्रकरणस्येयं टीका, जागदीशीगादाधरोभिन्ना । |
| ११६×३९ | ११ | ३९ | " | " | | " | अत्र नियोज्यान्वयसुवर्णतैजसत्व- संयोगविभागादिविचाराः । |
| १२७×४७ | ९ | ४७ | " | " | | " | टीका-माधुरी । शब्दखण्डे विधि- वादस्य । |
| १२१×४७ | ८ | ४० | " | " | | " | |
| १०४×४७ | ११ | ४० | " | " | | " | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिभवानन्दीय- व्याख्या । सव्यभिचारसाधारणा- साधारणप्रकरणानाम् । |
| १०५×४५ | ९ | ४३ | " | " | | " | |
| १०२×४१ | ९ | ३६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या। | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-------------|-----------------------------------|--------------------|-------------------------------------|
| ३४०४२ | सारमञ्जरी | जयकृष्णः | १-७ । |
| ३४०४३ | सर्वनामशक्तिविचारः | | १-३ । |
| ३४०४४ | किरणावलीप्रकाशः | वर्द्धमानोपाध्यायः | १-५० । |
| ३४०४५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २३ । (गणनया) |
| ३४०४६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-१९, २-१७ । |
| ३४०४७ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका | | ६४-७३ । |
| ३४०४८ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | गोकुलनाथः | १-३२ । |
| ३४०४९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १३-१९, १९-२५+१ । |
| ३४०५० | " | रघुनाथशिरोमणिः | २-३, ५-६, ८-११, ४४-९९ । |
| ३४०५१ | कारकव्याख्या | जयरामः | १-३ । |
| ३४०५२ | रत्नकोशकारमतविचारः | | २-२० । |
| ३४०५३ | व्युत्पत्तिवादटीका | | १-३७ । |
| ३४०५४ | सर्वोपकारिणी | महादेवः | ८-२४, २७-५९, ६४-६८, ७१-७७, ९९-११८ । |
| ३४०५५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका- व्याख्या | | ८३, ९३-१४१ । |
| ३४०५६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | २-७८ । |
| ३४०५७ | गादाधरीक्रीडपत्रम् | | १-३ । |
| ३४०५८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ३-७५ । |
| ३४०५९ | आख्यातवादव्याख्या | जयरामः | २० । (गणनया) |
| ३४०६० | नव्यमतविचारः | हरिरामः | ३-२५ । |
| ३४०६१ | तत्त्वचिन्तामणिटीकाटीका | | ९८-१४६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- धारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|---|
| १६०४३०८ | १० | ६० | वङ्ग. | का. | | अपू० | |
| १३०५३०२ | ७ | ६५ | " | " | | पू० | सादृश्यविचारः षोडशश्राद्धवि- चारश्च । |
| ९०४४३ | १२ | ४२ | दे. ना. | " | | अपू० | गुणप्रकरणस्य । |
| १००४४१ | ११ | ४७ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणांशाद्वा- धान्ता । |
| १००४४१ | १२ | ५१ | " | " | | " | व्याप्तिग्रहोपायतर्कप्रकरणयोः । |
| १२०१४३ | १० | ३७ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १००१४३ | ९ | ३८ | " | " | १८३३ | पू० | अवयवप्रकरणस्य । |
| ११०८३०७ | ८ | ५७ | वङ्ग. | " | | अपू० | व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| १००६४४६ | १४ | ५८ | मै. | " | १६३३ | " | अनुमानखण्डस्य । |
| ११०४३०६ | १३ | ६९ | " | " | | " | |
| ११०१४३०६ | ७ | ५३ | दे. ना. | " | | " | संशयानुमितिषये । |
| १००८४४०८ | ७ | ३७ | " | " | | " | प्रथमविभक्तेः । |
| ९०६४४३ | १२ | ४६ | " | " | | " | तत्त्वमणिदीधितिभवानन्दीटीका । अनुमितिप्रकरणांशाद् व्याप्तिग्रहोपा- यप्रकरणस्य । |
| ११०१४३०७ | ७ | ४९ | " | " | | " | भवानन्द्याष्टीका सामान्यनिरुक्ति- सव्यभिचारप्रकरणयोः । |
| १००३४४६ | ११ | ४१ | " | " | | " | भवानन्दीया । अवयवप्रकरणस्य । |
| १३०१४५१ | १८ | ७५ | तेलगु | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| ९०५४४४ | १२ | ३४ | दे. ना. | " | | " | भवानन्दीया । व्यधिकरणप्रकरणांशा- द्वच्छेदकत्वनिरुक्तिप्रकरणांशा । |
| १००८४४३ | १२ | ४७ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९०४ × ३०९ | ११ | ३२ | दे. ना. | " | १७९२ (?) | " | अनुमितिपरामर्शकार्यकारणभावरूपः । |
| १००४३०८ | ९ | ४४ | " | " | | " | प्रत्यक्षखण्डस्य प्रमाणलक्षणान्यथा- ख्यातिप्रकरणयोः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|--------------|-------------------------|
| ३४०६२ | विभक्त्यर्थनिर्णयः | | २-३६, ३७-६१ । |
| ३४०६३ | किरणावलीटीका | | १, ८२-९० । |
| ३४०६४ | अनुमितिमानसविचारः | | २-७, ७-१८ । |
| ३४०६५ | तत्त्व०मणिदीधितिगादा- धरीटिप्पणी | रघुनाथः | ३-९१, ९४-१३५ (= ३-४४) । |
| ३४०६६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १ । |
| ३४०६७ | तत्त्वचिन्तामणिटीकाटीका | | २५-६९ । |
| ३४०६८ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | | १-५, ७-२२ । |
| ३४०६९ | कारकवादः | भवानन्दः | २-१८ । |
| ३४०७० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | २-२७ । |
| ३४०७१ | „ | भवानन्दः | ३९-५५ । |
| ३४०७२ | „ | | १-१३ । |
| ३४०७३ | वाधनिश्चयप्रतिबन्धकता- विचारः | | १-१९ । |
| ३४०७४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १-६२ । |
| ३४०७५ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-१४५ । |
| ३४०७६ | „ | गङ्गेश्वरः | १-१५८ । |
| ३४०७७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दः | ८-१७, १४-१७, २७, ५४ । |
| ३४०७८ | „ | | ३५-५३ । |
| ३४०७९ | अभावज्ञानप्रतियोगिज्ञान- कार्यकारणभावविचारः | | ३-१० । |
| ३४०८० | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | २-९, ११-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | वाच्यः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|---------|--------|-----------|--------------------|--|
| १०८४४६ | १० | ५० | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०६४४७ | ७ | ४१ | " | " | | " | द्रव्यप्रकरणे पृथिवीनिरूपणस्य । |
| १२२४५३ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| १३६४५४ | १० | ५२ | " | " | | " | टिप्पणी न्यायरत्नाख्या । हेत्वाभा- सप्रकरणस्य । |
| १०१४४३ | १० | ४२ | " | " | | " | अनुमाने सामान्यनिरुक्तिसव्यभिचार- प्रकरणयोः । |
| १०१४४२ | १० | ४० | " | " | | " | दीधितिप्रकाशप्रसारिणीभ्यां भिन्ना, व्याप्तिवादीया । |
| १०३४४८ | १० | ३८ | " | " | | " | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १०८४४५ | १२ | ३३ | " | " | | " | |
| १०९४४२ | ९ | ४५ | " | " | | " | जागदीशीगादाधरीभवानन्दीयप्रसा- रिणीभिन्नेयं, व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| १०६४४६ | १३ | ३२ | " | " | | " | अनुमानप्रामाण्यप्रकरणांशाद्व्यधि- करणप्रकरणांशा । |
| १०६४४६ | १४ | ५४ | " | " | | " | जागदीशी अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११०४३७ | १० | ५५ | " | " | | " | |
| १०४४४२ | १० | ३७ | " | " | | पू० | जागदीशी । अनुमानेऽवयवप्रकरणस्य । |
| १३६४१७ | ५ | १२ | मै० | ताल० | | अपू० | शब्दखण्डस्य । |
| १४२४१५ | ५ | ८० | " | " | ल०सं० ४२७ | पू० | अनुमानोपमानखण्डयोः । |
| १०२४३३ | ७ | ३७ | दे. ना. | का. | | अपू० | अनुमाने विशेषव्याप्तिप्रकरणस्य । |
| १०७४४५ | १४ | ४९ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । जागदीशीगा- दाधरीभवानन्दीयप्रसारिणीभिन्ना । |
| १०३४४२ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| १२१४४९ | १३ | ४५ | " | " | | " | पक्षतापरामर्शप्रकरणयोः पक्षता- गादाधरीप्रामाण्यवादस्यालोका- गादाधरी माथुरी च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|--------------|---|
| ३४०८१ | पक्षवावादार्थः | | २-२४ । |
| ३४०८२ | जातिमाला | | ४-१० । |
| ३४०८३ | तत्त्व०मणिदीधितिगादा- धरीटीका | कृष्णम्भट्टः | १-२४, २४-७९, ७९-३७७, ३७७, ३७७-३७९, ३८२-४९३, ४९३-४८६, ४८९-५०१, ५०४-५२६, ५२९-६४४, ६४८-७९३, ७९६-९१४ । |
| ३४०८४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १३-२४ । |
| ३४०८५ | किरणावलीप्रकाशः | | २-५५ । |
| ३४०८६ | नञ्वादटिप्पणम् | | १-१६ । |
| ३४०८७ | आख्यातशक्तिवादविवृतिः | मथुरानाथः | १-४१ । |
| ३४०८८ | आख्यातवादटिप्पणी | | १-३२ । |
| ३४०८९ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | भवानन्दः (?) | ३-८७+१, ८९-९१ । |
| ३४०९० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | " | २-१७, २५-५५ । |
| ३४०९१ | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | | १-४ । |
| ३४०९२ | " | | १-५ । |
| ३४०९३ | न्यायसारः | | २-१३, १३-३८ । |
| ३४०९४ | तत्त्वचिन्तामणिपरीक्षा | | २-३६ । |
| ३४०९५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | ६७८-७२८ (= ११-६१) । |
| ३४०९६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २-३७ । |

| धाकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आक्षरः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|---|
| ९०८४४६ | १० | ४० | दे. ना. | का. | | अपू० | पक्षतानुमितिकार्यकारणभाव- विचाररूपः । |
| ८०८४३०७ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ९०६४४९ | ११ | ३४ | " | " | | " | टी०-काशिकाख्या । अनुमितिप्रकर- णाद् व्यतिरेक्यनुमानप्रकरणान्ता । |
| ११०५४४३ | ९ | ४० | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य, जागदीशीगादा- धरीभवानन्दीयप्रकाशप्रसारिणीभिन्ने- यम् । पुस्तकैकदेशे मथु० इति लेखेन माथुरी भवितुमर्हति । |
| ९०७४४३ | ११ | ३४ | " | " | | " | गुणप्रकरणस्य । |
| ९०९४३०५ | १० | ४१ | " | " | | पू० | |
| ९०४४४२ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| १००१४४२ | १० | ४८ | " | " | १६२५ | " | |
| १०३४४०५ | १२ | ४१ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणांशात्सामान्यनिरु- क्तिप्रकरणांशः । दीधितेष्टीका भवा- नन्दीया प्रसिद्धा. परन्तु, तत्त्वचिन्ता- मणिटीका नाद्यापि श्रुता दृष्टा वा पुस्तकस्यास्यैकदेशे 'चि०अ०भ०' इति सङ्केतान् आफ्रेटाख्यसूच्यनुसाराच्च तन्नाम लिखितम् । |
| ९०७४४०५ | ११ | ५० | " | " | | " | परामर्शप्रकरणांशादवयव- प्रकरणांशः । |
| १००५४३४ | ५ | ३३ | " | " | | पू० | साधारणपूर्वपक्षस्य । |
| १००५४३६ | ५ | ४२ | " | " | | " | अनुपसंहारिपूर्वपक्षस्य । |
| १००१४४४ | १३ | ४७ | " | " | | अपू० | प्रत्यक्षानुमानपरिच्छेदौ । |
| १००४४३०७ | ६ | ५० | " | " | | " | मङ्गलवादग्रामाण्यवादप्रकरणयोः । |
| ९०३४४०७ | ९ | ३६ | " | " | | " | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १३०५४५४ | १० | ५३ | " | " | | " | ग्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|--------------|---|
| ३४०९७ | विपयतावादः | गदाधरः | १-१३ । |
| ३४०९८ | पक्षताविचारः | | १-३० । |
| ३४०९९ | नञ्वादविवृतिः | जयरामः | १-३१ । |
| ३४१०० | शब्दशक्तिप्रकाशिका | | ११-१२, ३२, ७३ । |
| ३४१०१ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-९ । |
| ३४१०२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १६-२० । |
| ३४१०३ | अनुमितिपरामर्शकार्य- कारणभावविचारः | | ४५-५२, ५२-५९ । |
| ३४१०४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २-१२८ । |
| ३४१०५ | सर्वोपकारिणी | | १-३ । |
| ३४१०६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | २-५७ । |
| ३४१०७ | रत्नकोशकारमतविचारः | | २-१८, १८-२५, २७-४९ । |
| ३४१०८ | तत्त्वचिन्तामणिवाक्यार्थ- दीपिका | हनुमदाचार्यः | २-१४० । |
| ३४१०९ | तर्कसङ्ग्रहटीका | | ३-२३ । |
| ३४११० | तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् | | १-४ । |
| ३४१११ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-२४ । |
| ३४११२ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | ४३, ५७-५८, ६१-६६ । |
| ३४११३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १ । |
| ३४११४ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | ४-५, ७-९, १४, १६-१७, १९, २३-४७, २ ४-१२ । |
| ३४११५ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २१४ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|----------------|---------------------------|
| ३४११६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ७-११, ३९-४२, ४९-६४ । |
| ३४११७ | तत्त्वचिन्तामणिः | | २-३, ५-१२, १६-२२, २५-३१ । |
| ३४११८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दः | ९ । (गणनया) |
| ३४११९ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | | १-२ । |
| ३४१२० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | रघुनाथशिरोमणिः | ९-२०+१ । |
| ३४१२१ | तत्त्वचिन्तामणिः | | ५-६, ११, ११-१७, २२-९६ । |
| ३४१२२ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | ३-१२, १५ । |
| ३४१२३ | तत्त्वचिन्तामणिः | | ४८ । (गणनया) |
| ३४१२४ | किरणावली | | ४-३९ । |
| ३४१२५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ११-१३ । |
| ३४१२६ | तर्कभाषा | | १-४० । |
| ३४१२७ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | | ९-११, १३-१५, १७-२० । |
| ३४१२८ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १८-२३, २५-५६ । |
| ३४१२९ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | | २-३९ । |
| ३४१३० | न्यायग्रन्थविशेषः | | ३५-३६, ३९-४२ । |
| ३४१३१ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | ७-३५, ४४-५९ । |
| ३४१३२ | तर्कामृतचषकम् | | ११-१२ । |
| ३४१३३ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दः | १६-१७ । |
| ३४१३४ | तर्कसङ्ग्रहटीका | | ३-८ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|----------------|--------------------------|
| ३४१३६ | तत्त्वचिन्तामणिटीकाटीका | | ३-६, ८-९, ९-१९ । |
| ३४१३६ | विशेष्यतावादः | | ३-३० । |
| ३४१३७ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-२४, ७० । |
| ३४१३८ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १-४, १-१० । |
| ३४१३९ | आत्मतत्त्वविवेकविवृति-टीका | | १-२१ । |
| ३४१४० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-४४ । |
| ३४१४१ | तत्त्वचिन्तामणिः | | ३-९ । |
| ३४१४२ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १२ । (गणनया) |
| ३४१४३ | अनुमितिपरामर्शकार्यका- रणभावविचारः | | २ । |
| ३४१४४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १, ९-३३ । |
| ३४१४५ | ” | | ३-७१, ७३-१०१ । |
| ३४१४६ | तत्त्वचिन्तामणिः | | १ । |
| ३४१४७ | न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका | वाचस्पतिमिश्रः | १८-१९, १-१७, १६, २१-४३ । |
| ३४१४८ | न्यायकन्दलीटिप्पणिका | नरचन्द्रः | १-१८२ । |
| ३४१४९ | पदकृत्यमञ्जरी | | २-११ । |
| ३४१५० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | २-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | श्लोक- संख्या | लिपिः | आयतः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विभक्तः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|--------------------------|---|
| ११*४*३*९ | ११ | ५७ | दे. ना. | का. | | अपू० | अनुमितिप्रकरणांशाद्व्यधिकरणप्र- करणांशा । |
| ९*३*४*३ | ९ | ४१ | " | " | | " | कारकनिर्णयः, आख्यातनिर्णयः, समासनिर्णयः, शक्तिनिर्णयश्च । |
| ९*८*४*१ | १० | ३७ | " | " | | " | १-२ पत्रे प्रामाण्यवादांशस्य, ३-९ पत्राणि प्रामाण्यवादलोकांशस्य, १०-१४, ७० पत्राणि व्याप्तिवादस्य । |
| १४*७*३*१ | ५ | ६० | यज्ञ. | " | | " | शब्दग्रन्थे आसक्ततावादविधियाद- प्रकरणयोः । |
| १३*३*५*१ | १२ | ५७ | " | " | | " | वाच्यार्थभङ्गप्रकरणस्यगुणाथकृत- टीकाटीका । |
| ९*५*३*६ | ९ | ४३ | दे. ना. | " | | " | प्रारम्भेऽनुमानवण्डस्यासिद्धिप्रकर- णांशादसाधकतासाधकप्रकरणांशा, अन्ते च शब्दग्रन्थस्य । |
| ११*५*३*४ | ७ | ६० | सी० | " | | " | व्याप्तिवादस्य । |
| ११*२*४*७ | १३ | ८२ | दे. ना. | " | | " | पक्षत्वापरामर्शकेवलान्वयिप्रकरणा- नाम् । नादाभरीजागदीशीप्रकारि- णाभिधेयम् । |
| ८*७*४*० | ५ | ३१ | " | " | | " | |
| १०*७*४*१ | १० | ४६ | " | " | | " | अनुमाने हेत्याभासप्रकरणस्य । |
| ९*५*३*९ | ९ | ५० | " | " | | " | प्रत्यक्षे मङ्गलवादांशान्निधिकल्पक्या- दांशा, आलोकाभासुरीभ्यां भिद्येयम् । |
| १६*७*४ | ५ | ७३ | यज्ञ. | " | | " | नोभ्यताप्रकरणस्य । |
| १३*६*४*५ | ८ | ३४ | दे. ना. | " | | " | |
| ६*७*४*३ | २६ | ११ | " | " | | पू० | प्रशस्तपादभाष्यटीकाटीका, समवाच्यपदार्थान्ता । |
| ४*९*३*१ | ९ | १९ | " | " | | अपू० | त० सं० टी० टी० । |
| १८*१*४*३ | ७ | ९० | यज्ञ. | " | | " | आत्मज्ञानप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--------------------|--|
| ३४१५१ | तत्त्व०मणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | २७-३०, ३२-३३ । |
| ३४१५२ | तत्त्व०मण्यालोकः सटीकः | | १-१८, ७, १०-१४, १-२, २-७, १-६, +३, ३-६ + १, १, १-४, २०-३६, ८-२६, २८-३८+१, ४, २-७, ७-९, २, ४, १-२, ३, २, ७-८, ७, ४५-४६, ३८-३९, २-३+१, ४०-४९, ५२, १-४, ६, ३-६, १+१ । |
| ३४१५३ | प्रमेयकमलमार्त्तण्डः | प्रभाचन्द्रसूरिः | १-५, ५-३२, ३३ = (३४-३५) ३६-६५, ६६ = (६७), ६८-८३, १-३२८ । |
| ३४१५४ | वादार्थसङ्ग्रहः | | १-६, ९-२२ । |
| ३४१५५ | न्या०सि०मञ्जरीदीपिका | श्रीकण्ठशर्मा | २-२४, २४-४२ । |
| ३४१५६ | नञ्वादटीका | रामकृष्णः | १-६ । |
| ३४१५७ | व्युत्पत्तिवादटीका | | १-९, १५-२०, २२-२३, २७, २९-४४, ४६, ५०-५१, ६० । |
| ३४१५८ | गूढार्थतत्त्वदीपिका | रघुदेवः | १-५८ । |
| ३४१५९ | सिद्धान्तलक्षणक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ३४१६० | जागदीशीक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ३४१६१ | सिद्धान्तलक्षणक्रोडपत्रम् | | १-७ । |
| ३४१६२ | गादाधरीक्रोडपत्रम् | चन्द्रनारायणः | १-४ । |
| ३४१६३ | " | | १-१०, १४-२२ । |
| ३४१६४ | " | | ३-६ + १, ३-१२ । |
| ३४१६५ | आख्यातवादटीका | रघुदेवः | ३४ । (गणनया) |
| ३४१६६ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-७, २४-५६, १-१७, १६, ३८, १-३, ८-७ (=७४), ७५-७८=(७९), ८०-१३४, १-५ । |
| ३४१६७ | तर्कसङ्ग्रहः | | २-४ । |
| ३४१६८ | तत्त्वचिन्तामणिः | गङ्गेश्वरः | १-११, २६-३०, ३०-१०४ । |
| ३४१६९ | समासवादः | गोविन्दभट्टाचार्यः | १-९ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|---------------------------|---|
| ३४१७० | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | जगदीशः | १-६, ९-१४, १-२६, २७-२८, ३२-३९, १-३, १+१, १३, १-७, १-२, ६, ८, १, ४, ६-७, २६-३०, २९-३१, ३१-४१, ४१-४६, ४०-४१, ५४-५६, ३-८, ६, १०-१२, ४६+६, १-२, ७-१४, ६+२, १०७, ११०-११३, १-६। |
| ३४१७१ | न्यायसिद्धान्तदीपः | शशधरः | ७७-७९, ८२-८७, ९०-९१, ९३-९६। |
| ३४१७२ | कारिकावली | विश्वनाथः | १-९। |
| ३४१७३ | प्रशस्तपादभाष्यसूक्तिः | जगदीशः | १-३० (= ४६-७४)। |
| ३४१७४ | प्रशस्तपादभाष्यम् | प्रशस्तपादाचार्यः | १-३६+१। |
| ३४१७५ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | गदाधरः | २३-३४+१। |
| ३४१७६ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | १-३७, ३९-४०। |
| ३४१७७ | न्यायलीलावतीप्रकाशविवृतिः | भट्टाचार्यशिरोमणिः | २-६१। |
| ३४१७८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ८-११। |
| ३४१७९ | ” | गदाधरः | १-४। |
| ३४१८० | भाषारत्नम् | कणादतर्कवागीश-भट्टाचार्यः | १-६६। |
| ३४१८१ | लक्षणावली | | १-३। |
| ३४१८२ | न्यायसारः | | १-३४। |
| ३४१८३ | गुणरहस्यम् | | ६-८८। |
| ३४१८४ | न्यायलीलावती | वल्लभाचार्यः | ६६-८४, ८४-८६, ८७-११६। |
| ३४१८५ | तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः | रुचिदत्तः | १९३-१९४, ९६-९६। |
| ३४१८६ | वाक्यदीपिका | हरियशोमिश्रः | १-२४, २६-३३, ३३-४३। |
| ३४१८७ | षट्कारकम् | | २। |
| ३४१८८ | कारकचक्रम् | | १-१०। |
| ३४१८९ | आकाङ्क्षाकारणताविचारः | | १-६। |

| अध्यायः | पट्टि- संख्या | अक्षर- संख्या | श्लोकः | श्लोकार्थः | निदिष्टाः | पूर्वापूर्व- विशेषः | विशेषवृत्तिः |
|---------|------------------|------------------|---------|------------|-----------|------------------------|--|
| १६५३९ | १ | ७१ | दे. ना. | का. | | अपू० | अनुमानखण्डस्य । |
| ८५५३९ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| १५९५३९ | ५ | ७० | वक्त. | " | | पू० | भाषापरिच्छेदो वा, प्रशस्तपादभाष्य- सूक्तिश्च । |
| १५९५३९ | ६ | ७२ | " | " | | अपू० | द्रव्यप्रकरणस्य । |
| १५९५३९ | ५ | ७१ | " | " | श. १६३० | पू० | पदार्थधर्मसङ्ग्रह इति नामान्तरम् । |
| १२९५३९ | १० | ४८ | दे. ना. | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्ताद्युभयाभावकल्पस्य । |
| ११९५३९ | ८ | ५७ | वक्त. | " | | " | अनुमानखण्डे उपाधिवादात्पक्षता- प्रकरणांशा, माथुर्याख्या । |
| १०९५३९ | ११ | ३९ | दे. ना. | " | | " | |
| १०९५३९ | १० | ४६ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणस्य । |
| १२९५३९ | ११ | ८८ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणे कूटघटितलक्षणस्य |
| १३९५३९ | ६ | ५३ | वक्त. | " | श. १७२० | पू० | |
| ८९५३९ | ८ | ३८ | दे. ना. | " | | अपू० | होराशास्त्रम् । |
| १०९५३९ | ११ | ४३ | " | " | | " | द्रव्यादिपदार्थानां विवेकः । |
| १०९५३९ | ८ | २६ | " | " | | " | अत्र गुणेषु रूपमारभ्य विभागपर्यन्त- स्य विचारः । |
| १०९५३९ | ८ | ३९ | " | " | १५७९ | " | |
| १०९५३९ | १० | ५५ | " | " | | " | अनुमाने मुक्तिवादप्रकरणस्य । |
| १०९५३९ | ८ | ३३ | " | " | | पू०० | वाक्यवाददीक्षा । |
| १५९५३९ | ९ | ८६ | वक्त. | " | | अपू० | |
| १०९५३९ | ८ | ५५ | दे. ना. | " | | " | |
| ११९५३९ | १० | ९० | वक्त. | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|---------------|--|
| ३४१९० | पट्टकारकम् | रभसनन्दी | १-१२ । |
| ३४१९१ | कारकोल्लासः | भरतः | १-३ । |
| ३४१९२ | कारकवादः | | १, १-२ । |
| ३४१९३ | कारकरत्नम् | गदसिंहः | १ । |
| ३४१९४ | कृन्मञ्जरी | शिवरामशर्मा | १ । |
| ३४१९५ | " | शिवदासशर्मा | १ । |
| ३४१९६ | कारकवादः | नन्दकिशोरः | २-३ । |
| ३४१९७ | वालवोधिनी | | १-२ । |
| ३४१९८ | प्रथमान्तार्थमुख्यविशेष्यक- शाब्दबोधविचारः | अचलशर्मा | १, ३ । |
| ३४१९९ | लाघवज्ञानोत्तेजकत्वविचारः | | ५-७ । |
| ३४२०० | शक्तिवादः सटिप्पणः | | १-३+१ । |
| ३४२०१ | व्युत्पत्तिवादः | | २ । (गणनया) |
| ३४२०२ | न्यायकुसुमाञ्जलिः | | १-४ । |
| ३४२०३ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १-२३ । |
| ३४२०४ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकीटीका | मथुरानाथः | १-२७, २-४, ३-१४+३ । |
| ३४२०५ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | " | १-८ । |
| ३४२०६ | अनुमितिपरामर्शवादः | | १३-१६ (=१-४) । |
| ३४२०७ | व्युत्पत्तिवादटीका | | १-८+१ । |
| ३४२०८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ५८-५९ । |
| ३४२०९ | माथुरीपत्रिका | | १-२+१, ३-४ । |
| ३४२१० | जागदीशीपत्रिका | चन्द्रनारायणः | १-७ । |
| ३४२११ | किरणावलीटीका | | २, ४-७, ९-३७, ३९-४७, ४९-६८, ७२-७८, ८१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | निविद्यालः | पूर्णापूर्व- दिदेशः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|------------|------------------------|---------------------------------------|
| ११°४×४°४ | ८ | ७८ | वङ्ग | का. | | पू० | शिवरामविरचितकृष्णमञ्जरी च । |
| ११°२×४°६ | १० | ७८ | " | " | | " | |
| १८°८×४°७ | १० | ८० | " | " | | अपू० | |
| १८°४×३°४ | ६ | ८६ | " | " | | पू० | |
| १२°९×३°२ | ६ | ६३ | " | " | | अपू० | |
| १९°१×३°३ | ७ | ८२ | " | " | | पू० | |
| १८°६×३°४ | ७ | ९५ | " | " | | अपू० | |
| १९°६×३°५ | ८ | ८८ | " | " | | पू० | सङ्क्षिप्तपट्टकारकविचारप्रधाना । |
| १९°२×४°६ | १० | ७२ | " | " | | अपू० | द्वन्द्वसमासवादश्चः । |
| ९°९×३°४ | ७ | ३३ | दे. ना. | " | | " | |
| १०°९×४°६ | ७ | ४८ | " | " | | " | |
| १३°८×४°२ | ११ | ९८ | " | " | | " | |
| १०°७×४°६ | ७ | ३७ | " | " | | " | |
| ९×३°५ | १६ | ३७ | " | " | | " | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १०°१×४°४ | १५ | ५६ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| ११°२×४°३ | ९ | ४५ | " | " | | " | हेत्वाभासे सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ९°६×४°३ | १३ | ३७ | " | " | | " | |
| १०°२×५°५ | १२ | ३७ | " | " | | " | पञ्चैकदेशे व्यु०सं०इति लिखितमस्ति । |
| १३°३×४°१ | ४ | ५० | " | " | | " | अनुमाने केवलव्यतिरेकिप्रकरणस्य । |
| १२°५×४°६ | १० | ६६ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १३°५×४°५ | १० | ४४ | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| ९°५×३°६ | ७ | ३९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------|------------------|---|
| ३४२१२ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | मथुरानाथः | १-१०, १-२, ७-८ । |
| ३४२१३ | तत्त्वचिन्तामणिः | | २, ४, ७, ३४, ३८-५४, ५७, ५-७+१ । |
| ३४२१४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | रघुनाथशिरोमणिः | २-३, ६, २९-४३ । |
| ३४२१५ | तत्त्वचिन्तामणिः सटीकः | | ४१-४४, ५२-९७ । |
| ३४२१६ | तत्त्वचिन्तामणिटीकाटीका | मथुरानाथः | २९-१४५ । |
| ३४२१७ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ५०-५४ । |
| ३४२१८ | तर्कभाषाटीका | | १२-२८ । |
| ३४२१९ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | १६५-१९२ । |
| ३४२२० | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | २-३, ६-३६, ३९-५० । |
| ३४२२१ | अन्यथाख्यातिविचारः | | ७ । (गणनया) |
| ३४२२२ | तत्त्व०मणिदीधितिप्रकाशः | भवानन्दः | १-१७ । |
| ३४२२३ | किरणावलीप्रकाशदीधिति- टीका | | १-४, ४-९, १५-२२, २९-३४, ३७-३८, ३८-८५ । |
| ३४२२४ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | | ६-२२, २५-६० । |
| ३४२२५ | व्युत्पत्तिवादटीका | | १८-१९, २२-२३, २७-२८ । |
| ३४२२६ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | जयदेवःपद्मधरो वा | १-२, ५-८, १४ । |
| ३४२२७ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका | महेशठक्कुरः | ६१, ८०-१३४, १३६, १३८, १४०-१५८ । |
| ३४२२८ | तत्त्व०मणिदीधितिटीका | भवानन्दः | ४०-४९ । |
| ३४२२९ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | मथुरानाथः | २-११ । |
| ३४२३० | " | | ६ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| ११*२×४*६ | ११ | ४४ | दे.ना. | का. | | अपूर्० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणात्सव्यभिचार- प्रकरणांशः । |
| ९*९×३*६ | १४ | ९१ | " | " | | " | शब्दखण्डस्य । |
| ९*४×३*९ | ४२ | ९९ | " | " | | " | रुद्रन्यायवाचस्पतिकृतदीधिति- टीका रौद्रीत्याख्या, व्याप्तिपञ्चकप्रक- णाद् व्यधिकरणप्रकरणांशः च । |
| ११*६×९*१ | १४ | ९१ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणात्सत्प्रतिपक्ष- प्रकरणान्तः, टीका-दीधितिः सप्रकाशा । |
| ११*४×४*१ | ११ | ४९ | " | " | | " | विशेषव्याप्तिप्रकरणांशात्सव्यभिचार- प्रकरणांशः । |
| ९*६×४*४ | १२ | २९ | " | " | | " | व्याप्तिवादे सामान्याभावप्रकरणस्य । |
| ९*७×४*९ | १६ | ४३ | " | " | | " | प्रत्यक्षानुमानपरिच्छेदयोः । |
| ९*७×४*१ | १० | ४९ | " | " | | " | अवच्छेदकत्वानिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| ११*१×३*२ | ९ | ९८ | " | " | | " | प्रत्यक्षे मङ्गलवादप्रामाण्यवादप्रकर- णयोः । |
| १२*४×५*३ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | |
| १०*६×३*६ | ७ | १७ | " | " | | अपूर्० | अनुमानखण्डे अनुमितिप्रकरणस्य । |
| ११*२×३*१ | ११ | ४७ | " | " | | " | (कि०टी०टी०टी०) गुणप्रकरणस्य । |
| ९*९×४*१ | ११ | ४१ | " | " | | " | सिंहव्याघ्रलक्षणव्यधिकरणप्रकरणा- नाम् । |
| १०*६×५*१ | १६ | ३९ | " | " | | " | |
| १०*४×३*९ | ८ | ४९ | " | " | | " | प्रत्यक्षे मङ्गलवादस्य । |
| ११*२×४*७ | १३ | ४२ | " | " | | " | अनुमानखण्डस्य । |
| १०×४*९ | १२ | ९० | " | " | | " | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १०*९×४*१ | १४ | ७१ | " | " | | " | अनुमाने उपाधिप्रकरणस्य । |
| १३*७×५*६ | ६ | ४९ | " | " | | " | प्रकृतग्रन्थस्याभ्यासपत्रिका च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|----------------|-----------------------------|
| ३४२३१ | न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका | | २-३१ । |
| ३४२३२ | प्रमाणपद्धतिः | | ७-१० । |
| ३४२३३ | तत्त्वमणिदीग्गादाधरीटीका | | १-१० । |
| ३४२३४ | तत्त्वचिन्तामणिटीका | | ३-४, ६-१९ । |
| ३४२३५ | तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः | रघुनाथशिरोमणिः | ८-२५, ४६-५४, ५९-६४, ७८-९५ । |
| ३४२३६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | गदाधरः | १-३ । |
| ३४२३७ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | १-१२ । |
| ३४२३८ | " | | ४-४२ । |
| ३४२३९ | तर्कसङ्ग्रहदीपिका | | १-४ । |
| ३४२४० | तर्कसङ्ग्रहः | | १-२०, २२ । |
| ३४२४१ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | | १-२१ । |
| ३४२४२ | रत्नकोशकारमतविचारः | | १-३७ । |
| ३४२४३ | तद्धितोद्देशः | | १-१० । |
| ३४२४४ | सम्बन्धोद्देशः | रभसनन्दी | ३-१० । |
| ३४२४५ | आख्यातवादटिप्पणी | | २-४, ६-८, १०-१५, १९ । |
| ३४२४६ | आख्यातवादोपटिप्पणी | | १-२ । |
| ३४२४७ | आख्यातवादः | | १-१३ । |
| ३४२४८ | " | | १-६ । |
| ३४२४९ | " | | १-७ । |
| ३४२५० | तर्कसङ्ग्रहः | अन्नम्भट्टः | १-१७ । |
| ३४२५१ | तर्कसङ्ग्रहटीका | | ३-९, ११-२४ । |
| ३४२५२ | प्रमाणपद्धतिः | | ३-२८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|-----------------|------------------------|---|
| ११-२×४-८ | ९ | ४४ | दे. ना. | का. | | अपू० | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| ९-४×४-३ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| १०-६×४-३ | १० | ४३ | " | " | | " | अवयवप्रकरणस्य । |
| १०-८×४-३ | १३ | ६४ | " | " | | " | शब्दस्वण्डे शब्दप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १०-८×४-९ | १० | ४९ | " | " | | " | सिद्धान्तलक्षणप्रकरणांशादसाधारणप्रकरणांशा । |
| १७-६×२-६ | ९ | ८३ | " | " | | " | |
| १०-७×४-२ | ८ | ३८ | " | " | | " | प्रत्यक्षपरिच्छेदस्य । |
| १०-१×२-३ | ७ | ३१ | " | " | | " | " |
| ९-८×४-३ | २२ | ६७ | " | " | | " | " |
| ७-३×१-७ | ४ | ३१ | " | " | | " | |
| ९-२×४-२ | १२ | ४८ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणाद्व्यधिकरण- प्रकरणांशा । |
| १०-१×४-९ | ११ | ४३ | " | " | | " | अनुमितिविषये । |
| १८-९×४-६ | १० | ८१ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १८-४×४-४ | १० | ८१ | " | " | | अपू० | अत्र सामान्योद्देशः कृत्यायुद्देशः कार- कोद्देशः तद्वितीदेशश्च । |
| १९-४×४-४ | १० | ३१ | दे. ना. | " | | " | |
| १९-१×३-६ | ८ | ९३ | वङ्ग. | " | | " | |
| १८-२×४-४ | ८ | ६४ | " | " | | पू० | |
| १९-२×३-९ | ११ | ८४ | " | " | | " | |
| १८-८×४-७ | ७ | ९२ | " | " | | " | |
| ९-८×२-१ | ४ | ४२ | दे. ना. | " | १९०९ श. १७७४ | " | |
| ८-८×३-७ | ९ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ८-६×४-४ | १२ | ३१ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|-------------------|-------------------|
| ३४२५३ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | गोवर्द्धनः | ३-१६, ४ । |
| ३४२५४ | न्यायवोधिनी | | १-२९ । |
| ३४२५५ | पदार्थदीपिका | | १-९ । |
| ३४२५६ | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | | २४-५४ । |
| ३४२५७ | जागदीशीपत्रिका | कृष्णम्भट्टः | १-२२, १-१५ । |
| ३४२५८ | तत्त्वमणिदीधिति- गादाधरीटीका | | १-५१ । |
| ३४२५९ | आख्यातवादटिप्पणी | | १-२ । |
| ३४२६० | जागदीशीपत्रिका | | १-१९, १ । |
| ३४२६१ | तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशिका | जगदीशतर्कालङ्कारः | १ । |
| ३४२६२ | न्यायादर्शः | ” | १, १-७, ९-१६ । |
| ३४२६३ | वादसङ्ग्रहः | | ५-५० । |
| ३४२६४ | कारणतावादः | | १७-३५ । |
| ३४२६५ | प्रवृत्तिकारणत्वविचारः | | १-४ । |
| ३४२६६ | तत्त्वमणिदीधितिटीका | | १८-३० । |
| ३४२६७ | ” | गदाधरः | १-३९, १-३१ । |
| ३४२६८ | तत्त्वचिन्तामण्यालोकः | | ४-३४ । |
| ३४२६९ | जागदीशीपत्रिका | कालीशङ्करः | १-१०+१, ११-२८ । |
| ३४२७० | माधुरीपत्रिका | | १-३, १-८ । |
| ३४२७१ | गादाधरीपत्रिका | | १-९ । |
| ३४२७२ | ” | | १, १-२, १-२ । |
| ३४२७३ | न्यायकुसुमाञ्जलिपत्रिका | | १-३, १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विधेयः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|-------------|-------------------------|--|
| ८०१×४०४ | १० | २९ | दे. ना. | का. | | अपू० | अन्तिमं पत्रं कारिकावत्याः । |
| ६०६×४०४ | १० | २० | " | " | | " | (त. सं. टी.) । |
| १००६×४०५ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| १००४×४०८ | १२ | ४७ | " | " | | " | अनुमानखण्डांशाद्गुणनिरूपणांशा । |
| ९०५×४०४ | ९ | ३६ | " | " | | पू० | व्यधिकरणसत्प्रतिपक्षप्रकरणयोः । |
| १३०४×५०३ | ११ | ४५ | " | " | | अपू० | अनुमाने व्याप्तिपूर्वपक्षप्रकरणस्य । |
| ९०२×३०४ | ८ | ९० | चङ्ग. | " | | " | |
| १८०२×४०२ | ८ | ८५ | " | " | व. सन् १२२० | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १८०५×४०४ | ९ | ८१ | " | " | | " | |
| १८०४×४०५ | १० | ७७ | " | " | | अपू० | अत्र कारणतारहस्यं निमित्तकारणता- वादः हेतुत्ववादश्च । |
| १९०१×४०५ | ९ | ७३ | " | " | | " | अत्र एवकारवादः आख्यातवादः देवतावादः उपसर्गवादः मङ्गलवादः सार्त्तिकर्पवादः चित्ररूपवादश्च । |
| १९०६×४०७ | १० | ९० | " | " | | " | जागदीश्याः । |
| ८०८×३०९ | १४ | ४७ | दे. ना. | " | | " | नैयायिकगुरुमतयोः प्रदर्शनरूपः । |
| ९०६×४०१ | १२ | ३७ | " | " | | " | अनुमाने व्याप्तिवादस्य । |
| १४०४×४०६ | ७ | ६० | " | " | | " | सामान्यनिरुक्त्यवयवप्रकरणयोः । |
| १००१×४०४ | ११ | ३५ | " | " | | " | शब्दखण्डे शब्दप्रामाण्यवादप्रकरणस्य । |
| १९०८×३०४ | ८ | ९० | " | " | | पू० | पक्षताप्रकरणस्य । |
| १९०८×३०४ | ८ | ९० | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १९०८×३०४ | ८ | ९० | " | " | | अपू० | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १९०७×३०४ | ६ | १०४ | चङ्ग. | " | | पू० | मुक्तिवादप्रकरणस्य । |
| १९०७×३०४ | ६ | १०४ | " | " | | " | हरिदासकृतटीकांशं रामभद्रकृतटीकां- शश्चादाय । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------------------|---|
| ३४२७४ | गादाधरीपत्रिका | | १-२ । |
| ३४२७५ | " | | १-५ । |
| ३४२७६ | " | | १-६ । |
| ३४२७७ | " | | १-८ । |
| ३४२७८ | " | | १-१५ । |
| ३४२७९ | जागदीशीपत्रिका | चन्द्रनारायणः | १-६ । |
| ३४२८० | " | " | १-२, २-५ । |
| ३४२८१ | शब्दशक्तिप्रकाशिकादीका | | १६ । |
| ३४२८२ | गादाधरीपत्रिका | चन्द्रनारायणः | १-३, १-३, १-४, १-११, १-२, १-७, १-५, १-२, १-११, १-१०, १-७, १-६ । |
| ३४२८३ | माधुरीपत्रिका | राममाणिक्य- विद्यालङ्कारः | १-५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|-------|-------|----------|------------------------|-----------------------------|
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | वङ्ग. | का. | | पू० | सिंहव्याघ्रलक्षणस्य । |
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | " | " | | " | व्यधिकरणे प्रथमतःक्षणस्य । |
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | " | " | | " | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | " | " | | अपू० | अनुमितिप्रकरणस्य । |
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | " | " | | पू० | सत्प्रतिपक्षप्रकरणस्य । |
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | " | " | | " | विशेषव्याप्तौ यद्वाक्यस्य । |
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | " | " | | अपू० | व्यधिकरणप्रकरणस्य । |
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | " | " | | " | |
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | " | " | | " | सामान्यनिरुक्तिप्रकरणस्य । |
| १९°७×३°४ | ६ | १०४ | " | " | | पू० | व्याप्तिपञ्चकप्रकरणस्य । |

अष्टमभागोल्लिखितग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका

अज्ञानवादः ३११९०।

अतिरिक्ताभावपरिष्कारः ३२४२३।

अधिकरणत्वविचारः ३०७०५।

अनुकरणविचारः ३०१९७।

अनुद्भूतरूपादिखण्डनम् ३१९४८।

अनुभवत्वजातिसद्भावप्रमाणम् ३१७५३।

अनुमानप्रमाणसिद्धिः ३०७४८।

अनुमानप्रमाणान्तरत्वविचारः ३१७३४।

अनुमानप्रामाण्यवादः ३१६१४।

अनुमानोपमानविचारः ३१५१९।

अनुमितिनिरूपणम् ३०१९१।

अनुमितिपरामर्शकार्यकारणभावः ३१४२०।

अनुमितिपरामर्शकार्यकारण-
भावघटकसम्बन्धविचारः ३०७११

अनुमितिपरामर्शकार्य-

कारणभावविचारः ३०५५०, ३०६१०, ३०६६३,
३०९९४, ३१०४४, ३१०४५,
३१०७१, ३१०९७, ३१११७,
३१२३४, ३१५०६, ३२२२९,
३२३११, ३२३१२, ३२५१८,
३२५८५, ३२६३७, ३२६८४,
३३४९४, ३३७४७, ३३७४८,
३४१०३, ३४१४३।

अनुमितिपरामर्शवादः ३०५१५, ३०७४७, ३१७४३,
३१७४५, ३२४६२, ३४२०६।

अनुमितिपरामर्शविचारः ३१७४२, ३१७४६, ३१८३०,
३३६२७।

अनुमितिपरामर्शविचाररहस्यम् ३३६२६।

अनुमितिप्रतिबन्धकतावादः ३१४२०।

अनुमितिमानसविचारः ३४०६४।

अनुमितिविचारः ३०३१७, ३०३१९, ३०९४६,
३१०२२।

अनुमितिसिद्धिनिश्चयः ३०३१८।

अन्यथाख्यातिवादार्थः ३१२६१, ३४२२१।

अन्यथासिद्धिविचारः ३१७४१।

अन्वीक्षातत्त्वपरीक्षा ३१५५६, ३१५५७।

अन्वीक्षानयतत्त्वबोधः ३३३८१।

अपादानकारकविचारः ३१५७५।

अपूर्ववादः ३०३१६, ३०६७१, ३०७१९, ३१३७३,
३१४५५, ३३९०९।

अपेक्षानुद्धिविचारः ३३४०२, ३३९८९।

अप्रामाण्यग्रहविचारः ३३६२९।

अभावज्ञानप्रतियोगिज्ञानकार्यकारणभावरहस्यम् ३०३००।

अभावज्ञानप्रतियोगिज्ञान-

कार्यकारणभावविचारः ३३४०३, ३३७३०, ३४०७९।

अभाववादः ३१७६०।

अभाववादविचारः ३३६१९।

अभिधावादः ३१४३०, ३१४५६।

अभिधावादार्थः ३२४६०।

अभिनवताण्डवः ३०३१४।

अर्थाध्याहारवादः ३३७७३।

अवच्छेदकवादार्थः ३१५७२।

अवच्छेदकानुमितिविचारः ३११७९, ३१८३३ ।

अवयवदीधितिः ३३९९० ।

अशौचान्तद्वितीयदिनवादः ३३२८८ ।

अहिलङ्घनवादः ३३२९३ ।

आकाङ्क्षाकारणताविचारः ३४१८९ ।

आकाङ्क्षावादः ३१८३४, ३१४२३ ।

आकाशवादः ३१७४७ ।

आख्यातनिर्णयः ३४१३६ ।

आख्यातवादः ३०३२३, ३०९४३, ३१०९८, ३१२६४,
३१२९६, ३२६८९, ३२६९०, ३२८७८,
३२८७९, ३४२४७, ३४२४८, ३४२४९,
३४२६३ ।

आख्यातवादटिप्पणी ३१३०३, ३२९३६, ३३७९४,
३४०८८, ३४२४६, ३४२६९ ।

आख्यातवादटीका ३१३०६, ३२४१७, ३४०१६,
३४०४१, ३४१६६ ।

आख्यातवाददीपिका ३०७५७ ।

आख्यातवादविवरणम् ३१३०४, ३४१६६ ।

आख्यातवादव्याख्या ३१०६१, ३२६९१, ३४०६९ ।

आख्यातवादव्याख्यानम् ३१७७७ ।

आख्यातवादसद्व्याख्या ३३७९४ ।

आख्यातवादोपटिप्पणी ३४२४६ ।

आख्यातविचारः ३१३०२ ।

आख्यातविवेकः ३०७६६, ३११७६, ३१२९८,
३१३००, ३२६८९ ।

आख्यातशक्तिवादः ३११३०, ३१२९६, ३१२९८,
३१२९९, ३१३००, ३१३०१,
३१३६४, ३१३७१ ।

आख्यातशक्तिवादटिप्पणी ३१०६६, ३३०३७, ३४०२४ ।

आख्यातशक्तिवादटीका ३०३२२, ३०३२४, ३०३२६,
३१०६२, ३१०६८, ३१०६९,
३१०६०, ३१०६१ ।

आख्यातशक्तिवाददीधितिप्रसारिणी ३१०६२ ।

आख्यातशक्तिवादविवृतिः ३१३७०, ३२८८०,
३४०८७ ।

आख्यातार्थविनिर्णयः ३१०६० ।

आत्मतत्त्वविवेकः ३०१८६, ३०३३१, ३११८६,
३१३६१, ३१३९९, ३३२८२,
३३४६४, ३३६५७ ।

आत्मतत्त्वविवेककल्पलता ३०४२७, ३३२८०,
३३२०१, ३३४६७ ।

आत्मतत्त्वविवेकटीका ३०४२७, ३३७१८ ।

आत्मतत्त्वविवेकदीधितिः ३१३९८, ३३४६६, ३३४६६,
३३४६९, ३३९२४ ।

आत्मतत्त्वविवेकदीधितिटीका ३०४९६, ३३३८६,
३३७०६, ३३७२६ ।

आत्मतत्त्वविवेकदीधितिविवृतिः ३१२४१, ३२२२२,
३३३८२, ३३३८३,
३३३८४ ।

आत्मतत्त्वविवेकदीपिका ३११८३ ।

आत्मतत्त्वविवेकभावोद्भावः ३३०४४ ।

आत्मतत्त्वविवेकविवृतिटीका ३४१३९ ।

आत्ममनस्संयोगवादः ३०२०३ ।

आत्ममनोयोगवादः ३३२७६, ३३२७८ ।

आर्द्रैन्धनवादः ३३२९२ ।

आलोकसङ्ग्रहः ३०५०४ ।

आसत्तिवादः ३१४२९, ३१८३६ ।

इन्द्रादिपदानां शक्तिविचारः ३१३८९ ।

ईश्वरवादः ३०३२०, ३०३२१, ३०६३०, ३०७५५,
३१३७९, ३१७५६, ३१७७२, ३१७७३,
३१७७४, ३१७७५, ३१७७६, ३१८३१,
३३७२८ ।

उत्पत्तिवादः ३०५०७ ।

उद्भूतरूपविचारः ३३२८७ ।

उपमानादिलक्षणम् ३३९१९ ।

उपसर्गनिपातद्योतकत्वाचकत्वविचारः ३०७५४ ।

उपसर्गवादः ३४५६३ ।

उपसर्गविचारः ३१३७९ ।

उपाधिवादः ३०१९३ ।

उपाधिवार्त्तिकम् ३१९५० ।

उपाधिविवेचनम् ३३५५८ ।

उर्वरितपत्राणि ३३९८६ ।

एकत्वविचारः ३३४३२ ।

एकवचनाद्यर्थविचारः ३३६१९ ।

एकाक्षिवादः ३०५०७ ।

एवकारटिप्पणम् ३०३३० ।

एवकारदीधितिसारमञ्जरी ३११७० ।

एवकारवादः ३१३७२, ३४२६३ ।

एवकारवादार्थः ३०९६७, ३१४३२ ।

एवकारविवादः ३०२९० ।

एवकारार्थवादः ३१७४० ।

एवकारार्थविचारः ३११७४ ।

एवकारार्थविवृतिः ३११७५ ।

कणादरहस्यम् ३०५२५, ३२०६०, ३२०८९ ।

कणादरहस्यटीका ३१००२ ।

कणादसूत्रम् ३१००५, ३२५५६, ३२५५८, ३२५५९,
३२७६५, ३३६११ ।

कारककौमुदी ३३७६१ ।

कारकखण्डनम् ३२१५४ ।

कारकचक्रम् ३०२७८, ३०३२९, ३२५६३, ३२९४२,
३४०२१, ३४०२८, ३४१८८ ।

कारकचक्रटीका ३०५७७ ।

कारकटिप्पणी ३०५७६ ।

कारकनिर्णयः ३४१३६ ।

कारकपरिच्छेदः ३०२८९ ।

कारकरत्नम् ३४१९३ ।

कारकवादः ३०३१८, ३०५७५, ३१०५६, ३१२७३,
३१२७४, ३३६२८, ३४०२६, ३४०६९,
३४१९२, ३४१९६ ।

कारकविचारः ३०५८२, ३२८९०, ३३९०६, ३३९१३ ।

कारकव्याख्या ३०५७५, ३४०५१ ।

कारकज्यूहः ३१०६९ ।

कारकाद्यर्थनिर्णयः ३०२७८, ३०५७४, ३११७३,
३१३८८, ३२४७९, ३२७५२,
३२८९२, ३३५९५, ३३६२८,
३४०२६, ३४०२८ ।

कारकोद्देशः ३४२४४ ।

कारकोद्भासः ३४१९१ ।

कारणतारहस्यम् ३४२६२ ।

कारणतावादः ३०७५३, ३३२८६, ३३२८८, ३३४४८,
३४२६४ ।

कारणतावादरहस्यम् ३१४३२ ।

कारणतावादार्थः ३१४३३, ३१७४१ ।

कारणताविचारः ३११७२, ३१३७७, ३१७३६ ।

कारिकावली ३०३९७, ३०४४६, ३०६६६, ३०६७३,
३०९१०, ३०९८६, ३०९८६, ३०९८७,
३१०८७, ३१०९०, ३१०९४, ३१११६,
३११२१, ३११३४, ३११६६, ३११५०,
३११७१, ३१३२९, ३२३६६, ३२३६८,
३२३६२-३२३७६, ३२३७७, ३२३८७,
३२४००, ३२४०१, ३२४८२, ३२६४३-
३२६४४, ३२६६०, ३२६८६, ३२६८६,
३२६६२, ३४१७२ ।

कारिकावलीटीका ३०६२६, ३०६०४, ३०६०६,
३१०९२, ३१०९३, ३१८४७,
३१८४८ ।

कारिकावलीटीकाटीका ३१०९१, ३०६६७, ३०६०९ ।

कारिकावलीव्याख्या ३३६६० ।

कारिकावली सटीका ३१८४६, ३२०६१, ३२०६२ ।

कार्यकारणभावविचारः ३०३४०, ३०४८३, ३०६७२,
३१६७३, ३१७३३, ३२६०३,
३३१०१ ।

कार्यान्यतश्चिन्ताद्विषयकग्रन्थविशेषः ३१०६६ ।

कालवादः ३२४८३ ।

कालीशङ्करी ३०४३१ ।

कालीशङ्करीक्रोडपत्रम् ३०४३९ ।

काशिका ३०७६२, ३४०८३ ।

किरणावली ३०६७८, ३०९३९, ३०९४६, ३१००३,
३१००९, ३११८४, ३१३६७, ३१३६९,
३१३६१, ३२६४१, ३२६६०, ३२७०१-
३२७०६, ३२०६४-३२०६६, ३२०६८,
३२०६९, ३२६४०, ३४१२४ ।

किरणावलीटीका ३२६३८, ३४०६३, ३४२११ ।

किरणावलीटीकाटीका ३२९६४, ३३३७३ ।

किरणावलीटीकाटीकाटीका ३४२२३ ।

किरणावलीप्रकाशः ३०३२८, ३०५७४, ३१२७१,
३१३४१, ३२०२१, ३३००६-
३३००९, ३३०३१, ३३६६१,
३३६६२, ३४०४४, ३४०८६ ।

किरणावलीप्रकाशः (विवृतिसहितः) ३३०७२ ।

किरणावलीप्रकाशजलदः ३०४६७, ३३००३ ।

किरणावलीप्रकाशटीका ३०४६७, ३०६३४, ३१३४२,
३३९४९, ३४०३१ ।

किरणावलीप्रकाशदीधितिः ३१३१६, ३२९६२,
३२०६०-३२०६२, ३३४९२ ।

किरणावलीप्रकाशदीधितिगृहार्थप्रकाशिका ३११९३ ।

किरणावलीप्रकाशदीधितिगृहार्थविवृतिः ३३०२० ।

किरणावलीप्रकाशदीधितिटीका ३३०२१, ३३०२२,
३३०२४, ३४२२३ ।

किरणावलीप्रकाशदीधितित्वात्पर्यदीपिका ३३०१९ ।

किरणावलीप्रकाशदीधितिभावप्रकाशिका ३३०२३ ।

किरणावलीप्रकाशदीधितिहस्यम् ३३०८४, ३३०८६ ।

किरणावलीप्रकाशदीधितिव्याख्या ३३८९० ।

किरणावलीप्रकाशप्रकाशिका ३३३७३ ।

किरणावलीप्रकाशमकरन्दः ३०९४८ ।

किरणावलीप्रकाशरहस्यम् ३२७४८, ३२९६३ ।

किरणावलीप्रकाशविवृतिः ३०९४८, ३१३६२,
३३००३, ३३०१७,
३३८९४ ।

किरणावलीप्रकाशविषयाशयप्रकाशः ३०८०७, ३१३६२ ।

किरणावलीभास्करः ३०९४०, ३१२६३, ३३०२९,
३३०३०, ३३६६३ ।

किरणावलीव्याख्या ३३६३७, ३३८९२ ।

कृत्याद्युद्देशः ३४२४४ ।

कृष्णञ्जरी ३४१९०, ३४१९४, ३४१९५ ।

कृष्णम्भट्टवादार्थः ३०७०५ ।

केवलान्वयिवादः ३३५६० ।

क्त्वाप्रत्ययवादः ३२६७७, ३२२७४, ३३४३७ ।

क्त्वाप्रत्ययविचारः ३१०५७, ३३६२४, ३३६२५ ।

क्रियासंगोगवादः ३३२८२ ।

क्रोडपत्रम् ३०२२६, ३०२९९, ३०३०४, ३०४३७,
३०४७४-३०४७७, ३२६४२, ३२६५३,
३३९०६, ३२६४२ ।

खण्डनोद्धारः ३२८०५ ।

गादाधरीक्रोडपत्रम् ३०१४१, ३०१४२, ३०१४५,
३०१४६, ३०१४८-३०१५०,
३०१५५, ३०१५७, ३०१६८,
३०१९९, ३०२०१, ३०२०५,
३०२०७, ३०२०९, ३०२११-
३०२१३, ३०२१७, ३०२२०,
३०२२१, ३०२२४, ३०२२९,
३०२३९, ३०२४१, ३०२४५,
३०२५०, ३०२५२-३०२५८,
३०३४१, ३०३४२, ३०३४४,
३०३७४, ३०३९०, ३०४३४,
३०४७९, ३०४८५, ३०५८३,
३०६८३, ३०७०५, ३०८३५,
३०८३८, ३०८४१, ३०८४५,
३०८९३, ३०९३१, ३०९५६,
३०९६१, ३१०६४, ३११२५,
३१२२५, ३१२२६, ३१२८४,
३१३५२, ३१४५०, ३१५०८,
३१५१०-३१५१४, ३१५३६,
३१५४३, ३१५७०, ३१६०८,
३१६३२, ३१६४२, ३१६५९,
३१६६०, ३१६९३, ३१७१८,
३१७२८, ३१७६३, ३१७८७,
३१७८८, ३१८००, ३१८०१,
३१८०९, ३०८२१, ३१८२२,
३१८२५, ३१८२६, ३१८४०,

गादाधरीक्रोडपत्रम् ३१८८०, ३१९९२, ३१९९४,
३१९९९, ३२०००, ३२०१६,
३२११७, ३२४१२, ३२४२४,
३२४३८-३२४४२, ३२४४५,
३२४४६, ३२४५५, ३२४७१,
३२४८६, ३२४९३, ३२५००-
३२५०२, ३२५०६, ३२५०९,
३२५१०, ३२५१२-३२५१७,
३२५१९, ३२५८३, ३२६०६,
३२६२०, ३२६२३, ३२६२७,
३२६२९, ३०६३०, ३२६३२,
३२६३३, ३२६४४, ३२६४८,
३२६५१, ३२६५२, ३२६७५,
३२६८८, ३२७३१, ३२७३७,
३२७३८, ३२७५८, ३२८२१-
३२८२३, ३२८२८, ३२८३०-
३२८३२, ३२८३७, ३२८३९,
३२८४२-३२८४४, ३२८४७-
३२८५१, ३२८६०, ३२८७०,
३३०७१, ३३०७५, ३३०७६,
३३०७८-३३०८३, ३३१३२-
३३१४०, ३३१६०, ३३२३५,
३३२३६, ३३४३१, ३३४३८,
३३४५७, ३३५०३, ३३५२९,
३३५९२, ३३६०१, ३३६०५,
३३६०६, ३३६४२, ३३७९७-
३३८१५, ३३८१७, ३३८२०,
३३८२२-३३८३६, ३३८३८-
३३८४६, ३३८७४, ३३८८२,
३३९०२, ३३९१०, ३३९१४,
३३९१६, ३३९२८, ३३९४३,
३३९४५-३३९४७, ३३९५५,
३३९५७, ३३९६१, ३४०५७,
३४०६८, ३४१६२-३४१६४ ।

गादाधरीटीका ३०६७३, ३०७६४, ३०८८२, ३०९३०,
३१०२९, ३१२९२, ३१४७१, ३२७०८-
३२७१० ।

गादाधरीपत्रिका ३०१४०, ३१२७८, ३१२८१,
३१२९१, ३१३८६, ३१४३४-

गादाधरीपत्रिका ३१४३६, ३१४३८-३१४४६,
३३९८१, ३३९८७, ३३९९९,
३३९९७, ३३९९८, ३४००८,
३४२७१, ३४२७२, ३४२७४-
३४२७८, ३४२८२ ।

गादाधरीफक्किका ३०६०४ ।

गादाधरीमुक्तामाला ३२९०४ ।

गादाधरीविवृतिः ३२७११, ३२७१२ ।

गादाधरीव्याख्या ३०७६२ ।

गादाधरीशाङ्करी ३०६९९, ३०७०६ ।

गुणरत्नावली ३२०७८ ।

गुणरहस्यम् ३२०८६, ३३०९७, ३४१८३ ।

गुणादीनां साधर्म्यवैधर्म्यविचारः ३०३०६ ।

गूढार्थतत्त्वदीपिका ३०४८०, ३४१९८ ।

गूढार्थदीपिका ३१६१६ ।

गूढार्थप्रकाशिका ३२८९४ ।

गौतमसूत्राणि ३१८९९ ।

चान्द्री ३४१६० ।

चित्ररूपकार्यकारणभावरहस्यम् ३०७७३ ।

चित्ररूपनिरूपणम् ३०१८७ ।

चित्ररूपवादः ३१९४०, ३१९४१, ३४२६३ ।

चित्ररूपविचारः ३०१९२, ३०४२४ ।

चित्ररूपादिविचारः ३०२२९ ।

जन्यभावविनाशित्ववादः ३३४९४ ।

जलदः ३३२१६ ।

जागदीशी ३४०७२, ३४०७४ ।

जागदीशीक्रोडनिष्कर्षः ३१६३२ ।

जागदीशीक्रोडपत्रम् ३०१४४, ३०१४७, ३०१९१,
३०१९७, ३०२०८, ३०२१४,
३०२१८, ३०२१९, ३०२२३,
३०२३०, ३०२३३, ३०२४०,
३०२४२, ३०२४४, ३०२४६,
३०२४७, ३०२९१, ३०३४३,
३०३४७, ३०३९७, ३०३६३,
३०३८१, ३०३८३, ३०४३१,
३०४३३, ३०४७१, ३०५१७,
३०५८८, ३०५९१-३०५९७,
३०६५४, ३०७२६-३०७२८,
३०८२९-३०८३१, ३०८३३,
३०८३४, ३०८३६, ३०८३९,
३०८४३, ३०८४४, ३०८८०,
३०९८८, ३१०२३, ३११४७,
३१३६८, ३१३६९, ३१४५८,
३१४६३, ३१४७३-३१४८५,
३१५०२, ३१५२३, ३१५४५,
३१५४६, ३१५५५, ३१५५८,
३१५६२, ३१५६३, ३१५६९,
३१५७१, ३१५७७-३१५८५,
३१६४६, ३१६४९-३१६५१,
३१६६८-३१६७२, ३१६७४,
३१६७५, ३१६७८, ३१६८०-
३१६८२, ३१६८९, ३१६९०,
३१६९४-३१७०२, ३१७०४,
३१७०५, ३१७१०, ३१७११,
३१७१४, ३१७२२, ३१७२५,
३१७२६, ३१७८९-३१७९८,
३१८५०, ३१८५१, ३१८६०,
३१८८१-३१८८४, ३१८८६,
३१८९३, ३१८९४, ३१९०१,
३१९०५-३१९१०, ३१९१४-
३१९१७, ३१९१९, ३१९२१,
३१९९८, ३२००७, ३२००८,
३२०१२, ३२०१४, ३२०१५,
३२०२४, ३२११८, ३२१२८,
३२१३०, ३२१३९, ३२१४१,
३२१४४, ३२१५६, ३२१६१,
३२२०७, ३२२०८, ३२२१२-
३२२१४, ३२३०८, ३२३१६,

जागदीशीक्रोडपत्रम् ३२४०९-३२४११, ३२४१८,
 ३२४३६, ३२४४३, ३२४४४,
 ३२४४७, ३२४५४, ३२४५७,
 ३२४६९, ३२४६७, ३२४६९,
 ३२४७०, ३२४७३, ३२६०९,
 ३२६१७, ३२६२६, ३२६४६,
 ३२६४७, ३२६८२, ३२७३९,
 ३२७४०, ३२७९६, ३२८३६,
 ३२८६३-३२८६५, ३२८९९,
 ३२९००, ३२९०२, ३२९०४,
 ३२९०६, ३२९०८-३२९१०,
 ३२९१२, ३२९१३, ३२९१६-
 ३२९१८, ३२९२०, ३२९२२-
 ३२९२४, ३२९१२-३२९१४,
 ३२९१४-३२९१९, ३२९३४,
 ३२९०४, ३२९१०, ३२९३७,
 ३२९३८, ३२९४१, ३२९४३,
 ३२९४६, ३२९४१, ३२९३७,
 ३२९४६-३२९७१, ३२९७७-
 ३२९७९, ३२९८३, ३२९८४,
 ३२९९५, ३२९९८, ३२९९९,
 ३२९०८, ३२९१२, ३२९२२,
 ३२९४८, ३२९७६, ३२९६० ।

जागदीशीटीका ३०७८३ ।

जागदीशीपत्रिका ३०६५७, ३१२७७, ३१३८४,
 ३२१६०, ३२९०३, ३३९८४,
 ३३९८८, ३३९९६, ३४००६,
 ३४००९, ३४०१०, ३४२१०,
 ३४२५७, ३४२६०, ३४२६९,
 ३४२७९, ३४२८० ।

जागदीशीमञ्जूषा ३०६५९, ३०६६१, ३०६८४,
 ३२६४९ ।

जागदीशीवादार्थः ३२१३२ ।

जागदीशीविवरणम् ३१८८५ ।

जागदीशीसङ्क्षेपपत्रिका ३२१४२, ३२१४३ ।

जातिबाधकारिकान्याख्या ३१८९६ ,

जातिबाधकरहस्यम् ३१३०४, ३१३८० ।

जातिबाधकवादः ३३४२३ ।

जातिबाधकविचारः ३३४९० ।

जातिबाधकार्यसङ्ग्रहः ३२४९१ ।

जातिमाला ३०८१०, ३२५८९, ३२५९०, ३४०८२ ।

जातिशक्तिवादः ३१३७३, ३१४२८ ।

ज्ञानत्वप्रकारतारहस्यम् ३३६२० ,

ज्ञानद्वयवादः ३०३११ ।

ज्ञानद्वयविचारवादः ३०७३६ ।

ज्ञानद्वयहेतुताविचारः ३३२९१ ।

ज्ञानरूपविचारः ३१३९१ ।

ज्ञानलक्षणाप्रत्यासत्तिरहस्यम् ३३७४३ ।

ज्ञानलक्षणावादः ३३२८५ ।

ज्ञानलक्षणाविचारः ३३७४२ ।

ज्ञानलक्षणासन्निकर्षविचारः ३०२३२ ।

णिज्वाक्यबोधः ३१७५१ ।

तत्त्वचिन्तामणिः

३०१६७, ३०१७४, ३०३५५, ३०३६३,
 ३०३७५, ३०३७८, ३०३८५, ३०३९६,
 ३०४१८, ३०४१२, ३०४१३, ३०४१६,
 ३०४१७, ३०४२०, ३०४२२, ३०४२३,
 ३०४२६, ३०६०३, ३०७३१, ३०८०१-
 ३०८०५, ३०८११, ३०८१२, ३०८५१,
 ३०८८७-३०८८९, ३०९२३, ३१०४१,
 ३१०७८, ३१०९५, ३११३७, ३११४०,
 ३११४१, ३११५३, ३११६२, ३११८६,
 ३११९४, ३११९८, ३१२५१, ३१२५२,
 ३१३१३, ३१४९४-३१४९६, ३१५०७,
 ३१५२१, ३१६३६, ३१६३८, ३१६५५,
 ३१८३७, ३१८७०, ३१८९९, ३१९१३,
 ३१९२९, ३२०१८, ३२०२६, ३२१३५,

तत्त्वचिन्तामणिः ३२१६७, ३२२०४, ३२२०९, ३२४४८,
३२४४९, ३२५०५, ३२५८७, ३२६१४,
३२६६७, ३२६९६, ३२६९९, ३२७००,
३२८३६, ३२८५८, ३२८८३, ३२९०१,
३२९३६, ३२९०४, ३२९७७-३२९७९,
३३२४१-३३२४३, ३३२६५, ३३२६७,
३३२६९-३३२७१, ३३२९७, ३३३६८-
३३३६९, ३३३९९, ३३४३६, ३३४६०,
३३४८१, ३३५२६, ३३५७२, ३३५७३,
३३४९१, ३३७८९, ३३७९०, ३३८५८-
३३८८०, ३३८६४, ३३९२१, ३३९४१,
३३९६३, ३३९८३, ३३९९०, ३३९९४,
३४०७५, ३४०७३, ३४१०१, ३४११७,
३४१२१, ३४१२३, ३४१२८, ३४१४१,
३४१४६, ३४१६८, ३४२१३ ।

तत्त्वचिन्तामणिः (सटिप्पणः) ३२६९८ ।

तत्त्वचिन्तामणिः (सटीकः) ३२८२६, ३२८३३,
३२८५७, ३४२१५ ।

तत्त्वचिन्तामणिः (सदीधितिः) ३१५०९, ३३०७०,
३३६४७ ।

तत्त्वमणिटिप्पणी ३०४६०, ३०४८८, ३३३२०,
३३५५६ ।

तत्त्वमणिटीका ३०१५३, ३०१७३, ३०१७६, ३०१८१,
३०२०२, ३०२१०, ३०२४९, ३०४१५,
३०४७३, ३०४८०, ३०५०३, ३०५०७,
३०६८८-३०८७१, ३०८७५, ३०८८६,
३०९३७, ३०९६३, ३०९६४, ३०९८३,
३११३६, ३११८२, ३११८८, ३११९१,
३१३६३, ३१४५३, ३१५६१, ३१५७४,
३१५७६, ३१५९४, ३१६८७, ३१७३२,
३१७६७, ३२२३०, ३२४३१, ३२४३२,
३२४३४, ३२४७६, ३२५७६, ३२६६१,
३२६९२, ३२६९६, ३२७५५, ३२८८४,
३२८८५, ३२८९६, ३२९२६, ३२९६०,
३२९६३, ३२९६४, ३३१११, ३३१६८,
३३१८०, ३३२१०, ३३२३७, ३३२३८,

३३२३९, ३३२४०, ३३२९४, ३३२९५,
३३३४४, ३३३४६, ३३३५६, ३३३६२-
३३३७०, ३३४०१, ३३४०४, ३३४९६,
३३५६९, ३३५६२, ३३५७०, ३३५७१,
३३६६७, ३३८७५, ३३८८८, ३३८९६,
३३९००, ३३९०५, ३३९३१, ३३९३२,
३३९३६, ३३९४०, ३३९५०, ३३९८७,
३४००१, ३४००७, ३४०१३, ३४०३२,
३४०३७, ३४०६६, ३४०८९, ३४०९६,
३४१०४, ३४११५, ३४१२०, ३४१२२,
३४१२८, ३४१३७, ३४१४०, ३४१४४,
३४१४५, ३४१५०, ३४१५८, ३४१७६ ।

तत्त्वचिन्तामणिटीका ३४२०५, ३४२१४, ३४२२०,
३४२२९, ३४२३०, ३४२३४ ।

तत्त्वचिन्तामणिटीकाटीका ३०४७०, ३४०६६,
३४०६७, ३४१३५,
३४२१६ ।

तत्त्वचिन्तामणितत्त्वदीपिका ३०९५३, ३१३४३ ।

तत्त्वमणिदीधितिः ३०१६०, ३०१६२, ३०१६४,
३०१७१, ३०१७२, ३०२८३,
३०२८८, ३०३५०, ३०३५३,
३१३५४, ३०४११, ३०४२९,
३०५६३, ३०५६५, ३०५६७,
३०५८१, ३०५९८, ३०६००,
३०७८६, ३०७९७, ३०८१३,
३०८४६, ३०८४७, ३०८५०,
३०८७३, ३०९३८, ३०९६५,
३०९६६, ३०९६८, ३०९६९,
३१०८९, ३११३३, ३११६३,
३११६४, ३११६९, ३११८७,
३१२१८, ३१२८५, ३१३४७,
३१४६७, ३१४६३, ३१५१८,
३१५२०, ३१५४०, ३१५६६,
३१५९०, ३१६३९, ३१६४४,
३१६४७, ३१०९२, ३१७१५,
३१७६६, ३१८०७, ३१८०८,
३१८२०, ३१८६५, ३१८६६,
३१८७४, ३१८९२, ३१९०३,

तत्त्वमणिदीधितिः ३११२८, ३२०२६, ३२०२७-
 ३२०२९, ३२११६, ३२१३१,
 ३२१६८, ३२२०६, ३२२११,
 ३२४६०, ३२४६८, ३२४६६,
 ३२४७२, ३२४७७, ३२४९६,
 ३२४९७, ३२४९८, ३२६८८,
 ३२६९८, ३२६९१, ३२६४३,
 ३२६८१, ३२७२९, ३२७३६,
 ३२८२६, ३२८२९, ३२८३३,
 ३२८६२, ३२८६७, ३२८६९,
 ३२८७४, ३२८८६, ३२९०७,
 ३२९१९, ३३०३६, ३३०८७-
 ३३०९१, ३३१०६, ३३१४२,
 ३३२२२, ३३२९६, ३३२९८,
 ३३२९९, ३३३७२, ३३४२४,
 ३३४३६, ३३४६१—३३४६३,
 ३३६२६, ३३६३६, ३३६६६,
 ३३६९६, ३३६९७, ३३६३३,
 ३३६३४, ३३८६३—३३८६६,
 ३३८६९, ३३९८२, ३३९९९,
 ३४००२, ३४०४६, ३४०४९,
 ३४०६०, ३४०८०, ३४१०२,
 ३४११४, ३४११९, ३४१६१,
 ३४२१२, ३४२३६।

तत्त्वचिन्तामणिदीधितिकोडपत्रम् ३०९८०, ३२८६९,
 ३३६२९, ३३८८६।

तत्त्वमणिदीधितिगादाधरीटिप्पणी ३४०६६।

तत्त्वमणिदीधितिगादाधरीटीका ३४०८३, ३४२३३,
 ३४२६८।

तत्त्वमणिदीधितिगादाधरीविवृतिः ३३३१३,

तत्त्वमणिदीधितिगूढार्थविवोक्तनम् ३११२४, ३२७१४,
 ३२७१६।

तत्त्वमणिदीधितिटिप्पणी ३०६२१, ३१६४६,
 ३२८७६, ३३३०७,
 ३३३१९, ३४०००,
 ३४००३, ३४०११।

तत्त्वमणिदीधितिटीका ३०१६२, ३०१६६, ३०१६८,
 ३०१६१, ३०१६३, ३०१६६,
 ३०१६६, ३०१६९, ३०१७०,
 ३०१७६, ३०१७८, ३०२०६,
 ३०२२६, ३०२३६, ३०२४८,
 ३०२६९, ३०२६७, ३०२८९,
 ३०२८६, ३०२८७, ३०२९१,
 ३०३१०, ३०३३४, ३०३३९,
 ३०३४६, ३०३६१, ३०३६२,
 ३०३६६, ३०३६८, ३०३६०,
 ३०३६४, ३०३६८, ३०३७६,
 ३०३७९, ३०३८२, ३०३९८,
 ३०३९९, ३०४०१—३०४०३,
 ३०४०६, ३०४०६, ३०४३२,
 ३०४३६, ३०४३८, ३०४६८,
 ३०४६९, ३०४६२, ३०४६६,
 ३०४६६, ३०४६८, ३०४६९,
 ३०४७२, ३०४७८, ३०४८६,
 ३०४८७, ३०४८९, ३०४९१,
 ३०४९१, ३०६२३, ३०६३२,
 ३०६४१, ३०६६२, ३०६६२,
 ३०६६४, ३०६६८, ३०६८६,
 ३०६९६, ३०६०८, ३०६४१,
 ३०६६६, ३०६६६, ३०६६८,
 ३०६६६, ३०६६७, ३०६६९,
 ३०६७०, ३०६७२, ३०६७७,
 ३०६८६, ३०६८६, ३०६८८,
 ३०७००—३०७०३, ३०७०७,
 ३०७०९, ३०७१०, ३०७२१,
 ३०७२२, ३०७२९, ३०७४९,
 ३०७६०, ३०७६२, ३०७६६-
 ३०७६७, ३०७७०, ३०७७६-
 ३०७८१, ३०७८८, ३०७९३,
 ३०८०८, ३०८०९, ३०८१९,
 ३०८३७, ३०८४८, ३०८८१-
 ३०८८६, ३०८९०, ३०८९१,
 ३०८९४, ३०८९६, ३०८९९-
 ३०९०४, ३०९२७—३०९२९,
 ३०९३२—३०९३६, ३०९८९,
 ३१०१०, ३१०१६, ३१०१६,
 ३१०२०, ३१०२४—३१०२८,

तत्त्वमणिदीधितिटीका ३१०३१-३१०३४, ३१०३८-
 ३१०४०, ३१०४७-३१०५०,
 ३१०५३, ३१०५४, ३१०७०,
 ३१०७२, ३१०८२-३१०८६,
 ३१११०, ३११२७-३११२९,
 ३११३८, ३११४२, ३११४५,
 ३११५०, ३११५१, ३११६०,
 ३११६५-३११६८, ३११७८,
 ३१२०२-३१२१७, ३१२२२,
 ३१२४२, ३१२४४, ३१२४६-
 ३१२५०, ३१२६८, ३१२७०,
 ३१२८६, ३१२८८, ३१२९३,
 ३१३२३, ३१३३८, ३१४४८,
 ३१४४९, ३१४५१, ३१४५२,
 ३१४५९, ३१४६०, ३१४६२,
 ३१४७६-३१४८१, ३१४८३-
 ३१४८८, ३१४९१, ३१४९२,
 ३१४९७, ३१४९९-३१५०१,
 ३१५०३, ३१५०५, ३१५१५,
 ३१५२४, ३१५२५, ३१५३१,
 ३१५३९, ३१५४१, ३१५४७,
 ३१५५०, ३१५६४, ३१५६५,
 ३१५६७, ३१५६८, ३१५८६,
 ३१५८७, ३१५८९, ३१६२७,
 ३१६३७, ३१६४३, ३१६४८,
 ३१६५२-३१६५४, ३१६५६,
 ३१६५७, ३१६६१, ३१६७६,
 ३१६७७, ३१६७९, ३१६८६,
 ३१६८८, ३१६९१, ३१७०३,
 ३१७०७-३१७०९, ३१७१२,
 ३१७१३, ३१७१७, ३१७२३,
 ३१७२६, ३१७३२, ३१७८६,
 ३१७९९, ३१८०४-३१८०६,
 ३१८११-३१८१५, ३१८२३,
 ३१८२४, ३१८३६, ३१८४१,
 ३१८५२, ३१८६१, ३१८६२,
 ३१८६४, ३१८६७, ३१८७२,
 ३१८७५, ३१८७८, ३१८९७,
 ३१९००, ३१९०४, ३१९११,
 ३१९१२, ३१९१८, ३१९२०,

तत्त्वमणिदीधितिटीका ३१९२२, ३१९९७, ३२०१३,
 ३२०२०, ३२०२२, ३२०२३,
 ३२११५, ३२११९, ३२१४०,
 ३२१५९, ३२१६९, ३२२०६,
 ३२२१०, ३२२१६, ३२२१८,
 ३२२२०, ३२२२१, ३२३०९,
 ३२३१३, ३२३१५, ३२३१७,
 ३२३१८, ३२३२०, ३२४१३-
 ३२४१६, ३२४१९-३२४२१,
 ३२४२५, ३२४२७-३२४२९,
 ३२४३५, ३२४३७, ३२४५२,
 ३२४६१, ३२४६३, ३२४६४,
 ३२४६८, ३२४८९, ३२४९०,
 ३२४९२, ३२४९४, ३२४९६,
 ३२५०७, ३२५०८, ३२५६९-
 ३२५७२, ३२५८६, ३२६०५,
 ३२६०७, ३२६१९, ३२६२४,
 ३२६४०, ३२६४४, ३२६४६,
 ३२६४८, ३२६८०, ३२७१७-
 ३२७२०, ३२७२४, ३२७३२-
 ३२७३४, ३२७३६, ३२७४२,
 ३२७४३, ३२७४४, ३२७५१,
 ३२७५३, ३२७५६, ३२७५७,
 ३२७६२, ३२७७४-३२७९०,
 ३२७९७-३२८०३, ३२८१८-
 ३२८२०, ३२८२४, ३२८२८,
 ३२८३८, ३२८४०, ३२८४५,
 ३२८४६, ३२८५३, ३२८६८,
 ३२८७१-३२८७३, ३२८८७,
 ३२८८९, ३२८९४, ३२८९५,
 ३२८९७, ३२८९८, ३२९०५,
 ३२९११, ३२९१४, ३२९१५,
 ३२९२१, ३२९३७, ३२९४७,
 ३२९६६, ३२९६७, ३२९८५-
 ३२९८८, ३२९९२, ३२९९५-
 ३२९९९, ३३००४, ३३०३४,
 ३३०३६, ३३०४१-३३०४३,
 ३३०४५, ३३०५३, ३३०९२,
 ३३११५-३३१३१, ३३१४१,
 ३३१५०, ३३१५२-३३१५९,
 ३३१६१-३३१६४, ३३२३३,

| | |
|---------------------|---|
| तत्त्वमणिदीधितिटीका | ३३३२२, ३३३३०, ३३३७१, ३३३९६, ३३३९७, ३३४०५, ३३४१२, ३३४२०, ३३४३३, ३३४४१, ३३४६८, ३३४८३, ३३४९३, ३३५२७, ३३५५३, ३३५८९, ३३५९०, ३३५९९, ३३६००, ३३६०३, ३३६०७— ३३६०९, ३३६३०—३३६३२, ३३६३६, ३३६४०, ३३६७५, ३३६७९—३३६८४, ३३७०३— ३३७०५, ३३७८१, ३३७८२, ३३७८८, ३३८१९, ३३८४७— ३३८४९, ३३८५७, ३३८५८, ३३८७२, ३३८७६, ३३८८७, ३३८९७, ३३९२३, ३३९२९, ३३९३४, ३३९३८, ३३९३९, ३३९४२, ३३९५८, ३३९९३, ३४००५, ३४०१२, ३४०२२, ३४०२५, ३४०३४, ३४०३५, ३४०४६, ३४०५६, ३४०५८, ३४०७०—३४०७२, ३४०७४, ३४०७७, ३४०७८, ३४०८४, ३४०९०, ३४०९५, ३४१०६, ३४१११, ३४११३, ३४११६, ३४११८, ३४१२५, ३४१३३, ३४१४२, ३४१६६, ३४१७०, ३४१७५, ३४१७८, ३४१७९, ३४२०८, ३४२१७, ३४२१९, ३४२२४, ३४२२८, ३४२३६, ३४२४१, ३४२६६, ३४२६७। |
|---------------------|---|

| | |
|-------------------------|--|
| तत्त्वमणिदीधितिटीकाटीका | ३०१९६, ३०६५९, ३०६७३, ३०६८४, ३०६९५, ३०७०५, ३०७०६, ३०७६२, ३०७६४, ३०७८३, ३०८९२, ३०९३०, ३१०२९, ३१२९२, ३२५०४, ३२५६८, ३२६४९, ३२७०८, ३२७०९, ३२७११, |
|-------------------------|--|

| | |
|-------------------------|--|
| तत्त्वमणिदीधितिटीकाटीका | ३२७१२, ३३०००, ३३००१, ३३३९१, ३४१०५। |
|-------------------------|--|

तत्त्वमणिदीधितिटीकाव्याख्या ३४०५५।

तत्त्वमणिदीधितिबपत्रिका ३२१२२, ३२१२३।

तत्त्वमणिदीधितिपुरस्कारः ३०२७४।

| | |
|------------------------|--|
| तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशः | ३०२८६, ३०३६६, ३०५५५, ३०५६१, ३०७३२, ३०८३२, ३१००१, ३१०११, ३१२६५, ३१२९०, ३१६३४ — ३१६३६, ३२४७४, ३२६४०, ३२९५१, ३३६६६, ३३७२४, ३४२०३, ३४२२२। |
|------------------------|--|

| | |
|---------------------------|---|
| तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशटीका | ३०३६७, ३०३७३, ३२६१३। ३३३५१, ३३४३०, ३३९२५। |
|---------------------------|---|

तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशप्रकाशः ३३०००, ३३००१।

| | |
|--|--------------------------------|
| तत्त्वमणिदीधितिप्रकाश- सर्वोपकारिणी | ३१२८०, ३२६१२, ३३०२६, ३३०४७। |
|--|--------------------------------|

तत्त्वमणिदीधितिप्रकाशिका ३२८८८, ३४२६१।

तत्त्वमणिदीधितिप्रवेशः ३२७१६, ३३५२८।

| | |
|-----------------------------|-------------------------|
| तत्त्वमणिदीधितिभवानन्दीटीका | ३४०२३, ३४०३९, ३४०५४। |
|-----------------------------|-------------------------|

| | |
|-----------------------|---|
| तत्त्वमणिदीधितिहस्यम् | ३०३४९, ३१२५७, ३२८३४, ३२८७६, ३२९८४, ३३९७३। |
|-----------------------|---|

तत्त्वमणिदीधितिरोद्री ३२८१८।

तत्त्वमणिदीधितिबिवरणम् ३२९६२।

तत्त्वमणिदीधितिविवेचनम् ३२५७३ ।

तत्त्वमणिदीधितिव्याख्या ३०१८३, ३२८११,
३२९२७, ३२९२८ ।

तत्त्वमणिदीधितिसारमञ्जरी ३०७३२ ।

तत्त्वचिन्तामणिदीपनी ३३२३४ ।

तत्त्वचिन्तामणिनिरुक्तिप्रकाशः ३२९२९ - ३२९३२,
३२९३४, ३२९४३,
३२९५८, ३२९६८ ।

तत्त्वचिन्तामणिपत्रिका ३०५१६, ३१३८१ ।

तत्त्वचिन्तामणिपरीक्षा ३०५३९, ३३०९३, ३४०९४ ।

तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशः ३०४०९, ३०८०६, ३०८२६,
३०८२७, ३०८७४, ३११५९,
३११८१, ३१२६६, ३१३१५,
३१३५०, ३१९९०, ३२९५५,
३२९५७, ३२९७९, ३२९८०,
३४०४८, ३४१८५ ।

तत्त्वचिन्तामणिप्रकाशिका ३०९६२ ।

तत्त्वचिन्तामणिप्रभा ३०७९८, ३०९९६, ३३६४६ ।

तत्त्वचिन्तामणिमयूखः ३२४७५, ३३८८५ ।

तत्त्वचिन्तामणिमाथुरी ३४०३२, ३४०३७ ।

तत्त्वचिन्तामणिरश्मिचक्रम् ३२९६१ ।

तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् ३०२६३, ३०३४६, ३०३४८,
३०३८४, ३०३८६, ३०३८७,
३०३९४, ३०३९५, ३०४०८,
३०४१४, ३०४२१, ३०४२५,
३०५०६, ३०५०७, ३०५८७,
३०६१४, ३०६१५, ३०६८७,
३०७०८, ३०७१८, ३०७२०,
३०७२३, ३०७२४, ३०७९९,
३०८००, ३०८१४, ३०८२५,
३०८४९, ३०८५२, ३०८६६,
३०९०५-३०९०७, ३०९६२,
३०९८२, ३१०२१, ३१०७३,

तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् ३११०६, ३११३९, ३११४३,
३११९२, ३१२५३, ३१२६९,
३१२७९, ३१२८२, ३१२८७,
३१३३७, ३१३६६, ३१४५४,
३१४६१, ३१४७०, ३१५०४,
३१५२९, ३१५४२, ३१५४४,
३१५४९, ३१६०५, ३१६२२,
३१६८४, ३१६८५, ३१८०२,
३१८५७, ३१८६३, ३१८६८,
३१८६९, ३१८७३, ३१८७६,
३१८८१, ३१८९८, ३१९०२,
३१९२६, ३२०१०, ३२०११,
३२०१९, ३२१३३, ३२१३४,
३२१३६, ३२१४५, ३२१४९,
३२१५०, ३२१५२, ३२२००,
३२२१५, ३२२१७, ३२२२३-
३२२२५, ३२२४५, ३२४२२,
३२४९९, ३२५२०, ३२६१६,
३२६७९, ३२६९४, ३२६९७,
३२७२१-३२७२३, ३२७२६-
३२७२८, ३२७३०, ३२७४६,
३२७५४, ३२८५६, ३२८६१,
३२८८२, ३२९२५, ३३०६३-
३३०६५, ३३१०७-३३१०९,
३३१४३-३३१४६, ३३२३२,
३३२४६, ३३४८०, ३३६०२,
३३६१८, ३३६४४, ३३६४५,
३३६७६, ३३७८३-३३७८७,
३३७९५, ३३८१८, ३३८६०-
३३८६२, ३३९३५, ३३९७२,
३४०९१, ३४०९२, ३४११० ।

तत्त्वचिन्तामणिरहस्यटीका ३०४७० ।

तत्त्वचिन्तामणिवाक्यार्थदीपिका ३४१०८ ।

तत्त्वचिन्तामणिवादार्थदीपिका ३२९९६ ।

तत्त्वचिन्तामणिविवृतिः ३०२९३ ।

तत्त्वचिन्तामणिविवेचनम् ३०७५१ ।

तत्त्वचिन्तामणिव्याख्या ३०६६८, ३१५३८, ३२८६२,
३२८६७, ३३४८४ ।

तत्त्वचिन्तामणिसारः ३०८२४, ३३६३९, ३२९५९,
३३२२१, ३३४५८, ३३४५९ ।

तत्त्वचिन्तामणिसारावली ३३०८६ ।

तत्त्वचिन्तामण्यालोकः ३०४०७, ३०४४८, ३०५२७,
३०५२८, ३०८२८, ३११५८,
३११८९, ३१३१४, ३१३४५,
३१३४६, ३१३४९, ३१६३७,
३२०४८, ३२४३०, ३२४८८,
३२७४५, ३२९७५-३२९७८,
३२९८३, ३३०९५-३३०९७,
३३२२५-३३२३०, ३३४००,
३३५९३, ३३६७७, ३४१२७,
३४१२९, ३४२२६, ३४२६८ ।

तत्त्वमण्यालोकः (सटीकः) ३४१५२ ।

तत्त्वमण्यालोककण्ट-

कोद्धारः ३०८७२, ३१३५५, ३२९९१,
३२९९३, ३२९९४, ३३०३२,
३३०३३, ३३२६६ ।

तत्त्वमण्यालोकटिप्पणी ३३४१३ ।

तत्त्वमण्यालोकटीका ३०३९१, ३०४९०, ३०७८२,
३०७८६, ३१०१३, ३१०५१,
३११४४, ३१३४८, ३१५९५,
३१५९६, ३१९३९, ३२२०१-
३२२०३, ३२४७८, ३२५११,
३२६९३, ३२७९१-३२७९३,
३२९८९, ३२९९०, ३३०३८,
३३०९४, ३३२२३, ३३२२४,
३३३९८, ३३४१८, ३३४७७,
३३४८२, ३३६६९, ३३९८०,
३४२०४, ३४२२७ ।

तत्त्वमण्यालोकदर्पणः ३०४५२, ३०९८४, ३२८८१,
३२९३३, ३२९६५ ।

तत्त्वमण्यालोकप्रकाशः ३१२६७, ३२९८२ ।

तत्त्वमण्यालोकरहस्यम् ३०३१५, ३०३३५, ३०३८८,
३०५०४, ३०५४०, ३१२२०,

तत्त्वमण्यालोकरहस्यम् ३१२३१, ३१२५६, ३२१९८,
३२२२६, ३२९८१, ३३०३९,
३३०४०, ३३०४६, ३३४१५-
३३४१७, ३३६४८ ।

तत्त्वमण्यालोकविवेकः ३१५९२ ।

तत्त्वमण्यालोकव्याख्या ३३५९४ ।

तत्त्वमण्यालोकसङ्ग्रहः ३१०१४ ।

तत्त्वमण्यालोकसारः ३२५२१, ३३४१४ ।

तत्त्वमण्यालोकसारसङ्ग्रहः ३३४१९ ।

तत्त्वमण्यालोकोद्योतः ३३४२९ ।

तत्त्वविवेकः ३३७९६ ।

तदादिशक्तिविचारः ३३७६५ ।

तदादिशब्दशक्तिविचारः ३३९८९ ।

तद्वितार्थविचारः ३३७२६ ।

तद्वितोद्देशः ३४२४३, ३४२४४ ।

तर्ककुतूहलम् ३२५४५, ३२५७४ ।

तर्ककौमुदी ३०४१८, ३०७८७, ३२०७९, ३२०८० ।

तर्कचन्द्रिका ३०७३७-३०७३९, ३१६३३, ३१९८६,
३२०५७, ३२०८२ ।

तर्कतत्त्वनिरूपणम् ३२५६४, ३२५६५ ।

तर्कदीपिका ३३३१४ ।

तर्कदीपिका (सटीका) ३२०७७ ।

तर्कधुन्ध्वंसनम् ३९९७९ ।

तर्कपरिभाषा ३०६९४ ।

तर्कप्रकाशः ३०२६८, ३०२६९, ३०३१३, ३०६३६,
३१११५, ३११२३, ३११४८, ३११९७,
३१२०१, ३१६३०, ३१६३१, ३२५७८,
३३१७१, ३३२४६, ३३३४७-३३३५०,
३३३५३-३३३५५, ३४१५५ ।

तर्कप्रतिबन्धकतारहस्यम् ३०७८४ ।

तर्कप्रतिबन्धकस्वरहस्यम् ३२१४७ ।

तर्कप्रतिबन्धकस्वविचारः ३०६२७ ।

तर्कप्रदीपः ३१९३७ ।

तर्कभाषा ३०१९९, ३०६४२, ३०७४०, ३०९२९,
३०९७१, ३०९७२, ३१०९९, ३११९७,
३१२७६, ३१३१७, ३१६२९, ३१९७७,
३२३२१, ३३०९८—३३१००, ३३१८७,
३३१८८, ३३१९२, ३३१९७, ३३३०६,
३३३०९, ३३३७६, ३३४७१, ३३६२१,
३३६३०, ३३६३१, ३३६८७—३३६९०,
३३६९९—३३७०२, ३३७०९—३३७११,
३३७२२, ३३७२३, ३४१२६ ।

तर्कभाषा (सटीका) ३०१७७ ।

तर्कभाषाटीका ३०६२२, ३०६२६, ३२१४८, ३२३२२,
३२३२३, ३२७६०, ३३३१४—३३३१८,
३३३२९, ३३३३८—३३३४०, ३३६२२,
३३६४६, ३३६९१, ३३६८७, ३४२१८ ।

तर्कभाषाप्रकाशः ३३३२८ ।

तर्कभाषाप्रकाशिका ३०६४३ ।

तर्कभाषाभावप्रकाशः ३३३२९ ।

तर्कभाषाभावार्थदीपिका ३०२६०, ३०२६१, ३०६२६,
३१६२८, ३१९७६, ३१९७८,
३३३३६—३३३३७, ३३३४२,
३३३४३, ३३६२३, ३३६३९,
३३७१६, ३३७१७ ।

तर्कभाषान्याख्या ३०६९२, ३०६९३, ३३६८६ ।

तर्करत्नावली ३२३२३ ।

तर्करहस्यम् ३२९४६ ।

तर्करहस्यवादार्थः ३३९११ ।

तर्कवादः ३१३७३ ।

तर्कसङ्ग्रहः ३०४४१, ३०४४२, ३०४६०, ३०४६३,
३०६९१, ३०७४१, ३०९१६—३०९१८,
३१०७६—३१०७७, ३११०३, ३११०८,
३१११४, ३१११९, ३११३१, ३१३१८—
३१३२०, ३१३३४, ३१६१९, ३१६२१,
३१६२६, ३१९८०—३१९८४, ३२१९१,
३२२४६—३२२९०, ३२३२४, ३२३३६—
३२३३९, ३२३६१, ३२४०६, ३२४०६,
३३४२६, ३३६००—३३६०९, ३३६४३,
३३६६६, ३४१६७, ३४२४०, ३४२६० ।

तर्कसङ्ग्रहः (सटीकः) ३०३१२, ३१६१८, ३१६२०,
३२२९१, ३२२९४—३२२९८,
३२३००, ३२३०३, ३२३०६,
३२३०७, ३२६२८, ३२६२२,
३२६३३, ३२६३६, ३२६४०,
३२७७३, ३३६१८, ३३६६४,
३३९२० ।

तर्कसङ्ग्रहचन्द्रिका ३०७४३, ३१६१६, ३१६१७,
३२०४६, ३२०६८, ३२०९३,
३२०९४ ।

तर्कसङ्ग्रहटीका ३०६२४, ३०६२९, ३०७४२,
३०९१९, ३०९९१, ३०९९६,
३११०४, ३११२०, ३१२३६,
३१६९८, ३१९८९, ३२००१,
३२०६९, ३२०६७, ३२०९६,
३२०९७, ३२१६७, ३२२९२,
३२२९३, ३२३२६, ३२६६९,
३२६८७, ३३६६०, ३४१०९,
३४१३४, ३४२६१, ३४२६४ ।

तर्कसङ्ग्रहटीकाटीका ३०६४६, ३०७४४, ३४१४९ ।

तर्कसङ्ग्रहदीपिका ३०६४४, ३०९१४, ३०९१९,
३०९२०—३०९२२, ३०९७०,
३१०४२, ३१०४६, ३११०९,
३१११२, ३१११३, ३१२६८,
३१६१४, ३१६४०, ३१९८६,
३१९८७, ३१९८८, ३२२३९,
३२३८२, ३२३८३, ३२३८६,

तर्कसङ्ग्रहदीपिका ३२३८८ - ३२३९४, ३२५२८-
३२५४०, ३२७६६ - ३२७७३,
३३५११, ३३५१६, ३३६४९,
३४२३९ ।

तर्कसङ्ग्रहदीपिकाकोडपत्रम् ३३५१३ ।

तर्कसङ्ग्रहदीपिकाटीका ३२९६९, ३३९५२, ३३९५४ ।

तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाशः ३०४८१, ३२१६२, ३२२४१-
३२२४३ ।

तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाशभास्करोदया ३२९७२ ।

तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रकाशिका ३१६४१, ३२९७१,
३३५१७ ।

तर्कसङ्ग्रहदीपिकाप्रभा ३२९७४ ।

तर्कसङ्ग्रहदीपिकाविवेचना ३३५८६ ।

तर्कसङ्ग्रहफक्किका ३२२९९ ।

तर्कसङ्ग्रहभावार्थदीपिका ३०६२५ ।

तर्कसङ्ग्रहवाक्यवृत्तिः ३२००१, ३२०९५ ।

तर्कसङ्ग्रहवाक्यवृत्तिव्याख्या ३०७४४ ।

तर्कसङ्ग्रहवाक्यवृत्तिशिवकल्पलता ३०६४५ ।

तर्कसङ्ग्रहवाक्यार्थनिरुक्तिः ३०६२४ ।

तर्कसङ्ग्रहविवरणम् ३२१६७ ।

तर्कसङ्ग्रहव्याख्या ३३५१५ ।

तर्कसङ्ग्रहसिद्धान्तचन्द्रोदयः ३१६१६, ३२३०१,
३२३०२, ३२३०५ ।

तर्कसङ्ग्रहोपन्यासः ३०६४९, ३१९८९, ३३५२४ ।

तर्कसमयखण्डनम् ३१९५९ ।

तर्कामृतम् ३०६५०, ३०९२३, ३०९२४, ३०९७३,
३०९७४, ३०९७६, ३०९७७, ३११०७,
३११५५, ३१६१२, ३१९६०, ३१९६१,
३२१५२, ३२१७४ - ३२१८४, ३२१८८-
३२१९७, ३३५३२ ।

तर्कामृतम् (सचपकम्) ३०७४५ ।

तर्कामृतम् (सटीकम्) ३०६४८, ३०६५१-३०६५३,
३१६११, ३२१७३ ।

तर्कामृतचपकम् ३०६४८, ३०६५१, ३०६८९-३०६९०,
३२३८५, ३४१३२ ।

तर्कामृतचपकम् (सटीकम्) ३०१९० ।

तर्कामृतचपकटीका ३०७६८, ३०७७१, ३०७७२ ।

तर्कामृतचपकतात्पर्यम् ३०१९०, ३०७४६, ३०७६८,
३०७६९, ३०७७१, ३०७२७ ।

तर्कामृतचपकतात्पर्यटीका ३२३८४ ।

तर्कामृतटीका ३०४०८, ३०४८२, ३०६२३, ३२२४४ ।

तर्कामृततरङ्गिणी ३०४०८, ३०४४०, ३०४८२,
३०६२३, ३०९७५, ३१३२१,
३१६१०, ३१६११, ३१६१३,
३१९६२, ३२१६३, ३२१६५,
३२१६६, ३२१६८ - ३२१७३,
३२२४४, ३३५३४ ।

तर्कावली ३२३२५ ।

तात्पर्यपरिशुद्धिः ३०६६५, ३१९६३ ।

तात्पर्यपरिशुद्धिप्रकाशः ३१९६६ ।

तात्पर्यविचारः ३०७३३ ।

तार्किकरक्षा ३०९१७ ।

तार्किकरक्षा (सटीका) ३०१८९ ।

तार्किकरक्षाकारिका ३३७०७, ३३७०८, ३३७१३ ।

तार्किकरक्षाटीका ३०४०७, ३३३७९, ३३६६५ ।

तार्किकरक्षानिष्कण्टका ३३६६५, ३३७२१ ।

तार्किकरक्षाव्याख्या ३०६७६ ।

तार्किकरक्षासारसङ्ग्रहः ३०६४७, ३०६७५, ३३६८५,
३३६९१, ३३६९२, ३३७२७ ।

त्रिलोचनचन्द्रिका ३०४२८, ३२१५४ ।

त्रिसूत्रीनिबन्धः ३१९६३ ।

त्वङ्मनोयोगवादः ३०६७४, ३३२७५, ३३२७८,
३३२९१ ।

त्वङ्मनोयोगस्य ज्ञानहेतुत्वखण्डनम् ३१९४९ ।

दण्डकारणताविचारः ३०६८२ ।

दशलकारमञ्जरी ३०६८० ।

दशलकारवादः ३१३८९, ३३७३० ।

दशलकारवादार्थः ३३४४४ ।

दशलकारविचारः ३१५५९, ३३६१९ ।

दशलकारसारमञ्जरी ३३४४४, ३३७५९ ।

दशलकारार्थमञ्जरी ३०६४६ ।

दशाविशेषग्रन्थः ३०१८० ।

दानविचारः ३३५६६ ।

दिक्कालनिरूपणम् ३०१३९ ।

दिनकरी ३१२२३, ३१६०९, ३२०३८, ३२६१०,
३२६११, ३४०३० ।

दिनकरीव्याख्या ३०७९१ ।

देवतावादः ३२१५५, ३४२६३ ।

देवतावादरहस्यम् ३१३८९ ।

द्रव्यनाशकारणविचारः ३१८३२ ।

द्रव्यसारसङ्ग्रहः ३०६७९, ३१२५९, ३००९२,
३२११४ ।

द्वन्द्वसमासवादः ३४१९८ ।

धर्मितावच्छेदकप्रत्यासत्तिविचारः ३१००८ ।

धर्मितावादः ३१७७० ।

धर्मितावादार्थः ३१६०७ ।

नवर्थनिर्णयः ३१९६४ ।

नवर्थविचारः ३३२७३ ।

नवर्थविवृतिः ३०९४२ ।

नवर्थविवृतितत्त्वम् ३०२७९ ।

नवर्थविवेचनम् ३२१२५ ।

नञ्वादः ३०४६१, ३०६२२, ३०६७८, ३१३०६-
३१३०८, ३२१२४ ।

नञ्वादः (सटीकः) ३०६३९ ।

नञ्वादटिप्पणम् ३४०८६ ।

नञ्वादटिप्पणी ३०९५९, ३३५१८ ।

नञ्वादटिप्पणी (समूला) ३०६४० ।

नञ्वादटीका ३१३०९, ३१३१०, ३२२२८, ३४०९९,
३४१५६ ।

नञ्वादरहस्यम् ३३५१९ ।

नञ्वादविवृतिः ३४०९९ ।

नञ्वादविवेकः ३१३११ ।

नञ्वादविवेचनम् ३३५२० ।

नञ्वादव्याख्या ३०६२१, ३०६३० ।

नमोऽन्तवाक्यस्य मन्त्रत्वविचारः ३१३८९ ।

नवीननिर्माणम् ३०२८०, ३१६०६, ३२०८३ ।

नवीनमतरहस्यम् ३२१२० ।

नवीनमतवादार्थः ३०६६२ ।

नवीनमतविचारः ३२१२१ ।

नव्यमतवादार्थः ३१३९६ ।

नव्यमतविचारः ३१४००, ३१७३०, ३३४५३,
३४०६० ।

निमित्तकारणतावादः ३०५५९, ३४२६२ ।

निरुक्तिप्रकाशः ३०४६३, ३१२८३ ।

निर्विकल्पकभङ्गः ३११६० ।

निश्चयत्वनिरुक्तिः ३०४६४ ।

निश्चयत्वानुगमः ३०५८६ ।

नैयायिकशास्त्रसम्प्रदायान्विता ३०१८८ ।

न्यायकन्दली ३२५४१ ।

न्यायकन्दलीटिप्पणिका ३५१४८ ।

न्यायकलिका ३०६२० ।

न्यायकुमुमाञ्जलिः ३०४८१, ३०८६७, ३०८६९,
३१०६२, ३१०६७, ३३३८९-
३३३९२, ३४२०२ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिकारिका ३२५८४, ३३३०८ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिकारिकाटीका ३०८७६, ३११२६,
३१४२३, — ३१६२९,
३२२०२, ३२५८२ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिकारिकाऽऽमोदः ३०२३२, ३२४८६ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिकारिकाविवेकः ३०३८० ।

न्यायकुमुमाञ्जलिकारिकान्यास्या ३०३२७, ३०८५४,
३०८५९, ३०८६०,
३०८६२, ३०८६३,
३१८०३, ३२२३१,
३२४५१, ३२४५३,
३२६८३, ३३११९,
३३११६, ३३११८,
३३११९, ३३२०१,
३३६३०, ३३६५३,
३३६७२, ३३७५३ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिस्तारिमाज्याख्याटीका ३०८६१ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिटिप्पणी ३०८५२, ३०८५७, ३०८५८ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिटीका ३०४३६, ३०८७७-३०८७९,
३४०२७ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिपत्रिका ३४२७३ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिप्रकाशः ३०४४४, ३१०६३, ३३३८५,
३३३८७ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिप्रकाशटिप्पणी ३२६२८ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिप्रकाशप्रकाशिका ३३२१६ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिप्रकाशमकरन्दः ३३४८६, ३३४८७ ।

न्यायकुमुमाञ्जलिविधिनी ३३३८८ ।

न्यायकुमुमाञ्जल्यमोदः ३३११४ ।

न्यायकौस्तुभः ३०४५६, ३०४५७, ३०४८४, ३२५७५,
३२६८६, ३२७५९, ३२७६८, ३२७६९,
३२८१० ।

न्यायप्रमथटीका ३३१६४ ।

न्यायप्रमथविशेषः ३०१४३, ३०२००, ३०२०४,
३०२१९, ३०२१६, ३०२२२,
३०२२७, ३०२३१, ३०२३६,
३०२३७, ३०२४३, ३०३०६,
३०५०४, ३२६५८, ३२६५९,
३२६३९, ३३१२६, ३३१३०,
३३१३३, ३३१४४, ३३१५१,
३३१५३, ३३१५६, ३३१६२,
३३१६५ — ३३१६९, ३३१७१,
३३१७४, ३३१७८, ३४१३० ।

न्यायचन्द्रिका ३१८४७-३१८४९, ३२५६७ ।

न्यायचूडामणिः ३०६१८, ३०६१९ ।

न्यायतन्त्रविधिनी ३०५६६ ।

न्यायनिबन्धटीका ३३३०९ ।

न्यायनिबन्धप्रकाशः ३१५६६, ३३०६७, ३३०६८,
३३१११, ३३२१७, ३३२१८,
३३३०५, ३३३७४, ३३४८८,
३३६५८ ।

न्यायपञ्चाध्यायीटीका ३०१८६ ।

न्यायपरिशिष्टम् ३३२२०, ३३४७२ ।

न्यायपरिशिष्टप्रकाशः ३३७८० ।

न्यायप्रकरणमाला ३१९९९ ।

न्यायप्रदीपः ३३३१८ ।

न्यायबोधिनी ३०९१९, ३०९९१, ३०९९९, ३११०४,
३११२०, ३१६१८, ३१६२०, ३२०९९,
३२०९६, ३२०९९, ३२२९१-३२२९३,
३३५१२, ३३५१४, ३३५९४, ३४२५४ ।

न्यायमञ्जरी ३३६६८ ।

न्यायमतम् ३३९१८ ।

न्यायमाला ३११८० ।

न्यायरत्नम् ३०६२९, ३०६६०, ३३२६४, ३४०६९ ।

न्यायरहस्यम् ३०९५४, ३३१८९, ३३१९०, ३३९६० ।

न्यायलीलावती ३०२८१, ३०५००, ३१३५३, ३१३५४,
३१४६९, ३३०५१, ३३०५२, ३३३९४,
३३५४१, ३३६५०, ३४१८४ ।

न्यायलीलावतीकण्ठाभरणम् ३२३५२ ।

न्यायलीलावतीटीका ३०२८२, ३०५३० ।

न्यायलीलावतीदीधितिः ३०२८२ ।

न्यायलीलावतीदीधितिटीका ३०६२८ ।

न्यायलीलावतीप्रकाशः ३०३८९, ३१३४०, ३३३४४,
३१४५६, ३१४६४-३१४६६,
३२७९५, ३३००२ ।

न्यायलीलावतीप्रकाशजलदः ३२१८६ ।

न्यायलीलावतीप्रकाशटीका ३१३३९, ३२१८७ ।

न्यायलीलावतीः काशदीधितिः ३१३६०, ३१४६९,
३२१८५, ३२३४२ ।

न्यायलीलावतीप्रकाशदीधितिटीका ३१२३८, ३१२३९,
३१४६८, ३२३४३,
३२३४४ ।

न्यायलीलावतीप्रकाशदीधितिपरीक्षा ३२३५५ ।

न्यायलीलावतीप्रकाशदीधितिविवेकः ३१२३७, ३१२४०,
३१३५८, ३२३४० ।

न्यायलीलावतीप्रकाशप्रकाशिका ३२१८६, ३३७९३ ।

न्यायलीलावतीप्रकाशरौद्री ३२१८७ ।

न्यायलीलावतीप्रकाशविवृतिः ३२१८६, ३२३४१,
३२३५१, ३३५४३,
३३७९३, ३४१७७ ।

न्यायलीलावतीरहस्यम् ३२७९४ ।

न्यायलीलावत्यनुनयः ३०६३५ ।

न्यायवार्त्तिकम् ३०५०१, ३०५६०, ३११९६, ३३३२१,
३३३३१-३३३३४, ३३४८०, ३३५०२,
३३७७७-३३७७९ ।

न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका ३०२७१-३०२७३, ३०२७७,
३०५०२, ३०५५२, ३११९०,
३३३२६, ३३३७५, ३३३७७,
३३४८९, ३३६५४, ३३६५५,
३३६६४, ३३६७०, ३३६७१,
३३७१२, ३३७७५, ३३७७६,
३४१४७ ।

न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीकाटीका ३०६६५, ३१९६३,
३१९६३ ।

न्यायवार्त्तिकतात्पर्यपरिशुद्धिः ३३३१०-३३३१२,
३३६७३ ।

न्यायसङ्ग्रहटीका ३३५३३ ।

न्यायसारः ३०३०७, ३०६१३, ३१४८९, ३१९५६,
३२०९१, ३२६५४, ३२८१२-३२८१६,
३३१९३, ३३५०६, ३४०९३, ३४१८२ ।

न्यायसारटीका ३०३३७, ३३७७४ ।

न्यायसारमञ्जरी ३११५२ ।

न्यायसारविचारः ३०६३७, ३३७७४ ।

न्यायसिद्धान्तदीपः ३०८१८, ३१६५५, ३१९५५,
३२७४४, ३३६९६-३३६९८,
३३७१५, ३३९३७, ३४१७१ ।

न्यायसिद्धान्तदीपकोमला ३३२१४, ३३२१५ ।

न्यायसिद्धान्तदीपटीका ३०२३८, ३३२११, ३३२१२ ।

न्यायसिद्धान्तदीपप्रभा ३०६०६, ३३२१३, ३३६९३-
३३६९५, ३३७१९, ३३७२० ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरी ३०३३२, ३०५०८, ३०५४९,
३०६१६, ३०९१२, ३०९१३,
३१०४३, ३१०५९, ३१०८१,
३११३२, ३११४९, ३११६१,
३१३२७, ३१६६४, ३१६६५,
३२२३४, ३२५९५, ३२५९६,
३२६५२, ३२६६३, ३३२०३-
३३२०९, ३३२४७-३३२६३,
३३३४१, ३३४०९-३३४११,
३३५००, ३३५०१, ३३५५७,
३३६७८ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीगूढार्थदीपिका ३२९४८ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीटीका ३०२९४, ३१११५,
३११२३, ३११४८,
३१२०१, ३१६३१,
३३१७१, ३३३०२,
३३३०४, ३३३५७,
३३४२६, ३३४९७,
३३४९८, ३४०३३,
३४२३१ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीतर्कप्रकाशः ३११०८, ३३४०६-
३३४०८ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका ३०२६८-३०२७०,
३०३१३, ३०३७०,
३०४४९, ३०५५८,
३०६३१-३०६३३,
३०६३६, ३०९११,

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका ३१०१५, ३११९७,
३११९९, ३१६३०,
३२५७८, ३२५९३,
३२६६४-३२६६७,
३३१६९, ३३१७०,
३३२४६, ३३३४७-
३३३५०, ३३३५३-
३३३५५, ३३४७८,
३४१५५ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीप्तिः ३२९४०, ३३४९९ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीप्रकाशः ३३१७२, ३३४७९ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीभावदीपिका ३०९९०, ३३३००,
३३३०१ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीभास्करी ३३१७३ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीविवृतिः ३२९४१, ३३२६८ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीव्याख्या ३२५९४, ३२६३४,
३२९३९ ।

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीसारः ३०२९५, ३३१७४-३३१७६,
३३३०३ ।

न्यायसिद्धान्तमाला ३०९४१, ३१५१७, ३२६३८,
३३४७०, ३३४७४, ३४०३८ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ३०१८२, ३०३६५, ३०८९६,
३०८९८, ३०९०८, ३०९०९,
३१००७, ३१०७४, ३१०९२,
३१०९३, ३१११८, ३११३५,
३१३२४, ३१३२५, ३१३२६,
३१३२८, ३१३३०, ३१६६३,
३१७२०, ३१७२१, ३२२३३,
३२२३५-३२२३७, ३२३०४,
३२३१९, ३२३२६-३२३३५,
३२३४६-३२३५०, ३३३५३,
३२३५४, ३२३५९, ३२३६०,
३२३७८-३२३८१, ३२४०७,
३२४०८, ३२५८०, ३२६६८-
३२६७१, ३२८५५, ३२९४४,

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ३३५६३, ३४११२, ३४१३१,
३४२३७, ३४२३८, ३४२५३,
३४२५६ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीगूढार्थमणिः ३२१०४ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीज्योत्स्ना ३२१०२ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटिप्पणी ३२१०१ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीटीका ३०१८४, ३१०९१,
३१२२३, ३१३३३,
३१६०९, ३२०४३,
३२०४४, ३२०४९-
३२०५२, ३२१०५-
३२१०७, ३२४६६,
३२६०३, ३२६१०,
३२६११, ३२६३५,
३४०४७, ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीदीपिका ३१८३९ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीप्रकाशः ३०८९७, ३०९९२,
३०९९३, ३०९९९,
३११२२, ३११४६,
३१२२४, ३१२६४,
३१३३१, ३१३३२,
३१८४५, ३१८४६,
३२०३६, - ३२०३९,
३२०४५, ३२०४७,
३२०५४, ३२१००,
३२१०८ - ३२१११ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीप्रकाशतरङ्गिणी ३२०९८,
३२०९९ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीमणिप्रभा ३२१०५ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीरौद्री ३२१०६, ३२१०७ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीविवरणम् ३२१०३ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (सटीका) ३१८३८, ३१८३९,
३२०५३, ३२८५४,
३४०३० ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली(सदीपिका) ३१८४४ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ३१८४२, ३१८४३, ३२०४८-
(सप्रकाशा) ३२०४२ ।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीसुबोधिनी ३३५८४ ।

न्यायसिद्धान्तसारः ३४०३६ ।

न्यायसूत्रम् ३०५४८, ३०९५८, ३१००७, ३२२३८,
३२६७२, ३३१८२ - ३३१८४ ।

न्यायसूत्रटीका ३१५५६, ३१५५७, ३३१८९, ३३१९०,
३३२२० ।

न्यायसूत्रटी.टी.टी.टी.टी. ३३०६७, ३३१९१, ३३२१७,
३३२१८, ३३४८८, ३३६५८,
३३७८० ।

न्यायसूत्रप्रकाशः ३०१८६ ।

न्यायसूत्रभाष्यम् ३०६६४, ३२६७३, ३३१८९,
३३१८६, ३३२४४, ३३२४५ ।

न्यायसूत्रभाष्यविवृतिः ३३५०४ ।

न्यायसूत्रमितभाषिणी ३३३२३ ।

न्यायसूत्रवृत्तिः ३२५९७, ३३३२३ - ३३३२५, ३३३२७,
३३४७३, ३३४७५, ३३६५६, ३३६५९,
३३७१४ ।

न्यायसूत्रोद्धारः ३३१८१, ३३२१९, ३३३७८ ।

न्यायादर्शः ३१४१०, ३४२६२ ।

न्यायामृतम् ३०१९४ ।

न्यायार्थलघुबोधिनी ३२३०० ।

न्यायोपसंहारसूत्रवृत्तिः ३०६३८ ।

पक्षतावादः ३१७६१ ।

पक्षतावादार्थः ३३९०१, ३४०८१ ।

पक्षताविचारः ३०२९६, ३०२९७, ३१०६८, ३१७४०,
३१७४१, ३१७६१, ३४०९८ ।

पञ्चम्यर्थविचारः ३३७६८।

पदकृत्यम् ३१२३६, ३२२९४ — ३२२९८।

पदकृत्यमञ्जरी ३४१४९।

पदवाक्यरत्नाकरः ३०२६५, ३१२५५, ३१३१२,
३२१३८, ३४०१४।

पदवाक्यरत्नाकरकारिका ३४०१८।

पदार्थखण्डनम् ३०५४७, ३०७१२-३०७१४, ३०९४७,
३२४८०, ३२४८१, ३२४८४, ३२४८५,
३२४८७, ३२५२७, ३२५९१, ३३०७४,

पदार्थखण्डनटीका ३०४९९, ३२१३७, ३२५२४-
३२५२६।

पदार्थखण्डनव्याख्या ३०५०९, ३१२३९, ३२५२२,
३२५२३, ३२९७३।

पदार्थखण्डनार्थसारः ३२५२६।

पदार्थचन्द्रिका ३१०३७।

पदार्थचन्द्रिकाटीका ३३०४८।

पदार्थतत्त्वम् ३२५२७।

पदार्थतत्त्वखण्डनटीका ३०२९८।

पदार्थतत्त्वनिरूपणम् ३०५५७, ३०७१२-३०७१४,
३०९४७, ३१२१९, ३२४८०,
३२४८१, ३२४८५, ३२४८७,
३२९७०, ३३०७३, ३३०७४।

पदार्थतत्त्वनिरूपणं (सटीकम्) ३२९७३।

पदार्थतत्त्वनिरूपणटीका ३०७१५।

पदार्थतत्त्वनिरूपणप्रकाशः ३२९७३।

पदार्थतत्त्वनिर्णयः ३०१५९, ३१७७७।

पदार्थतत्त्वनिर्णयटीका ३०५१०।

पदार्थतत्त्वविवृतिः ३०७१५।

पदार्थदीपिका ३०६१७, ३१०३६, ३१४८२, ३१९३२,
३१९३३, ३२६२५, ३२६३६, ३४०२५,
३४२५५।

पदार्थधर्मसङ्ग्रहः ३२५४८-३२५५५, ३२५६१,
३२५६२, ३४१७४।

पदार्थधर्मसङ्ग्रहटीका ३३७९१, ३३७९२।

पदार्थप्रकाशः ३०५४६, ३१३३३, ३१३२२।

पदार्थबोधः (सटीकः) ३१९३०, ३१९३१।

पदार्थमणिमाला ३१७८३, ३१७८४।

पदार्थमाला ३०५४५, ३१०३५, ३१७७९-३१७८३,
३२६१५, ३२६३५, ३३५४४।

पदार्थमालाटीका ३१७७८।

पदार्थमालाप्रकाशः ३१७७८।

पदार्थरत्नमाला ३२०८१।

पदार्थलक्षणम् ३०४४३।

पदार्थविवेकटीका ३२०८४।

पदार्थविवेचनम् ३२०९०।

पदार्थयदिव्यचक्षुः ३०४५४, ३०४९८।

परामर्शवादः ३०२६४।

परामर्शविमर्शः ३२५९२।

परोक्षवादः ३१४१४।

पाकजप्रक्रिया ३१७५३।

पुरुषोत्तमवादः ३१७३८।

प्रतियोगिज्ञानवादः ३३२८१, ३३२८४।

प्रतिबन्धप्रतिबन्धकभाववादः ३१५१६।

प्रतिबन्धप्रतिबन्धकभावविचारः ३०५६९, ३०५८४।

प्रतिबन्धकत्वविचारः ३३८६५।

प्रत्यक्षसन्निकर्षयोः कार्यकारणभावविचारः ३०३३८ ।

प्रथमान्तार्थमुख्यविशेष्यकशाब्दबोधविचारः ३४१९८ ।

प्रबोधिनी ३२०७३ ।

प्रमाणनिरूपणम् ३३५८५ ।

प्रमाणपद्धतिः ३४२३२, ३४२५२ ।

प्रमाणपारायणम् ३०४६७ ।

प्रमाणप्रमोदः ३०४४५, ३१४७२ ।

प्रमाणमञ्जरीटीका ३२५५७ ।

प्रमाणमञ्जरीव्याख्या ३१२७२ ।

प्रमाणसङ्ग्रहः ३२५८१ ।

प्रमेयकमलमार्त्तण्डः ३४१५३ ।

प्रवृत्तिकारणत्वविचारः ३४२६५ ।

प्रशस्तपादभाष्यम् ३०५११, ३०६१०, ३०७१६,
३०७१७, ३२५४८ — ३२५५५,
३२५६१, ३२५६२, ३२७६३,
३२७६४, ३३५६९, ३४१७४ ।

प्रशस्तपादभाष्यं (सटीकम्) ३३४९१ ।

प्रशस्तपादभाष्यकिरणावली ३३४२७ ।

प्रशस्तपादभाष्यटीका ३०३६१, ३०५७८, ३०९३९,
३०९४५, ३१००३, ३१००९,
३११८४, ३१३५७, ३१३५९,
३२५४१, ३२५६०, ३२७०१—
३२७०६, ३३०५४—३३०५६,
३३०५८—३३०५९, ३३७९१,
३३७९२, ३४१२४ ।

प्रशस्तपादभाष्यटीकाटीका ३०३२८, ३०७७४,
३०९४०, ३१३४१,
३२०२१, ३४१४८ ।

प्रशस्तपादभाष्यटी० टी० टी० ३०८०७, ३१३१६
३२७४८ ।

प्रशस्तपादभाष्यटी० टी० टी० ३११९३, ३३०८४,
३३०८५ ।

प्रशस्तपादभाष्यसूक्तिः ३४१७२, ३४१७३ ।

प्रशस्तपादभाष्यसेतुः ३२४२६ ।

प्रश्नवादः ३१७५७ ।

प्रागभावखण्डनम् ३०३०२ ।

प्रागभाववादः ३१७७१ ।

प्रागभाववादार्थः ३१४०७ ।

प्रामाण्यवादः ३०१७९, ३१७६५, ३१७६६, ३२६४१,
३३२८३ ।

प्रामाण्यवादरहस्यम् ३३७२९ ।

प्रामाण्यविचारः ३०२६२ ।

प्रायश्चित्तलक्षणनिष्कर्षः ३१४११ ।

प्रीतिवादः ३१४०९ ।

बन्धुप्रयोगः ३१४०४ ।

बाधनिश्चयप्रतिबन्धकताविचारः ३४०७३ ।

बाधबुद्धिप्रतिबन्धकतारहस्यम् ३०६११ ।

बाधबुद्धिविचारः ३२६०२, ३३३९३ ।

बाधरहस्यम् ३०८२१, ३१९४७ ।

बाधवादार्थः ३१४१५—३१४१९, ३१४२७, ३३९०१ ।

बाधविचारः ३२२१९, ३३२८९, ३३४४३ ।

बालबोधः ३१७८५ ।

बालबोधिनी ३४१९७ ।

बुद्धिवादः ३०८२२, ३१९५४ ।

बोधसिद्धिः ३३४७२ ।

बौद्धधिकारः ३०१८५ ।

बौद्धधिकारशिरोमणिटीका ३३२८२ - ३३३८४,
३३३८६ ।

बौद्धाधिकारः ३३४६४ ।

बौद्धाधिकारटिप्पणी ३३९२४ ।

बौद्धाधिकारदीधितिविवृतिः ३२२२२ ।

बौद्धाधिकारदीधित्युपटिप्पणम् ३३७०६ ।

बौद्धाधिकारविवृतिव्याख्या ३०४९६ ।

बौद्धाधिकारशिरोमणिः ३३४६९ ।

ब्राह्मणत्वजातिवादः ३४०१७ ।

ब्राह्मणत्वजातिविचारः ३३७३२ ।

ब्राह्मणत्ववादः ३१३९३ ।

भवानन्दीटीका ३२८०४, ३२८०६, ३४०५५ ।

भवानन्दीप्रकाशः ३२९६८, ३२८०४, ३२८८६-
३२८९० ।

भवानन्दीयखण्डनखण्डनम् ३०२७६ ।

भाट्टमतसङ्ग्रहः ३०१८८ ।

भावप्रत्ययवादः ३१३९० ।

भावप्रत्ययविचारः ३३४९० ।

भावप्रत्ययशक्तिविचारः ३१७३९ ।

भाषापरिच्छेदः ३०३९७, ३०४४६, ३०५६६, ३०९४९,
३०९७८-३०९८१, ३१००६, ३१०८८,
३१२२८-३१२३०, ३१२३२, ३१७१९,
३२३५६, ३२३५८, ३२३६५-३२३७३,
३२३७६, ३२३७७, ३२३९५-३२३९९,
३२४०२-३२४०४, ३२५४२-३२५४४,
३२६००, ३२६४७, ३२६४८, ३२६५२,
३४१७२ ।

भाषापरिच्छेदटीका ३१००७ ।

भाषापरिच्छेदवृत्तिः ३०६०४ ।

भाषारत्नम् ३०३९२, ३०३९३, ३४१८० ।

भास्करोदया ३२२४० ।

भेदसिद्धिः ३२६०१ ।

भ्रमत्वानुगमविचारः ३३९५९ ।

भ्रातृत्वविचारः ३३६१९ ।

मङ्गलवादः ३०५२७, ३०८२३, ३१९४५, ३१९४६,
३२५९८, ३२५९९, ३४२६३ ।

मञ्जुपा ३०७८३ ।

मणिसारः ३३६६८ ।

मधुरभाषिणी ३३५०४ ।

माथुरीकोटपत्रम् ३०२२८, ३०४३०, ३०४३९,
३०४९५, ३०५१८, ३०५७९,
३०५९०, ३०७३०, ३०७९०,
३०८२०, ३०८६७, ३१०३०,
३१२२१, ३१३६५, ३१४४७,
३१४९८, ३१५२७, ३१५२८,
३१५३०, ३१५३७, ३१६८३,
३१८५३, ३१८५५, ३१८५६,
३१८७१, ३१८७७, ३१८७९,
३१८८७ — ३१८९८, ३१९२३-
३१९२५, ३१९२७, ३२१४६,
३२१६८, ३२१६४, ३२४५६,
३२६३१, ३२६५०, ३२८७७,
३३१०५, ३३११०, ३३४३९,
३३४४०, ३३४४२, ३३६०१,
३३८६३ ।

माथुरीपत्रिका ३०५२०, ३१२७३, ३१३६७, ३१३८२,
३१३८३, ३१३९७, ३१४३७, ३३९९५,
३४२०९, ३४२७८, ३४२८३ ।

मासलक्षणविचारः ३३७५८ ।

मासविचारः ३१३७९ ।

मितभाषिणी ३०५४४, ३०६९९, ३०७३५, ३०९५०,
३०९५१, ३१२२७, ३१८२७, ३२९३८,
३२९४६, ३३०१०-३३०१३, ३३३२३,
३३३२७, ३३६५९ ।

मुक्तिवादः ३०३०३, ३०३१९, ३०८४२, ३११०१,
३१२४३, ३१२४६, ३१९३८, ३१९६१,
३२२२७, ३२१०३, ३२४६६, ३२६७९।

मुक्तिवाददिप्पणी ३१६६२, ३१६६३।

मुक्तिवादरहस्यम् ३१६६०।

मुक्तिवादविचारः ३१९६२।

मोक्षवादः ३३९८०।

युग्मतावादः ३०९०७।

युग्मत्ववादार्थः ३३६१७।

योगरूढिवादः ३३२८८।

योगरूढिविचारः ३३२७२।

योग्यताज्ञानविचारः ३०७९२।

योग्यतावादार्थः ३१४२४।

योग्यानुपलब्धिवादः ३०१८७, ३३४२२।

योग्यानुपलब्धिविचारः ३०३०४।

रत्नकोशकारमतम् ३३९७०।

रत्न कोशकारमतविचारः ३१४१२, ३४०६२, ३४१०७,
३४२४२।

रत्न कोशविचारः ३१७२९।

रात्रिविचारः ३०७१९।

रौद्री ३०२६८।

लकारपरिच्छेदः ३३६८१।

लकारविचारः ३०२९४।

लकारार्थनिरूपणम् ३३६८२।

लकारार्थपरिच्छेदः ३१७६८।

लकारार्थवादः ३१७४९, ३१७६८।

लक्षणसङ्ग्रहः ३३९१७।

लक्षणावली ३०६०६, ३३०४९, ३३३९६, ३३४२८,
३३६७८, ३३६८३, ३३६६२, ३४१८१।

लक्षणावलीटीका ३०६१३।

लक्षणावलीप्रकाशः ३०६१३, ३३०६०।

लक्षणावादः ३०६३३।

लक्षणाविचारः ३०७९४।

लघुदीपिका ३३३७९।

लघुपदार्थविवेचनम् ३०१३८।

लघुपरिभाषा ३२०७६।

लघुपरिभाषाविशेषः ३०४९३, ३०६१२।

लघुबोधिनी ३३६६०।

लङ्घनवादः ३०६०७।

लङ्घनवादार्थः ३३२९०, ३३७३६।

लाघवगौरवरहस्यम् ३०४४७, ३०८४०, ३०९६०।

लाघवगौरवविचारः ३३७३४।

लाघवज्ञानवादः ३३७४९, ३३७६०।

लाघवज्ञानोत्तेजकत्वविचारः ३४१९९।

लिट्थविचारः ३२४६०, ३२४४९।

लिङ्गोपहितलैङ्गिकभानविचारः ३०६१४, ३०६२९।

लौकिकविषयतावादः ३१०१७, ३१०१८, ३१९६८।

लौकिकविषयताविचारः ३०३०८, ३०३०९, ३३१०२,
३३६७४।

वज्रटङ्कीयदूषणोद्धारः ३०२७६।

वज्रभेदी ३०२४१।

वर्धमानेन्दुः ३०६३४, ३२९६४।

वाक्यदीपिका ३४१८६।

वाक्यपदीयदीधितिप्रकाशः ३०९९९ ।

वाक्यवादः ३१७९०, ३३६१६, ३३७६४ ।

वाक्यवादः (सटीकः) ३३७६३ ।

वाक्यवादटीका ३२६०८, ३४१८६ ।

वाक्यवाददीपिका ३३७६३ ।

वादसङ्ग्रहः ३४२६३ ।

वादार्थः ३०९०७, ३०८५३, ३१३७५ ।

वादार्थरत्नावली ३०९३४, ३०९३५ ।

वादार्थसङ्ग्रहः ३४१५४ ।

वादार्थसारसङ्ग्रहः ३०४२४ ।

वायुप्रत्यक्षवादः ३०३०१ ।

वायुवादः ३१४१४, ३१९९५ ।

विद्वन्मोदतरङ्गिणी ३०८१७ ।

विधिवादः ३०३०५, ३०५३६, ३१०६५, ३१३९४,
३१३९५, ३३४४५ ।

विधिवादरहस्यम् ३३४९६ ।

विधिविचारः ३१५४८, ३२४३३ ।

विध्यर्थविचारः ३१४५५, ३१७६४, ३२०७५ ।

विभक्त्यर्थनिर्णयः ३४०६२ ।

विभागलक्षणसमन्वयः ३२०८७ ।

विवादरत्नावली ३०८७२ ।

विवाहताण्डयम् ३१७६८ ।

विवाहवादार्थः ३१४०४-३१४०६, ३३९०४, ३३९१५ ।

विवाहविचारः ३१३७४ ।

विशिष्टवैशिष्ट्यवादः ३१९६९, ३१९७०, ३१९७४ ।

विशिष्टवैशिष्ट्यबोधः ३०३३३ ।

विशिष्टवैशिष्ट्यबोधरहस्यम् ३१९७५ ।

विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविचारः ३०८१६, ३१९७१-
३१९७३, ३१९९३,
३२३१४, ३३५७५,
३३७३९ ।

विशिष्टवैशिष्ट्यबोधहेतुताविचारः ३३७३१ ।

विशेषणज्ञानरहस्यम् ३१७५५ ।

विशेषणज्ञानविचाररहस्यम् ३१३७८ ।

विशेषलक्षणम् ३२०१७ ।

विशेष्यतावादः ३४१३६ ।

विशेष्यविशेषणवादः ३३७५४ ।

विषयतावादः ३०२३४, ३०५३७, ३०७८९, ३११०२,
३१७४४, ३१९५७, ३१९५८, ३२६२५,
३३७४६, ३४०९७ ।

विषयतावादार्थः ३०५३१, ३०८१५, ३१४२५,
३१४२६, ३३४९५, ३३६१३-
३३६१५ ।

विषयताविचारः ३०९४४, ३१९४७, ३१९६७,
३१९९१, ३३५६१, ३३५७६ ।

विषयहेतुताविचारः ३३४४९ ।

विष्णुप्रीतिकामनापदविचारः ३३२७९ ।

वीप्सावादः ३३७७२ ।

वृषोत्सर्गवादः ३३४२१, ३३७६७ ।

वेदलक्षणम् ३३६१२ ।

वेदान्तमतखण्डनम् ३०१९४ ।

वैशेषिकसूत्रम् ३२५५६, ३२५५८, ३२५५९, ३२७६५ ।

वैशेषिकसूत्रोपस्कारः ३१२००, ३२५४७, ३२७०७,
३२७१३ ।

व्यधिकरणधर्मावच्छिन्नाभावविचारः ३१८६७ ।

व्याप्तिकौतुकम् ३३६७७ ।

व्याप्तिग्रहोपायव्याख्याव्याख्या ३१०८९ ।

व्याप्तिलक्षणानुगमः ३०५८९ ।

व्युत्पत्तिवादः ३०३२६, ३०५५४, ३०७९५, ३१०१९,
३१०८०, ३११११, ३१४९८, ३१५८८,
३१५९७-३१६०३, ३१६६२, ३१६६६,
३१६६७, ३२०८२-३२००६, ३२००९,
३२१२६, ३२१२७, ३२३१०, ३२७२५,
३२९०३, ३३६४९, ३३६६७-३३६६९,
३३६६१, ३४०२९, ३४०४०, ३४२०९ ।

व्युत्पत्तिवादक्रोडपत्रम् ३१३३५, ३१३३६, ३२७४१,
३३५९८, ३३७५५, ३३८८०,
३३८९१ ।

व्युत्पत्तिवादटीका ३०२९२, ३०९५७, ३०७९६,
३१४५७, ३१६०४, ३२०३५,
३४०५३, ३४१५७, ३४२०७,
३४२२५ ।

व्युत्पत्तिवादसङ्क्षेपः ३२०३४ ।

शक्तिनिर्णयः ३४१३६ ।

शक्तिवादः ३०५३८, ३०७६३, ३०९५२, ३११००,
३१५५१, ३१८१७, ३२०३२, ३२०६३-
३२०६५, ३२११२, ३३५६४, ३३५६५,
३३९९२ ।

शक्तिवादः (सटिप्पणः) ३१८१८, ३४२०० ।

शक्तिवादक्रोडपत्रम् ३१८१९, ३२०३३ ।

शक्तिवादटीका ३१६९६ ।

शक्तिवादविवरणम् ३०७३४, ३२०३१ ।

शक्तिवादविवृतिः ३१५९३, ३४००४ ।

शक्तिवादव्याख्या ३०७६१, ३२११३ ।

शक्तिवादार्थदीपिका ३२०८८ ।

शान्दब्रह्मनिरासः ३३५८८ ।

शान्दपरिच्छेदः ३०७६०, ३२९४९ ।

शान्दप्रामाण्यवादः ३३७६२ ।

शान्दप्रामाण्यविचारः ३१४३१ ।

शान्दमणिदीधितिः ३१२९९ ।

शान्दरत्नम् ३३७६८ - ३३७७० ।

शान्दरहस्यम् ३१४०८ ।

शान्दविशेषविचारः ३३७५२, ३३७५३ ।

शान्दशक्तिप्रकाशिका ३०२८४, ३०३०७, ३०३७७,
३०५५३, ३०७५९, ३१२६०,
३१५५४, ३१८१०, ३२०६६-
३२०७१, ३२०७४, ३२८९३,
३२९५१, ३३८८९, ३३८९३,
३४०१५, ३४११०, ।

शान्दशक्तिप्रकाशिकाटीका ३२०७२, ३२०७३, ३४२८१ ।

शान्दशक्तिप्रकाशिकाप्रबोधिनी ३०७५८ ।

शान्दशक्तिप्रकाशिकाव्याख्या ३१५९१ ।

शान्दशक्तिप्रकाशिका (सटीका) ३१८१६ ।

शान्दसारमञ्जरी ३०५२४, ३२८९०, ३२८९२ ।

शान्दानित्यत्ववादः ३३४२२ ।

शान्दानित्यत्वविचारः ३३६१९ ।

शान्दार्थतर्कामृतम् ३०४५५, ३०६८६, ३२९५० ।

शान्दार्थसारमञ्जरी ३१५७३, ३२९७९, ३४०१९,
३४०२० ।

शरीरकारणतावादः ३३२७८ ।

शरीरहेतुतावादः ३३२७७ ।

शान्दबोधप्रकाशिका ३१५२६ ।

शान्दबोधप्रक्रिया ३२८९१ ।

शान्दबोधविचारः ३१२९७, ३२०३०, ३३०७७,
३३७७१ ।

शिवकल्पलता ३०७४४ ।

शिष्टलक्षणम् ३०३७२, ३३४२२ ।

शिष्टलक्षणविचारः ३३६१९ ।

षट्कारकम् ३४१८७, ३४१९० ।

षट्कारकचक्रम् ३३५९५ ।

षोडशश्राद्धविचारः ३४०४३ ।

संशयपक्षतारहस्यम् ३११५४ ।

संशयपक्षतावादः ३३४५० ।

संशयपक्षताविचारः ३३४५१ ।

संशयपक्षताविचाररहस्यम् ३३४५२ ।

संशयवादः ३१४१४ ।

संशयविचारः ३३७३६, ३३७३७ ।

सङ्कल्पवादः ३३८७३ ।

सङ्गतिविवरणम् ३१५२२ ।

सन्ध्यावन्दनविचारः ३३२८० ।

सन्निकर्षवादः ३०३३७, ३०४१९, ३१३७२, ३१४०३, ३४२६३ ।

सन्निकर्षवादार्थः ३१४०१, ३१४०२ ।

सन्निकर्षविचारः ३०३३७, ३२५७७, ३३७५६ ।

सन्न्यायमणिमञ्जरी ३०४५३ ।

सप्तपदार्थी ३०३७१, ३०६९६-३०६९८, ३०९९८, ३१२८९, ३२९४५, ३३०१४-३३०१६, ३३०१८, ३३०२७, ३३०२८, ३३०५६ ।

सप्तपदार्थीटीका ३०५४४, ३०६९९, ३०७३५, ३०९५०, ३०९५१, ३१०३७, ३१२२७, ३३०१०-३३०१३, ३३७९६ ।

सप्तपदार्थीटीकाटीका ३३०४८ ।

समवायलक्षणविचारः ३३९२७ ।

समवायवादार्थः ३१७३१ ।

समासनिर्णयः ३४१३६ ।

समासलक्षणविचारः ३३६२० ।

सनासवादः ३१२६२, ३१५३४, ३१५३५, ३१९४२, ३१९४४, ३३७४४, ३३७४५, ३४१६९ ।

समासवादटिप्पणी ३३७३८ ।

समासविचारः ३१५३२, ३१५३३, ३१९४३ ।

समासशक्तिनिरूपणम् ३११३० ।

समासार्थनिर्णयः ३०५५१ ।

सम्बन्धवादः ३१७६९ ।

सम्बन्धोद्देशः ३४२४४ ।

सर्वनामशक्तिविचारः ३४०४३ ।

सर्वोपकारिणी ३०३६७, ३४०२३, ३४०३९, ३४०५४, ३४१०५ ।

साङ्ख्यवादार्थः ३१४१३ ।

साङ्ख्यविचारः ३०५१९ ।

सादृश्यवादः ३१३७६, ३१७४८, ३३४२३, ३३४४७, ३३६२१ ।

सादृश्यविचारः ३४०४३ ।

सापेक्षवादः ३३२७४, ३३४२२, ३३६२२, ३३६२३ ।

सापेक्षवादविचारः ३३६१९ ।

सामग्रीप्रतिबन्धप्रतिबन्धकभावविचारः ३२८४१ ।

सामग्रीप्रतिबन्धकतावादः ३१३८५ ।

सामग्रीप्रतिबन्धकतावादार्थः ३३४५६ ।

सामग्रीप्रतिबन्धकताविचारः ३०३३६, ३१००० ।

सामग्रीवादः ३१८२७-३१८२९, ३३७३३ ।

| | |
|--|--|
| सामग्रीवादार्थः ३०३८० । | सिद्धान्तमुक्तावलीमरीचिका ३०५५७ । |
| सामग्रीविवेचनम् ३०८५६ । | सिद्धान्तरक्षामणिः ३२५७९ । |
| सामग्रीन्याप्तिविचारः ३०५७१ । | सिद्धान्तलक्षणक्रोडपत्रम् ३४१५९, ३४१६१ । |
| सामान्यनिरुक्तिपत्रिका ३३९९१ । | सिद्धान्तलक्षणव्याख्याव्याख्या ३१०८४ । |
| सामान्यलक्षणा ३१३७३ । | सिद्धान्तसङ्ग्रहः ३१९३४-३१९३६, ३२८६६ । |
| सामान्यलक्षणाज्ञानलक्षणाप्रत्यासत्तिविचारः ३०४२४ । | सिद्धान्तसारः ३१९५३ । |
| सामान्यलक्षणारहस्यम् ३१४२१ । | सुवर्थातत्त्वालोकः ३०३२९, ३२५६३, ३२९४२ । |
| सामान्यलक्षणावादार्थः ३३८८१ । | सुबोधिनी ३१९३०, ३१९३१ । |
| सामान्यलक्षणाविचारः ३०५४२, ३१७५२, ३३२८७ । | सूक्तिः ३०३६१ । |
| सामान्याभावपरिष्कारः ३१७२७ । | स्मृतिवादार्थः ३३४७६ । |
| सामान्योद्देशः ३४२४४ । | स्मृतिसंस्काररहस्यम् ३०१९८, ३१४२२ । |
| सारमञ्जरी ३१७२४, ३४०४२ । | स्मृतिसंस्कारविचारः ३१२९४ । |
| सिद्धान्तचन्द्रोदयः ३१६५८, ३२१६७, ३०३०३, ३२३०६, ३२३०७ । | स्वप्रकाशरहस्यम् ३०३६९, ३१३८७, ३१७३९, ३१७५४ । |
| सिद्धान्ततत्त्वम् ३२०८५, ३३३५२ । | स्वर्गलक्षणम् ३०३५९ । |
| सिद्धान्ततत्त्वसर्वस्वम् ३२०८४ । | स्वर्गलक्षणवादः ३३७५१ । |
| सिद्धान्तदीपः ३१७०६ । | स्वर्गलक्षणविचारः ३३६२०, ३३९०७ । |
| सिद्धान्तमुक्तावली ३०३०५ । | स्वर्गवादः ३१३९२, ३३४४६ । |
| सिद्धान्तमुक्तावलीटीका ३०५५६, ३०६०२ । | हिंसावादः ३१७३७ । |
| सिद्धान्तमुक्तावलीटीकाटीका ३०७९१ । | हेतुत्ववादः ३४२६२ । |
| सिद्धान्तमुक्तावलीप्रकाशः ३०६०९ । | |

शुद्धिपत्रम्

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|------------------------------|----------------------------------|------------|---------|
| १० गण० | ६ गण० | ३०१४३ | ४ |
| दे० ना० | वङ्ग | ३०१४३ | ८ |
| व० | दे० ना० | ३०१४४ | ८ |
| १-९ | १-९ | ३०२०२ | ४ |
| २-२९ | २-१९ | ३०२२४ | ४ |
| १९९ गण० | १४८ गण० | ३०२८६ | ४ |
| १-१६ | १-८, १-३, १-६, ६-१६ | ३०३०४ | ४ |
| दीधितिटीका | आख्यातशक्तिवादटीका | ३०३२२ | २ |
| दीधितिटीका | आख्यातशक्तिवादटीका | ३०३२४ | २ |
| दीधितिटीका | आख्यातशक्तिवादटीका | ३०३२९ | २ |
| दीधितिप्रकाशः | एचकारटिप्पणम् | ३०३३० | २ |
| १९१ गण० | ३२-६३ + १, १२-३८, ९२-२३२ । | ३०४१२ | ४ |
| १७-१८, २९-४४ | २७-४४ + १ । | ३०४१६ | ४ |
| ७७ गण० | १, १-४७, ४९-४६, ४६-७४ । | ३०४२६ | ४ |
| तत्त्व० मण्यालोकदर्शनम् | तत्त्व० मण्यालोकदर्पणम् | ३०४९२ | २ |
| ११-१२, १५-६९ = ६६, ६७-१२२, = | ११-१२, १५-६९ (= ६६, ६६), ६७-१२२, | ३०४६७ | ४ |
| १२३. १२४-१३१, १३३-१४७ । | (= १२२, १२३), १२४-१३१, १३३-२४७ । | | |
| ❀ | १७७२ | ३०५०८ | १० |
| १-९४ | १-४९ | ३०५०९ | ४ |
| ❀ | १६९८ | ३०५२९ | १० |
| ❀ | १६८२ | ३०५२८ | १० |
| ❀ | श० १५९१ | ३०५६४ | १० |
| ❀ | सन् फ० १२८४ | ३०५७७ | १० |
| ३०६८९ | ३०५८९ | ३०५८९ | १ |
| दे० ना० | वङ्ग | ३०६०३ | ८ |
| वङ्ग | दे० ना० | ३०६०४ | ८ |
| ❀ | १८३६ | ३०६१६ | १० |
| १-३३ | १-३३ + १ | ३०६२८ | ४ |
| ❀ | श० ११५२ | ३०६२९ | १० |
| १-३७, ३७-६४ | १-३७, ३७-४४ | ३०६४९ | ४ |
| १६७२ | १६७३ | ३०६४७ | १० |
| ❀ | १९२० | ३०६५८ | १० |
| १५०३ | श० १५०३ | ३०६९८ | १० |
| ❀ | १९१२ | ३०७३४ | १० |
| १-३० | १-२७, २९ + १ | ३०७४० | ४ |
| ❀ | श० १४८० | ३०७४० | १० |
| ❀ | १८३० | ३०७४६ | १० |
| ❀ | समूलम् | ३०७४६ | १२ |
| १९९१ | १७९१ | ३०७५३ | १० |
| ❀ | १७७७ | ३०७५७ | १० |

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|---|---|------------|---------|
| १-३३, ३६, ३८-१०१ + १०२-११२, ११२-२०४ । | १-३३, ३६, ३८-१०१ (=१०१, १०२) — ११२, ३०७६४ | | ४ |
| १-७१ | १-७१ + ७ । | ३०७७५ | ४ |
| १६८९ | १७८६ | ३०७८४ | १० |
| १६३८ | १७३८ | ३०७९२ | १० |
| १-१२ | १-१२९ | ३०७९५ | ४ |
| १९४४ | १८५४ | ३०८०४ | १० |
| ” | वङ्ग | ३०८३५ | ८ |
| ” | सैथि० | ३०८३८ | ८ |
| वङ्ग | सैथि० | ३०८४५ | ८ |
| ” | वङ्ग | ३०८४७ | ८ |
| न्यायकु टी० टि० | | ३०८५७ | १२ |
| १-१८ | १-१०, १०-१८ | ३०८६२ | ४ |
| १-४३ | १-७० | ३०८६५ | ४ |
| १-४४ | १-२५, ३२-४४ | ३०८७३ | ४ |
| १०६-११४ | १०६-११४ + १ | ३०८९० | ४ |
| गादाधारीटीका | गादाधारीटीका | ३०८९२ | २ |
| गादाधारीक्रोडपत्रम् | गादाधारीक्रोडपत्रम् | ३०८९३ | २ |
| १८ गणनया | १९ गणनया | ३०९३२ | ४ |
| दे. ना. | मै० | ३०९३३ | ८ |
| प्रशस्तपादभाष्यटीकाद्रव्य- प्रकरणान्ता | ❀ | ३१००२ | १२ |
| ❀ | प्रशस्तपादभाष्यटीका द्रव्यप्रकरणान्ता | ३१००३ | १२ |
| १-४० | १-६४ | ३१००३ | ४ |
| धर्मितावच्छेदकप्रत्यासत्तिविचारः | धर्मितावच्छेदकप्रत्यासत्तिविचारः | ३१००८ | २ |
| १-१० | १-२३, १-३०, १-१० | ३१०६७ | ४ |
| ... = (५९ + ३०) ... | ... (= ५९, ६०) ... | ३११५३ | ४ |
| तर्कप्रकाशाख्याटीका | ❀ | ३१२०० | १२ |
| ❀ | तर्कप्रकाशाख्याटीका | ३१२०१ | १२ |
| १४ गणनया | १-१२ | ३१३२८ | ४ |
| १७७ गणनया | १७५ गणनया | ३१३४४ | ४ |
| १-१५७ | १-१५६ | ३१३५५ | ४ |
| १-१६६ | १-६५, ६७-७८, ७८-८६, ८८-१३१ + १, १३२-१५१, ५२-६६ | ३१३५८ | ४ |
| पू० | अपू० | ३१३५८ | ११ |
| १-६६ | १-६३, ६३-६६ | ३१३६१ | ४ |
| १-११७ | १-५२, ५४-६०, ६२-६४, ६६-७०, ११६ + १ | ३१३६२ | ४ |
| पू० | अपू० | ३१३६२ | ११ |
| १२ गणनया | ३-१० + ३ | ३१३९८ | ४ |

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|-----------------------------|---------------------------|------------|---------|
| स्मृतिसंस्कारद्वयम् | स्मृतिसंस्कारद्वयम् | ३१४२२ | २ |
| ॐ | " | ३१४७५ | २ |
| ५-४९ | १७-३९ | ३१५०६ | ४ |
| १-४, ६-१७ | १-३, ८-१५, १४-१५ | ३१५४२ | ४ |
| १-२ (= १)६-२० (- १), २१ | १-४०+२ | ३१५५१ | ४ |
| १-१७ (= १)१८-२७ (= १-३)२८- | १-८६+१२ | ३१५५४ | ४ |
| ३३ (= १)३४-३५ (= १-३) ३६-५२ | | | |
| (= १)५३-५४ (= १)६२-८४ | | | |
| (= १-२)८६ | | | |
| १-८ (= १)९-१६ | १-१६+१ | ३१५६२ | ४ |
| १-२४ | १-१६ | ३१६०७ | ४ |
| ३० गणनया | ३६ गणनया | ३१६३५ | ४ |
| ४१-६५ | ४०-६०, ६३-६५ | ३१६४४ | ४ |
| १२-५० | १२-५७ | ३१६५७ | ४ |
| ...१७-१८.... | ...१७, १९.... | ३१६६६ | ४ |
| १-१७ | १-१०, १२-१७ | ३१६९८ | ४ |
| १४ गणनया | १५ गणनया | ३१७०० | ४ |
| १-२४, २४, २६ | १-२४, २४-२५ | ३१७०६ | ४ |
| १-१९ | १-२० | ३१८०१ | ४ |
| वङ्ग | दे० ना० | ३१८०१ | ८ |
| दे० ना० | वङ्ग | ३१८०२ | ८ |
| १-९ | १-८ | ३१८०८ | ४ |
| २६-६३ | २६-५३+१ | ३१८१२ | ४ |
| १-१९ | १-१७, १७-१९ | ३१८२४ | ४ |
| ६ गणनया | ७ गणनया | ३१८२५ | ४ |
| ...न्या०वा०तात्पर्यटीका... | न्या० वा० तात्पर्यटीकाटी० | ३१९६३ | १२ |
| १-६ | १-७ | ३१९६५ | ४ |
| २-१३ | २-३, ३-१३ | ३१९७१ | ४ |
| ॐ | १८६८ | ३१९८० | १० |
| ॐ | १८६९ | ३१९८२ | १० |
| २-५० | ३-३३, ३५-५० | ३२०२१ | ४ |
| १७२३ | १७२३ श० | ३२१०६ | १० |
| १-१० | १-१४ | ३२१४७ | ४ |
| ॐ | १७४५ श० | ३२१५४ | १० |
| १७९१ | १७९१ श० | ३२१६२ | १० |
| १-१७, ३२-५०, १-१८ | १-१७, ३२-७० | ३२१८७ | ४ |
| १-१६ | १०११, १३-१६ | ३२१९० | ४ |
| पू० | अपू० | ३२१९० | ११ |
| अपू० | पू० | ३२१९१ | ११ |
| १७८३ | १७८३ श० | ३२२८७ | १० |

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|---|--|------------|---------|
| ❀ | १९१८ | ३२२८७ | १० |
| १७८३ | १७८३ श० | ३२२९१ | १० |
| ❀ | १९१८ | ३२२९१ | १० |
| १-१२, १४, १-१८ | १-१२, १४-१८ | ३२३४८ | ४ |
| १७४२ | १७४१ | ३२३७२ | १० |
| ❀ | १८०३ | ३२३७९ | १० |
| १७२४ | १७२७ | ३२४०२ | १० |
| १-१० | १-९ | ३२४१३ | ४ |
| १-२७० | १-२७१ | ३२४२६ | ४ |
| ३ गणनया | १-४ | ३२४२९ | ४ |
| २-१६ | २-१६ | ३२४३६ | ४ |
| १-११ | १-१२ | ३२४३९ | ४ |
| १४ | १६ | ३२४४८ | ४ |
| ❀ | १२७२ साल | ३२४६१ | १० |
| ❀ | १८६६ | ३२४६२ | १० |
| —१८८-२२० | —१८९-२२० | ३२४७२ | ४ |
| १-३६ | १-३४, ३६ | ३२४७३ | ४ |
| पू० | अपू० | ३२४७३ | ११ |
| ❀ | १९१२ | ३२४८१ | १० |
| ६८ गणनया | १-८२, ६२-६७ | ३२५०८ | ४ |
| ❀ | १८६० | ३२५०८ | १० |
| २-१४ | १-१४ | ३२५१२ | ४ |
| ❀ | १८९६ | ३२५३९ | १० |
| १७९८ | १७९१ | ३२५६३ | १० |
| ❀ | १७४६ | ३२५७३ | १० |
| १४९-६९३ | १४९-६९४ | ३२५७६ | ४ |
| ❀ | १७६० | ३२५९२ | १० |
| ❀ | १७३१ | ३२५९४ | १० |
| ❀ | १९०४ | ३२५९८ | १० |
| ४६ गणनया | ४८ गणनया | ३२६२८ | ४ |
| ❀ | १९०६ | ३२६७७ | १० |
| ३० | ३४ | ३२७०६ | ४ |
| २-२६ = २८, २६-२६ = २९, २७, २७-६८, ६८-१७२, ३२७१० | २-२६, २६-२६, २६-२७, २७-६८, ६८-१७२, ३२७१० | | ४ |
| २७-६८, ६८-१७२, १७२-१८८ | १७२-१८८ | | |
| १-३४९ | १-१९, १९-३४६ | ३२८०२ | ४ |
| २-१६, १८-६३, ६७-७७ | २-१६, १८-६३ (= ६३, ६६) ६७-७७ | ३२८१२ | ४ |
| १२ गणनया | १-११ + १ | ३२८३७ | ४ |
| १७८६ | १७८६ श० | ३२८४६ | १० |
| दीधितिक्रोडपत्रम् | तत्त्व०मणिदीधितिक्रोडपत्रम् | ३२८६९ | २ |
| ३२-२०६ | ३२-२०७ | ३२८८८ | ४ |

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|-----------------------|---|------------|---------|
| २६-३० | ३६-४० | ३२९११ | ४ |
| १ | १-२ | ३२९२२ | ४ |
| अपू० | पू० | ३२९२२ | ११ |
| पू० | अपू० | ३२९२३ | ११ |
| ...२२-५५, ११८... | ...२२-५५, ७५-११८... | ३२९३६ | ४ |
| ३-३५, ३५-६५, ६७-२४८ | ३-३५, ३५-६५, ६६-२४८ | ३२९९० | ४ |
| ...५३-४०... | ...५३-१४०... | ३२९९० | ४ |
| १-२२... | २-२२... | ३२९९१ | ४ |
| ...७४-१०४, १०४-१२१... | ...७४-१०४, १०४, १०४-१२१... | ३२९९२ | ४ |
| ६५ गणनया | १३-१७, १५-१९, २०-३७, १-३७ | ३२९९५ | ४ |
| १४८ गणनया | १-२४ (= २४, २५), २६-४१, १-१६, १-४४, ३२९९७ १-१३, १३, १६-१९, २१-२६+१, १-३६ | ३२९९७ | ४ |
| ...१२४-१२५... | ...१२४-२२५... | ३२९९८ | ४ |
| वङ्ग | दे० ना० | ३२९९९ | ८ |
| १-१००६ | १-५८, ६४-१९९, २०१-२०३, २५९-४०९, ४११-४१६, ४१६-४७२, ४७४-५९४, ५९६- ७५५, ७५७-९३९, ९४३-९९७, ९९९-१००६ | ३३००० | ४ |
| पू० | अपू० | ३३००० | ११ |
| १-३९, ३७-८७ | १-२६, २४-५२ | ३३०१९ | ४ |
| १-७९ | १-७० | ३३०२२ | ४ |
| ❀ | १७८८ | ३३०२५ | १० |
| ❀ | १६९१ | ३३०२९ | १० |
| ...२१-३३ | ...२१-३२, ३४। | ३३०३० | ४ |
| ...१६-५९... | ...१६-४७, ४९-५९... | ३३०४० | ४ |
| २-३१ | २-२९, २९-३१ | ३३०४३ | ४ |
| ...१... | ...२८... | ३३०५२ | ४ |
| ...१०-१६, १७ | ...१०-१३, १५-१७ | ३३०५६ | ४ |
| ...७५, ७९... | ...७५, ७७, ७९... | ३३०९० | ४ |
| ...५४-५५, ५७-६०... | ...५४-०५, ५५, ५७-६०... | ३३०९३ | ४ |
| १७ गणनया | १-१६+१ | ३३११२ | ४ |
| ४५ गणनया | १००१७, १००४३, १००७१-१००८७। | ३३१२८ | ४ |
| १-१९ | १-१४, १४-१५, १-४ | ३३१३६ | ४ |
| १-५ | २-५, ७ | ३३१६१ | ४ |
| ❀ | ७ मं पत्रं तत्त्रयमणिमाधुर्याः | ३३१६१ | ४ |
| ५५ गणनया | ५-३३, ३३-३७ (= ३७, ३८) + १, २-२१। | ३३१६२ | ४ |
| १-४३ | १-१९, २८-४३ | ३३१६३ | ४ |
| १-३८ | १-३६ | ३३१७६ | ४ |
| ४१ गणनया | ३-४३ | ३३१८० | ४ |
| १८८ | १-२६ (= २६, २७), २८-४७, ४९-५३, ५३- १०४, ६४-१२५, १२७-१५०। | ३३२२९ | ४ |

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|-------------|-------------------------|------------|---------|
| ॐ | १८६१ | ३३३२१ | १० |
| २७-३४१ | २७-३७१ | ३३४०४ | ४ |
| आलोकोद्योतः | तत्त्व० मण्यालोकोद्योतः | ३३४२९ | २ |
| मथुरानाथः | रघुनाथः | ३४२१२ | ३ |
| १९*४X४*४ | १०*४X४*७ | ३४२४६ | ६ |